

वीणापुरजा शा मूलचंद्रमाह स्वरूपचंद्रमाह



शुनिमहाराज श्री हरिमण्डिनी कृत
आत्मज्ञान ग्रंथमाला

भाग २ जो.

(ज्ञान भूषण.)

छापी प्रिन्टिंग कार,
शा. सुरचंद्रभाइ स्वरूपचंद्र,
बिजापुर निवासी.

आवृत्ति २ जी. नकल ५००

साल १९७४ मने १९१८

अनदावाद

धो ' जैन विद्याविजय ' प्रिन्टिंग प्रेसमां
शा. दुनीलाल अम भाभाइ छाप्पो.

किमत गवत अने मंगल

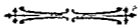
श्रीय मन्त्रातु ठनाणु,
शा. शिवेशाह् चगवानदान.
सु. काणेज (वारगय.)



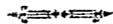
“महामा श्री हुम सुना महाराज”

॥ श्रीगुरुन्यामः ॥

॥ ज्ञान भूषण ग्रन्थः ॥



॥ पिठिकाः ॥



॥ दुहोः ॥

वन्दुसिद्ध अग्रगहना । आत्म स्वरूपास्ति
ज्ञान भूषण ग्रन्थ एह । करुं शुद्ध प्रणति ॥१॥

भूषण एतले आभूषण के जे वने आत्मा
शोभायमान ठे, ज्ञानस्वरूप आत्मा अने जाण-
पणारूप ज्ञान, ते रूप आभूषण पहरेवाथी शो-
भायमान दखाय ठे ते ज्ञान केवुं ठे तेनुं महा-
त्म कहिये ठिये

वृद्धमां जेम कल्पवृद्ध, फलदायकमां जेम
कामधेनु, घटमां जेम कामघट सर्व फलमां जेम
अमृतफल, सर्व औषधोमां जेम पञ्क (पुंख), सर्व
शंखमां जेम दक्षिणावर्तशंख, रत्नमां जेम मणि-

रत्न, विहंगमां जेम गरुड, मनवतीत्मा जेम चि-
 न्तामणिरत्न, मन्त्रमां जेम नवकारमंत्र, पर्वतमां
 जेम मेरु पर्वत, पर्वमां जेम पर्युपणपर्व, नदीमा
 जेम सीता सीतोदा, वर्षधरमां जेम निपध, नील
 समुद्रमा जेम क्षीर समुद्र, सुखमां जेम संतोष,
 सतिमा जेम ब्राह्मिसुदरी, धैर्यवानमां जेम आ
 दित जशा, देवमा जेम अरिहन्त, साधुमां जेम
 निर्ग्रथ, परमपदमां जेम मुक्ति, तीर्थमां जेम शत्रु-
 जय, पुण्यमा जेम पुण्यानुबन्धी पुण्य, शास्त्रमा
 जेम उत्तम सूत्र, ध्यानमां जेम धर्मध्यान, शुक्र
 ध्यान, ग्रहमा जेम चन्द्र, गजमां जेम ऐरावत,
 चोपदमा जेम सिंह, तेजमा जेम दिनकर, फूल-
 मा जेम पुष्परीक कमल, मेघमा जेम पुष्करावर्त
 मेघ, देवमां जेम छन्द, तेम सर्वज्ञानमा इव्या-
 नुयोग, स्वअनुभव (अध्यात्म) स्वरुपनुं रमण
 करवु, स्वधरमा रहे तेवो जगत्रयमां बीजो पदार्थ
 देखातो नथी. कारण के अनेक शास्त्रनु ज्ञान ठे ते
 परानुयायि होवाथी जयत्रमण वधे अने संसार
 खुटे नही, अने मुक्ति वेगळी रहे माटे तेने ज्ञान
 कहेता नथी परानुयायि रूप जाणपणाने पण

ज्ञान कहेवाय ठे तेनो खुलासो आगळ आवशे
 अने स्वअनुयायिरुप ज्ञानथी संसार समुद्र-
 नो पार पामे, प्रवचरण मटे, अन्त सुखनो
 जोगी थाय. पण तेवुं ज्ञान क्यारे मले के स-
 ज्जुल्लो योग मले ते विना तेवा ज्ञाननी प्राप्ति
 न थाय, कारण गुरु केवा ठे के आ संसारने
 विणे मुक्तिना दातार, संसारथी गोमावनार राग
 द्वेष मोहथी गोमावनार, जन्मजरा मरणनां दु-
 खथी गोमावनार, प्रत्यक्ष देव रूप साक्षात् सूर्य
 सरिखा ज्ञान गुणे जरेला, निज परना जाण एवा
 जे गुरु दातार ठे, ते गुरुने सेवो, जो पोताना आ-
 त्मानुं हित वाग्ने तो एवा सज्जुल्लनी सेवा करो, पण
 जेख देखीने खुला ना पमो. बहुश्रुत विना बीजाने
 सज्जुरु जाणवा नही. जे एवा सज्जुरु ठे, ते पोते तरे
 ठे अने बीजाने तारे ठे, ते गुरु शुं शुं उपकार
 करे ? ते कहे ठे, माठी बुद्धि तेनो नाश करे, अने
 जली बुद्धिनी प्राप्ति करे, कुगति जे नरक, तिर्यचादि
 गतिमां पन्ताने हाथ जाली पागे लावीने स्व-
 र्गादि गतिने विणे मोकले, पाप पुण्यनी उल-
 खाण करावे, करवा योग्य अने नहि करवा योग्य

पदार्थ ते वनेनु स्वरूप सद्गुरु वतावे, (जहावा) सावा
 योग्य अथवा नहि सावा योग्य, अथवा पीवा योग्य
 अथवा न पीवा योग्य, धर्म अथवा अधर्म, इत्यादि
 पदार्थना जणावनारा सद्गुरु ठे, ते आ जपरुपी
 समुज्जने विशे जहाज समान जाणावा, वळी
 सद्गुरु केवा ठे के ससारमा माता, पिता, ब्राता,
 जगिनी, पुत्र, कलत्र, स्वजन, सवन्धी चतुरङ्गी
 सैन्य, राजपाट, इत्यादि ए सर्वे ठे ते नर्कना
 कुतुहल ठे अर्थात् ते नर्क लक्ष जवाना हेतु ठे,
 पण आपणने कोइ नर्क लक्ष जतां राखे तेवा
 नथी, एक सद्गुरु प्रकट धर्म अधर्म देखाम्नी
 अधर्मने गोमावी धर्म मार्ग प्रवर्तावी मोक्ष
 नगरे पहुँचामे, ते विना कोइ आ ससारने विशे
 देखातो नथी, वळी गुरु केवा ठे के सर्वे ध्याननुं
 ध्यान तेज गुरु ठे, एटले ध्यान कर्ये ते शु थाय,
 तेथी पण गुरु अधिक ठे तथा विषय त्याग क-
 स्वाधी पण शु थाय, ए सर्वेथी एक गुरु सेवा करे
 तेने अधिक फल थाय, माटे पूर्ण ज्ञाव राखी एक
 सद्गुरुनी सेवा कस्वी, ईन्द्रियो जीते तो पण
 लेखामा नथी, ए सर्वेनी प्राप्ति एक सद्गुरुनी

सेवाथी ठे, सर्व ज्वनो नाश कर्ता गुरु ठे, आशासनने विशे वाकेफ करनार पण गुरु ठे अने गुरुनो विनय करवाथी आत्मा स्वेत (ज्ज्वल) थाय, अने सर्व अर्थनी सिद्धि थाय माटे हे ज्व्यजीवो ! सद्गुरुने सेवो अने कुगुरुनो पदा तजो, श्री जगवतीजी, उपासक दशाङ्ग प्रमुख सिद्धान्तमां कुगुरु कहा ठे तेनी जलखाण आचाराङ्ग प्रमुख सिद्धान्तने विशे खुलासो ठे, तथा आवश्यक निर्युक्ति, आवश्यकनी ब्रह्मवृत्तीमां ठे माटे कुगुरुनो पदा तजवो, अने सुगुरुनी सेवा करवी, सुगुरुथी ज्ञान स्वरूप पामशो ॥ जक्तंच)

॥ वगस्थवृत्तम् ॥

अवद्यमुक्ते पथि य प्रवर्तते ।
 प्रवर्तयत्यन्यजनंच निस्पृहः ॥
 स एव सेव्यः स्वहितैषिणा गुरुः ।
 स्वयं तरस्तारयितुं क्षमः परम् ॥ १ ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥

विदलयति कुबोधं बोधयत्यागमार्थं,
 सुगतिकुगतिमार्गौ पुण्यपापे व्यनक्ति ॥

अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरुर्यो,
 ज्वजलनिधिपोतस्तं विना नास्ति कश्चित् ॥१॥

॥ शिखरिणी वृत्तम्. ॥

पिता माता ब्राता प्रियसहचरी सनुनिवह.,
 सुहृत्स्वामी माद्यत्करिभट्टरथाश्व परिकर ॥
 निमज्जांत जतु नरककुहरे रक्षितुमल,
 गुरोधर्माधर्मप्रकटनपरात्कोऽपि न पर ॥३॥

॥ शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्. ॥

किध्यानेनज्वत्वशेषविषयत्यागैस्तपोनि कृतं,
 पूर्णज्ञाननयाऽन्मिंन्द्रियदमै पर्याप्तिमाप्तागमै ॥
 कित्वेकंज्वनाशनकुरुगुरुप्रीत्यागुरो शासन,
 सर्वेयेनविनाविनाथमलवत्स्वार्थायनाऽखंगुणा
 ॥ ४ ॥



॥ अथ श्री ज्ञान भूषण. ॥

॥ ग्रन्थ प्रारब्धते. ॥

—❀❀❀—

ज्ञानज भणीए ज्ञानज सुणीए,
ज्ञानमां काल ते काढोरे ॥
ते विना काल ते फाकेट दाख्यो,
जव जंजाल ते बाधोरे, ज्ञान पद सेवोरे ॥
ज्ञान विना तरे नही कोय, ज्ञान गुण मेवोरे ॥१॥
(ए श्यांकणी)

हे । जव्यजीवो ज्ञान कहेतां जे श्यात्म-
स्वरुपनुं जाणपणुं ते निश्चयज्ञान ठे श्यने बीजुं
रुहुं ते व्यवहार ज्ञान कहेवाय श्यव्यात्म
ज्ञान तथा उव्यानुंयोग (पद् उव्यनो विचार) ते
व्यवहारज्ञान; श्यने (श्यने श्यध्यात्म) श्यात्म-
स्वरुपनो विचार श्यनेदपणे ते निश्चयज्ञान. ते
ज्ञानने जणवुं ते ज्ञाननो एक श्यद्वार जणे तो
श्यनन्त कर्मनी राशि निर्जरे श्यथवा कोशने

ज्ञानवे तोपण अनन्त कर्म राशिनी निर्जरा करे,
 माटे ज्ञाननु ज्ञानवुं ते आत्माने मुक्तिनो दातार
 ठे, तथा ज्ञाननु सुणवु तेथी पण अनन्त कर्म
 निर्जरे, माटे ज्ञानने ज्ञानवु तथा ज्ञाननेसुणवुं
 कारण के अज्ञान माणस एक करोम उपवास करी
 ने जेटला कर्म नार्कीनां निर्जरे, तेटला कर्म ज्ञानी
 एक स्वास नीचो लक्ष्णे उचो मुके तेटलामां
 नीर्जरे, एवं श्री वीर परमात्माए विवाह प-
 न्नात्ति (विवाह प्रज्ञप्ति) मा कह्युं ठे, तेथी
 (अहोनिश) दिवस तथा रात्रिनो काल ज्ञान-
 ननी रमणतामा कहामवो, पण ज्ञान विना जे
 टबु बीजुं कार्य करु ते सर्वे प्रमादजावमां ठे
 तेथी ज्ञान विना फोगट काल खोवो नही, का
 रण के आर्य क्षेत्र, मनुपनो जव, पाच अन्ध सं-
 पूर्ण, निरोगी शरीर, श्री जिनराजनो धर्म, सज्जु-
 र्ना उपदेश, एवी जोगवाइ फरीफरीने मले नही,
 अने शुचाशुच कारण कार्य तो अनन्तवार कर्या,
 अने सुख दुख आ जीवे अनन्तवार जोगव्यु,
 अने व्यवहार चारित्र, व्रत, पञ्चखाण, तप, जप,
 आ जीवे अनन्तवार कर्या कारण के चारे, गति
 मा जीव अनन्तवार उपजी चुक्यो

“अनंत सुत्तो जीवाणं.”

एवो पाठ सिद्धान्तमां पण ठे, तो कांई
 आत्मानुं कार्य थयुं नही माटे ज्ञानमां ज काल
 काढवो पण फोकट काल खोवो नही, के-
 मके शुजाशुज करणीथी संसार वधे पण कंई
 संसार घटे नही, माटे गत्यागति वधवाथी आ-
 त्मानुं अहित थाय ठे, तेथी शुजाशुजनो पद
 गोमीने एक ज्ञान पदाने अङ्गिकार करो हवे
 “ज्ञान विना तरे नही कोई” एटले क्रिया, जप,
 तप, अनेक विध वाह्यनां कारण ठे, पण तेथी
 मुक्ति थाय नहि अने आज दिन सुधी एकत्वथी
 कोई जीव मोढ़े गयो नथी अने जतो पण नथी
 अने जशे नहि माटे ज्ञान विना कोई
 जीव तरे नही, कारण के मुक्तिनां द्रव्य-
 लीङ्ग पन्दर कहां ठे, परन्तु ज्ञावलीङ्ग विचारीने
 जोशए तो एकज देखाय ठे, कारण के साधु,
 गृहस्थ तथा अन्यमती ज्ञानस्वरूपना विशे
 स्थिर ज्ञाव थाय, त्यारे राग द्वेषनो नाश थाय,
 अने मोढ़नो नाश थाय त्यारे वितराग पद पामे

ठे, त्पारपणी अनेद ज्ञान थाय ठे, त्तारे अरि
 हन्त पद पामे ठे, अने सर्व योगनो रोध करे
 अने मननी चराचर सर्व मटे अने शैलेपि करण
 थाय त्तारे सिद्ध पद पामे, माटे ज्यां सुधी मन
 वचन, कायानो व्यापार वृत्ते ठे अने मननी च
 राचर मटी नथी, त्या सुधी तेने अने मुक्तिने
 ठेटु अनन्त योजननु ठे, ए अधिकार श्री जग
 वतीजीथी जाणवो, ते कारण माटे ज्ञान रूप
 मेवो एटले पद, प्रमाण, सप्तजङ्गि, चञ्जङ्गि, नय
 निक्षेप, पटकारक, इत्यादि करीने आत्म स्वरूपनुं
 विचारवु ए रूप मेवानो स्वाद कोरुपूर्वना आयु
 ये देगे जणा केपली होय ते पण कही अके
 नही, तो उद्वस्थनो तो जो प्रार जे कही शेके
 पण जे एनो आनन्द जे हृदयमा प्रगट थाय ते
 अनुभवनो रस तो उद्वस्थ रुमी रीते जाणे, का
 रण के ते कहेवानु सामर्थ्य नथी पण जाणवानु
 तेनामा सामर्थ्य ठे, जेम घतनो स्वाद कहेवानु
 कोडनामा सामर्थ्य नथी पण जाणवानु सामर्थ्य ठे
 तेम अही अनुभवी ए आनन्दनो रस जाणे ठे
 पण बीजा बाह्यद्रष्टिवाला जाणता नथी, कारण

के तेने बाह्यद्रष्टि ठे. आत्म स्वरूपनी खबर नथी
 जेम बावना चन्दन ठे ते खर लपर जसिये तो तेने
 कांई तेना गुणनी माद्युम पमे नहि, एतो जे ज्ञा-
 ग्यवान माणस ठे तेने गुणनी खबर पमे ठे, तेम
 बाह्यद्रष्टि अनेके शास्त्र जणे ठे, वांचे ठे, पण तेने
 कंई तेना रसना स्वादनी खबर नथी फोकट ते वि-
 चारा काय कष्ट करे ठे, अही कोई एम क-
 हेगे के तमे महा कठारे वचन बोळो गो तेनो
 उत्तर के अमे कंई कठण वचन बोळता नथी,
 पण पूर्वाचार्य, ग्रन्थोमां एवुं कही गया ठे
 उक्तंच

॥ अनुप्रपद्यत्तम् ॥ *

वेदानशास्त्रवित्केशम्, रसमध्यात्म शास्त्रवित्,
 ज्ञाग्य भृञ्जोगमाप्नोति. वहते चन्दनं खरम् ॥१॥

ते कारण माटे ज्ञान रूप जे मेवो महापु-
 ष्टिनो करनार ठे, जेम संसारना विशे अरदकृतु
 प्रमुखना मेवाथी अरीरनी पुष्टि घणी थाय ठे,
 तेम अही पूर्वे कह्यो तेवा ज्ञान रूप मेवाथी
 आत्माने पुष्टि थाय, कारण के संसारना रस

करता अध्यात्म रस घणो सुन्दर ठे उक्तच

॥ अनुष्टुप्वृत्तम् ॥ *

अध्यात्म शास्त्र हेमाद्रि, मथितादागमोदधे ॥
 चूयांसी गूण रत्नानि, प्राप्यन्ते बुद्धे न किं ॥१॥
 रसो जोगाववि काम, सद्गद्ये जोजनावधि ॥
 अध्यात्म शास्त्र सेनाय, रसो निस्वधि पुन ॥१॥

अथवा विषय प्रमुख संसारना रस ठे ते तुळ
 रस ठे, पण अध्यात्म रस महा ध्यानन्दकारी ठे, ए
 रसना तोळे बीजो रस कशा लेखामा नथी, ईन्द्र,
 चन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ति प्रमुखना इन्द्रिय जनित
 सुखनो जे रस ते तुळ छे, अने आ ज्ञान रस ते महा
 अमृत रस ठे, ए रस पाण्या ते फरीथी पन्था
 नहि अने आ रस आव्यो फरीथी जाय नहि
 एटले बीजा जे सुख रस ठे ते विनाशिक ठे,
 अने आ रस ठे ते अविनाशिक ठे

शिष्य वाक्य,—

स्वामिन् अध्यात्म रस ते जाने क्हो ठे ?

गुरु वाक्य,—

हे महानुभाव ! जे पुरुषनो मोह तथा राग, द्वेष मन्द परया होय, अने क्रोधादि त्रण चोकनी गइ होय, अने शुद्ध क्रिया अङ्गिकार करी ठे, शुभाशुभ क्रियाने जाणे ठे, सदा अन्तर आत्मामां शुभ ज्ञाननी स्मरणता ठे, परभावनो त्यागी ठे कृतिम् वस्तु उपर राग नथी, पुण्य-पाप जेने सम जासन् थयुं ठे, सदा शुद्ध आत्म-स्वरूपनो उपयोग वे प्रकारे, साकार अने निराकारथी पट् अव्यनुं स्वरूप जाणे, ते मध्ये पांच अव्यना स्वरूपने अजीव जाणीने ठामे अने एक आत्मस्वरूपने ज्ञान रूप चेतना जाणीने आदरे एम हेय, ज्ञेय उपादेयनी रीत जाणे, अने ठाम्वा योग्य ठामे, अने जाणवा योग्य जाणे, अने आदरवा योग्य आदरे, एम आत्म स्वरूपमां अन्तर जावे रमे, ते शुद्ध क्रिया कहिये अथवा अध्यात्म कहियें. ॥ उक्तं च. ॥

अनुष्टुप्पद्यम्. *

गतमोहाधिकारणा, मात्मानमधीकृत्यया. ॥

प्रवर्ततेक्रियाशुद्धा, तदध्यात्मजगूर्जिना ॥१॥

माटे एवो जे ज्ञान रूप मेवो महा पुष्टे,
 अने महा बलवान ठे, माटे हे ज्ञानजीवो ! प्र-
 मादज्ञावने ठांमीने ज्ञान रूप मेवो भक्तवाने अ-
 न्यास करो, अहीं घणा शास्त्रमां एज रीते
 कहेल ठे, पण वधा शास्त्रनी शाक्ति अर्थाय नहि
 तेथी अल्प श्लोक मुकेला ठे, पण विचारीने
 जोशो तो सर्व शास्त्रमा एज वस्तु सिद्ध ठे, माटे
 सद्गुरु मुखे शास्त्र समजिने ए अर्थ विचारणो
 तो तमने (समजाशे) घणो फायदो थणे

गाथा ॥ २ ॥

स्वधर्मग्राहिनिश्चेत्ताख्यो, परधर्मग्राहीव्यवहारोरे ॥
 तेकारणज्ञानमारमिये, शुद्धनिश्चेनयधार्गेरे ॥

ज्ञान० ज्ञान विना० ॥१॥

अर्थ -विशेषापर्ययक ग्रन्थमा निश्चय तथा
 व्यवहार नयनु स्वरूप कहु ठे तेमां तत्त्वार्थग्राही
 निश्चय नय ठे, अने लोकाजिमतार्थग्राही व्यव-
 हार नय ठे, अने तत्त्वार्थ युक्ति ते निश्चयसिद्ध

अर्थ, अने लोकाजिमत ते व्यवहार प्रसिद्ध, यद्यपि प्रमाण तत्वार्थग्राही ठे तो पण प्रमाणाश्रयि तत्वार्थग्राही निश्चयनये कह्यो ठे, पण तेमां एक देशे तत्वार्थग्राही वचन व्यवहार अज्ञेद ठे, निश्चय नयने विशेष ठे, अने व्यवहार नयनो विषय एकलो अनुभवीए तो सिद्ध जिन ठे, ते तो नन कुसुमवत् थाय ठे, हवे निश्चय तथा व्यवहारने उल्लखवा माटे नयनो विचार शंकेपथी कहे ठे

अनन्त धर्मात्मक वस्तु ठे, ते पदार्थ ज्ञान अने ज्ञानने विशेषे ज्ञाननो अंप ठे, ते समजवा माटे नयनुं लक्षण कहे ठे, एटले जीवादि पदार्थमां अनन्त धर्म रक्षां ठे, तेनो एक धर्म गवेपवो, 'अने अन्नत धर्मनो उच्छेद' नहि, अने ग्रहण पण नहि, एवो धर्मनो जेद करवो तेने नय कहे ठे ते नयना विस्तारथी अनेक जेद ठे पण (समास) संक्षेपथी वे जेद ठे, एक अव्यार्थिक अने बीजो पर्यायार्थिक,

[१] सांगित मानवो [ग्रहण करवो].

[२] गौण तरीके श्रद्धामा कायम न राखे तो उच्छेद थाय, [एटले नाश करवो.]

त्या रत्नाकर श्रवतास्त्रिकाथी लखिये ठिये

॥ डवति गह्वति तास्तान् सद्भाव पर्याया
निति डव्यम् ॥

तदेवार्थ सुचक विनाश ठे जेनो ते निश्चय
डव्यार्थिक, जे वर्तमान पर्याय डव्य ठे, आगामि
काले डव्य होरो, अतीतकाले डव्य हतो ते डव्य
अने तेज अर्थनु प्रयोजन ते डव्यार्थ, अने प-
दार्थ एखे “पर्याय जन्य ज डव्य,” तेथी डव्यने
ज डव्य पर्याय मय एखे उत्पाद् विनाश अने
ध्रुव रूप कह्यो ठे, अने पर्याय ते —

“ उत्पाद् विनाशो प्राप्नोति, इति-एव
अर्थस्य अस्ति यस्य पर्याय सपर्यायार्थिकम् ”

(परी) नय निक्षेपने पामे, एखे उप
जवा विनसमानो अर्थ, तेज अर्थ प्रयोजन ते प
र्यायार्थिक, त्या धर्मने डव्य तथा पर्याय कह्यो
अही कोई पुढे के बीजो गुणार्थिक कहेता
केम नथी ? त्या वली रत्नाकरावतास्त्रिकामां
कह्यु ठे के —

॥ गुणस्य पर्याये एवांतररूतत्वात्, तेन पर्यायार्थिके नैव तत् संग्रहात् ॥

जे गुण ते पर्यायने विशेषान्तररूत ठे, ते पर्यायार्थिक मध्ये संग्रहो ठे, ते पर्यायना वेजेद, एक सहजावी अने बीजो कर्म जावी, तेमां सहजावी ते गुण ठे, ते पर्यायने विशेषे अन्तररूत ठे, त्यां अव्य पर्यायथी व्यतिरक्त सामान्य अने विशेष एम वे धर्म ठे, मोटे सामान्य अने विशेष वे नयवत्ता केम कहेता नथी एम पुठे तेनो उत्तर ।

॥ अव्य पर्यायन्यां व्यतिरक्तयो. सामान्य विशेषयोरप्रसिद्धे तथाहि द्विप्रकारं सामान्यमुक्तमूर्ध्वता सामान्यं तिर्यग्सामान्यंच तत्रोर्ध्व सामान्यं अव्यमेव तिर्यग्सामान्यं तु प्रतिव्यक्ति सदृश परिणाम लक्षणं व्यंजन पर्याय एव ॥

ए पाठथी उर्ध्व सामान्य ते अव्यनोः धर्म ठे, अने तिर्यक् सामान्य ते पर्याय धर्म ठे.

॥ विशेषोपि वैसादृश्य विवर्तलक्षणं पर्याय एवांतरभवति नैतान्यामधिक नयावकाश ॥

विशेषणने अनेक रीते वर्तवानो लक्षण ठे ते पर्यायने विशेष अतर्जाव ठे ते माटे जिन्न नयनो अक्काश नथी ए वे नय मध्येज अंतर्जाव ठे ते अर्थार्थिकना चार जेद. नैगम १, संग्रह १, व्यवहार ३, रुजुसुत्र. ४, तथा शब्द (१) समजि-रुढ (२) अने एवम्रुत (३) ए त्रण जेद पर्याया र्थिक नयना ठे, विकल्पान्तरे रुजुसूत्रने पर्याया र्थिकमा पण कह्यो ठे

नैगम नय

॥ न एक गमा आशय विशेषा यस्य स नैगम ॥

नथी एक गमो अजिप्राय जेनो ते नैगम नय एठले तेना अनेक आशय ठे

तथाच —

॥ अनेके गमा सकल्पारोपांशाश्रयाद्या यत्र स नैगम ॥

ज्या अनेके नामादि गमा ग्रहवाय तथा सकल्पे, आरोपे अने अशे पण वस्तुने माने ते नैगम नय तेना त्रण जेद आरोप, अंश, अने

संकल्प वली विशेषावश्यकने विशे लपचारने
जुदो गणवाथी चार जेद कह्या ठे तेमां आ रो-
पना चार जेद, अव्यारोप. (१) गुणारोप (२)
कालारोप (३) कारणारोप. (४)

॥ पंचास्तिकाय वर्तनागुणस्य कालस्य अव्य
कथनं एतद्गुणे अव्यारोप. ॥

गुणादिकने विशे अव्यारोप-जेम वर्तमान
पर्याय ते पंचास्तिकायने विशे परिणमन धर्म ठे,
तेने कालअव्य कहवो एटले “ काल ” कहिने
बोलाववो ते जिन पिमरुप द्रव्य नथी तो पण
द्रव्य कह्यो ते अव्यनो आरोप कर्यो

॥ ज्ञानमेवात्माः अत्र अव्ये गुणारोप. ॥१॥

अव्यने विशे गुणनो आरोप करवो ते गु-
णारोप, जेम ज्ञान गुण ठे पण ज्ञान तेज आ-
त्मा एम ज्ञानने “ आत्मा ” कहवो इत्यादिमां
गुणनो आरोप कर्यो

“ वर्तमान काले अतीत कालारोप. ”

“ वर्तमान काले अनागतकालारोप ”

“ एवं श्रुतीतानागतेषु ज्ञेय ”

कालारोप एतले कालनो आरोप करवो ते. जेम श्री महावीरस्वामीनु निर्वाण थये धणो काल थयो, पण आज लोक दीवालीने दिने निर्वाण कहे ठे ते श्रुतीत कालनो वर्तमान काले आरोप कर्यो वली आज श्री पद्मनाभ प्रभुनु निर्वाण ठे आ वाक्यमां वर्तमानने विशेषे श्रुतागत कालनो आरोपण ठे, एम वर्तमानना वे जेद थया, तेवीज रीते श्रुतीतना वे जेद तथा श्रुतागतना वे जेद ए सर्व मलीने ठ जेद थया

“ कारणे कार्याधारोप ”

कारणने विशेषे कार्यनो आरोप करवो ते कारणधारोप वाह्य द्रव्य क्रिया ते साध्य साधननी श्रुतेक्षामालाने धर्मनु निमित्त कारण ठे तो पण ते “ धर्म ” करणी कहेवाय ठे ते कारणाधारोप

श्री तीर्थकर मोक्षनु कारण ठे उतां “ ता स्याण ” एतले तारक कहा आ वने दृष्टान्तमां कारणने विशेषे कर्त्तापणानो (कार्यपणानो)

ध्यारोप ठे. ते कारणना च्यार भेद तेनां नाम.-
उपादान कारण, निमित्त, कारण, असाधारण
कारण, अने अपेक्षा कारण एम ध्यारोपना अने-
क प्रकार छे

॥ अंशोपि द्विविध जिन्नाजिन्नश्चेत्यादि ॥

अंशना पण वे जेद ठे, एक जिन्न, ते
जुदो अंश स्कंधादिकनो, बीजो अजिन्नांश ते
आत्माना प्रदेश तथा गुणना अविजाग ते.

॥ संकल्पो द्विविध स्वपरिणाम रूपः का-
र्यान्तर परिणाम रूपश्च ॥

संकल्प नैगमनावे जेद, एक स्वपरिणाम
रूप जे वीर्य चेतनानो नवो नवो द्वयोपशम् ते
अने कार्यान्तरे नवे नवे कार्ये नवो नवो उपयोग
थाय ते. एम वे भेद थया ईत्यादि नैगम नयना
जेद जाणवा

संग्रह नय.

॥ सामान्य वस्तु सत्ता संग्राहक संग्रहः ॥

(सामान्ये) मूलसर्व अव्य व्यापक नित्य-

त्वादि सत्तापणे रहेला धर्म तेनो जे संग्रह करे ते संग्रह नय,
तथाच —

॥ संग्रहाति वस्तुसत्तात्मक सामान्य स संग्रह ॥

जे सर्वने संग्रहे, सर्वनु ग्रहण करे, वस्तुनी ठतीने सामान्यपणे ग्रहे ते संग्रह तेना वे जेद सामान्य संग्रह १ ॥ विशेष संग्रह २ ॥ त्यां सामान्य संग्रहना वे जेद, मूल सामान्य १ ॥ उत्तर सामान्य २ ॥ मूल सामान्यना अस्तित्वादि छ जेद ठे, तेनां नाम अस्तित्व, वस्तुत्व, अव्यत्व, प्रमेयत्व, सतत्व - अगुरु लघुत्व, तथा उत्तर सामान्यना वे जेद एक जाती सामान्य १ ॥ बीजो समुदाय सामान्य २ ॥ गायना समुहमा गोत्वरूप जाति ठे तथा घटना समुहमा घटत्वपणु, अने वनस्पतिने विशे वनस्पातिपणु ते जाति सामान्य, अने आंबाना समुहने “अंबवन” कहेवु तथा मनुष्यना समुहने “मनुष्य” कहेवु ते समुदाय सामान्य मूल सामान्य ते अधिदर्शन तथा केवल दर्शनथी ग्रहाय ठे (ग्राह्य ठे) अने उत्तर सामान्य

चहु दर्शन अने अचहु दर्शनथी ग्रहवाय ठे. वली संग्रह नयना वे जेद, एक सामान्य संग्रह, अने बीजो विशेष संग्रह. त्यां ठ डव्यना समुदायने डव्य कहेवुं ते सामान्य संग्रह कारण के अही एक वचने सर्वनो ग्रहण थाय तथा जीवने “ जीवडव्य ” कही अजीव डव्यथी जूदो जेद पामवो ते विशेष संग्रह वली विशेषावश्यक ग्रन्थने विशेष संग्रहनयना चार जेद कह्या ठे (संग्रहणं) एटले एकठो एक वचनमां एक अद्यवशाय ऊपयोगमां समकाले ग्रहण थाय, सामान्य रूपणे सर्व वस्तुनो आक्रमण ग्रहण करवो ते संग्रह अथवा सामान्य रूपणे सर्व संग्रह करे ते संग्रह अथवा जेथी सर्व जेद सामान्यपणे ग्रहीये ते संग्रह तेना चार जेद कहे ठे,—(१) संग्रहित संग्रह (२) पिम्मित संग्रह (३) अनुगम संग्रह. (४) व्यतिरेक संग्रह

१. सामान्यपणे जेवण विना ग्रहण थाय एवो ऊपयोग अथवा वचन अथवा धर्म कोई पण वस्तुने विषे होय तेने संग्रहीत संग्रह कहिये.

२ एक जाति माटे एकपणो मानिने एक वचने सर्वनो ग्रहण थाय जेम “ एगे घ्याया एगे पुग्गले ” इत्यादि वस्तु अनन्ति ठे पण जाति एक माटे ग्रहवाय ठे तेने पिमित संग्रह कहिये.

३ जे अनेक जीवरूप अनेक व्यक्ति ठे ते सर्वमां पामिये, जेम “ सत्चित्तमयो आत्मा ” एटले सर्व जीव, सर्व प्रदेश, सर्व गुण ते जीवनां लक्षण ठे तेने अनुगम संग्रह कहिये

४ जेनी ना कहेवे तेथी ईतरनो सर्व संग्रह पणे ज्ञान थाय ते जेम अजीव ठे तेवारेजे जीव नहि ते अजीव एटले कोर्शक जीव ठे एम व्यतिरेक वचने ठेयो तथा उपयोगे जीवनो ग्रहण थाय ठे तेने व्यतिरेक संग्रह कहिये, वली संग्रह नयना वे जेद कहे ठे (१) महा सत्तारूप. (२) अवातर सत्तारूप

॥ गाथा ॥

सवतिजणिएणज, म्हासवठाणुप्पवत्तएबुद्धि ॥
तोसवसत्तमत्त, नञ्जीतदतरकिचि ॥ १ ॥

यद्यस्मान् सदित्येवं, ज्ञापिते सर्वे त्रिभुवन
त्रयान्तर्गत वस्तुनि बुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावति-
हितत् ॥ किमपि वस्तु अस्ति यत् सदित्युक्ते
जगति बुद्धो न प्रतिज्ञासते तस्मात् सर्व सत्ता-
मात्रं न पुनः अर्थान्तरं तत् श्रुत सामर्थ्यात् यत्
संग्रहेन संग्रह्यते तेन परिणमन रूपत्वादेव संग्र-
हस्येति ॥

एतले त्रण भुवनमां एवी वस्तु काइ नथी
जे संग्रह नयना ग्रहणमां आवे नही, एतले जे
वस्तु ठे ते सर्वे संग्रह नयना ग्रहणमां आवे ठे

हवे व्यवहार नय

संग्रह ग्रहित वस्तु जेदान्तरेण,
विज्ञजनं व्यवहरणं प्रवर्तनं वा व्यवहार ॥१॥

संग्रह नय गृहित जे वस्तु ठे, तेने भेद
जेदान्तरे (विज्ञजनं) व्हेवबुं, ते व्यवहार अ-
र्थात् अव्य सामान्यपणे कहातेनी व्हेवण क-
खी ते व्यवहार नय अव्यना वे जेद. जीव अव्य,
अजीव अव्य जीवनावे भेद सिद्ध, संसारी.
सिद्धना वे जेद अनन्तर सिद्ध, परंपर सिद्ध

श्यादि. हृवे ससारीना वे जेद अयोगी, सयो
 गी अयोगी ते चौदमा गुणस्थानना, बाकी स
 योगी तेना वे जेद. सयोगी केवली, सयोगी उ-
 द्भस्थ सयोगी केवली तेरमा गुणस्थानना, बाकी
 उद्भस्थ तेना वे जेद अमोही, समोही अमोही ते
 जेनु मोहनीय कर्म दाय अयु ते वारमा गुणस्था
 नना, बाकी समोही तेना वे जेद. उपशान्त
 मोही, उदीत मोही, उपशान्त मोही ते अगि
 आरमा गुणस्थानना, बाकी उदीत मोही तेना
 वे जेद एक सुदम कपायि, बीजा वादर कपायि
 सुदम कपायि ते दशमा गुणस्थानना, बाकी वा
 दर कपायि तेना वे जेद एक अवेदी, बीजा स-
 वेदी अवेदी ते नवमा गुणस्थानना, बाकी सवेदी
 तेना वे जेद श्रेणीवन्त, अने श्रेणी रहित श्रे-
 णीवन्त ते आठमा गुणस्थानना, बाकी श्रेणी
 रहित तेना वे जेद, अप्रमत, बीजा प्रमत अप्र-
 मत ते मातमा गुणस्थानना बाकी प्रमत तेना
 वे जेद विस्ती परिणामी, बीजा अविस्ती विस्ती
 परिणामीना वे जेद. सर्वविस्ती, बीजा देशविस्ती
 सर्व विस्ती ते ठग गुणस्थाने माधु, अने देश

विरती ते पांचमा गुणस्थाने श्रावक, हवे अवि-
 रतीना वे जेद. अविरती समकिती, बीजा अविरती
 मिथ्यात्वी. अविरती समकिती ते चोथा गुणस्था-
 नना. वाकी मिथ्यात्वी तेना वे जेद, ग्रंथिजेदी,
 बीजा अजेदी. ग्रंथी जेदी ते समकित पामिने
 पाठा पन्था, मिथ्यात्वे गया तेमणे ग्रंथी जेद
 करलो ठे फरीथी करवो न पने विशुद्ध अध्व-
 साये चोथा गुणस्थाने थावे ते ग्रंथीजेदी, वाकी
 अजेदी तेना वे जेद, जव्य, अजव्य, जव्यना वे
 जेद, कृष्ण पक्षिया, अने सुकल पक्षिया एम
 जेदनुं व्हेंचवुं तेने व्हेंचण रूप व्यवहार कहिये.

हवे प्रवर्तन व्यवहार कहे ठे तेना
 वे जेद एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध,
 शुद्धना वे जेद. वस्तुगत शुद्ध, व्यवहार साधन
 शुद्ध. व्यवहार सर्व जव्यना शुद्ध स्वरुपनी प्र-
 वृत्ति जणावे ते वस्तु गत शुद्ध व्यवहार. जेम
 धर्मास्तिकायमां गतिसहायकता तथा जीवने
 विशे ज्ञायकता, ईत्यादि वस्तुगत शुद्ध व्यव-
 हार. बीजो साधन शुद्ध व्यवहार तेना वे जेद

उत्सर्ग साधन, अपवाद साधन जे इव्यनो
 उत्सर्ग (उत्कृष्ट०) नीपजाववा माटे रत्नत्र-
 यिनी शुद्धता, गुणस्थाने श्रेणी आरोग्य रूप,
 वली शुद्ध व्यवहारना वे जेद सद्व्रत अने अ-
 सद्व्रत सद्व्रत ते क्षेत्र अवस्थाने अजेदरूप
 रहेला ज्ञानादि गुण तेना जेद कहेवा ते सद-
 व्रत, अने जे असद्व्रत एटले हुं क्रोधी, हु
 मानी, हु देवता हु मनुष्य, इत्यादि देवतापणे
 हेतुपणे ग्रह्या जे देवगती विपाकी कर्म तेने
 ते उदयरूप परजाव ठे पण यथार्थ ज्ञान विना
 जेदज्ञान शुन्य जीवने एक करी माने ठे ते अ-
 शुद्ध व्यवहार जे आ शरीर म्हारु ठे अथवा
 शरीर ते हु वुं, इत्यादि संश्लेषित व्यवहार अने
 जे धन्यधान्यादि राज्यस्त्री वली पूत्र कलत्र
 कुंडुवादि म्हारु ठे एम कहेवु ते असंश्लेषित व्य-
 वहार वली व्यवहारना वे जेद कहे ठे एक व्हे
 चणरूप व्यवहार, बीजो प्रवृत्ति व्यवहार. ते प्रवृ-
 तिना त्रण जेद (१) वस्तु प्रवृत्ति (२) साधन
 प्रवृत्ति (३) लौकिक प्रवृत्ति तेमा साधन प्रवृत्तिना
 त्रण जेद (१) जे अरिहतनी आज्ञाये शुद्ध

साधन मार्ग, इह लोक संसार पुञ्जल जोग
 आसंसादि दोष रहित जे रत्नत्रयिनी परिणतिपर-
 जाव त्याग सहित ते लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति
 (२) जे स्याद्वाद बिना मिथ्याग्निनिवेश सहित
 साधन प्रवृत्ति ते कुप्रावचनिक प्रवृत्ति (३) जे
 लोकना स्व स्वदेश कुलनी चाले प्रवृत्ति ते लोक
 व्यवहार प्रवृत्ति इत्यादि द्वादश सार, नय चक्र
 आदि ग्रंथोमां एक एक नयना सो सो जेद कहा
 ठे ते जैनशासन रहस्यना जाण महात्मालनी
 निश्चाए ते ग्रंथोमांथी जाणवा धारवा ए व्यव-
 हार नय कह्यो

ऋजुसूत्र नय

॥ ऋजु अवकं वस्तु सूत्र यतीति ऋजुसूत्र ॥

ऋजु एटले सरल बोध एटले वर्तमानपणे
 उत्पन्न थयो वस्तुनो अवबोध ते ऋजुसूत्र ते
 शीवाय-भुत थने जविष्यकाळ ते ऋजुसूत्र नय
 नी अपेक्षाये अठतो ठे केमके.-अतितकाळ तो
 विणसी गयो थने जविश्यकाळ आव्यो नथी
 तेथी ऋजुसूत्र नय तेने अवस्तु माने ठे थने

जेम,—(१) ईन्द्रादि धातु परमैश्वर्यने अर्थे ठे
 तेथी परम ऐश्वर्यवन्त ते ईन्द्र (२) शक्रन् ए-
 टले नविन विशक्ति युक्त ते शक्र (३) पुरदर ए
 टले दैत्यने दरे एटले विदारे ते पुरदर (४) श
 चि एटले ईन्द्राणी तेनो पति ते शचिपति आ
 सघळा धर्म ईन्द्रमा ठे तो पण जे देवलोकनो
 घणीठे तेनेज ईन्द्र ए नामथी बोलावे पण बीजा
 नामादि ईन्द्रने ईन्द्र कहे नही टुंकामां एटबुज
 के-पर्याय नामना जे जे अर्थ थाय ते सर्वने
 जिन जिन अर्थ सुचवे-कहे ते समजिरूढ नय
 पण एकार्थ न जाणे न ग्रहे ते समजिरूढ
 नयाजास कहेवाय ठे

एवम्भूत नयनु स्वरूप

शब्दनी प्रवृत्तिनी निमित्तभूत जे क्रिया ते
 विशिष्ट सयुक्त जे अर्थ, तेने वाच्य जे धर्म तेने
 जे पहोचतो होय, एटले कारण कार्य धर्म स
 हित तेने एवम्भूत नय कहिये जेम ऐश्वर्य स-
 हित ते ईन्द्र, शक्र रूप सिंहासने वेसे ते शक्र
 अने ईन्द्राणीनी साथे वेसे ते शचिपति एम

शब्दनां जेट्खां पर्याय नाम धृतां होय ते सर्वमां
 पहोंवता ज्ञावने ते नामथी बोलावे, अने जे
 पर्याय पहोंवतो देखे नही ते पर्यायनी ना कहे,
 ज्यां सुधी एक पर्याय जंणो ठे त्यां सुधी सम-
 जिरूढ नय कहेवाय अने सर्व वचन पर्यायने
 पहोंचे त्यारे एवंभूतनय कहेवाय हवे एवंभूत नया
 ज्ञास कहे ठे. जे पदार्थना नाम जेदनो जेद देखीने
 पदार्थनी जिनता कहे. जेम हाथी घोमा हिरण्य
 जिन ठे तेम जिनपणुं माने जेम अर्थ जिनपणा
 माटे घट्थी पट जिन ठे तेम ईन्द्रथी पुरंदरादिपणो
 जिन माने तेने एवम्भूत नयाज्ञास कहिये.

ए सात नयमां पहेला च्यार नैगम, सग्रह,
 व्यवहार अने रूजु सूत्र नय ते अविशुध्य ठे.
 कारण के ज्व्यने सामान्यपणे कहेवाने पात्र ठे.
 ए नयनुं नाम (अर्थ) ज्व्य नय अथवा
 ज्व्यार्थिक नय ठे अने शब्द, समजिरूढ-अने
 एवम्भूत ए त्रण नय विशुद्ध ठे कारण के —
 शब्दना अर्थनी एने मुख्यता ठे पहेला चार नय
 ते जेदपणे वचनने बांहे ठे. अने शब्दादि त्रण
 नय ते लिगादि अजेद वचने अजेद कहे तथा

जिन्न वचनने जिन्नार्थ कही माने, अने समजि-
 रुह नय ते जिन्न शब्द तेने वस्तु पर्याय न माने,
 तथा एवम्भूत ते जिन्न गोचर पर्यायने जिन्न
 माने उदाहरण,—जे चेष्टा करतो होय तेने
 “घट” माने पण घरना खूणो पम्यो होय तेने
 “घट” कहे नहीं तेम जे चित्रकळा करतो
 होय अने ते उपयोगे वर्ततो होय तेने चित्र
 कार कहे पण ते चित्रकार सुतो के जमतो होय
 तेने चित्रकार कहे नहि, कारण के ते वखते
 उपयोग रहित ठे माट ए नय ते शब्द अने
 अर्थने अनेदपणो माने ठे अने अर्थ शुन्य
 शब्द ते ए नये प्रमाण नथी, शब्द प्रधान अर्थ
 ते अव्यने गौणपणे वर्तता शब्दादि त्रण नय
 ठे एम “तत्त्वार्थ टीका” मां कह्युं ठे ए सात
 नयमां पहेलो नैगम नय ते सामान्य अने वि-
 शेष वनेने माने (१) सग्रह नय ते सामान्यने
 माने (२) व्यवहार नय ते विशेषने माने अने
 अव्यार्थावलम्बी ठे (४) रुजु सूत्र तो विशेष
 ग्राहक ठे ए च्यार ते अव्य नय ठे अने पा
 ठला शब्दादि त्रण नय ते पर्यायाधिक विशेषा-

वल्लम्बी ज्ञाव नय ठे तथा शब्दादि नय ते नाम,
स्थापना, अने ड्रव्य ए (त्रण) निक्षेपाने अ-
वस्तु माने ठे

॥ तिन्ह सहनयाणं अवहु ॥

ए अनुयोगद्वारुं वचन ठे ए सात नय
परस्पर सापेक्षपणे ग्रहे ते समकित्ती जाणवा अने
जो ए नय परस्पर विरोधी होय तो मिथ्यात्वी
जाणवा ए अधिकार श्री अनुयोगद्वार सूत्रथी
कह्यो. ए रीते पहेला नैगमनयनो विस्तार
घणो जाणवो अने बीजा संग्रह नयनो परिमित
विषय ठे एटले थोमो ठे कारण के सत्ता मा-
त्रनो ग्राहक संग्रह नय ठे. ठती सत्ताने संग्रह
नय ग्रहे अने नैगम तो ठता ज्ञाव अने संक-
ल्पपणे अठता ज्ञाव सर्वने ग्रहे अथवा सामान्य
विशेषे वे धर्मने ग्रहे ते माटे नैगमनो विषय घ-
णो ठे. संग्रहनय ते सत्तागत सामान्य विशेष
वन्नने ग्रहे ठे. अने व्यवहार ते सत् एक विशेष
नेज ग्रहे ठे, माटे संग्रह नयथी व्यवहार नयनो
विषय थामो ठे अने व्यवहार नयथी संग्रहनय

ते बहु विषयी ठे रजुसुत्रनय ते वर्तमान
 विशेष धर्मनो शाहक ठे माटे व्यवहारथी रजु
 सुत्रनय ते अल्प विषयी ठे, अने रजुसूत्रथी व्य-
 वहार बहु विषयी ठे रजुसुत्र नय ते वर्तमान
 कालने ग्रहे अने शब्द नय कालादि वचन लि-
 गथी व्हेचता अर्थने ग्रहे अने रजुसूत्रनय ते
 वचन लिगने जिन्न पामतो नथी माटे रजुसूत्र
 थी शब्दनय अल्प विषयी ठे अने रजुसूत्र
 बहु विषयी ठे शब्द नय सर्व पर्यायनो एक प-
 र्यायने ग्रहता ग्रहे अने समञ्जिरूदनय ते
 जे धर्म व्यक्त ते वाचक पर्यायने ग्रहे ते माटे
 शब्दनयथी समञ्जिरूदनय ते अल्प विषयी ठे
 अने समञ्जिरूदनय ते पर्यायनो सर्व काळ गवे-
 ष्यो ठे) माटे समञ्जिरूदनयथी शब्दनय ते
 बहु विषयी ठे एवम्भूतनय ते प्रतिसमये क्रिया
 जेदे जिन्नार्थपणो मानतो अल्प विषयी ठे ते
 माटे एवम्भूत नयथी समञ्जिरूदनय ते बहु विषयी
 जाणवो

नय समञ्जिरूदनीनु स्वरूप

जे नय वचन ठे ते पोताना नयने स्वरूपे

“अस्ति” ठे अने पर नयना स्वरूपे तेमां
 “नास्ति” ठे एम सर्व नयनी विधि निपे
 (प्रतिपेधे) करिने “सप्तजङ्गी” लपजे, पण
 नयनी सप्तजङ्गी ते विकला देशीज होय अने
 सकला देशी सप्तजङ्गी ते प्रमाण ठे माटे नयनी
 “सप्तजङ्गी” न लपजे

लुक्तंच -रत्नाकरावतारिकायाम् -

॥ विकला देश स्वभावा हि नय सप्तजङ्गी
 वस्त्वंश मात्र प्ररूपकत्वात् सकला देश स्वभावानु
 प्रमाण सप्तजङ्गी संपूर्णवस्तु स्वरूप प्ररूपकत्वात् ॥

यथायोग्यपणे नय अधिकार कह्यो

तेमां साधक आत्मानो शुद्ध परिणति रूप
 धर्म तो निश्चय नयमां शक्तिजावे तिरोजावीपणे
 रह्यो ठे तेने प्रकट करवा माटे शुद्ध व्यवहारनी
 जरूर ठे अने शुद्ध व्यवहार तो जेद ज्ञाननुंज
 नाम ठे, ते लपयोगीपणे शुद्धनयनी अपेक्षाए
 स्वपर विज्ञाग ज्हेवण पूर्वक जिनता करी स्व-
 स्वरूप रमणपणे वर्ते, वली शुजाशुज व्यवहारमां
 पोतानुं अहंकर्तापणु ठोमे, बाह्यदृष्टि टाळे, अंतर्दृष्टि
 करे, मान अयमान लाज अलाज अने शाता अ-

ज्ञाता इत्यादि कारणे समजावे वर्त्ते, पर वस्तुनुं संबं-
 धोपाणुं पूर्वकृत कर्मनु उदयानु-सार अनुकुळ प्रति-
 कुळ मनुष्यादि संध मळ, वली सुखदु खदि जे जे
 प्राप्त थाय तेने समजाव पूर्वक काया योगे अव्या-
 पकपणे समताजावे वेदाने निर्जरे एम अंतर्गत
 ज्ञानोपयोगे अने सहज वीर्यनी स्फुर्णा शक्तिए
 वर्त्ततो जीव उपरना गुणस्थाने चढे अने आग-
 ळना गुणस्थानने ठोने इत्यादि सर्व साधन नि-
 श्रयनयनी दृष्टिये अने शुद्ध व्यवहार अपेक्षाए
 करे. त्या आत्ममत्ताए शक्ति जावे तिरोजावीपणे
 रहेलो धर्म तेने व्यक्तिजावे कार्यपणे प्रकट करे
 ए पद्धति ठे. माटे हे ज्ञान्यात्मा -तमे शीव सु-
 खना ईश्वरक, अजिज्ञापी हो तो अतर्दृष्टिये स्व-
 धर्मग्राही निश्रयनयनो पद संवर निर्जरारूप तेने
 धारो एटले ग्रहण करो अने वाह्यदृष्टिए परधर्म-
 ग्राही शुजाशुज व्यवहारनो पद आश्रव वध
 हेतु रूप, तेने तिदाण ज्ञान खडग धाराए वेदी
 सहजगत एकत्व रमणिपणे शुद्ध निश्रय-नय
 धारो एटले तेमा लय पामो ए बीजी गायानो
 अर्थ कह्यो

ज्ञाननुं फळ ते शुद्ध प्रकास्युं,
तेथी समकित शुद्ध होवैरे ॥

एह अर्थ सुधो मन धारो,
विशेषावस्यक एम केवैरे. ज्ञान पद० ३

अर्थ:- (ज्ञान के०) जीव अजीवादि पट्
द्रव्यनुं तथा नवतत्त्वनुं जाणपणुं थाय, तेनुं
नाम ज्ञान अने ए ज्ञाननुं फळ ते ज्ञानजाव,
तद्गत परिणाम पामे, अने परानुयायि दृष्टि ट-
ळता अने स्वरूपानुयायि दृष्टि थतां, हेयोपादेय
बुद्धि प्रकटे, तेनुं नाम ज्ञाननु फळ कहिये एटले
हेय ते जीवने त्यागवा गोन्वा योग्य, अने उ-
पादेय ते ग्रहवा आदरवा योग्य शुंठे, तेनो वि-
चार करवो, त्यारे पट् द्रव्य कहा तेमां धर्मास्ति
काय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अने
काल ए चार द्रव्य तो पोतपोताना स्वजाव प-
र्याये करीने शुद्धज ठे, (नोंखा ठे) अने अ-
नादि संवंधे जीव पुद्गळ वेहुनो संयोग खीर
नीर द्रष्टान्ते एकपणे मिलित ठे त्यां चर्मचक्रु
ए नयी पण वस्तुताए जो-

तां जिन ठे, जीवथी पुद्गल जुदो अने पुद्गल
 लथी जीव जुदो, एम विनाग व्हेंचणपूर्वक दीव्य
 चक्षुसे प्रत्यक्ष प्रमाणे निर्णय थाय वळी नव-
 तत्व कहा तेमा मवर, निर्जरा अने मोक्ष ए
 त्रण तो जीवनाज गुण ठे, ते जीवमा अज्ञेद
 स्पे-अजिन ठे (जुदा नथी) एम ए चार तत्व
 गहवा-आदरवा योग्य ठे अने पुण्य, पाप, आ-
 श्रव अने वध, ए चार तो पुद्गलनाज गुण
 जेद ठे ते पुद्गलथी अजिन ठे. (जिन नथी)
 अने पुद्गल कह्यो ते अजीव ठे एम पांचे तत्व
 मोक्षा (त्यागवा) योग्य ठे ए रीत्ये श्रद्धापूर्वक
 यथार्थ थाय त्यारे हेयोपादेय बुद्धि कहेवाय त्या
 ज ज्ञान कहेवाय, हेयोपादेय बुद्धिना अज्ञावे
 जे ज्ञान होय (जाणपण होय) तेनुंज नाम
 अज्ञान ठे हवे हेयोपादेय बुद्धिनु प्रकटवु परा-
 नुयायिदृष्टि टळता, अने स्वस्वानुयायि उदृष्टि-
 थता, उपर कह्यु त्याज अनुभव प्रकटे, ते अत्र-
 सरे चेतननु ईन्द्रि नोईन्द्रिगत व्यापक परिण
 मनगु होय नहि पालटीने सहज वीर्यनी अ-
 क्तिये, अत करणे तद्गत परिणमान्यु ठे, ते का-

रणे ईन्द्रिनो ईन्द्रिगत जन्तापणानो लपयोग
 शुन्य होवायी पांच ईन्द्रियोना विषयनुं वेदवा
 पाणुं (अनुभववापाणुं) चेतनने होय नहि. तेम
 ईन्द्रियो पण लपयोग शुन्ये विषय ग्रहवामां
 शक्तिमान थाय नहि वळी मनना संकल्प वि-
 कल्प पण होय नहि त्यां चैतन्य शिवरूप अ-
 नुभव चुवने लपाधीयी अळगो स्थीर थयो,
 त्यांज सहज वीर्यनी स्फुरणाए पोतीकुं नित्या-
 नित्यादि स्याद्वाद स्वप्नावमय स्वरूप सिद्ध नि-
 ष्पन्न स्वप्नाव तद्रूप, द्रव्यास्तिक. पर्यायास्तिक
 नयापेक्षाए अनुभवे, प्रत्यक्ष प्रमाणे निर्धार थाय
 परमानन्द प्रकटे, अतिन्द्रियपणानुं अंशे अव्या-
 वाध सुख अनुभवे-भोगवे-आस्वादे, ईहां शुद्ध
 परिणतिनो अंश प्रकट थयो तेनुंज नाम ग्रन्थी
 न द ठे इहां अचेतन सत्ता, अने चेतन सत्ता,
 एक एकथी जिनपणेजासी, चेतन सत्ताए आ-
 वरणपणे अचेतन सत्ता रही ठे, ते नांखी जासी
 रही तो ठे, पण नास्तिजावे स्थितिनी मर्यादाए
 रही ठे तेमांथी औदयिक जावे प्राप्त थाय तो
 निर्जस्वाने चेतनराय आ अवसरे

शक्तिवन्त वे, एम हेयोपादेय बुद्धि प्रकट यतां
 (शुद्ध प्रकाश्यु के०) आत्मसत्ताए परमात्मपद
 शक्तिभावे तिरोजावीपणे रहेहुं ते विदानद स्वरूप,
 क्षायक लब्धि, ज्योतिमय, प्रत्यक्ष प्रमाणे
 अनुभवरूप, उद्योतमय प्रकाश थयो, (तेथी
 के०) उपर कह्यु ते प्रकाशथी वली शुद्धात्म
 स्वरूप स्पर्शथी (समकित् शुद्ध हावेरे के०)
 शुद्ध समकित् गुण मोक्ष प्राप्ति हेतु, चारित्र
 रायनो पक्षी, जिनेन्द्रदेवनी आज्ञा धारक, ज
 न्तानो उच्छेदक पूर्ण समाधि हेतु, वर्मकार्यमा
 महा भगविकरूप, चौथा गुणस्थाने प्रथम प्रकट
 थाय (एह अर्थ के०) उपर कह्यो ते अर्थ
 (शुद्धो के०) सरळभाववर्तिनो, स्वस्वरूपगत
 व्यापक-परिणमन-रमण-अनुभव करता गुण
 श्रेणी ए गुणस्थाने उत्तरोत्तर चढवानो, अने
 आगला गुणस्थानने ओढवानो मार्ग हे ज्ञान्या
 त्मा तमे मूळ स्वरूपे समजावपणे ग्रहण करो,
 अने श्रौदयिक भावमा परिणमो नहि श्रौद
 यिक भावमा परिणमता राग द्वेष प्रकटे त्यां
 आत्माने आवरण लागे, तेनु नाम जाव. हिंसा

ठे ते अनादिनी मिथ्याचाल, वक्रपणे, अज्ञान
 जावे बाह्य प्रवृत्ति ए थइ रही ठे, ते चाल ज्ञान
 द्रष्टि ए ठोर्नी (त्यागी) सहज जावे वर्तवुं (एम
 मन धारो के०) हे मोक्षार्थी जाइथ्यो ?-तमारा
 मनमां आत्महित अर्थे अप्रमत्तादि शुद्ध उप-
 योगे धारो-ठसावो-अने वर्तो [विशेषावस्यक
 एम कहेवैरे के०] एमज विशेषावस्यक ग्रन्थमां
 जिनजद्रगणि क्षमाश्रमण दश पूर्वधर तेमणे
 उपदेश कर्यो ठे ते कह्यो अमारी मति कल्प-
 नाए कहेता नथी ए तृतीय गाथार्थ-

तत्व अर्थ जुगती आत्म गुण
 ए निश्चय नय धारोरे,
 लोक प्रसिद्ध जाख्यो व्यवहार ते
 तत्वारथ टीकाए विचारोरे. ज्ञान० ॥४॥

अर्थ.- (तत्व अर्थ के०) ज्ञान, दर्शन, चारि-
 त्रनो अर्थ हेतु युक्तिपूर्वक विचारीए तो एज
 आत्मगुण आत्मशक्तिये प्रकटे ठे अने ए श-
 क्ति व्यक्तिजावे थाय तेनुंज नाम निश्चय नय
 ठे अने जे लोकोने विशे प्रसिद्ध थवुं एट्ले

जश ओजा बहु मान पामवुं, लोकमां धमी क-
हेवमावुं ए सर्व व्यवहार जाणवो, एविशे कांड
धर्म ठे नहि, तेवुं तत्वार्थ ग्रयनी टीका आदिमां
कहु ठे ते अहि कहीए ठीए क ज्या ज्ञाननी
रमणता नथी अने व्यवहार मार्गनी क्रिया कष्ट
तप जप करे, लोको तेने तपशी तथा व्यव
हार मार्गे चालवावाळा जाणे, घणु वखाणे, पण
परमात्माए तेमने अधर्मी कह्या, धर्मी कह्या
नथी ते श्री आचाराग सूत्रे पावाअकम्मस्सव-
हारेणविट्टकगृणाजवाहीजापइ इति ॥

जे स्वस्वरूप जाणतो नथी रमण करतो
नथी, अने पर ज्ञाव जे व्यवहार क्रिया प्रमुख
करे तेमणे विचारु के धर्म तो स्वज्ञावमा कहुं
ठे अने परज्ञावमा तो कर्म कहु ठे, माटे ए ठे
काणे धर्म न कहेवाय, धर्म खेंचताण के हठवादे
आवतो नथी, धर्म तो रहेज स्वज्ञावे ठे परज्ञाव-
ना त्याग करे, अने राग द्वेष मोहथी रहित थाय,
पोताना स्वरूपे रमण करे, ज्ञान दर्शनमा स्थिर
ज्ञाव थाय, तेने धर्म तथा चारीत्र कहीए एवुं श्री
हेमचंडाचार्यजीए योगशास्त्रमा कहुं ठे ते श्लोक॥

आत्मैवदर्शनज्ञानचारीत्राण्यथवायन ॥

यन्नदात्मकएवैपशरीरमयितिष्ठन्ति ॥ १ ॥

आत्मानमात्मनोवेत्तिमोहत्यागाद्यमात्मनि ॥

तदेवतस्यचारित्र्यं तद्ज्ञानं तच्च दर्शनम् ॥ २ ॥

मुक्तितो एक पोताना आत्म स्वरूपमां रमे
तेनि थाय अने क्रिया कष्ट करे तेनुं फळ पुन्य,
वा पाप एक जोगवे एथी धर्म थाय नहि. एवं
खट् दर्शन समुच्चय ग्रंथे कह्युं ठे ॥ तत्रज्ञानादि
धर्मैभ्यो, जिन्नाजिविवर्त्तमान् ॥ शुभाशुभकर्म
कर्त्ता, ज्ञोक्ताकर्मफलस्य ॥ १ ॥ ए रीते व्यव-
हार ते लोक रंजनपणामां ओजनीक ठे, एम
जाणीने निश्चेनी रमणता करवी इति चतुर्थ
गाथार्थ. ॥ ४ ॥

एक जीव ज्ञान अन्यासे,

बीजो कीरीया धारोरे,

अंतर बेहुमां सूर्ज खजुवो जेम,

योग छष्टि समुच्चये विचारोरे ॥ ज्ञा ५ ॥

अर्थ.—जीवने ज्ञान विना मुक्ति थाय न-
ही, क्रिया तो शाशननी उल्लखाण मात्र ठे

शा माटे जे कर्मनो नाश करवो अने मुक्तिनुं
 पामवुं ते तो निज स्वरूपने लुळख्या विना न पा-
 मिये माटे ज्ञाने करिने पड्ढव्य जाणे अने तेमां
 म्वपर जिन्न करे पठी पोतानु स्वरूप पोते धारे
 तेवुं जे ज्ञानोपयागीपणुं तेथी कर्मनो नाश था-
 य अने मुक्ति मळे ते माटे ज्ञान ठे, ते सूर्य स
 मान ठे अने क्रिया ते परब्राह्मण ठे तेथी कर्म
 नाश थाय नही माटे खद्योतना तेज जेवु कहु
 अने ज्ञाननु तेज सूर्यना जेवुं ठे तेम योग-
 ङ्घि ग्रथमां कहु ठे

उक्तच—

तात्विक पदपातश्च, ज्ञावशुन्या चया क्रिया ॥
 अतयोस्तर ज्ञेय, ज्ञानु खद्योत योरि व ॥ १ ॥

ते माटे समजीने ज्ञाननो अन्यास करवो
 अने अतरग उपयोग राखवो ईति पंचम गा-
 थार्थ ॥ ५ ॥

सोमप प्रकरण माहे दाख्यु,

उत्तम ज्ञान सो रगरे ॥

मध्यम क्रिया रति ते जाख्या,

मूरख माने लीगरे ॥ ज्ञान० ६ ॥

ज्ञान साथे जेने रंग लाग्यो ते उत्तम,
 अने क्रिया साथे रंग लाग्यो ते मध्यम, अने
 वेश देखीने जे मोह्या ठे तेने अज्ञानी कहीए
 एवं पोम्पक प्रकरणमां कह्युं ठे

(ज्ञान) ते जाणवापाणुं तेना अनेक जेद
 ठे एख्ले क्रिया आचारना जाणने ज्ञानी कहे,
 तथा गणीतानुं योग, धर्मकथानुं योग, तथा
 देवलोक, नरलोकनी रीछि संपदा, गती अ-
 गती, आयुष ईत्यादि जाणनारने ज्ञानी कहे.
 तथा वेद, पुराण, वश्टक, ज्योतिष, सामुद्रिक
 ईत्यादि शास्त्रना जाणने ज्ञानी कहे पण ते
 ज्ञान व्यवहारथी ठे पण निश्चयथी ज्ञान कहे-
 वाय नही ज्ञान तो एक आत्म स्वरूप जाणे
 ते ज्ञानी बीजाने ज्ञान कहेवाय नही एवो जेने
 एक आत्म स्वरूप उपर रंग लाग्यो ते ते उत्तम
 पुरुष जाणवो तथा जे क्रिया रागी मध्यम कख्या
 तेनुं कारण ए ठे के ममकिन सदि जीव ठे
 अने क्रियामां राग धरे ठे तेने मध्यम कख्या ठे
 कारण के क्रिया ठडा गुणस्थान सुवी ठे, उप-
 रांत क्रिया ठे नही ते उपरान सुवी

न्म मरण छले नही अने हजी अनेता जन्म मरण परपराए रखा पण होय ते भाटे एने जव अश्वी कहीए

उक्तव,—

जवाअवाल्य न तुल्य मेतत्,
प्रमत्त नाम क्रिया पदमेत ॥
गुण्ये स्थानम सरय वृद्धा,
प्रमाद हाने प्रवर ज्ञातव्या ॥ १ ॥

वृद्धा गुणस्थान सुधी चढे अने आत्मानी तद्वत् लंलाखाणे खप न करे अने क्रिया उपर राग राखे तो जवअश्वी लंलगी शके नही जे अश्वप्रमादि साधु आत्मोपयोगी तेज लंलगे, बीजाथी लंलगाय नही अही कोई कहेशे जे आश्वु आश्वु कष्ट सहिये छिये, समारथी अलगा थया छिये, ते हमारु शु फोगट थयु ? तेनो उत्तर जे एम कष्ट करवाथी कार्य सिद्ध थतु होय तो तिर्यच पचेंडी जीव बहु कष्ट सहें ठे एटले घामा, कळद शत्यादि कुधा, तृषा, टाढ, ताप, तामना, तरजना, प्रमुख बहु परिपह सहें

ठे माटे तेमनुं कार्य सिद्ध थवुं जोईए कारण
के तमाराथी एना जेटलो परिषह सहेवातो नथी,
माटे कष्ट सहेवाथी कार्यसिद्धि थती नथी, एतो
लोकनां मन रीऊववा थने पोताने लोको माने
पुजे माटे ए कष्ट सहन करवुं एम ठरे ठे पण
आत्म स्वरूप जाण्या विना स्वपरनी व्हेचण था-
य नही, थने स्वपरनी व्हेचण विना यथार्थ
परिसह सहेवाय नही, थही तो हठवादथी से-
वो ठो तथा शास्त्रमां पण वचन ठे

उक्तच,— उपदेशमाला मध्ये

चालशंकठकरेश्तिबंधम्मं धारेश्जणाणुवि-
त्तीएसोपवयणमगस्सवैरी नुत्तथहाठंदो ॥ १ ॥

एवा कष्टना करनाराने कंइ साधुपणुं मा-
लम पमत्तुं नथी इहां कहे के उग्रकुल, जोग-
कुल, राजानुकुल, द्वात्रीयकुल, गेठशाहुकार से-
नापती, एवा मोटा मोटा कुलमां जन्मेला वैरा-
ग्य पामीने धन, धान्य, स्त्री, पुत्रादि रिद्धि ठां-
मीने चारित्र लीधां ठे थने लाज मूकीने घरघर
जिदा मागवा जवी ए कंइ न्हानुं कष्ट नथी,

केमके कुक्षिशंखळ मुनिने निरलोपि कह्या, ते-
 मनु कार्य शु न थाय ? अथय्य थवुं जाइए.
 तेनो उत्तर - जिदावृत्तिथी कार्यसिद्धि थतुं हो
 य तो जिदावृत्ति करवावाला घणा जीव मालम
 पने ठे तो तेनु कार्य सिद्ध थवु जोइए, ईहां
 कहे के ते लोको दोष टळीने आहार लेता न-
 थी, माटे एनु कार्य न थाय अने आपणे दोष
 टळीने शुद्ध आहार लइए छिये तेथी कार्य थाय
 तेनो उत्तर - ए जिहु दिन जिखारी दोष टळना
 नथी पण पट् दर्शनना जेखधारी सर्वे पोतपोताना
 कल्प व्यवहार प्रमाणे दोष टळी जिदा ले ठे
 माटे तेनु कार्य थवु जोइए, अही कहे के - ए
 वीतरागनी आज्ञा उहार ठे एतो अज्ञानी ठे
 माटे अज्ञान कष्टनु फळ कार्य सिद्ध ठे नही,
 अने आपणे आज्ञा सहित ठिये माटे आपणुं
 कार्य सिद्ध थाय तेनो उत्तर - आपणा घरमा
 कल्प व्यवहार एक रीतनो ठे नही अने मूत्र
 एम कहे ठे जे कल्प उलघवाथी कर्म वधाय एवो
 तो निश्चय ठे नही

उक्तं च,— सूत्र कृतांग मध्ये

आहागमांश्चुंजति । अणमणोसकम्मुणा ॥

जीवलित्तेवियाणिजा । अणुचलित्तेत्तिवापुणो ॥१॥

एतेहिदोहिठाणेहि । ववहारो नविजई ॥

एतेहिदोहिठाणेहि । अणयारजजाणए ॥२॥

एहले सूत्रकारे ए रीते कह्युं ठे ते जोतां कल्पमां धर्म मालम पन्तो नथी पठी तत्व तो केवली जाणे अने कल्पने विचारी जोशए तो ते कल्पथी जिन हस्तिजसूरि कृत कल्प ठे अने तेथी जे जे पन्ति पठीथी थया तेमना कल्प ए सर्वे अणमलता जुदा जुदा ठे तो कयो कल्प सत्य मानवा योग्य ठे अने कयो कल्प असत्य मानवा योग्य ठे एहला माटे क्रियानी रुचि विशेष ज्ञान विना करे ठे, अने समकित पामेला तेमने मध्यम कहा ठे. अही कदेशे के एथी पुण्य बन्ध थाय के न थाय ? तेनो उत्तर—जे जेवुं कष्ट ने जेवा प्रणाम तेवुं पुण्यबंध थाय पण एथी अधीक थाय नही कारण के,— श्री जगवती सूत्रे कह्युं ठे जे जगवानना हाथ

दिकित्तिं गिष्य तेमणे वार वरस सुधी चोगुं चा-
 स्त्रि पाद्यु, डुपण लागवा दीधु नथी, अने ठठ ठ
 ठनु पाणां रुस्ता हता ते पहेले देवलोकें गया,
 मध्यस्थ आयुष्यनी स्थिति एतो एवी रीतथी चा
 स्त्रि पाद्युं ने आराधक कह्या ते पण एथी उ
 ची गतीए गया नथी माटे तमे तंमारा मनने
 विवारी जुळ अने शास्त्रने विषे तो सप्त लवी
 आ देव सर्वार्थसिद्ध विमाने जवावाला तेमने
 ञवअश्वीमा कह्या ठे

उक्तव,— उपदेशमाला मध्ये

जैतालवसत्तमसुरविमाणवासीविपरिव्रति ।

सुराचितिज्जानसेसंससारमासयकयर ॥ १९ ॥

कहतत्रन्नश्सुखं ॥

सुचिरेणविजस्सडुखमच्चियइ ।

जचमरणावसाणे । ञवससाराणुवधीच ॥ २० ॥

टीका - जइइतियदितावतलवससमा सुरा
 सर्वाऽनुत्तरविमानवासिनो देवा स्ते पाविमानानि
 अनुत्तगविमानानितन्निवासिनोपि अर्थानुत्त वि
 मानस्थिता अपि देवा इत्यर्थ ॥ तादृशा अपि सुरादे

वायदितावत् प्रतिपतंतिआयुप क्षयेतातश्चवंतिता-
 न्यायुं पिअपिपूर्णानि चवंतिर्हिचित्यमानंविचा-
 र्यमाणंगोपं असारं अनुत्तरसुरापेक्षयाहीनंसंसारे
 अस्मिन्जीवलोकेशाश्वतं स्थिरकरंकिवस्तुशाश्वतं
 अपितुनकिम पीत्यर्थो ऽतोधर्मएवनित्य. ॥१९॥क-
 द्दृष्टिकथं तद्भवएवतेतसुखंअपिनुतत् सुखंसुखंनक
 श्यतेसुचिरेणाऽपिवहुकालेनापि पव्योपमसागरोप-
 मानंतरमित्यर्थं जस्ससुखंस्यातेऽु खंआलीयनेआ
 ष्लिष्यतियत् सखाऽनंतरऽु खं तत्सुखऽु खमेवत्ये
 र्थं यत्तस्मात्कारणात्मरणावसानेमरणप्राते मर-
 णावस्थायामित्यर्थं सुखंकथंचूतंभवोनास्कादिअव-
 तारस्तस्मिन्संसार परित्रमणतुअनुबंधतेऽत्येवंगी
 लयदनंतरंगर्जावासादिऽु खंप्रवतेतत्कथंसुराणाम-
 पि ॥ ३० ॥

एवा जे सप्तलवीआ सुर कहेतां सर्वार्थ-
 सिद्ध वैमाननुं सुख ते कोण जोगवे जेने सात-
 लव आयुष्य वाकी रहे एवा जे साधु ते जोग-
 वेतो एवो जे आत्मानो उपयोग तीव्रण अने
 अगीयास्सु गुणस्थान पामेला ते धणी जोगवे
 जो कदापि आयुष्य वधारे होय, अने

एवो ने एवो जाव रहे तो ते अथवा मरे मोक्षे जाय एव
 श्री जगवतीजीमा वचन ठे पण उपशमश्रेणि
 वाळो अथवा मरे अथवा पाठो पढे ते माटे मरे
 तो सर्वार्थसिद्ध विमाने जाय, पढे तो निचेना
 गुणस्थाने आवे एमा मदेह नही पण ए श्रेणि
 आरोहण कर्तु त्या अंतरगत उपयोग होय वा-
 ह्योपयोग होय नहि त्या सर्व अंतरक्रिया अने
 श्रुत ज्ञानोपयोगी होय पण अवधी मन पर्यंत
 ज्ञानोपयोग होय नही एवा आत्मोपयोगी शुद्ध
 ध्याननाभ्याता उपशमश्रेणि पामीने सर्वार्थसिद्ध
 विमाने देव थाय तेमनु पुन्य अथवा वीरुप कह्युं
 पण ज्ञानिए वखाण्यु नही ते टीकाथी विचारवु
 एट्ठे पुण्य तो जवनी वृद्धी करनाहं कह्यु ठे
 एथी ससार घटे नही ए बीजो मध्यम आत्मानो
 जाव कह्यो

हवे बीजो अधम आत्मानो जाव कहिये
 त्रिये अधम आत्मा कहेता अज्ञानी समकित
 रहित ते अथवा कृष्णपदीया जीव जाणवा,-
 अधम आत्मा ते ज्ञान पाया नही, अने एक

वेश देखीने (वेश) लींग धारण कर्युं ठे एटले
 माथुं मुमाव्युं ठे, लंगो मुहपत्ती राखे ठे पण व्र-
 तादि कशुंए खुं नथी एटले कञ्चन कामीनि
 कशुंए बुट्युं नथी, एवा जे परिग्रहधारीने साधु
 करी माने तेने बाल अज्ञानी जाणवा अथवा
 पोते एवो लींग राखे अने कहे के हुं साधु महा-
 वीरनो जेखधारी ज्ञिदावृत्ती करु बु तेनो उत्तर
 जे महावीरे एवो जेख राख्यो न्होतो अने महावी-
 रना शासनमां एवो जेख कह्यो नथी जे केश
 समाखा, पटीयां पाम्वा, तेल, धूपेल, अत्तर घा-
 लवां, सारां बुगमां धोवमावीने धोतीजोमा कस-
 वी जारे कीमतना पहेखा, कपमा सारां लुढवां,
 काठमी खोसवी, पाटलीनु पाम्वी, (बुट) पग-
 रखां पहेखां एवो वेश जगवानना मार्गमां ठे
 नही, ए जगवाननुं शासन कहेवाय नही एतो
 तमारी खुशीथी ठेलवग्रज अश्ने फरो ठे पण
 वीतरागनो मार्ग एवो नथी, बली तमो कहो
 ठे के ज्ञिदावृत्ती करिये छिये ते तो जेम ग्रहस्थनी
 पाछळ ज्ञांम जोजक जाट लागेला ठे तेम तमे

एक वधारे लागेला ठो तमने दीधायी एमनु क-
 व्याण थयु नही, तेम तमारुए ज्रीदावृत्तीयी क-
 व्याण थयु नही, कारण के जे साधु मुनिराज
 निग्रथ ठे कचन कामिनीना त्यागी ठे, क्रिया
 आचार स्त्री रीते शास्त्रमां कह्या प्रमाणे पाळे
 तेज जिदा लईने आजीवीका करे ठे, तोपण
 शास्त्रवाला तेमने कहे ठे के पाठला जवे व्रत
 लईने जाग्या तेनुं फल तमने उदय आव्यु ठे,
 एठले पापने उदये ए जिदा तमने लेवी ठरी
 ठे, जो ज्ञान मार्गे होत तो ए ज्रीदाथी तमारु
 कव्याण थात पण आ जिदा ज्ञान विना बाह्य
 क्रिया करीने व्यो ठो ते जाणीए ठिये. जे पुर्व
 कृत पापनो उदय छे एवु श्री पच वस्तु गथमा
 कह्यु ठे —

॥ उक्तच ॥

यदुक्त षडसिक्यवयजगोश्रविहिपावरा।
 पुण्ये तह चव ईति ॥

उक्तच.— ॥ गाथा ॥

चारित्त विहिणस्त,

श्रजिसग यस्त मू श्रकडुस जावस्त ॥

अणाणिणो यजा पुण,
सा पमिसिद्धा जिनवरे हि ॥ १ ॥

जिकं अमंतिअारं,
अमंगया अपरिसुद्ध परिणाया ॥

दीणा संसार फलं,
पावाजु जुत्त मेयंतु ॥ २ ॥

एट्ठे शास्त्रमां एकान्ते व्यवहार मार्गे चा-
ले तेने पापनो उदय कह्यो तो फक्त एक लीग
धारण करीने फरे तेथी सुकित थाय नहि ते
माटे अथम अ्यात्मा तेने कहिये एट्ठे उत्तम ते
ज्ञानरागी मध्यम ते क्रियारागी अने अथम ते
लीगरागी एवु पोडशक प्रकरण मध्ये कह्युंछे

॥ उक्तंच ॥

वाल पश्यतिलिगंम् । मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिम् ॥

अज्ञानक्रियागमनत्वं । बुद्ध परीक्षतेसर्वयत्नेन

॥ इति अष्टम गाथार्थ ॥

मेडकचूर्णसम ते निर्जरा,

क्रिया कष्टथी चाखीरे ॥

एक वधारे लागेला ठो तमने दीधायी एमनु क
 ब्याण थयु नही, तेम तमारुए ज्ञीक्षावृत्तीयी क
 ब्याण थयु नही, कारण के जे साधु मुनिराज
 निग्रंथ ठे कचन कामिनीना त्यागी ठे, क्रिया
 आचार रूनी रीते शास्त्रमा कह्या प्रमाणे पाळे
 तेज जिज्ञा लईने आजीवीका करे ठे, तोपण
 शास्त्रवाला तेमने कहे ठे के पाठला जे व्रत
 लईने जाग्या तेनु फल तमने उदय आव्यु ठे,
 एटले पापने उदये ए जिज्ञा तमने लेवी ठरी
 ठे, जो ज्ञान मार्गे होत तो ए ज्ञीक्षायी तमारु
 कब्याण थात पण आ जिज्ञा ज्ञान विना बाह्य
 क्रिया करीने व्यो ठो ते जाणीए ठिये जे पुर्व
 कृत पापनो उदय छे एवु श्री पंच वस्तु गथमां
 कह्यु ठे —

॥ उक्तव ॥

यदुक्त शकसिकयवयजगोअविहिषावग।
 पुण्ये तद् चैव इति ॥

उक्तव,—

॥ गाथा ॥

चारित्त विहिणस्स,

अजिसग यस्स सु अरुबुम जायस्स ॥

व्याण थाय नही. अही कोई कहेशे जे एक पु-
 ङ्गलपरावर्त वाकी रह्या पठी धर्म स्हामा थाय
 अने तमे तो ते पहेला व्रत्तादि धर्म बतावो ठो
 तेनो उत्तर जे अही संज्ञाए कहेवत ठे पण ध-
 र्मतो अनंता पुङ्गल परावर्त वाकी होय ते कस्वा
 च्छाय अने धर्मकरणी आदरे, सत्य असत्य
 करे एट्ठे सत्य कहेता वीतरागना मार्गनी कर-
 णी ते आदरे असत्य कहेतां जे अन्य धर्मनी
 करणी ते पण आदरे, ए वातमा अंका राखवी
 नही कारण के कृष्णपक्षिया व्रतादि धर्म नही
 पामे तो अजवी जीव केम पामओ अने प्रत्यक्ष
 अजवी जीवोये दिक्काल लीधी अने ले ठे तेमज
 व्यवहारे ठकायनी पांख पुजवे नही, रक्षा करे
 एवां अष्टान्त कथानुयोगे प्रत्यक्ष ठे तो ए अज-
 वी होवा ठतां व्यवहारथी चास्त्रि धर्म पामे तो
 कृष्णपक्षियो केम न पामे ? अपितु पामे ए वातमां
 शका राखवी नही एवा पाठ शास्त्रमां ठेपण ते
 धर्म व्यवहारथी कह्यो ठे माटे निर्जरानी तो ज-
 जना हवे जे शुक्लपक्षिया जीव ते कोई कारण-
 थी अथवा गुरु उपदेशथी दीदा ले अथवा

समुद्रसम निर्जरा ठे जेहनी
ज्ञान सुधारम दाखीरे ॥ ॥ ज्ञान ७ ॥

उपयोगशून्य क्रिया कष्ट करे तेने निर्जरा देमकाना चूर्ण जेटली थाय अने स्वरूपोपयोगी एवा ज्ञानीने समुद्र जेटली निर्जरा थाय हवे ज्ञान रहित क्रिया तेना बे जेद अन्य दर्शन वाळा अज्ञान कष्ट करे तेने वाल तपस्वी कह्या ठे तथा समकित रहित तेना बे जेद शुक्लपदिया १, कृष्णपदिया २, हवे जेने एक पुद्गलप रावर्त काळ बाकी रह्यो ते शुक्लपदिया कहेवाय अने तेथी ववारे ससारकाळ स्थिती बाकी होय ते कृष्णपदिया कहेवाय अही जे कृष्णपदिया जीव तप, क्रिया, कष्ट, व्रत नेम करे तेने तो ससार उपर राग द्वेष उदयमा होय तेने निर्जरा थती नथी एटले अश निर्जरा ते अही गणाती नथी तेने तो कर्म बंध थाय एटले ते व्रत्तादि आश्रवरूप जाणवु तथा जेने ससारादि उपर राग द्वेषनो उदय नथी अने व्रत्तादि करे तेने मेडक कहेता देमकाना चूर्ण जेटली निर्जरा थाय पण एथी एनु क

व्याण थाय नही. अही कोई कहेशे जे एक पु-
 ङ्गलपरावर्त वाकी रखा पठी धर्म स्हामा थाय
 अने तमे तो ते पहेला व्रत्तादि धर्म व्रतावो ठो
 तेनो उत्तर जे अही संझाए कहेवत ठे पण ध-
 र्मतो अनंता पुङ्गल परावर्त वाकी होय ते करवा
 च्हाय अने धर्मकरणी आदरे, सत्य असत्य
 करे एखे सत्य कहेता वीतरागना मार्गनी कर-
 णी ते आदरे असत्य कहेतां जे अन्य धर्मनी
 करणी ते पण आदरे, ए वातमां गंका राखवी
 नही कारण के कृष्णपक्षिया व्रतादि धर्म नही
 पामे तो अजवी जीव केम पामगे अने प्रत्यक्ष
 अजवी जीवोये दिक्काज लीधी अने ले ठे तेमज
 व्यवहारे ठकायनी पाख दुजवे नही, रक्षा करे
 एवां अष्टान्त कथानुयोगे प्रत्यक्ष ठे तो ए अज-
 वी होवा ठतां व्यवहारथी चास्त्रि धर्म पामे तो
 कृष्णपक्षियो केम न पामे ? अपितु पामे ए वातमां
 गंका राखवी नही एवा पाठ शास्त्रमां ठे पण ते
 धर्म व्यवहारथी कह्यो ठे माटे निर्जरांनी तो ज-
 जना हवे जे शुक्रपक्षिया जीव ते कोई कारण-
 थी अथवा गुरु उपदेशथी दीक्षा ले अथवा

श्रावकना व्रत अङ्गिकार करे तप, जप, क्रिया उत्कृष्टी करे अने ससारादि उपर राग द्वेषनो उदय मटयो नयी ते जीवने ए सर्व कर्तव्यनु फल आश्रव ठे, एटले कर्मवध ठे, निर्जरा कहेवाय नहि तथा जे एवी रीते व्रतादि ग्रहण कर्या ठे अने राग द्वेषनो उदय नयी अने वैरागवासी ठे तेमज कष्ट क्रिया करे ठे तेने देमकाना चूर्ण जेठली निर्जरा प्राए कहेवाय पण एना आत्मानु कल्याण थाय नही

हवे जे समकित पामेला जीव तेना व्रण जेद समकित्ती अविस्ती ॥१॥ त्रीजा समकित्ती देजविस्ती ॥२॥ त्रीजा समकित्ती सर्वविस्ती ॥३॥ ते मध्ये प्रथम जेद समकित्ती अविस्ती तेने व्रत पञ्चखाण कशु ठे नही अही कहे के मिथ्यात्वी ने व्रत पञ्चखाण कह्यु अने समकित्तीने व्रत तप पञ्चखाणनी ना केम कहो ठो तेनो उत्तर के - ए गुणस्थाननी परिणती एवी छे ए गुणस्थाने सर्वथा व्रत पञ्चखाण होय नही अत्र दृष्टत - जेम कोइ व्यापारीने पासे पुजी नथी अने जो

धीरनार मले तो लाखो रुपैयानो व्यापार करे पण अही व्यापार करवो ते सर्वे लाजनी आशाए ठे पण खोट जाय तो धरमांथी देवा ठे नही तेथी निश्चिन्तपणे व्यापार करे पण जेनी पासे पांच रुपीआनी शक्ति ठे ते प्रमाणे पोतानो धंधो करी रोट्ला पेदा करे ठे तेने लोक कहे के तमे नामरदा ठो रांमीरांमनी गोमे व्याज खाश्ने पनी रहो ठो तमारी गोमे अमारी पासे धन होत तो अमे व्यापार करता आ वखत पेदाश सारी छे एवुं सांजले तो पण वीचारे के लांबु करतां धन खोइ वेसिये माटे आपणुं धन रहेने रोट्ला पेदा थाय तेवो धन्धो करवो अही उपनय जोमिये छिये जेम ते निर्धन पुरुष तेम अही मिथ्याइष्टी ते जेम लांबो व्यापार करे तेम आ व्रत्तनेम कष्टक्रिया घणी करे जेम पेलाने खोट जाय तो धरमांथी कंइ देवुं नथी तेम आने व्रत्तादिमां दोष लागे तो समकित्तादि धन जावानुं ठे नही. जेम ते अल्पपरिधिवालो धनसाचवी वेसी रहे तेम समकित्ती जीव समकित गुणने साचवी वेसी रहे ए रीते जाणवुं

हवे उपला गुणस्थानवाळा जिव व्रत्तादि व्यव-
 वहार करे पण ज्ञानगुणानी समज विशुधीये
 व्रतती नथी अने व्रतनेम तपजप क्रिया रुडी
 रीते करे तेने देडकाना चुर्ण जेटली निर्जरा थाय
 अही कोइ केशे जे समकित प्रगट्यू तेने ज्ञानी
 कहिये ॥ तेना उत्तर ॥ समकित गुण चोथा
 गुणस्थाननो ठे अने आ व्रत्तादि गुण ते पा
 चमा उट्टा गुणस्थानके व्यवहारथि ठे एट्टे मम-
 कित वे प्रकारनु ठे शुद्ध ममकित ॥ १ ॥ अ
 शुद्ध समकित ॥ २ ॥ हवे शुद्ध समकित ते
 आत्मस्वरूप तद्वत् जाणे तेने कोइ रीतथी शुजा-
 शुज कर्म लागु थता नथी ते दायिक समकित
 कहेवाय ते तदज्ञवे पण मोक्षे जाय तेने ज्ञानी
 कहिये एट्टे विशेष जाणे एट्टो विशेष कहीसु
 पण ज्ञानी ठे अही तरतम जोग रह्यो ठे हवे
 जे अशुद्ध ममकित्ती ठे तेना वे जेद उपसम
 समकित १ दायोपसम समकित २ उपसम मम
 कित तो अतर मुहुरत स्थीतीनु छे ते अथीक
 रहतु नथी एट्टे तेनु अही कहेवानु नथी हवे
 दायउपसम समकित तेना रुवरु आदि अनेक

जेद ठे पण दाय उपसम एवं नाम ते शुं जे
 उदय आवी कर्म प्रकृति तेने दाय करे अने
 आत्म प्रदेशे सत्तामां होय तेने उपसमावे एटले
 वे मलीने दायो पसम समकित कह्युं एटले मिथ्या
 तदाय करयो ते समकिन अने उपसमावी ते
 मोहनी एटले एनु नाम भीश्र समकित थयुं
 अही समकित मोहनीनो उदय वव्ये वच्ये ज-
 णाय तेथी तेने खरो ज्ञानी कहेवाय नही अने
 व्रत पञ्चखाण ए समकितने अनुसारे घणुं करीने
 ठे अथवा मिथ्यात्वने पण होय ते माटे अही
 कह्युं के समकिती ज्ञान वीसुधि विना व्रतादि
 कष्ट करे तेने देमकाना चूर्ण प्राय निर्जरा कही
 एटले वृत्तादिक धर्म अनेक जेदे ठे कारण के
 जगवतीजीमां दश पञ्चखाणनो अधिकार ठे त्यां
 चास्त्रि पण ते मांहेलो एक जेद ठे. अथवा
 उपवासादी तप ते ए दश पञ्चखाण मध्ये एक
 काल पञ्चखाण छे तो अही निर्जरा शुं जाग आवे
 तथा उत्तराध्यनमां मुनि ज्ञानीने कह्या छे ते माटे
 क्रियाकष्ट तपजप तेथी निश्चय साधुपणुं धाय
 नही ए कंइ संवर निर्जरा कहेवाय नही एतो

व्यवहारथी ठे. माटे कष्टक्रिया तो सर्वे जीवने सरखी ठे पण फळजेद उपयोग तथा प्रणामथी ठे अने क्रियाकष्टथी कर्मनु आवुं थाय पण जेवो जेवो प्रणामवर्ते तेवो तेवो बन्ध पमे एटले प्रणामथी बन्ध पमे अने धर्म तो उपयोगमा ठे माटे क्रियाकष्टथी निर्जरा केम सजेवे माटे देरु काना चूर्ण प्रमाणे कही अने जोएम नहि मानो तो शास्त्रथी विरुद्ध थाशे कारण के जगवान श्री वर्धमान स्वामीना शीष्य हाथ दक्षित १४००० साधुठे तेमां जमाळीआदे बेजणा निन्हवथया ते क्रियाकष्ट तपजप कर्ता हता तेमां कशोए ज्ञीन ठे नहि एटले तेनी क्रिया उत् कृष्टि कही ठे पण ते निची गतीए गया तथा बीजा साधु रूपा तेमा सातसें ३०० साधु मोक्षे गया वाकीना साधु मोक्षे गया नथी कदापि कोइ कदेशे जे अन्य क्रिया तप श्रोत्रो कर्यो हशे तेनो उत्तर खडकमुनि तापसी दिक्षा ठे रूने जगवान महावीर पासे चारित्र लीधु गुण रत्नाकर सवत्सर प्रमुख तप कर्यो अने मासखमण पाशखमणादि तप कर्यो ठेवटे एनां हाडका

खम खमथां ए अधिकार जगवतीजीमां ठे. वली
 घनाकाकंमी प्रमुख बीजा साधुओंनां तपथी श-
 रीर शोषाणां तेमने खंधकनी लपमा थापी ठे.
 पण खंधकने कोशनी लपमा नथी एवं शरीर
 दुर्बळ थयुं त्यां कोयलाप्रमुख घणां दृष्टांत कहां
 ठे ठेवटे शरीरनी शक्ति मंद पनी त्यारे थण-
 शण करयुं तेने जगवंते थाराधक कहां ठे पण
 देवलोक १२ मे गया एम मेघकुमार थ्रादे सा-
 धु महातपस्वीथया पणमोक्षेनगया. तो प्रत्यक्ष
 थही समजवामां थ्रावे के जेवो लपयोग तेवी
 निर्जरा ते ज्ञानने थ्राधिन ठे बीजाने थ्राधिन
 लपयोग नथी तथा श्रीजगवतीजीमा कह्युं ठे
 के करोमलपवासे जेट्यां कर्मनास्कीनां खपे ए-
 ट्यां कर्म ज्ञानीने एकस्वास लंबो लेखने निचो
 मुके एट्यामां खपे एवा अधिकार सूत्र तथा
 प्रकरणे ठे तथा श्रीजिनविजयजी महाराजे पां-
 चमना स्तवनमां कह्युं के ज्ञानी एकदाणमां सर्व
 कर्म नाशकरे तथा जगविजयजी महाराजे कह्युं
 के करोमजवसुधी थ्राकरो तपकर्ते करमनखपे
 एट्यां कर्मज्ञानी थ्रधीदाणे खेखे (श्रीपालना

रासमा चोथे खमे) ॥ देशनानी ढाले ॥

दाण अर्थे जे अघ टले,
ते न टले जवनी कोमीरे ॥

तपस्या करता अतिघणी,
नही ज्ञानतणी ठे जोमीरे ॥

नही ज्ञानतणी ठे जोमी,
सवेग गुण पालिये पुण्यवन्तरे ॥ ३७ ॥

वळी हेमाचार्यजीये योगशास्त्रमां कहु ठे —

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

प्रणिहति दाणार्धेन, साम्यमालब्ध कर्मतत् ॥

यत्र हन्या न्नस्तीवृ, तपस्या जन्म कोटिभि ॥ ११ ॥

तथा ज्ञानार्णवे —

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

यज्जन्म कोटिभि पापं, जयत्यज्ञस्तपो बलात् ॥

तद्विज्ञानी दाणार्धेन, दहत्यतुल विक्रम ॥ १७ ॥

इत्यादि वने समजी लेवु के क्रियाथी कर्मनी निर्जरा विशेष नथी क्रियाने बालनय कही ठे एटले अज्ञानणु ठे अज्ञानी एकरे अने ज्ञानी एकरे एमां विशेष नथी तेथी क्रियानु

बहु मान नहीं हवे जे ज्ञानी ठे ते समुद्र जे-
 टली निर्जरा करे ते शा माटे के ज्ञानी आत्मो-
 पयोगे ठे अने आत्मा ठे ते स्वधर्मग्राही ठे, स्व-
 धर्ममां वर्ते त्यां कर्मबन्ध होय नहि कारण के
 कर्मबन्धनां हेतु मिथ्यात्वादि ते स्वधर्ममां वर्ततां
 लागु थाय नहि. अने पोते पोताना धर्म वर्ततां
 परधर्मा जे पुद्गलादि कर्म एटले कारमण वर्गणा
 ते रही शके नहि जेम आपणे घरे घणा लोको
 पोताना काम अर्थ आवे पण आपणे काममां
 होश्ये त्यारे तेने बोलावीए नही एटले तेथ्यो
 तेने स्वजावे पाठो जाय तेम आपणे आत्मोप-
 योगे रमिये त्यारे वर्गणाथ्यो कोनी साथे बेसे ?
 एतो एनी मेळे सर्वे नाश पावे एमां कंइ
 सदेह नही अने जगवतीजीने विगे निर्जरा
 एवं नाम आत्मानुं ठे एटले आत्मा नीज धरमां
 रमे एटले निर्जरा थाय अने एम न होय तो
 एवंता मुनि केवल ज्ञान पाम्या ते स्या बळथी
 पाम्या अही क्रिया तप कंइ ठे नही एनी बाल
 अस्थ्या ठे एटले आठ वर्षनी उमर ठे ए अ-
 धीकार जगवतीजी तथा अन्तगम दशाङ्गाथी

जाणवु तथा प्रश्नचन्द्र राजरूपि दाण एक पहेला।
तो सातमी नरकनां दल मेलवेलां हतां तो तेवा
दलनो दाय करीने केवल ज्ञान पाम्या क्रिया
कष्ट तो पूर्वे हतु तेथी सातमी नरकनां दरवाना
मेलव्यां तो क्रिया कष्टनु कष्ट उपज्यु नही
अही तो ज्ञानभाव खप लाग्यो एटले उपयोग
करतां श्रेणिआरोहणकरीने कर्मदल दाय करी
केवल ज्ञान पाम्या एम अन्ता साधु मोक्षे गया
जाय ठे अने जणे ते सर्वे ज्ञाननु वळ जाणवुं
माटे ज्ञान सहीत जे पुरुष तेने कर्मनी निर्जरा
समुद्र जेटली याय एटले ज्ञानीनी दाण घणी
सारी ठे पण अज्ञानीनो ज्ञान खपनो नथी अने
जे निर्जरानु थवु एतो ज्ञान उपयोगमा रहु ठे
कारण के समकित गुणस्थानथी मांमीने यावत
सिद्धि वरवु त्या सुग्री निर्जरा थाय ते अंशे अ-
शे समजवी सिद्धिवर्या एटले सम्पूर्ण निर्जरा थइ
चुकी अने गुणस्थान चोथाथि माडीने विशुधियणे
जेटलो जेटलो आत्मोपयोगे चढतु चढतु तेने
गुणस्थान कहेवाय अने त्या त्या आवरण ते-
टलां तेटला अतिक टलता जाय ते माटे उप-

योग ज्ञानीने घेरज ठे ते प्रत्यक्ष देखो जर्त च-
 क्रवर्ति महाभारंज परिग्रहो घणी श्रीसाधुवने
 एक दाणे केवल ज्ञान उपार्जी चोथा गुणस्थान
 वाला तेरे गुणस्थाने गया. ज्ञानी एम निर्जरा
 करे ठे ते माटे ज्ञानीनी निर्जरा समुद्र (प्रत्ये)
 जेटली करे अही कहे के आवष्यकमां जे जर्ता-
 दिकनो दृष्टांत दशने व्यवहारने जथापे तेने पा-
 सस्था कहा ठे तेनो ॥ उत्तर ॥ जे आवष्यक
 सुत्र व्यवहारनुं ठे माटे एतो व्यवहारनी पुष्टी करे
 ते एकज शास्त्रग्रन्थ उपर चित्त देवुं नहि पण
 सर्व शास्त्र उपर द्रष्टि देवी जोइए अने आप-
 णा मनथी विचार करवो के आवष्यकादि क्रिया
 तो सर्वे साधु श्रावक व्यवहारे करे एथी मुक्ति
 कोइनी थइ नही अने थाय नहि ए बाह्य योग
 ठे पण अन्तरगत आत्मोपयोगे रमणताथी नि-
 र्जरा थाय एटले ज्ञानीने समुद्र जेटली निर्जरा
 थाय ए वात सत्य ठे एवुं उपदेश पद ग्रंथमां
 कह्युं ठे उत्कंठ उपदेश पदग्रंथे मंडुक चुत्र
 कपे ॥ क्रीयाजाणिउ कुञ्जकिलेसाणं ॥ तदडु

रचुन्न कण्पो नाणकत्तच आणाए
इति सप्तम गायार्थ.

उपदेश पद ग्रथे ए ज्ञाप्यु,

तेह विचारीने जोजोरे ॥

सर्व आराधक जगवण्ण ज्ञानी,

देश आराधक क्रिया केजोरे ज्ञान० ॥७॥

आ गायामा कह्यु के उपदेश पद ग्रथे जो
जो ते पूर्व सातमी गायाना अर्थे कही गया ते
विचारी जोजो एहले समजमा आवशे पूर्वार्धना
वे पदनो अर्थ आगलनी गायामा कह्यो हवे
उत्तरना वे पदनो अर्थ एम ठे के ज्ञानी स-
र्वथी आराधक अने क्रिया देशथी आराधक
तेनो खुलासो एम ठे के -जगवनीजीना दसमा
सतकना विशेष आराधक अण आराधकना चार
प्रश्न श्री गौतमस्वामीए पुठया अने जगवान श्री
वीरस्वामी उत्तर आपे ठे ते आ प्रमाणे ठे

प्रथम प्रश्न पुठयु के क्रियावाळो आराधक
के विराधक बीजु प्रश्न ज्ञानी आराधक के वि-
राधक त्रीजु प्रश्न ज्ञानक्रिया सहित आराधक के
विराधक चौयु प्रश्न ज्ञान क्रिया रहित आराधक

के विराधक एवी रीते चार प्रश्न पुठ्या तेनो जे उत्तर दीधो ते वताविये ठिये पहिला प्रश्नमां क्रियानो करनारो देशथी आराधक ने सर्वथी विराधक बीजु प्रश्न ज्ञानी ठे अने क्रिया नथी ते सर्वथी आराधक अने देशथी विराधक, त्रीजु प्रश्न जे ज्ञान क्रिया सहित ते सर्वथी आराधक विराधक नथी चौथु प्रश्न ज्ञान क्रिया रहित ते सर्वथी विराधक आराधक नथी हवे तेनो विशेष खुलासो निचे मुजव ठे.

क्रियाना करनारापर जावरंगी थथा एख्ले पुद्गल जावने विशे राग ठे जेने तेने पर जा वरंगी कहे ठे एख्ले बाह्य क्रिया, कष्ट, तप, व्रत्त, नेम उपर राग रह्यो पण तेने आत्म स्वरूपनुं जाणपणुं करवानो राग नथी फकत क्रिया उपर बाह्य छष्टि थयो तेने वहीरात्मा कहे ठे नेना आत्मानुं कल्याण थाय नही एतो चारे गती संसारमां रखने अही कहे के एने देश आराधक कह्यो ठे अने तमो भव ब्रमण वतावो ठो तेनो उत्तर के जगवाननी आज्ञा प्रमाणे व्यवहारे असुज आचरण वृजीने सुज प्रवर्तिये चाले

ठे तेथी तेने देश आराधक कह्यो पण निश्चय
 अपेक्षायें आत्माने जाण्यो थोळख्यो नथी ते
 जोतां आराधक नथी कारण के व्यवहारे आज्ञा
 प्रमाणे अज्ञानी चाले तेने देश आराधक कहा
 थने समकित धारी जिव आज्ञाथी एक जरा
 मात्र बहार पम्या तेने विराधक कहा ते वसे ने
 ठ अध्यन (१०६) ज्ञाताजीना बीजा सुतस्कंधमां
 ठे ते (१०६) ए देवीथ्यो चारनी कायनी थइतेतो
 आज्ञा विरुद्ध केटबु काम करे ठे जे हाथ पग
 पखाव्या तेथी ए विराधक कह्यो पण समकित
 सहित ठे थने थावते जेवे केडक मोढे जशे
 तो पण एने विराधक कहि ते सूर्य चन्द्र प्रमु-
 ख निराणीयो थइ एटला कारणे विराधक कहे-
 वाणी तो अही व्यवहारथी ए सुत्र क्रिया पद
 अपेक्षाए आराधक विराधक कहे ठे पण परमार्थ
 जोतां आराधकपणुं ठे नहि वली देश आराधक
 कहा पण एना जावनो नेम बांध्यो नहि अ-
 थवा समकित पाम्या न पाम्या ते पण कह्यु
 नहि थने आ काळे जे क्रिया करे ठे ते आज्ञा
 प्रमाणे थती नथी शा माटे के बीजु तो ठेठे रह्यु

पण हाथपग धोवा शरीरना मेल परां करवा वस्त्र
 धोवा रंजवां ए सर्वे जगवाननी आज्ञा वहीर ठे
 केम के पूर्वे हाथपग धोया तेने विराधक कहा
 तेनां स्वामी उपर देखामया ठे, अने अहींयां तो
 हाथपग उपर ए नेमनथी केमके सुत्रमां तो
 “ नवीरगेजा नवी धोवेजा ” एवा पाठ ठे अने
 अहींयां तो आपणे सर्वे करिये ठिये तथा वस्त्र
 जिरण राखवानो अधिकार ठे नवां लेवानो अ-
 धिकार नथी. ते पण सर्व साधुने वस्त्र राखवा
 अधिकार नथी कोइ साधु आश्रयि ठे तथा
 सर्वथा साधुने मास कल्प उपरान्त रहेवानो
 शेष काले मार्ग नथी. अने चतुर मास उपर
 वर्षाकाले रहेवानो अधिकार नथी कदापि जी-
 वनी उत्पत्ति रही होय अने विहार करवाथी
 हंसा थती होय एवं मालम पदे तो एक पख-
 वामीयुं विशेष रहेवानो अधिकार ठे तथा जे वृद्ध
 साधु होय अथवा गलान होय अने विहार थाय
 एवं न होय तो एक गाम मध्ये नव उपाश्रयमां
 रहिने वर्ष पुरु करे अथवा तेथी पण गलान
 होय अने जंघा बेलद्विण थइ गयुं होय बीजे

उपाश्रये जवानी शक्ति न होय तो एक उपा-
 श्रयमां नव प्राग कल्पे अने अकेको भाग वा
 परे बीजा प्रागने वापरे नहि एम नव कल्प
 पूर्ण करे एवी रीतनी आज्ञाओ कल्प आश्रये
 छे तेमां आपणे शी आज्ञा पालीए ठिये ते वि-
 चारी जो जो एटले समजासे के आराधकमां बु
 के विराधकमां बु कदापि कोइ क्रियाना आम्बरी
 वृद्ध तथा गलानपणा विना एक गाममा नव
 उपाश्रय कल्पीने रहे ठे अथवा एक उपाश्र-
 यमां नव प्राग कल्पीने रहे ठे ए सर्वे कपट
 क्रिया ठे लोकमां मनावा पुजावा मोटे एवा काम
 करे ए आज्ञा विरुद्ध ठे तो विचारी जुवो के शी
 रीते आराधक थाय अने देश आराधक अढी
 कहा ठे तो देशनाम किन्चित्तनु ठे एटले आ
 खण्मां देश ते किन्चित मात्र वस्तु ठे ते आ-
 राधकपणामां शु कट्याण थाय अहि कोइ कहे
 के ज्ञानीने आराधक कहा ते पण तेवुज के
 नहि तेनो उत्तर ज्ञान तो सन्दनयनि प्राप्तिये
 आत्म धरम ठे अने ए नयनि प्राप्ति अजावे
 रुजुसुत्रनय सुधि ज्ञान होय तेनेज अज्ञान कहे ठे

वली अज्ञाननुं नाम मिथ्यात्व ठे त्यां सुधि ज-
 मत्व द्रष्टि ठे एट्ले कायाने विशे चेतनपणानि
 प्रांति ठे यथार्थ रीते टलि नथी परन्तु रुजुसुत्र-
 नय सापेक्ष द्रष्टिये सद्दनयनुं कारण ठे ते कारणे
 कार्यरूप शब्दनय पाम्यां अनुभव प्रगटे स्वस्वरूप
 अनुभवे त्पार सम्यक् ज्ञान कहेवाय त्यां ज-
 चेतननो विभाग एट्ले जुदापणुं व्हेवणपुर्वक
 थाय जडसत्ता, चेतनसत्ता, जिन्नजाशे असंकि-
 तपणे निर्धार श्रद्धापुर्वक निश्चल थाय त्यां स-
 मजे के आत्म सत्ताये शक्तिजावे तिरोजावीपणे
 गुणपर्यायादि अनन्तो धर्म रह्यो ठे तेमांथी व्य-
 क्तिजावे प्रगट थाय ते म्हारो धर्म एम श्रद्धा
 वतां एने कंश् छुपण लागतुं नथी कारण के
 ए आत्मानो मूल स्वजाव सत्वस्तु ठे तेने बाह्य
 क्रिया बलगाम्बी ते कल्प आश्रय ठे एट्ले क-
 लपनी मर्याद राखवा आपणा शासननी ओळ-
 खाण शासनने दीपाववा माटे ठे. वली कल्प
 तो अनेक रीतना ठे जे वस्तुनी एकमां हा पाडी
 ने बीजामां ते वस्तुनी ना पाडी छे जेम पच
 सुमती त्रण गुपती ब्रह्मचर्य इत्यादिनी पुष्टी सर्व

शास्त्रमां ठे अने जगवतीजीने विशेषण. तेनी
 पुष्टी ठे अने तेना पाळवावाळने आरधक ठाम
 ठाम कह्या ठे अने तेज जगवतीजीने विशेषे तेना
 पाळनारने विराधक कह्या ठे कल्पनो एक पद
 नथी केमके साधुने आहारने विशेषे दूषण लगावे
 तो ते साधु नरके जाय एवं दश वैकालीक कहे
 ठे अने जगवतीजी कहे ठे के चारीत्रनो विरा-
 धक चुवनपतिथी नीचो जाय नही अने सुधर्म
 देवलोकथी उपर जाय नही तेमज सुदामणा
 साधवी बीजे देवलोकें गइ ते चारित्र विराध्या
 क्तां गइ तथा ईशान इडनी आठे अग्र महि-
 पीथो चारित्र विराधीने बीजे देवलोकें गइ तो
 अहिया कल्पनो एक पद मानता विरोध आवे
 एखे तेने मिथ्यात्व लागे तथा ममकित धारी
 जीव देवलोकथी नीचो आयुष्य बाधे नहि जो
 प्रथम बांध्यु होय तो ते गतिमा जाय नहि तो
 अवश्य देवलोक विना विजु न बाधे तो श्रावक
 विराधक चुवनपती तथा व्यन्तरमा जाय तेथी
 उपर न जाय अने नीचो न जाय ते वचननु
 मलबु कये ठेकाणे छे कारण के साधु तथा श्रा-

वक विरतिपणाथी विराधक थया पण समकित गुण तो गयो नथी अने नरक वतावे छे अथवा भुवनपति व्यंतरज्योतिपि वतावे छे तेनी शी रीत छे ते विचारी जुअो कल्प तो अनेक तरेहना छे माटे कल्प उपर एकान्ते जरोसो राखवो नहि अने जे आहारनुं दूषण कहुं हतुं ते पण सुगमाङ्गने विगे आधाकरमी आहारना दोष गणता नथी ते माटेते कल्प आश्रये गाथाअो सुगमाङ्गजिनी पूर्वे लखी गया ठिये तथा आव-अकने विगे आधाकरमी आहार नित्यपिन्, स-य्यातरपिन्, राजपिन् इत्यादि कारणे वुटी ठे तथा कल्पसूत्रने विगे बहुश्रुतने कंइ कल्पनो नियम राख्यो नथी इत्यादि शास्त्रे विचारी जोगो तो खबर पन्गे माटे क्रियाने देश आराधक कही ते व्यवहारआज्ञा आश्रये ठे, बीजो परमार्थ मालूम पन्तो नथी पठी तत्वतो केवली जाणे अने ज्ञानीने सर्वथी आराधक कहा ठे, एखे ज्ञानी तो स्वस्वज्ञाना रमणीक, अने परभावना त्यागी ठे, ते ज्ञानीपणुं जेने आत्म स्वरूपनुं जाण-पणुं अने रमणता श्रद्धा सहित होय तेने ज्ञानी

कहिये ते पुद्गलनो अणुजव करे नहि एखे पु
 द्गलजावनो जोगि न थाय, जे जे करणि करवी
 तेतो पुद्गलीक ठे अने पुद्गलजाव विनाशी ठे ते
 आत्माने गुण करता नथी एतो आत्माथी जिन्न
 पुद्गल डव्य ठे तेथी आत्मानु कल्याण थाय
 नहि, अथवा वे डव्य मळीने पण आत्मकार्य थाय
 नहि विजाग वहेचण थया एक आत्मअणुजवथी
 कार्य थाय एवु सुमति प्रमुख ग्रन्थोमां कह्यु ठे
 माटे पुद्गल तो पुद्गलनु कार्य कररो एखे पुद्गल
 पुद्गलने मेळवशे जो शुज करणि करशे तो शुज
 कर्मन्ध थशे अशुज करणी करशे तो अशुज
 कर्मन्ध थरो, एखे अशुजथी नरक तीर्थचादि
 गती मळशे अने शुज करणथी देव मनुष्यनी गती
 मळशे त्या शुजाशुज जोग मळरो ते सर्वे पुद्गल ठे,
 आत्मानु हित तेमां ठे नहि ए तो सर्वे जगतनी
 श्रेष्ठ ठे एखे अनन्ता जीवे पुद्गल ग्रहीने वम्या
 ठे एखे अफेके जीवे ए पुद्गल सर्वे अनन्ती वार
 ग्रहण करी करीने वम्या ठे तथा सिद्ध जिव अ-
 नन्ता ते पण वमीने गया ठे माटे ते जगतनी एठ
 वहेवाय अने ज्ञानी एठनो चाटनार न होय, अ-

ज्ञानी होय ते चाटे ए पुद्गलनो अनुभव ज्ञानी-
 ने घरे ठे नहि तेतो एक आत्मानो अनुभव करे
 ठे एटले आत्मस्वरूप ज्ञानदर्शन चाखि सहित
 तेने आत्मा कहिये अथवा जीन्न कल्पनाए जिन्न
 पणे ज्ञानदर्शन चाखिनो अनुभव करे ते जेद
 ज्ञान कहेवाय पण त्यां अशुद्ध उपयोग ठे अने
 अजेद अनुभव करवो ते शुद्ध उपयोग ठे ते
 विचार पूर्वे नय अधिकारने विशे कह्यो ठे तेथी
 जाणजो एम अंतर आत्मानुं लक्षण जे जीवमां
 ठे ते ज्ञानी कहेवाय. वहिरात्मानुं लक्षण जे जी-
 वमां ठे ते अज्ञानी कहेवाय एटले वहिरात्मा ते
 बाह्य क्रियारागी तेने देशथी आराधक कहा ते
 व्यवहार आज्ञा आश्रये जाणवा अने ज्ञानीने
 सर्वथी आराधक कहा ते आत्मअनुभव आश्रये
 निश्चयथी जाणवा एटले ए आठमी गाथानो
 अर्थ संक्षेपथी कह्यो

द्रव्यादिक ज्ञान जे पाम्या, समकित शुद्ध तस
 कहीएरे, तेह ज्ञानी पने नही पाठा, एवं माहानिशी-
 अये लहीएरे. ज्ञान०ए अर्थ-जे जीव अजीवादि
 द्रव्यनुं स्वरूप जाणे ते ज्ञानिने समकित शुद्ध होय ते

ज्ञानी समकित्थी पाठा पने नहि एवं महानिसिथ
 सूत्रमा कहां ठे द्रव्यादिकनुं जाणवुं पटले पटद्रव्य-
 नु जाणपणुं जेने ठे तेने ज्ञानी कह्या ठे ते पट
 डव्यना नाम कहे ठे धर्मास्तिकाय १ अथर्मास्ति-
 काय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४
 जीवास्तिकाय ५ अने काल ६ ए पटद्रव्यनु जेने
 जाणपणु होय ते ज्ञानी हवे ते पटद्रव्य मध्ये पु-
 द्गलास्तिकायनी ओळखाण प्रथम करवी जोइए
 अही केहेशे के जीवद्रव्यनी ओळखाण करवी जो-
 इए, पुद्गल डव्यनु शुं काम ठे तेनो उत्तर के जीव
 डव्य तो अमूर्त ठे ते जष्टीगोचर ठे नहि एतो
 जगवानना वचनथी सर्दहवानु ठे अथवा विशेष
 जाणपणु थाय तेने पोताना ज्ञानवने समज्यामा
 आने पण प्रथम जीवडव्यने ओळखरा जाय तो
 नहि ओळखाय केमके अरुपी पदार्थ ठे माटे
 प्रथम रुपीडव्यने यथार्थ ओळखवो जोइए तो
 अरुपी पण उळखाय ते विना अरुपी उळखा-
 णमा आवरो मुश्केल पडे जे प्रत्यक्षरुपी पुद्गल
 डव्य ठे तेने यथार्थ समजता घणी महेनत ठे
 अने प्रतक्ष ठए दर्शनराळा एना स्वरुप जुदा

जुदा बांधे ठे पण एकसरखु बंधातुं नथी तथा
 जैन दर्शनने विशे दिगम्बर, श्वेताम्बरना मानवामां
 केटलीक स्वरुपने विशे जिनता पमे ठे तथा
 श्वेताम्बर पद्दना पंढितोना बांधवामां पण जिन-
 चाव पडे ठे केमके पुद्गलज्व्य समजवो ते सह-
 जनथी कठण छे. माटे आत्म स्वरुप अरुपी प-
 दार्थ होवाथी तुरत समजवामां आवे नही माटे
 प्रथम पुद्गलज्व्यनुं जाणणु करवुं जोश्र तो
 आत्मद्रव्य सुखे समजवामां आवे माटे अही पुद्ग-
 लज्व्यनुं स्वरुप शंकेपथी कहे ठे ते तमे ध्यान
 पूर्वक एकाग्र चित्ते धारशो अने तेमां रमणता
 करशो तो तमने एटले श्रोता तथा वक्ताने घणो
 फायदो थशे हवे जे पुद्गलनो अधिकार ते वर-
 णादिक तथा संस्थान अवगाहना तथा स्थिति
 साथे कहेवाशे पुद्गलज्व्यनी मूळ वर्गणा आठ
 ठे तेनां नाम-अौदारीक १ वैक्रीय २ आहारक ३
 तैजस ४ ज्ञापा ५ स्वासोस्वास ६ मन ७ कार्मण
 ८ आठ जेद ठे. वळी ते पुद्गलज्व्य वे प्रकारे ठे
 एक १ जीव सहीत अने बीजा २ जीव रहित अही
 तो पुद्गलज्व्यनुं कहेवुं ठे परन्तु जीव रहितनी

अपेक्षाए विविक्षा (वर्णन) करतां जीव सहितनी
 अपेक्षाना वर्णननो अन्तर्भाव आवे तेम जीव
 सहितनी अपेक्षाए विवक्षा करतां जीव रहित
 ए जेद पण उत्पन्न थाय कारण के अन्योन्य
 अनादि सन्धीठे अने इहां तो पुञ्जल स्वरूपने
 उच्छ्वापबु ठे तेथी सन्ध वनेनो ज्या जेनो
 खप हशे त्या ते आवशे ते समजी लेबुं हवे
 पुञ्जलज्व्यना मुल चार जेद-स्कंध १ देश
 २ प्रदेश ३ अने परमाणु ४ हवे स्कन्धनु स्वरूप
 कहे ठे-जे पुञ्जल स्कंध ठे तेना जेद त्रण ठे
 संख्यात् १ असख्यात् २ अनन्त ३ हवे संख्यातिक
 छे तेमा डि प्रदेशीय स्कंध अनन्ता ठे, त्र्यणु
 प्रदेशीय स्कंध अनन्ता छे एम चतुष्क प्रदेशीय
 स्कंध अनन्ता ठे एम यावत दश प्रदेशीय स्कंध
 अनन्त ठे यावत संख्यात् प्रदेशीय स्कन्ध तेपण
 अनन्ता ठे एठ्ठे अकेक प्रदेश वृद्धि करता
 तेना संख्याता जेद थाय ते सर्वे अनन्त ठे एम
 उक्कष्ट संख्याताथी एक परमाणु वृद्धि थाय एठ्ठे
 जघन्य असख्यात् प्रदेशीय स्कन्ध थाय अने उक्क
 ष्ट असंख्यात् सुधी अकेक प्रदेश वृद्धि करतां तेना

असंख्यात जेद थाय ते सर्वे जेदना स्कन्ध अः
 नन्त ठे तथा अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध ते अनन्ता
 ठे एट्ले एक एक प्रदेश वृद्धि करतां अनन्ताना
 अनन्ता जेद थाय ते सर्वे जेदना पुद्गल स्कन्ध
 अनन्ता ठे. १ एक स्कन्धमांथी कीचित लक्ष्णे
 पुछिये ते देश कहेवाय, २ अने जे स्कन्धना जे-
 ट्वा प्रदेश होय ते प्रदेश कहेवाय ३ जे स्कन्धथि
 वुटा एकपणे रखा ते परमाणुं कहेवाय हवे प्रथम
 परमाणुं पुद्गलना स्थीति पर्याय कहे छे, तो पर-
 माणु पुद्गलनी स्थीति जघन्यथी एक समयनी छे
 अने उत्कृष्टथी असंख्यात काळनी छे एट्ले अही
 चतुस्थानक (चोचङ्गी) लागे एट्ले एक समयनी छे
 ते असंख्यातगुणी हीन छे अथवा असंख्याताना
 असंख्यात काळजेदमांथी एक समयने थादिदक्ष्णे
 जणी (जुंठी) होय तो संख्यात प्राग हानि
 अथवा संख्यातगुणी हानि होय अथवा जेने
 संख्यातमो प्राग न लागे तेने असंख्यात प्राग
 हानि कहेठे एम चार हानिनां अने चार वृद्धिनां
 स्थान लागु थाय तेथी तेने चतुस्थान पतित
 कहिये. तेमज द्वीप्रदेशिय स्कन्धथी संख्यात

परदेशिय स्कन्ध एम अस्तरयात प्रदेशिय स्क-
 न्धयी अन्त प्रदेशिय स्कन्ध सुधी होय अही
 एक परमाणु पुद्गलमा अन्ता पर्याय रखा छे
 त्यां कोऽ पुठे के एक परमाणुमा अन्ता पर्याय
 तेशु छे? तेनो उत्तरके द्रव्ययीतो एकजठे अने
 प्रदेशयी एने बीजा प्रदेश होय नहि पण तेमां
 एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने वे स्पर्श एम एक
 प्रमाणु पुद्गलमा पाच गुण होय अने अकेरु
 गुणमा अन्ता पर्याय रखा ठे तेने विशे पट
 गुणी हानि वृद्धि लागे तथा एक परमाणु पुद्गल
 अन्य एक परमाणु पुद्गल साथे उन्वयार्थे तुल्य ठे
 केमके एक द्रव्य ठे तेशो अने प्रदेशार्थे पण तुल्य
 कहेवो कारण के एक प्रदेश ठे तथा अवगाह
 नानी अपेक्षाए तुल्य छे कारण के एक प्रदेश
 वनेनी अवगाहना छे अने स्थिति आश्रये कोऽनी
 स्थिति हीन होय १ तूल होय २ अधिक
 होय ३ जो हीन होय तो अस्तरयात जागे
 हीन होय अथवा सरयात जागे हीन होय
 अथवा सख्यातगुणी हीन होय अथवा अस्-
 रयात गुणीहीन होय अथवा अधीरु होय तो

असंख्यात जागे अधिक होय अथवा संख्यात जागे अधिक होय अथवा संख्यात गुणी अधिक होय अथवा असंख्यात गुणी अधिक होय एटले ए चतुस्थान पतित होय एटले तेने विशे चतुर्गुणी हानि वृद्धि लागे पण पट गुणी हानि वृद्धि तेने न लागे एटले ते स्थिति आश्रये कह्युं हवे जे काळा वर्णना पर्याय अनन्ता ठे तेने विशे ठगण वडीआ लागे एटले एक काळा वर्णनो परमाणु अने बीजा पण काळा वर्णना ठे तेमां जे पर्यायनु जिनपणु एटले श्याम वर्ण वत्तो के श्योगे होय तेने जिन कहिये हवे काळा वर्णनो परमाणु कोइ हीण होय १ कोइ तुल होय २ अने कोइ अधिक होय ३. हवे जे परमाणु वर्णे हीन होय ते केटलो हीन होय ते कहे ठे-अनन्त जागहीन १ असंख्यात जागहीन २ संख्यात जागहीन ३ संख्यात गुणोहीन ४ असंख्यात गुणोहीन ५ अनन्त गुणोहीन ६ हवे अधिक होय तो केटलो अधिक होय अनन्त जाग अधिक १ असंख्यात जाग अधिक २ संख्यात जाग अधिक ३ संख्यात गुणो अधिक

धिक जे हीन ते एक प्रदेशहीन, कोइ वे प्रदेशे हीन अधिक ते कोइ एक प्रदेशे अधिक कोइ वे प्रदेशे अधिक एम एनी स्थापना गाम्थी जाणी ए सों वे स्थान पतीत ठे वर्णादि सर्व ठ स्थानपतित ठे ते पूर्वनि पठे जाणवु, एम यावत् दश प्रदेशिय स्कन्ध सुधी अग्राहनार्थे जेटला प्रदेशनो स्कन्ध तेटला प्रदेशनी हानि वृद्धि करी जे नव प्रदेशनो स्कन्ध अने विजो नव प्रदेशनो स्कन्ध तेने विशे अव्यर्थे, प्रदेशार्थे तुल्य कहेवो, अग्राहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक जे हीन ते कोइ एक प्रदेशहीन कोइ वे प्रदेशहीन एम यावत् कोइ आठ प्रदेशहीन एम जे अधिक होय तेने विशे कोइ एक प्रदेशे अधिक कोइ वे प्रदेशे अधिक यावत् आठ प्रदेशे अधिक एम दश प्रदेशिय स्कन्ध होय तेने विशे अव्यर्थे प्रदेशार्थे तुल्य होय अग्राहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक, जे हीन ते कोइ एक प्रदेशहीन, कोइ वे प्रदेशहीन, यावत् नव प्रदेशहीन एम अधिक होय ते कोइ एक प्रदेशे अधिक, कोइ वे प्रदेशे अधिक यावत् नव प्रदेशे

अधिक एम संज्ञाए अत्रगाहनार्थे हानि वृद्धि करवी ते सर्वे द्विस्थानपतित ठे अने वर्ण १ गन्ध २ रस ३ स्पर्श ४ तेने विशे पट्टस्थानपतित ठे, उपरना चार स्पर्श विना कहेवुं, एम संख्यात प्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तापर्याय कहा ठे, ते कहिये ठिये—संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध संख्यात शा माटे जे संख्यातिक अव्यना संख्याताभेद होय तेथी अधिक न होय ते माटे द्विस्थानपतित कहा तेवा तेवा प्रदेशिय स्कन्ध साथे अव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य अने कोइ अधिक जे हीन ते संख्यात जागहीन १ संख्यातगुणोहीन २ अधिक ते संख्यातजाग अधिक ३ संख्यातगुणो अधिक ४ एम अत्रगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य अने कोइ अधिक जे हीन ते संख्यात जागहीन १ संख्यात गुणोहीन २ अधिक ते संख्यातजाग अधिक, संख्यातगुणो अधिक एम ए द्विस्थानपतित होय अने वरणादि ठ स्थानपतित होय. उपरना चार स्पर्श विना कहेवुं असंख्यात प्रदेशिय स्कन्ध ठे तेने विशे अनन्ता पर्याय कहा ठे. असंख्यात प्रदेशिय

स्कन्ध अन्व्य असंख्यात परदेशिय स्कन्ध
 साथे द्रव्यार्थे तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ
 हीन १ कोइ तुल्य २ अने कोइ अधिक
 ३ जे हीन ते कोइ द्रव्यना प्रदेश असख्यात
 जाग हीन १ कोइ सख्यात जाग हीन २ कोइ
 सख्यात गुणो हीन ३ कोइ असख्यात गुणो
 हीन ४ जे अधिक ते कोइ असख्यात जाग
 अधिक १ कोइ संख्यात जाग अधिक २ कोइ
 सख्यात गुणो अधिक ३ कोइ असख्यात गुणो
 अधिक ४ एम अत्रगाहनार्थे पण हीन १ तुल्य
 २ अधिक ३ प्रदेशार्थनी पेटे कहेवु एचतुस्थान
 नपतित ठे कारण के असख्यातिक द्रव्यना प्रदे-
 शनी अत्रगाहना असख्यात जेदे ठे मोटे तेने
 चतुस्थान पतित कहिये पूर्वनी पेटे हवे अ-
 नन्त प्रदेशिय स्कन्धने विषे अनन्ता पर्याय ठे ते
 देखामीए ठीए अनन्त प्रदेशीय स्कन्ध अने अ-
 न्य अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध साथे द्रव्यार्थे
 तुल्य अने प्रदेशार्थे कोइ हीन १ कोइ तु-
 ल्य २ कोइ अधिक ३ जे द्रव्यना प्रदेश
 हीन ते कोइ अनन्त जाग हीन १ कोइ अस

ख्यात जागहीन २ कोइ संख्यात जागहीन ३
 कोइ संख्यात गुणोहीन ४ कोइ असंख्यात
 गुणोहीन ५ कोइ अनन्त गुणोहीन ६ एम
 कोइ अधिक ते अनन्त जाग अधिक १ कोइ अ-
 संख्यात जाग अधिक २ कोइ संख्यात जाग
 अधिक ३ कोइ संख्यात गुणो अधिक ४ कोइ
 असंख्यात गुणो अधिक ५ कोइ अनन्त गुणो
 अधिक ६ एम पदस्थान पतित ठे कारण के
 अनन्त प्रदेशिय स्कन्धना अनन्ता जेद ठे माटे
 पदस्थान पतित होय जेम ए परदेशार्थे कह्यं,
 तेमज अवगाहनार्थे न होय कारण के अवगा-
 हना आकाश प्रदेशनी ठे अने आकाश प्रदेश
 लोकने विशे असंख्याता ठे अने पुङ्गलनुं स्थान
 लोकमां ठे अने लोकनो आकाश पदस्थानपतित
 नथी ते माटे अहियां चतुस्थानपतित होय वर-
 णादि सर्वे पदस्थानपतित ठे स्थीति सर्वे स्कन्ध-
 नी चतुस्थानपतित ठे हवे स्थीति आश्रये जाव
 देखामिये ठिये एक समयनी स्थीतिना जे पुङ्गल
 स्कन्ध तेने विशे अनन्तपर्याय ठे एटले एक स-
 मयनी स्थीतिना जे पुङ्गल स्कन्ध ते अन्य एक

समयना पुद्गल स्कन्ध साथे डव्यार्थे तुल्य, अने
 प्रदेशार्थे पदस्थानपतित होय अने अवगाहनार्थे
 चतुस्थानपतित होय स्थीति तुल्य होय वर्णादि
 ठगाणवनीया होय तेम यावत् दस समयनी
 स्थीतिने वली सख्याता समयनी स्थीति सुधि ए
 मज कह्नेवु पण एट्ठो विशेष के स्थीति द्विस्थान-
 नपतित होय जे स्थानके पदगुणीहानि वृद्धि
 पुर्वे कही गया ठिये ते प्रमाणे समजजो अस-
 ह्यात समयनी स्थीतिना जे पुद्गल स्कन्ध
 तेने एमज कह्नेवु पण एट्ठो विशेष के
 स्थीति चतुस्थानपतित होय एट्ठे ते स्थीति
 आश्रये कह्य ह्ये वर्णादि आश्रये कहिये
 ठिये अकेका वर्णने विशे अनन्त पर्याय
 रह्या ठे तेमा प्रथम काळा वर्णने लक्ष्णे कहिये
 ठिये एट्ठे एक गुणोकाळो पुद्गल अने अन्य
 एक गुणाकाळा पुद्गल साथे डव्यार्थे तुल्य अने
 प्रदेशार्थे पदस्थानपतित होय अने अवगाहनार्थे
 चतुस्थानपतित होय अने स्थीति चतुस्थानप-
 तित होय अने काळावर्णने काळावर्णना पर्याय
 पणे तो तुल्य होय अने वाकी जे चारवर्ण तथा

गंध १ रस २ स्पर्श ३ रूपा तेना जे पर्याय तेने
 विशे पदस्थान पतित होय एम यावत् दशगुणा-
 काला सुधी कहेवुं अने जे सख्यातगुणा काला
 वर्णना पुद्गल ठे तेने एमज कहेवुं पण एटलो वि-
 शेष के कालावर्णना जे पर्याय ठे तेने विषे द्वी
 स्थान पतित कहेवुं बाकिना वर्ण रसादि जे पर्याय
 ठे तेने विशे पदस्थानपतित कहेवुं बाकी सर्व पुर्व
 पेठे एम अख्यसंख्यात गुणाकाला वर्णना जे पुद्गल ठे
 तेने विशे एमज कहेवुं पण एटलो विशेष के जे
 स्थाने कालावर्णना पर्याय ठे तेने विशे चतु-
 स्थान पतित कहेवुं बाकिना वर्ण रसादि जे पर्याय
 ठे तेने विशे पदस्थानपतित कहेवुं एम अख्यन्त
 गुणा कालावर्णना पुद्गल ठे तेने विशे सर्वे पुर्वनी
 पेठे कहेवुं पण एटलो विशेष के जे स्थाने का-
 लावर्णादि पर्याय ठे ते पदस्थानपतित ठे एटले
 ए कालावर्णनी वाख्या कही तेमज कालावर्णनी
 पेठे रक्तत्वादि वर्णने विशे सर्वे वक्तव्यता कहेवी
 पण प्रत्येक वर्णना स्थानके सहस्रसहस्रा वर्णे कहेवुं,
 नाम जे वर्णानु होय तेज कहेवुं, एटले ए वर्णानो
 अधिकार कहेवुं. एम गधनो अधिकार तथा र-

सनो अधिकार तथा स्पर्शनो अधिकार कहेवो
 सर्वे ए प्रमाणे जाणवु हवे जघन्य तथा उ
 त्कृष्टि अवाहना आश्रये कहिये ठिये जे जघ
 न्य अवगाहना तो द्विप्रदेशिय स्कन्धनी ठे तेने
 विशे अनन्तपर्याय रह्या ठे ते कहिये ठिये जघ
 न्य अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध, अने अन्य
 जघन्य अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्ध साथे
 उन्व्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे तु
 ल्य स्थीतिपणे चतुस्थानपतित ठे वर्णादि आ
 श्रये पदस्थानपतित ठे उपरना चार स्पर्श न क
 हेवा एटले असख्यात प्रदेशिय स्कन्ध लगे तो
 चार स्पर्शज होय एटले ए जघन्य अवगाहना
 द्विप्रदेशिय स्कन्धने विशे अनन्तपर्याय कह्या हवे
 एमज उत्कृष्टि अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्धमां
 पर्याय अनन्ता जाणवा ए जघन्य उत्कृष्टि अव
 गाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध तेमा जघन्य अव
 गाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध तेतो एरु प्रदेशि
 अवगाह होय अने जे उत्कृष्टि अवगाहनानो द्वि
 प्रदेशिय स्कन्ध ठे ते द्विप्रदेशिय अवगाह होय
 एक १ अने बे २ वचे अन्तर नथी तेथी द्विप्रदे-

शिय स्कन्धने अजघन्य अवगाहना न होय एवं
 प्रगवाननुं वचन ठे तथा त्रण प्रदेशिय स्कन्धने
 विशे अनन्तपर्याय कह्या ठे जेम जघन्य तथा
 उत्कृष्ट अवगाहनाना द्विप्रदेशिय स्कन्धनु कहुं
 तेम जाणवुं. अजघन्यो अउत्कृष्ट अवगाहनाना
 त्रण प्रदेशिय स्कन्धने पण एमज कहेवो जे जघन्य
 अवगाहनानो त्रण प्रदेशिय स्कन्ध एक प्रदेश
 अवगाहीने रहे अने उत्कृष्टथी त्रण प्रदेशिय स्क-
 न्ध ते त्रणे प्रदेश अवगाहीने रहे ठे अने अज-
 घन्य अउत्कृष्टथी त्रण प्रदेशिय स्कन्ध त द्विप्रदेश
 अवगाहीने रहे कारण के सादृष्य अवगाहना माटे
 अवगाहना अर्थे तुल्य होय हवे चतुप्रदेशिय
 स्कन्ध जघन्य तथा उत्कृष्ट तथा अजघन्य अउ-
 त्कृष्ट अवगाहनानो तेना विशे अनन्ता पर्याय ठे
 ते कहे ठे जेम जघन्य तथा उत्कृष्ट अने मध्यस्थ
 अवगाहनानो द्विप्रदेशिय स्कन्ध आदिनुं कहुं
 तेम सर्व वक्तव्यता जाणवी पण एट्ठो विशेष जे
 अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ तुल्य कोइ अधिक
 होय जे हीन अवगाहना ते एक प्रदेशे हीन अ-
 धिक होय तो एक प्रदेशे अधिक तेने विशेष.

रीत्ये देखामे ठे जे चतुप्रदेशिय स्कन्ध अने ज
 धन्य अथवागहना करे तो आकाशना एक प्रदेश
 ने अथवागही रहे तेने जधन्य अथवागहना कहिये
 जे उत्कृष्ट अथवागहनानो स्कन्ध चतुप्रदेशिय
 ते आकाशना चार प्रदेश अवगाहीने रहे तेने
 उत्कृष्ट अथवागहना कहिये द्वे जे अथवागहना
 जधन्य नथी अने उत्कृष्ट नथी तेने मध्यम अ-
 वगाहना कहिये ते चतुप्रदेशिय स्कन्ध आकाराना
 वे प्रदेशने, अथवागहे कोइ त्रण प्रदेशने अथवागहे,
 एटले ते एक प्रदेशे अधिक न्युन थइ माटेतेने
 अजधन्य अउत्कृष्ट अथवागहना कहिये, ए रीते
 आगल सर्व जावने विशे जाणो लेवुं यावत
 दश प्रदेश सुधी कहेवु एटले जधन्य अथवागहनानो
 दश प्रदेशीय स्कन्ध ठे, ते आकाशनो एक प्र-
 देश अथवागहे तेने जधन्य अथवागहना कहिये
 जे उत्कृष्ट अथवागहनानो दश प्रदेशिय स्कन्धते
 दश प्रदेशने अथवागहे जे अजधन्य अउत्कृष्ट अ-
 वगाहनानो दस प्रदेशिय स्कन्ध, ते वे प्रदेशथी
 मांडीने नव प्रदेश सुधी अथवागहे तेने सात प्रदे-
 शनी हानि वृद्धि कहिये, ए अजधन्य अउत्कृष्ट

अवगाहना कही. हवे संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध
जघन्य अवगाहनावाळो तेने विशे अनन्ता प-
र्याय ठे, हवे संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य
अवगाहनावाळो तेथी संख्यात प्रदेशिय स्कन्ध
जघन्य अवगाहनावाळो ते डव्यार्थे तुल्य, प्रदे-
शार्थे द्विस्थान पतित होय अने अवगाहना-
र्थे तुल्य होय अने स्थीति चतुस्थान पतित
होय वर्णादि सर्वे पदस्थान पतित होय तेमज
उत्कृष्टि अवगाहनाना संख्यात प्रदेशियने जा-
णवुं, अजघन्य अउत्कृष्टने तेमज कहेवुं, पण
एटलो विशेष के अवगाहनार्थे द्विस्थान पतित
होय, तथा असंख्यात प्रदेशिय स्कन्ध जघन्य अ-
वगाहनावालाने अनन्ता पर्याय ठे ते असंख्यात
प्रदेशिय जघन्य अवगाहनावाळो अने अन्य अ-
संख्यात प्रदेशिय जघन्य अवगाहनावाळा स्कन्ध
साथे डव्यार्थे तुल्य, प्रदेशार्थे चतुस्थान पतित
ठे अवगाहनार्थे तुल्य अने स्थीति चतु-
स्थान पतित ठे, वर्णादि सर्वे पदस्थान पतित ठे.
तेमज उत्कृष्टि अवगाहनावाळा असंख्यात प्रदे-
शिय स्कन्धने जाणवा, अजघन्य अउत्कृष्ट अ

वगाहनाना अमख्यात् प्रदेशिय स्कन्धने तेमज
जाणवो, पण एट्लो विशेष के ते अवगाहना-
र्थे चतुस्थान पतित छे हवे जे जघन्य अत्र
गाहनानो अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध, तेने विशे
अनन्ता पर्याय रखा ठे ते देखाडिये ठिये जे
जघन्य अवगाहनानो अनन्त प्रदेशिय स्कन्ध अने
बीजा जघन्य अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय
स्कन्ध साथे अव्यर्थे तुल्य प्रदेशार्थे पटगुणी
हानि वृद्धि लागे, अवगाहनार्थे तुल्य स्थीति
आश्रये चतुस्थान पतित ठे अने वर्णादि आ-
श्रये पटस्थान पतित ठे, एट्ले ए जघन्य अव
गाहनानु कह्युं तेमज उत्कृष्ट अवगाहनाना अ
नन्त प्रदेशिय स्कन्धमां जाणवु तथा अजघन्य
अउत्कृष्ट अवगाहनाना अनन्त प्रदेशिय स्क
न्धने विशे एमज जाणवु, पण एट्लो विशेष के अ
वगाहनार्थे पटस्थान पतित जाणवु, इत्यादिक पुद्ग
लद्रव्यनु वर्णन कर्युं इहाकोइ पुठेके ऊपर गवेपु
तेमा आठ स्पर्शि 'पुद्गल स्कन्धनी वाख्या आवी
नही' तेनो ऊत्तर के पुद्गलनी आठ वर्गणा
ठे तेमा 'प्रथमनी' चार वर्गणा 'वादर' कही

ठे अने पाठलनी ' चार वर्गणा ' सुद्धम कहि
ठे तेनां नाम ज्ञापा स्वासोस्वास मन अने कर्मणा
ए चार वर्गणामा तो चतुस्पर्शिज ठे आठ स्पर्शि
होय नही अने प्रथमनी श्रौदारीकादि चार वर्गणा
वादर ठे तेमा पण द्विप्रदेशिय स्कन्धथी मांनिने
संख्यात प्रदेशिय तथा अमंख्यात पदेशिय स्क
न्ध सुधि तो सर्वे स्कन्ध चतुस्पर्शिज ठे अने अ-
नन्त प्रदेशिय स्कन्ध वादर जावे प्रणमेला तेमां
आठ स्पर्श होय एम समजी लेवुं पण सामा-
न्ये पुद्गल अव्यनुं वर्णन कर्यु तेथी समुदाये
चतुस्पर्श कह्या ते अपेक्षित ठे आठ स्पर्शि पु-
द्गल स्कन्ध चक्षु दर्शनथी ग्रहवाय पण चतु-
स्पर्शि पुद्गल स्कन्ध चक्षु दर्शनथी ग्रहवाय नही
एम जाणवुं इत्यादि पुद्गल अव्यनुं वर्णन शा-
स्त्रोमां घणुं ठे ते जाणवुं तेमज पट अव्यने
जाणे तेने शुद्ध समकित कहिये वली तेने ज्ञा-
नी कहिये अने ते ज्ञानी पागे पडे नही एटले
समकीत तथा ज्ञानथी ब्रष्ट थाय नहि एवुं महा
निपिथ सुत्रमां कहुं ठे, तो पण कोइ कर्मना
उदयथी पतित थाय तो तेनो विचार आगली

गायामा कहे ठे इति गाथा ए नो अर्थ सम्पूर्णा
 कदापि जो कर्म उदयथी,
 मिथ्यात्व पावु आवेरे ॥
 तो पण सागर कोडाकोडी उपर,
 वध एहने न होवेरे ज्ञान० १०

अर्थ — हवे कदापि जो कर्म उदयथी एट
 ले पूर्वकृत मिथ्यात्व मोहनी कर्मदल ते सत्ताए रहे-
 ला ज्ञानी थया पढी उदय आवे अने जीवनी
 सक्ति मरोमाय तेथी मिथ्यात्व गुणगणे जाय तो
 पण एक कोडाकोडी सागरोपम उपरान्त वन पडे
 कारण के समकित पाम्या त्यारे एक कोडाकोडी
 सागरोपममा पट्योपमने असख्यातमा जागे उणी
 स्थिति साते कर्मनी रही हती एटली ने एटली स्थि-
 तिना कर्म वात्रे पण अधिक स्थिति नो वन्ध थाय
 नहि समकित गुण प्राप्ति अत्रसरे जे स्थिती रह्यो
 हतो तेथी कदापि काले न्त्र स्थिति वधारे नहि
 ॥ उक्तच ॥ कदा वीती वचनात् ए अत्रिप्राय
 नंदिपेणने अधिकारे महानिपिथसूत्रथी जाणवो
 एटले ज्ञान गुण ते अत्रतिपाति कह्यो ठे तथा
 उत्तराध्ययन सुत्र मध्ये कहु ठे

उक्तं— गाथा.

सुह जहाम सुत्ताण,
 एस्सई कयवरंमि पनियावि,
 ईयजीवेवि समुत्तोणं,
 एस्मईग उवि ससारे. ॥ १ ॥

इत्यादि घणा शास्त्रोमां ज्ञाननुं अति-
 पातिपणु कहे छे माटे ज्ञानी सर्वथा एक कोना-
 कोनी सागरोपममां, पट्योपमना अमन्यातमा
 भागे न्युन एटली स्थितीना पमता दावे कर्म बांधे
 अधिक न बांधे एवो अधिकार छे अत्र बन्धा
 धिकार आश्रये किञ्चित् बन्ध प्रकृतिनां विचार
 पन्नवणा सूत्रथी कहे छे, अहिं श्री गौतमस्वामीण्
 वीर जगवान् प्रत्ये पुच्छयुं के कर्त्तव्यं कर्म प्रकृति
 छे. त्या जगवान् कहे ते हे गौतमसूत्र आठ प्रकृ-
 ति ते तेनां नाम - ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणी-
 य २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, अगुण ५, नाम ६,
 गोत्र ७ अने अन्तराय ८, ९ अत्र कर्म ते ते
 ज्ञानावरणीय उदय कर्म दर्शनावरण
 र्मनो उदय अने द

णीय कर्मना उदयवन्दे दर्शन मोहनीय कर्मनो
 उदय प्राप्त थाय अने दर्शन मोहनीय कर्मना
 उदयथी मिथ्यात्व पामे, अने मिथ्यात्व एटले
 तत्वने अतत्व जाणे अने अतत्वने तत्व जाणे
 ए मिथ्यात्वना उदयवन्दे अत्रे कर्मनो उदय प्राप्त
 थाय एम उदय नोगवतां निश्चय करीने सात
 अत्र कर्मनी प्रकृति बन्धाय छे एम अनुक्रम
 जोता ज्ञानावरणीयथी अत्रे कर्म बन्धाणा हवे
 अत्रे कर्मनो जे जे प्रकारे बन्ध पदे ते कहे छे
 ज्ञानावरणीय केटले ठेकाणे बाधे तेना वे जेद
 रागथी बाधे तथा द्वेषथी बाधे ते रागना वे जेद,
 (माया) ते कषट अने लोभ हवे द्वेषना वे जेद,
 मोध अने मान ए चार स्थानके जीवना प्राक्कम
 वन्दे उदर्याजे कर्म ते वन्दे करीने जीव ज्ञानावर-
 णीय कर्म बाधे १ हवे दर्शना वरणीय कर्मथी लेझने
 यावत अतराय सुधी पुरवे कथा जे राग द्वेष ते
 थीज कर्म बन्धाय छे, हवे ज्ञानावरणीय कर्म राग
 द्वेषने बश पढ्यो थको अत्यत गाढापणु बांध्युं ते
 आत्म एरेदज साथे सकलीष्टपणे बन्धाणा, यावत
 ते पुञ्जल परमाणु प्रत्ये पामीने दस जेदे जोगवे,

श्रोत इंद्रियना आवरणे १ श्रोत इंद्रियनो उ-
 पयोग न लाधे २ चक्षु इंद्रियना आवरणे ३
 चक्षु इंद्रियनो उपयोग न लाधे ४ घ्राण इंद्रि-
 यना आवरणे ५ घ्राण इंद्रियनो उपयोग न
 लाधे ६ रस इंद्रियना आवरणे ७ रस इंद्रियनो
 उपयोग न लाधे ८ फरस इंद्रियना आवरणे
 ९ फरस इंद्रियनो उपयोग न लाधे १० ते ते
 दसे स्थानकनां पुद्गल प्रत्ये अथवा विशेष पु-
 द्गल आदे दश्ने जे छेदाय जेदाय तथा अहार
 पाणी प्रमुख आदे दश्ने ए ज्ञानावरणीय क-
 र्मना जोरथी जाणवामां न आवे अथवा जा-
 णवा घणु वांछतो थको पण आवरणे करी न
 जाणे अथवा पुर्वे जाण्यु होय तेन पछे न जा-
 णि सके ते ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी अ-
 थवा पुर्वे ज्ञानी कहेवाता हता ते पुरुष ज्ञाना
 वरणीय कर्म उदय आव्याथी अज्ञानी कहेवाय
 एठले ते ज्ञानावरणीयना दस जेद अनुभववा
 आश्रये कह्या हवे दर्शनावरणीय कर्म वांछ्युं तेना
 पुद्गल पामीने नव प्रकारे अनुभववाय ठे तेनां
 नाम निद्रा १ निद्रा २ प्रचला ३ प्रच-

ला प्रचला ४ स्थीनष्ठि ५ चक्षु दर्शनावरणीय ६
 अचक्षु दर्शनावरणीय ७ अश्रुधि दर्शनावरणी
 य ८ अने केवल दर्शनावरणीय ९ ए दर्श-
 नावरणीय कर्म कक्षु हवे जाता वेदनीय जे
 जिवे बाधु तेना यावत ८ जेद जोगववाना
 कक्षा ठे मनगमता प्राण प्रमुख पामे १ मनग-
 मत्तु स्त्रीआदिकनु रूप पामे २ मनगमती सुगव
 पामे ३ मनगमतो रस पामे ४ मनगमतो स्पर्शादि
 पामे ५ मननु सुख ६ वचननु सुख ७ अने काया
 नु सुख ८ एम जाता वेदनीय अणुजववी एट्ले
 पुष्पमाला, चदनादि एम अनेक जातीनुं जोग
 ववु तथा विशेषादि पुद्गल सीत लण्णादिकनुं
 जोगववु पोताने अणुकुल ते जाता वेदनीय क-
 हिये अथवा मनोज्ञ गन्दादि सर्वे स्वअणुकुल
 वर्ते तेने जाता वेदनिय कहिये तेमज अशाता
 वेदनीय कर्मने लदये करीने ए पुर्वे कक्षा जे
 आठ जेद ते अकार सहित लक्ष्ण एट्ले अमनो
 ज्ञ कहिये ए सर्वे लपराठा जेद जाता वेदनीय
 कर्मथी जाणवा तेने अशाता वेदनीय कहिये
 त्रीजु वेदनीय कर्म कक्षु

हवे चोथुं मोहनीय कर्म तेनुं स्वरूप कहे ठे
जे मोहनीय कर्म जीवे बांध्युं तेने पांच प्रकारे
ज्ञोगवे तेनां नाम.-सम्यक्त्व मोहनिवमे अनु-
ज्ञवे १ मिथ्यात्व मोहनिवमे अनुज्ञवे २ मिश्र
मोहनिवडे अनुज्ञवे ३ कपायवमे अनुज्ञवे ४
अने नोकपायवमे अनुज्ञवे ५ ए पांच प्रकारे
मोहनीय कर्मनुं अनुज्ञववुं ठे एटले मोहनीय कर्म
कह्युं हवे आयुपकर्म जीवे बांधेवुं ते चार प्रकारे ज्ञो-
गवे तेना नाम नारकीनुं १ तिर्यचनु २ देवतानुं ३ अ-
ने मनुष्यनुं ४ ते शुजाशुज वेदे ए आयुपकर्म कह्युं
हवे नामकर्मनुं स्वरूप कहेछे शुभ नामकर्म जे जीवे
बांध्युं ठे ते जीव चौद प्रकारे अनुज्ञवे तेनां नाम
कहे ठे रुमो शब्द १ रुमुं रूप २ रुमो गंध ३
रुमो रस ४ रुमो स्पर्श ५ भली गति ६ रुमी
स्थिति ७ रुमो लावण्य एटले शरीरनी शोभा ८
रुमी यश कीर्ति ९ रुमी शरीरनी चेष्टा बलवीर्य
ते जीवनु सामर्थ्य जे पुरुषाकार अथवा संग्रामने
विशे बलनुं स्फुराववुं ते १० रुमो स्वर ११ कान्ति
मनोहर १२ अति प्रियपाणुं १३ मनने गमता सू-
खनुं पामवुं १४ ए चौद प्रकारे शुज नाम क-

र्मना पुद्गलने अनुभवे हवे तेहीज चौद बोल
 अशुभ नाम कर्मने विरो अनुभवे पण ते अनि-
 ष्टपणे जोगवे शुभ कर्मवालो ईष्टपणे जोगवे
 अशुभ कर्मवालो अनिष्टपणे जोगवे एटले
 नाम कर्मनुं स्वरूप कह्यु हवे गोत्र कर्मनुं स्व-
 रूप कहे ठे, ते गोत्र कर्म जीवे वाच्यु ते उदय
 आवे त्यारे ते आठ प्रकारे जोगवे तेनां नाम
 उत्तम जातिपणु १ उत्तम कुलपणु २ विशेष व
 लपणु ३ विशेष स्वरूपपणु ४ विशेष तपपणु ५
 ज्ञाननु विरोपपणु ६ लाजनु विशेषपणुं ७ मोट्टु
 अश्रयपणु ८ ए आठ जेदे उच गोत्र अनुभवे अने
 वळी ते आठे जेदे नीच गोत्रने विशेषे लेवा पण
 अनिष्ट लेवा एटले पूर्वे कहा तेथी (उपराठ))
 प्रतिपदि जाणवा एटले गोत्र कर्म कह्यु हवे
 अन्तराय कर्म कहे ठे जे जीवे अन्तराय कर्म
 वाध्यु ते उदय आवेथी पाच प्रकारे जोगवे, तेनां
 नाम दान दड्ड लड्ड शके नहि १ लाज पामी
 शके नहि २ जोग पामी शके नहि ३ उपजो-
 गनी प्राप्ति थड्ड शके नहि ४ अने वीर्य स्फु-
 रावी शके नहि ५ ए रीते अन्तराय कर्म पाच

प्रकारे अनुभवे एतले अन्तराय कर्म कहुं एतले
 ए आठे कर्मनुं अनुभवुं किन्चित् शब्द मात्र
 कहुं हवे आठे कर्मनी प्रकृति कहे ठे ज्ञाना-
 वरणीय कर्मनी ५ प्रकृति तेनां नाम मति ज्ञा-
 नावरणीय १ श्रुत ज्ञानावरणीय २ अवधि ज्ञा-
 नावरणीय ३ मनपर्यव ज्ञानावरणीय ४ अने केवल
 ज्ञानावरणीय ५ दर्शना वरणीय कर्मना वे ज्ञेद
 निज्जा पंचक १ अने दर्शन चतुस्क २ निज्जा
 पंचकना ५ ज्ञेद, निज्जा १ निज्जा निज्जा २
 प्रचला ३ प्रचला प्रचला ४ अने स्थीनद्धि ५ तथा
 दर्शन चतुस्कना चार ज्ञेद चहु दर्शना वरणीय
 १ अचहु दर्शना वरणीय २ अवधि दर्शना वरणीय
 ३ अने केवल दर्शना वरणीय ४ हवे वेदनीय कर्मना
 वे ज्ञेद कहे ठे ज्ञाता वेदनीय १ अने अज्ञाता वेद-
 नीय २ हवे मोहनीय कर्मना वे ज्ञेद दर्शन मोहनीय
 १ अने चारित्र मोहनीय २ दर्शन मोहनीयना त्रण
 ज्ञेद, समकीत मोहनीय १ मिथ्यात्व मोहनीय २
 मिथ्र मोहनीय ३ चारित्र मोहनीयना वे ज्ञेद कपाय
 मोहनीय अने नोकपाय मोहनीय कपाय मोह-
 नीयना १६ ज्ञेद अनन्तानुबन्धी, क्रोध १ अन-

न्तानुबन्धी मान १ अन्तानुबन्धी माया ३ अ
 न्तानुबन्धी लोचन ४ अप्रत्याख्यानिय क्रोध ५
 अप्रत्याख्यानिय मान ६ अप्रत्याख्यानिय माया
 ७ अप्रत्याख्यानिय लोचन ८ प्रत्याख्यानिय क्रोध
 ९ प्रत्याख्यानिय मान १० प्रत्याख्यानिय माया
 ११ प्रत्याख्यानिय लोचन १२ मज्जलन क्रोध १३
 संज्वलन मान १४ संज्वलन माया १५ संज्वलन
 लोचन १६ एतले ए कपाय मोहनीय कही, हवे नोक-
 पाय मोहनीयना नव जेद कहे ठे स्त्रीवेद १ पुरुषवेद
 २ नपुंसकवेद ३ हाप्य ४ रति ५ अरति ६ जय
 ७ शोक ८ दुगंछ ९ हवे आयुष्य कर्म कहेछे तेना
 चार जेद नारकीनुं आयुष्य १ त्रिर्यचनुं आयुष्य २
 मनुष्यनु आयुष्य ३ देवतानु आयुष्य ४ हवे नाम
 कर्मना वेतालीम जेद कहे ठे नरकादि गति १ एके-
 डिआदिनी जाति २ औदारिकादि शरीर ३ शरी-
 रनां अङ्गोपाङ्ग ४ बन्धना ५ सङ्गातना ६ मद्धेअण ७
 संस्थान ८ वर्ण ९ गन्ध १० रस ११ स्पर्श १२ अणु
 रज्जुषु नाम कर्म १३ लपघात नामकर्म १४ पराघात
 नामकर्म १५ आनुपुखी नामकर्म १६ लस्वाम ना-
 मकर्म १७ आताप नामकर्म १८ लयोत नामकर्म

१ए विहायोगति नामकर्म २० त्रम नामकर्म २१
 स्थावर नामकर्म २२ वादर नामकर्म २३ सुद्धम
 नामकर्म २४ पर्याप्ति नामकर्म २५ अपर्याप्ति ना-
 मकर्म २६ साधारण नामकर्म २७ प्रत्येक नाम-
 कर्म २८ स्थिर नामकर्म २९ अस्थिर नामकर्म
 ३० शुभ नामकर्म ३१ अशुभ नामकर्म ३२ सौ-
 चाग्य नामकर्म ३३ दूरर्जाग्य नामकर्म ३४ सु-
 स्वर नामकर्म ३५ दूस्वर नामकर्म ३६ आदेय
 नामकर्म ३७ अनादेय नामकर्म ३८ यश नाम-
 कर्म ३९ अयश नामकर्म ४० निर्माण नामकर्म
 ४१ तीर्थकर नामकर्म ४२ तथा बन्धन सद्भातन
 आदे घणा जेद छे तथा पनवणाजीमां पांच पद
 कर्म प्रकृति आश्रये ठे तथा जगवतीजीमां क-
 पायनी चोरासी आदे ठे तथा कर्म ग्रंथने विशे
 चोवीशीजं प्रमुख मोहनीय कर्मनीठे तथा स्थान
 परत्वे जंगजाल घणी ठे ते सर्वे ते ग्रंथोथी जा-
 एवुं अत्रे ग्रंथ गौरव थाय ते माटे कहुं नथी
 तथा चोथा कर्म ग्रंथमां बंध हेतु चार कहा छे
 तेना उत्तर जेद सत्तावन ठे अने अहियां तो
 राग द्वेप वडे वंधाय एवुं कहुं ठे तो तेमां

कंठ त्रीन जेवु मालम पन्तु नथी कारण के
 मिथ्यात्व १ अत्रत २ कपाय ३ अने योग ४ ते
 सर्वे राग द्वेषथीज कारण दीसै ठे अने ज्यां सुधी
 राग द्वेषने विषे प्रवर्ते त्यां सुधी स्वस्वरूपनी प्राप्ति
 थाय नहि अने स्वस्वरूपनी प्राप्ति बिना ज्ञानी
 कहेवाय नहि पूर्वे बधाधिकार कह्यो ते सर्वे व्य-
 वहार ठे हवे मुल स्वरूपे आत्मा साथे बध पडे
 तेनु स्वरूप कहे ठे त्यां प्रथम जीवन्तुं स्वरूप तो
 अव्यास्तिकनय पक्षे सदा शुद्ध ठे ते कोऽ काले
 मलीन थतु नथी अने ज्ञानरूप ज्योति युक्त
 विराजमान प्रकटपणे ठे आद्यन्ते चेतनालक्षणे करी
 शुध ज्ञानमय जीवन्तु स्वरूप ठे अतिन्द्रिय सुखनो
 भोगी अव्याबाध सुखेसुखी ठे वली अतिन्द्रिय
 एटले इन्द्रियो रहित तथा मन रहित एटले
 पुद्गलीक जाव शुन्य एवु स्वस्वजावीक शात सु-
 धारसरूप अपूर्व लब्धि युक्त रसनो निरन्तरपणे
 भोगववानो आचारवन्त ठे वळी स्फटिक रत्नसम
 निर्मलपणे सहज अवस्थानरूप शुद्ध स्वरूप प्रकट
 ठे तथापि केवो ठे के अविनीस्वर ठे एवी सत्ता
 सदाकाळ प्रवाह धारारूप प्रणमन स्वजाव ठे सर्व

दुःखथी रहित आधीव्याधीथी रहित निरुपाधी
 ठे एटले शुभाशुभ कर्मथी रहित ठे कारण के
 पोते एक शुद्ध ज्ञानमय ज्योतिरूप स्वरूप ठे एवो
 जीव पण कर्मने वसे बन्धाणो ठे एटले विटाणो
 ठे ते कर्म वे प्रकारनां ठे डव्यकर्म १ तथा ज्ञाव-
 कर्म २ डव्य कर्म ते ज्ञानावगणादि ८ आठ
 थने ज्ञावकर्म ते रागद्वेष अशुभपरिणति हवे जे
 ज्ञानावरणादि कर्मरूप पुद्गलपिम् छे ते पुद्गल
 पिम् चेतन साथे एनी वर्गणानुं बलगबुं तेने बन्ध
 कहे ठे ते बन्धनो नाश करवाने चेतन स्वस्वरूपे
 रमे तो सामर्थ्यछे परन्तु ए बन्ध जुवो दृष्टि करीने
 देखो केवो जोरावर छे पोताने प्राक्रमे गाजी रह्यो
 छे क्रीमा करी रह्यो ठे एटले पोताना रसबडे क-
 रीने जगत्रयवासि समस्त जीव राशिने वश करी
 मुको ठे तेथी महा अहंकार कहेतां जे अज्ञी-
 माने जरेलो छे कोइथी पाणो टलतो नथी एम
 थनादी थनन्त काल थयां एक नाटकसालानो
 अखाडो बांधीने रह्यो छे थने समस्त जीवने नाटक
 करावे ठे एटले ए बन्ध ते शुं करे ठे के जगत्र-
 यवासी सर्व संसारी जीवने शुद्ध स्वरूप पोतिकु तेने

पामवा देतो नथो अने ते स्वरूपथी ब्रष्ट करे ठे कारण के रागद्वेष मोहरूप अशुद्ध परिणतिने विशे प्रिणमावे ठे, मोहरूप मदिरापान करावीने महज म्वरूपथी ब्रष्ट करे छे जेम कोइ पुरुष मदिरापान करीने बेजान थयो तेनी पासेथी सर्व वस्तु लोक लै जाय तो पण तेने खन्न पन्ती नथी पोतानी वस्तुनु ज्ञान चुली जाय ठे तेम आ चेतन मोहने वश पड्यो ज्ञानावरणादि कर्मनो बध करे ठे त्यारे शुद्ध स्वरूपनुं ज्ञान अ-नुभव ते करी शके नहि तथा शुद्ध ज्ञाननो उपयोग रहे नहि

उक्तच — शार्दूल विक्रिन्ति वृतम्.

रागोजार महास्मेन मकलं कृत्वा प्रमत्त जगत,
क्रीडत रसजावनिर्जर महानाट्ये नमधधुनत्,
आनदामृत नित्यभोजि सहजावस्था स्फुटं नाट्य,
द्वारोदार मनाकुल निरुपधि ज्ञानं समुन्मज्जति॥१॥

हवे जे चेतन ठे तेतो उपयोगवत चेतना गुण सहित ठे ते उपयोगना वे जेद ? अव्य उपयोग अने जाव उपयोग ते मध्ये भाव उप

योग तो स्वस्वरूपनी रमणता करे ते अवसरे ठे ते
 ज्ञाव उपयोगतो कोइ जीवने सादिसान्त प्रांगे ठे
 तथा कोइ जीवने सादि अनन्त प्रांगे ठे अने अव्य
 उपयोग तो अनादि कालनो चेतनने छे ते मुख
 वस्तु चेतन तेने रागद्वेष मोहरूप अशुद्ध परिणाम
 तेणे करीने मिश्रित् ज्ञाव अयो माटे अशुद्धपणे
 परिणम्यो ठे तेथी केवल पोते परनी साहाय इच्छे
 एम परानुयाइपणे संसार ग्राही जीवरासी तेने बन्ध
 हेतु प्रवति कहेता ज्ञानावणादि कर्म वर्गणा बन्धनुं
 कारण थाय तेनाथी चेतन बन्धाय हवे बन्ध अवसरे
 जीव केवी वर्गणा ग्रहे ते कहे छे. त्रणसेने तेता-
 लीस राजप्रमाण लोकाकासना प्रदेशनी राशी
 पुर्वक कर्मण वर्गणाना प्रमाण दळनो समुह अने
 आत्माना प्रदेशनुं परस परस संबन्धिपणे लोह-
 अज्ञी इष्टते एकत्वपणे मलबु तेनु नाम बन्धाय
 ठे एम समय समय सात, आठ कर्मनो बन्ध
 बांधे एवी रीते चेतन कर्मण वर्गणाथीज बन्धाय
 ठे इहां कोइ कहे के कर्मण वर्गणाज कर्म ब-
 न्धनु कारण थइ तेने गुरु ऊत्तर कहे ठे के ए
 वात तो त्रणे काले संभवे नहि कारण के सिद्ध

सील कहेता आचार ठे एटले ज्ञानी जीने वाह्य सामग्रिना कारणथी कर्मनो बंध पमे नहि ए वस्तुनु स्वरूप एमज ठे परन्तु प्रमादि थज्जे विषयादिने भोगवशे अथवा जीव हिंसा करशे अथवा आर्तसौद्र ध्यानने विभे मनादि योग वर्तशे ए सर्वे ठेकाणे जीव हिंसानुंज काम ठे ते पोते प्रमादि थै निरंकुशे वर्ते तेनी आज्ञा उपर ज्रष्टि नथी कर्म बधनो ज्ञय नथी थने वे थदर विद्यानुं ज्ञणतर थयु अथवा जाणपणुं थयु तेथी ज्ञानीपणु मनमा धारे तो शू ते कर्म नहि बाधे थवस्य ते कर्म बांधशे कारण के तेने स्वस्वरूप परस्वरूपनी थोलखाण नथी तथा उदय अनुदयनी खर नथी एक मस्तिनो ज्ञयो एवा कर्म करशे ने ज्ञानी नाम धरावशे तेने तो थवस्य कर्म लागशे जेने स्वस्वरूप परस्वरूपनु जाणपणुं ठे ते उदय जाणीने तेमा थव्यापकपणे वर्ते तेने कर्म नहि लागे एवो रहस ज्ञानीनो ठे एटले पूर्वोक्त नीर्मल व्यावते कहेतां विकल्प बुधिरूप सुस्क जाणपणु ठे थने थंतरंग रुचि करीने वीषय क पायादि सेवे नोरथकुठापणे आचरे तो ए निश्चय

मिथ्या दृष्टि ठे अने राग द्वेष मोहरूप अशुद्ध
 परिणाममां खुतेलो तेने ए कारण सर्वे कर्म-
 बंध हेतु ठे एवा थैने ज्ञानी नाम धरावे तेने ज-
 गवन्ते जाव मिथ्यादृष्टि कह्या ठे तेमिथ्यादृष्टि
 तो निश्चयथी कर्मबंधनो कर्ता ठे अने जे ज्ञानी
 जीव छे ते तो शुद्ध स्वरूप अनुभवी ठे तेने कोइ
 पूर्वकृत कर्म उदय थयुं तेने विशेषे तेनी रुचि नथी॥
 सर्वथी ते इच्छा रहित ठे ए अवांठक रूप क्रिया
 कही ॥ तेने विशेषे रचि पचिने करता नथी अने
 केवल पोताने ज्ञान ध्यानने विशेषे व्याघात थाय
 ठे ॥ अने उदययोगे कारण सामग्री तेवीज मळे
 तेवारे तेने ए अकार्य जाणे तेने परजाव जाणीने
 अरुचि साथे कार्य करे तेने ज्ञानी कहिये अने ते
 ज्ञानीने कर्म बंधातुं नथी एवो सिद्धांतनो रह-
 संस्य जणाय ठे ॥ हवे अहियां कोई कहे के कर्मने
 उदयथी जोग सामग्री मळे तेमां तेने अन्तरङ्ग
 रुचि ठे के नहि? रुचि विना तो कंइ वनतुंज
 नथी अने शुद्धस्वरूपने अनुभवे ठे समस्त कर्म-
 ने जाणे ठे ॥ ए परजाव ठे माटे त्यागवा योग्य
 ठे एम कोइ बोले तों ते वात सर्वे जूठी ठे का-

रणके ए वन्ने वस्तु एक घरमा लाधती नथी ॥
 ज्या ज्ञाननो अनुभव ठे त्यां विषयादिनो अनु-
 भव न होय अथवा ज्यां विषयादिनो अनुभवठे॥
 त्यां ज्ञाननो अनुभव न होय ए वे क्रिया प्रति
 पक्षी ते एक ठामे केम रहे? माटे एतो उदय
 माफक ठे ॥ जेम कोश पुरुषने ताव ज्वरनो रो
 ग थयो तेवारे कर्म प्रमुखनो काथ पीवो पमे
 त्यारे काथने ते प्रत्यक्ष जाणे के कर्मवो ठे पण
 शु करे ताव ज्वरने काढवा ते पीवो पमे ते उपर
 रुचि वा अजिलापतेने होय नहि, द्रष्टांत जेम च
 रुने गरमीनी व्याधि थए ॥ दुधनां तथा घीनां
 पेल मुकी पाटो बांध्योतो जाणे ठे के पाटो बा
 धवाथीहु देखीश नहि ॥ पण व्याधि कामवा पाटो
 बाधवो पडयो ते पाटा उपर तेने बल्लजपणु ह
 शे? तो अवश्य पाटो बहालो न लागे ॥ तेम
 ज्ञानीने पूर्वोक्त कह्या जे द्रष्टांत तेने विशे रुचि
 न होय केमके विरुध काम एक जगामां होय नहि॥
 तथा जेम अगारु अजवाबु एक क्षेत्रे थने एक
 काले न होय तेम ए वे अनुभव एक जीवने एक का
 ले न होय॥ एवं सन्नवेठे॥ थने पूर्वाचार्य पण एम

ज कहेता आव्या ठे ॥ पठी तत्वतो केवली
जाणे ॥ ॥ उक्तं च ॥

तथापि न निर्गालं चरितुमिष्यते ज्ञानिना ॥
तदा यतनमेव सा किल निर्गालाव्यावृत्ति ॥
अकाम कृतकर्म तन्मतमकारणं ॥

ज्ञानिनां ह्यं नहि विरुध्यते किमुकरोति जाना-
ति च ॥ ४ ॥

अर्थ-हवे जे ज्ञानी पुरुष ठे ते शुद्ध स्वरु-
पनो अनुभव करे अने शुद्धस्वरुपनुं जाणपणुं
थयुं ठे ते ज्ञानीपुरुषने जे जे कर्मनो उदय
थाय ते ते उदय सामग्रिने विपे अजिलापा करे
नहि, तो अजिलापा कोण करे? केजे मिथ्या-
दृष्टि ठे, ॥ जेने आत्म स्वरुपनुं जाणपणुं नथी,
शुद्धस्वरुपनु ज्ञान प्रणम्युं नथी, तथा शुद्ध स्व-
रुपनो उपयोग वर्तमानकाले ठे नहि ॥
एवा जीव ते बाह्यथी वैराग घणो राखे ॥ मन
उडियोने वश करवा चाहे ॥ वहेवार शास्त्र वां-
चवा जणवानो अन्यास करे, ते सर्व सहज द-
शाना अजाण, तेने मिथ्यात्वी कहिये ॥ ते जीव

कर्मनो बंध पामे ए वात अथवश्य करीने एमज
 ठे ॥ पण ज्ञानी पुरुषने बंध पमे नहि ॥ तेनुं
 कारण कहु ते सांजळो केजे ज्ञानी पुरुष ठे तेणे
 पोतानुं स्वरुप निर्मल अविनाशि अमुर्ति अने अ
 लिप्त जाण्यु तथा मुर्तीवत अने विनाशिक वर्णा
 दि स्वरुप पुढलनु जाण्युं तेथी एम समजे के
 वर्णादिना जोग ते अरुपी. चेतनने होय नहि
 अरुपिनो जोगतो अरुपी ठे अने रुपिनो जोग
 तो रुपी ठे माटे ए जोग मारे होय, नहि परतु
 विचारे के पूर्वे में अशुद्ध उपयोगे राग द्वेष मो-
 हने वश रहिने शुद्ध स्वरुपने अजाणपणे शु-
 जाशुद्ध कर्म बांधेलां ते अत्यारे लदय आव्यां ठे
 ते जोगव्या विना वृत्को नथी अष्टतजेम को
 उ पुरुष वनमां चाव्यो जाय ठे ते वन जाहमनो
 अजाण शहेरमा वसवावालो सुकोमल अने स
 दाए सुगधिमा रहेवावालो ते पुरुष वनमांथी कौ-
 अचना फाफमा हाथमां लघने जोवा लाग्यो अने
 घणा सुकोमल जाण्या केटलाक वस्त्रमा लीधा
 पठी ते हाथनो तथा वस्त्रनो ज्या ज्यां शरीरे स्पर्-
 श थयो त्या त्या चल वुटी ते चलनी वेदना थड

बहु गजराणो तेवारे तेने लोके कह्युं के आतो
 कौथचना फाफमाथी तने थयुं ठे तुं नाखी आ-
 व्य त्यारे ते नाखी आव्यो, पण चलनी वेदना
 मटी नहि त्यारे लोके कह्युं के ठाण ठरीरे घसो
 पठी पाणीए करीने नाहो एटले चल मटी जठे
 तेणे तेम कर्युं त्यारे वेदना मटी तो जुवो ते सु
 गंधिमां रहेवावालो तेने ठाण चोलवुं पम्यु ते
 ठाण चोलवानो तेने अजिलाप हतो नहि तेम ज्ञा-
 नी पुरुपेने पुर्व कृतकर्म उदय आवे त्यारं ते ते का-
 रण सामग्रीने विपेरुचिवा अजिलापा होय नहि
 कारणके ए परजावथी सदा ए उदास रहेवे अने
 जेनुं चित्त सदाए वैरागमां वसेबुं ठे तेथी ते ज्ञानी
 जीव उदय जोगवतां कर्म न बांधे ते वात निश्चय
 ठे कारण के कर्मनो बन्ध तो राग ठेगयी पमे
 अने राग द्वेष अज्ञानीने होय ज्ञानीने होय
 नहि ते माटे कर्मबंध होय नहि ॥ शिष्य वाक्य ॥
 स्वामी तमे ज्ञानी कहो ठो ते सर्वज्ञने कहो ठो
 के सम्यक्त्वने कहो ठो? जो सर्वज्ञने कहेशो तो
 तेने घरे तो जोग सामग्री ठे नहि तेने राग द्वेष
 पण ठे नहि जो समकृती देशविरति अने सर्व

विरतीने कहेशो तो तेना राग द्वेष अने मोह
 गया नथी ते १० दसमा गुणस्थान अन्ते
 जशे ते कर्म बावे के न बांधे ॥ तेनो उत्तर गुरु
 कहे ठे सर्वज्ञ तथा समकित आदे ते ते गुण
 स्थानना ज्ञानु कह्यु ते तो व्यवहारनयनी अ
 पेक्षा ठे ते एनय अपेक्षाए सत् ठे अने अहीया
 तो अध्यात्म अपेक्षाये ससारी जीवनावे जेद क
 रिये एक स्वभाव ग्राहि १ अने बीजा वि
 ज्ञानग्राहि २ तेमा जे विज्ञानग्राहि ठे ते तो अ
 ज्ञानी राग द्वेष सहित ठे अने जे स्वभावग्राहि
 ठे ते ज्ञानी ठे तेने राग द्वेष नथी पण ग्राह्य
 ष्टि लोको तेना उदय ज्ञाने देखी तेने रागी
 द्वेषि कहे छे जेम सुकडाल मंत्री उपर राजा
 कोष्यो त्यारे जाण्यु के ते मने मारी नाखशे ते
 म जाणी अकराने कह्यु के हु जेहेर खांठं बु तु
 राजानी सजामा मने मारजे एठले त्हारु प्रधान
 पणु कायम रहेशे आपणे घेरथी प्रधानपणु ज
 शे नहि ते पुत्रे तेमज कर्यु तो लोके जाण्यु के
 दीकरे आपने मारी नारयो अने राजाए प्रधान
 पदवी दीकराने आपीपण दीकराए तो बापने मा

रथो नथी वाप तो पोताने हाथे जेहेर खाश्ने मुवो
 तेम अही कर्मनु स्वरुप ज्ञानीए जाएयुं तेथी पूर्व
 बंध उदयमां आवेलो तेने खेखे पण तेमां राग द्वेष
 करी नवु कर्म बांधता नथी जेम ते छोकराने वाप
 उपर द्वेष नहोतो तदवत ते माटे मिथ्यादृष्टि
 जिव आत्माने जाणतो नथी तेथी कर्मबंध करे
 अने ज्ञानी जिव आत्मस्वरुपने जाणे तेथी तेने
 कर्मबंध थतो नथी ए वात सिद्ध थइ ॥

॥ उक्तं च ॥

जानाति यः सनकरोति करोति यस्तु ॥

जानात्ययं न खद्यु त किलकर्म राग ॥

राग च बोधमयमध्यवमीयमाहु ॥

मिथ्यादृश सनियतं स च बंध हेतु ॥ १ ॥

अर्थ हवे जे मिथ्यादृष्टि जीव छे तेने समजवामा
 सर्व वातु अवली ठे तेनुं स्वरुप किञ्चित् देखाडे
 ठे के अमुक पुरुपने अमुके, मारी नाख्यो अ-
 मुक पुरुपने अमुके जीवाम्यो अथवा ए सुखी
 ठे दु खी ठे अथवा ए पुरुपने अमुके सुखीयो क-
 र्यो अने अमुके दु खीयो कर्यो ए वात सर्व मिथ्या

छे जे पूर्व ऋतकर्म जेणे जेवा बांधेलां तेवा ते
 जोगवे मरण जीवन सुखी छुखी कोइ को
 इने करवा समर्थ नथी पोतपोताना क्रत्य प्रमा
 णे जोगवे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी एतो प्र
 त्यक्ष जोवामा श्रावे के एक बीजाने मारी
 नाखे, अने एक एकने ठोमावे, एक एकने सु
 खीयोये करे, एक एकने छुखीयोये करे ते सर्व
 जोवामां श्रावे छे अने तमे असत्य केम
 कहो छे तेनो उत्तर गुरु कहे छ ॥ हे ऋद्धे जे
 णे जेवा कर्म उपाज्या अने जेवो सबध बा
 धेलो छे तेवे सबधे उदयमां प्राप्ति थाय जेम
 कोइ पुरुषने सहज ऋमि खोदतां निधान मले
 कोइ पुरुषने व्यापारथी मले एम अनेक प्रकारे
 प्राप्ति थाय अने कोइ पुरुषने सर्वथी महेनत
 करता मलतु नथी माटे जेने जे सबधे प्राप्ति
 थवानी होय तेम मले अहि कोइनु कर्यु थतु न
 थी पूर्व ऋतकर्म प्रधान्य छे आयुष्य कोइनु तो
 न्यु तुइतु नथी अने सांन्यु सधातु नथी माटे
 परनी श्राश तथा त्रास एकद्वपना करवी ते सर्व
 असत्य छे ॥ शिष्यवाक्य ॥ स्वामी सात प्रकारे

आयुष्य तुटे एवं संगेण प्रकरणमां कहुं ठे
 अने तमे ना केम कहो गो ? ॥ तेनो उत्तर ॥
 हे ऋद्धे ! संगेणमां सात प्रकारे आयुष्य तुट्वा-
 नुं कहुं नथी त्यांतो कहुं ठे के ॥

सता ए आयु सी जंती इति वचनात्-ए सा-
 त प्रकारे आयुष्य पुरु थाय एम कहुं ठे आयुष्य
 तुट्वा नुं कहुं नथी ते साते प्रकारनां नाम ॥ श-
 स्रथी १ ऊहेरथी २ अग्निथी ३ पाणीथी ४ फां-
 साथी ५ सर्पादिव ना ऊहेरथी ६ अने ऊंपापात
 थी ७ ए साते प्रकारे आयुष्य पुरु थाय
 पण जेनुं आयुष्य घावी रहुं होय तेनुंज अने
 जेनुं आयुष्य वाकी होय तेने ए साते उपक्रम-
 मां कोड नाश करवा समर्थ नथी कारणके जे
 अस्त्रनुं उपक्रम कहुं ते केष्टक पुरुपने सोमो ऊ-
 ट्ठा ष्टग उपर देखिये ठिये तथा राण, गोली प्रसु-
 ख वागेलां एम घणा जोवामा शत्रुने पण ते पुरुप
 मुवा नहि अने जेनुं आयुष्य शारी रहुं होय
 तेने हेके अस्त्र, लाकरी, शस्त्रवा पत्रर शस्त्रवा
 बीजां अस्त्र शस्त्रवाथी तुम्ह मंग मांटे जेनुं आ-
 युष्य तुट्ठुं होय ते मंग ठे हेके बीजुं उपक्रम ठेहेर

कहेता सोमल, अफीण, वठनाग सगीमोरोश्चा
 दे दश्ने ए जहेरनी जाती छे ते खानाथी प्राण
 नो नाश थाय ते सरी वात पण सर्वे जीव
 मरता नथी ए सोमल प्रमुसना सानारा अत्यारे
 केटलाक जीवता देखीए त्रिये अने जेनुं आयुष्य
 आवी रह्य होय ते मरेठे माटे एम निश्चय न थयो
 के तेथी आयुष्य तुटे एटले ए उपनम बीजु
 कह्यु हवे त्रीजु उपनम अग्निथी सर्वे जीव
 मरे एम निश्चय एतु नथी कारण के अग्निमां
 पमेला जीव जीवें ठे अने घणा मरी पण गया
 छे तथा चरितानुवादे घणा जीव अग्निमा पे
 ठेला तथा अग्नि फरी बढेली तेमाथी जीवता
 निकल्या ठे तो अग्निथी आयुष्य तुटतुं नथी ए
 त्रीजु उपनम तथा चोथु उपनम पाणी, तेथी
 जीव मरे पण जेनु आयुष्य आवी रह्य होय
 ते मरे कारणके केटलाक माएस तो चार
 हाथ पाणीमां रुवी मरे ठे अने ममुद्रमध्येथी
 कोइ जीवतो घेर आये छे ते मध्ये तारा रुवे
 अने वगर तारा निकले एवं पण जोवामां अवे
 ठे तो पाणीथी आयुष्य तुटे ए वात सगीत थ

इ नहि हवे पांचमुं उपक्रम फांसाथी जीव मरे
 पण सर्वे जीव मरे एम निश्चय नथी, कारण के
 फांसाना खावावालाने फांसो गले वसेतो न-
 थी अथवा तुटी पमे तेथी तेने जीवता जोवा-
 मां आवे ठे तो फांसाथी आयुष्य तुट्युं एम नथी
 तथा सर्पादि जहेरी जनावरना करडवादिथी
 जीव मरे छे पण जेनुं आयुष्य आवी रहुं होय
 ते मरे ठे, अने जेनुं आयुष्य उचुं होय तेने ए जहेर
 लागु पडतुं नथी अथवा जेने लागु पमे तेने उ-
 तारनारा मले अथवा औपधीथी पण उतरी जाय
 ठे तेथी मरता नथी ए वात प्रत्यक्ष ठे एटले जहेरी
 जनावरना जहेरथी पण आयुष्य तुटतु नथी ए
 उनुं उपक्रम तथा सातमुं उपक्रम जंपापातथी
 मरे पण जेनुं आयुष्य तुट्युं होय ते मरे.
 जेनुं आयुष्य उचुं होय ते मरे नही, शामाटे जे
 सात माळनी हवेली उपरथी पडे ते जीवता रहे,
 अने एक हाथना उंटला उपरथी अथवा ठेस
 वागवाथी पमे ते मरे माटे जंपापातथी आयुष्य
 तुटतुं नथी, एम ए साते उपक्रमथी जेनुं आ-
 युष्य आवी रहुं होय ते पुरुं थाय एवुं संग्रहणी-

सुत्रमा कहु ठे के सात प्रकारे आयुष पुरु थाय तेनो अर्थ कोइए अनास्मृतीथी तुअानो कह्यो ते उपर श्रद्धा करवी नहि शामाटे के श्री जगवतीजीमा आयुष बाधवाना वे प्रकार कहु ठे एकनी रूपक्रमी १ अने बीजु स्वोपक्रमी २ हवे जे रोगादीथी तथा बगासुं, ठीक, प्रमुख आववाथी मृत्यु थाय तेने नीरूपक्रमी कहीए अने जेने ए उपक्रम कहुयां ते उपक्रममादी लागवाथी मरे तेने स्वोपक्रमी कहीए, एटले पुर्वे जेवो बध बाध्यो हशे, तेवी रीते मरशे, पण कोइनो मार्यो मस्तो नथी, अने कोइनो जीवामयो जीवतो नथी तथा आयुष कर्मने हेमय सरखुं कहुं ठे, तेथी कोइ जीव अनेक उपाय मरवा सारु करे पण ते आयुष आवी रह्या विना सर्वथा मरे नहि, ते वारयाथी पन्नवणाजीमा तथा कर्मग्रंथमा ठे ते माटे कोइ जीवने कोइ मारवा समर्थ नथी तेम जागामवा समर्थ नथी, जेवो पुर्वे बध बाध्यो हशे तेवी रीते जोगवशे तथा सुख दुख पण कोइ कोइने देवा समर्थ नथी जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्तिये ब्राह्मणने सुखीनुं करवो धार्यो

पण ते दुःखीजन्म रह्यो तद्वत् तथा श्री श्रीपाळ-
 रायने धवळशेठे दुःख देवाना घणा उपाय क-
 र्या पण ते सुखीआज रह्या तद्वत् माटे मरण
 जीवन सुख दुःख ए सर्वे पोतपोताना पुर्वकृत्य
 प्रमाणे ठे. पण मिथ्यादृष्टि जीव एम जाणे ठे
 के, अमुके मारुं जडुं कर्युं अथवा अमुके मारुं
 बुरुं कर्युं. ए जीवने ज्ञान प्रगट्युं नही अने शु-
 च्छाशुच कर्मनुं जाणपणु थयुं नहि, तेथी एम
 जाणे पण एम नथी समजतो के ए सर्वे सं-
 सारी जीवराशी ठे, ते सुख दुःखादी पोतानां कृ-
 त्यकर्म जोगवे, जेणे शुचकर्म उपाज्या ते सुख
 जोगवे, जेणे अशुचकर्म उपाज्या ते दुःख जोग-
 वे एटले पोताना परिणाम शुच कहेतां करु-
 णामय ठे तेथी सर्व जीवनी दया चितवे, पण
 कोइ जीवनुं बुरुं चितवे नहि अथवा देवगुरु
 धर्म उपर रुनो जक्ति राग करे, तेथी शुचकर्म-
 नुं वांभुं थाय अने ते जीव सुखीजन्म पण
 थाय वली अशुचकर्म कहेतां संक्रीष्ट परिणाम
 एटले राग द्वेष मोह विषय कपाय प्रमुख करवा
 अथवा देवगुरु प्रत्यनीक अथवा साधु

प्रमुखनी निदा करवाथी अथवा अनेरानु वुरु
 ताकवाथी अशुचकर्म बंधाय तेथी दु खनी पर
 परा पामे माटे पोतपोताना कृत्यथी सुख दु ख
 दी पामे पण अहीच्या कोशु कर्तुं थतुं नथी
 ए वातमा अरु ठे नहि इहां मिथ्यात्वो जीवो
 परने माथे दोष दे ठे ए वात सत्य ठे नही

उक्त च-

सर्व सदैव नियत भवती स्वकीयं
 कर्मोदियान्मर जीर्णत दु ससौख्य
 अज्ञानमैतदि ह्यशु परपरस्य
 कुर्यात्पुमान् मरण जीवित दु खदुरय ॥६॥

हवे अज्ञानी जीवराशीनु स्वरूप कहे
 ठे ए अज्ञानी जीवो केरा होय के मे
 अमुकने मारी नारयो हु अमुकने जीराहु
 तु, मे एने दु ख दीवु, मे एने सुखीउ कर्तो,
 हु आवा आवा कामो करु तु, हु करु ते वी
 जाथी न थाय अथगा मे धन उपाज्यु, अथ
 वा मे राज्य लीधुं, अथवा हु साधु तु अथवा
 हु श्रावक तु, अथगा हु धर्माष्ट तुं, अथवा हु

तपस्वी वुं, अथवा हुं विरती वुं, एवो पोते अहं
 कृत पद पोताने विपे, माने अथवा हुं मनुप वुं,
 अथवा हुं तीर्यच वुं, अथवा हुं पुरुष वुं, अथवा
 हुं स्त्री वुं, अथवा नपुंसक वुं इत्यादि अहंकृत पद
 पोताने विपे माने ते शायी के ए जीव अज्ञानी छे,
 एनी दृष्टि मिथ्यात्वरुप ठे, एना परिणाम अशुद्ध
 ठे, तेथी ए अशुद्धना जोगे पोते कर्त्तापणुं तद्रुप
 अज्ञे माने तेथी ए निश्चय मिथ्यादृष्टि ठे
 सर्व प्रकारे जोतां ए महा अज्ञानी ठे शा-
 माटे जे ए कर्म जनीत पर्याय ठे, तेने विपे आ-
 त्म बुद्धि धरीने मग्न थाय, तेथी तेने कर्मनो
 उदय यावत् जे जे कीरीया करे, शुभ वा अशुभ,
 तेनो पोते मालीक बने. ते माटे एने अज्ञानी
 जीव कहीए शामाटे के अज्ञानी विना पुद्गळ
 नुं कर्तुं चेतनने विपे माने नहि, अने एम मा-
 नवाथी पोताना आत्मानी घातनो करनार अ-
 थो, एटले आत्मगुणना नाश करनार थयो. ते-
 थी आत्मानी सत्ता दयाछ गड, अने पुद्गळनी
 सत्ता दीपावी, ते माटे ए अज्ञानी जीव आत्म-
 घाती ठे

उक्तं च —

अज्ञानमत्त दधीगम्य परापरस्य,
 पस्यंती ये मरण जीवीत दु ख सौख्यं
 कर्माण्यह कृतीरसेन चीकीर्षि वस्ते
 मिथ्यादृशो नियत मात्महनो ज्वति ॥७॥

हवे मिथ्यादृष्टि जीव विज्ञावगील ठे
 एटले एनो अज्ञिप्राय परज्ञाव देखीने पोता
 पणो मानवो एज एनो अचार छे एटले अमु-
 के अमुकने मायो, अमुके अमुकने जीवामयो,
 इत्यादि अज्ञिप्राय ते कर्मवध हेतु. एटले अ
 ज्ञानी जीवो ते विज्ञावने ग्रहण करवाथी ज्ञा
 नावरणादि कर्मनो वध करे ए परिणाम ते सर्व
 मिथ्या ठे, एटले तेनी बुद्धि एवी रहे के फला
 एने मारो, फलाएने जीवामयो, एटले ए अ
 ज्ञानरूप मिथ्याज्ञाय देखाय ठे, एटले मिथ्या
 दृष्टि जीव पोतानुं आत्म स्वरूप परमानद स्व
 रूप तेनो स्वाद लेतो नथी, अने पर्याय वस्तु
 विकल्पे करी ने सत्य माने, ते वात सर्वथा त्र
 ए लोकमां अथवा त्रण काळमां ठे नही एतो

नीकेवल विनाशीक वस्तु ठे अने अज्ञानी जी
 वनो स्वभाव एमज रह्यो, जेवा पर्याय पोते अं-
 गीकार करे, अथवा जेवा पर्याय पोते देखे, ते
 चावे परिणामे, तो समस्त ए पर्यायने पोताना
 जाणी अनुभव पण ते कर्मनुं स्वरूप तथा जी
 वनुं स्वरूप जुड़ जुड़ करी जाणतो नथी, एक
 मिश्रभावने जीव जाणी अनुभव करे, एना अ-
 ध्वसाय परने पोतानुं मानवाना ठे, हवे
 परीणामे करीने एम जाणे के हुं सुखी हुं, हुं
 दुखी हुं अथवा अनेराने पण एमज जाणतो
 यको ए अज्ञानपणे प्रवर्तवे एज पोतानी घेल्
 ग ठे, शामाटे के सुख वा दुःख आदे देखे
 जे जे जीवने थाय, ते पोतपोतानां कृत्कर्म उ-
 दयमां ध्यावीने प्राप्ति थाय पण अहीयां कोशने
 वश नथी, अने कोशनुं कर्युं थतुं नथी, इहां
 तो सर्व उदय भाक्क थाय, पण ते जीव पोते
 पोताना अज्ञानने लीधे सुख दुःखादी वीकल्प
 करे ते वीकल्प सर्व जुठां ठे अथवा कोशनुं सु-
 क्ष्म रूप अथवा कोशनुं स्थुळ रूप देखीने एवा
 वीकल्प करे अथवा मुखथी एमज कहे के एणे

मायाँ, एणे जीवाड्यो, एटले पृथ्वी १ पाणी २
 अग्नि ३ वायु ४ वनस्पती ५ वेरेंडी ६ तेरेंडी ७
 चउरीडी ८ इत्यादी सुक्य जीवोने काया नहा
 नी देखी तेने हणवानो जय राखतो नथी अथवा
 केटलीक जातीना पचेडीने पण हणवानो जय
 राखतो नथी शामाटे के काया नहानी होय ते
 जीव एनी गणतरीमा नथी अने मोटी कायाना
 जीवोने ववाववानी फीकरमा रहे ए पण अज्ञान
 पणु ठे, शामाटे के जीव तो सर्व अमख्यात प्रदेश
 लोकाकास प्रमाणे मरखा ठे तथा ज्ञान दर्श
 नादि गुणे करी जोझण तो ए सर्व जीवो वगार ठे,
 नीगोदथी मांमीने चारे गतिमा जिनजाव ठे न
 हि जेवा सिद्ध परमात्मा ठे तेवाज सत्ताये जोतां
 ससारी जीव ठे, तेनी काया नानी मोटी देखी तेने
 अधिका लंग जाणे ते मुखीइ ठे शामाटे के
 कायानी प्राप्ति तो कर्मथी ठे, तो ए मरि पर्या
 यने कर्म जावी कहीए कर्म जावी पर्यायमे चार
 गति ठे जेणे जेवी गति उपाजी तेने तेवी का-
 या मळे अने कायाना नाना मोठापणे जीवनु
 सुक्य तथा स्थुलपणु अथु नहि जीवतो पोताना

स्वभाव पर्यायवने सदाय ठे तेवो ने तेवो ठे ए-
 टले जीव सुद्ध अथवा स्थुळ थयो नहि. माटे
 जे सुद्ध जीवने हणजे तो ते जीवमां थने मो-
 टा जीवमा कांइ फेर नथी माटे ए अज्ञानना
 लीधा थका एवा विकल्प करे, ते विकल्पोधि
 तेने नवां कर्म थनंतां बंधाय थने जीवतो को-
 ष्णो हण्यो हणातो नथी तेने तो पोताना उ-
 दय माफक थाय ते वारया पुर्वे कही गया ठी-
 ए तथा कंइ जीव जीवने हणे नहि शामाटे के
 ए तो जीवे जीव स्वजाती ठे थने तेने अवि-
 नाशी पद ठे तेनो नाश होय नहि पण इहां
 तो प्राणनो घात थाय थने प्राण ठे ते पुद्गळ
 ठे, वळी विनाशी ठे ते हणाय पण तेनी स्थिती
 पुर्ण थया विना तो हणातो नथी, थने फोकट
 हणवानो मालीक अश्ने कर्म बांधे ए सर्वे अ-
 ज्ञानीजीवनुं लदाण ठे तेना एवा अथ्यवसाय रहे
 के अथा मारुअथा तारुं एम राग द्वेषमां परिणाम वर्ते
 ते सर्वे अज्ञानी जीव तेपर पर्यायने पोताना
 मानी अतुजेवे तेथी कर्म बंधाय, थने ज्ञानी
 जीव तोपर पर्यायने पर जाणे थने उदय मा

फक जोगवे तेमां पण रची पचीने जोगवता न
थी एटले ज्ञानीए परवस्तुने पर जाणी तेमां प
रिणाम पायता नथी अज्यापकपणे उदय जोग-
गवे ठे म्वरुप उपर तद्गत छष्टि स्थायी ठे
स्वजावीक पर्यायनो अनुभव करे तेथी ज्ञानी
जीवने कर्म वधातां नथी, ए रीते ज्ञानी
अज्ञानीनो पंटर समजिने अज्ञान दशा डुर
करवी पर्यायडष्टि राखवी नहि, स्वजाव छष्टि
आदरवी ए ज्ञानीनु लक्षण ठे ते कह्यु

उक्तच-

मिथ्याडष्टे स एवा रूप बधहेतुर्विपर्ययात्
य एवाध्यवसायो य प्रज्ञात्मास्य दृश्यते ॥७॥
अनेनाध्यवसायेननी फले नवि मोहिता
नाकि च नापी नैवास्ति नात्मात्मानं करोति यत् ए
विश्वाहीनक्तोपि हि यत्प्रज्ञावा । वात्मानमात्मा
विदधाती विश्वं । मोहैक कदोध्यवसाय येष ।
नास्तीह्येषाय तपस्तयेव ॥ १० ॥

हवे जे ज्ञानी जीव ते केवा होय के
आपणु शुद्ध स्वरुप चिदानंद रूप तेने विषे

स्थिर ज्ञावे रहे ठे. सुखनुं घर जाणीने पोते पो-
ताना स्वप्नावमां स्थिरता करी ठे पोतानो मही-
मा शुद्ध स्वरूपनो जाणवामां आव्यो ठे एट्ले
शुद्ध स्वरूप केवुं ठे ? के राग द्वेष मोहे करीने
रहित एवं जे ज्ञान कहेतां चेतना गुण तेनो जे
आणंद तेनो घन कहेतां समुह ठे एवं जे चि-
दानंद घननुं स्वरूप जाण्युं ते स्वरूप सम्यक प्र-
कारे अविनाशी ठे, संकल्प विकल्पे करीने र-
हित ठे एवं वस्तु धर्म मुळ स्वप्नावे जुवे तो ते-
वुंज अनुभव गोचर ठे ते विनातो माद्युम पने
नहि एम निश्चय करीने समजवुं, वळी आत्मा
केवो ठे के उपाधि करीने रहित एट्ले विषय
कपाय आदि शुजाशुज उपाधी करीने रहित
एवं मुळ स्वरूप आत्मानुं तेने ज्ञानी जाणे एवं
श्री परमात्मा परमेश्वर केवळज्ञाने विराजमान
तेमणे कह्युं ठे ते जाणीने मिथ्यात्वज्ञाव अवश्य
गेमवो, ए ज्ञानीनुं लक्षण ठे ते कह्युं ॥ नीखील
अपि व्यवहार त्याजीत एव ॥ हवे जे व्यवहार
मार्गे चालवु कल्प आश्रये अथवा परंपरा आ-
श्रये ते सर्वने मिथ्याज्ञाव कहे ठे. सतरूप व्यव-

हार होय अथवा अस्तरूप व्यवहार होय पण शुद्ध स्वरूपशीतो विपरीत ए बाह्यभाव ठे. हवे जे सत व्यवहार ते जेने कहीए एटले पच महावृत पाळ्या पंच सुमति, त्रण गुप्ति, दशविधी यती धर्म इत्यादिने सत व्यवहार कहीए, एथी जे उपरांतु तेने अस्तरूप व्यवहार कहीए तथा कल्प व्यवहार कहेता साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ए चतुर्विधी सधने वर्तवा आचरवा योग्य जे मार्ग बांध्या तेने कल्प व्यवहार कहीए तथा परपरा व्यवहार कहेता परा पुर्वे माहा पुरुषो आचरण करता आव्या ते करवु तेने परपरा व्यवहार कहीए. तेना अनेक जेद ते तो प्रवर्तनरूप ठे आत्म स्वरूपना स्वभावमा ते समाय नहि, तेथी तो सदाय काळ विपरीतपणे ठे तथा सिद्धा तकारे पण कल्प व्यवहार उपर जरोसो राख्यो नथी केमके श्री जगवतीजीमा चाग्नि मवर, निर्जरा आदे देउ तेने आत्मा कह्यो ठे. एटले आत्मस्वरूपमा रमे तेने ए पद ठे पण परस्वरूपमा रमे तेने कइ चारित्र आदि गुण ठे नहि तो अथी आ कोइ कहेशे के दशविधी यतिधर्मने तमे ध-

ममां क्हो गे के नहि तेनो उत्तर के अमे
 कंइ ते वस्तुने उत्थापता नथी पण वस्तुमां जे-
 ट्हुं धर्म होय तेट्हुंज कहेवाय तथा उपाध्याय
 श्री यज्ञोविजयजी महाराजे अथ्यात्मसार ग्रंथ
 आदि घणा शास्त्रोमा ठाम ठाम कहुं ठे तथा
 बीजा पंक्तितो पण सर्वे कहेता आव्या ठे तथा
 शुद्ध स्वरूपने विपे खंती प्रमुख विकल्प ठे नहि
 अने जो विकल्प सहित आत्माने मानीशुं तो
 ए अशुद्ध आत्मा थगे अने अशुद्ध आत्मानी
 मुक्ति त्रण काळमां थवानी नथी, वीतराग अ-
 थवा अरहित अथवा मुक्ति शुद्ध स्वरूप थया
 विना ए पद मळे नहि, माटे ज्यांसुधी विकल्प
 जाव ठे त्यांसुधी मिथ्यात्व ठे शिष्य वाक्य स्वामी,
 विकल्पने तमो मिथ्याजाव क्हो गे तो आपणे
 एम कहीए ठीए के आत्माने विपे अनंतु ज्ञान,
 अनंतु दर्शन ठे, इत्यादि जेद कहीए ठीए ते पण
 विकल्प ठे के शुं ठे ? तेने शु मिथ्यात्व क्हो
 गे तेनो उत्तर, के ए पण मिथ्यात्व ठे कइ स-
 त्य वस्तु नथी शिष्यवाक्य स्वामी एतो जेद
 ज्ञान ठे, अने शुक्रभ्यान ध्याता ठे तेने मिथ्यात

केम कहेवाय तेनो उत्तर जे ज्ञेद ज्ञान ठे ते
 सत्य ठे, परंतु वस्तु तो अज्ञेद ठे तेनो ज्ञेद क-
 रीए ए असत्य खरु के नहि माटे मिथ्यातज ठे,
 अने ए ज्ञेद वहेचवा ते व्यवहार ठे, तथा शुक्र
 ध्यान जे कह्यु ते सत्य ठे पण पहेलो पायो ठे
 तो ए पायामां ज्ञेद वहेचवाना ठे एट्ले ए पण
 व्यवहार ठे अने ज्यांसुधी व्यवहार, त्यांसुधी मि-
 थ्यात्व ठे जामाटे के सत्यने असत्य माने अ-
 ने असत्यने सत्य माने तेने मिथ्यात्व लागे अ-
 थवा ए ज्ञेद ज्ञान दशमा गुण स्थानक सुधी
 ठे तो त्यांसुधी मिथ्यात्व पण ठे, हजु मिथ्या-
 त्वनो नाश थयो नथी शा माटे? जो नाश
 थयो होय तो नीगोद आदि गतिमां जात नहि
 अने ए स्थानकने विषे प्राप्त थएला निगोद
 आदि गतिने विषे अमख्याता अथवा अनत जीव
 रखने ठे तथा मिथ्यात्व एवु नाम मोहनीनुं ठे
 ते मोहनीकर्मनो नाश शुद्ध स्वरूपमां प्रवेश थए
 थाय एट्ले अज्ञेद ज्ञान आब्याथी मोहनीनो
 नाश, तथा वितरागादि पदवीनी प्राप्ति ठे माटे
 ज्यां सुधी ज्ञेद ज्ञान ठे त्या सुधी पण विकल्प ठे

अने ज्यां सुधी विकल्प ठे त्यां सुधी अशुद्ध
 आत्मा ठे अने अशुद्ध आ मा ठे एज मिथ्या-
 त्व ठे. माटे जे व्यवहार ठे ते शुद्ध आमाथी तो
 विपरीत ठे माटे मन, वचन अने कायाना जोग
 वने जे जे विकल्प उठे अथवा एवा विकल्पव-
 मेज व्यवहारुं बांधवु ठे एटले व्यवहार तथा
 मिथ्यात्वमां काइ चित्रपणुं जणातुं नथी माटे
 अवश्ये ए मार्ग गंम्वो अने ज्यारे ए मार्ग
 गंम्वो त्यारे शुद्ध स्वरूपनी प्राप्ति थशे.

उक्तंच-

सर्वत्राभ्यवमानमेवमखिलं त्याज्यंयदुक्तंजिनै ।
 स्तन्मन्यव्यवहारएवनिखीलोप्यन्याश्रयस्त्यजित ॥
 सम्यग्निश्चयमेकएव तदम॥नि कंपमी क्रम्याकि ।
 शुद्धज्ञानधनेमहिम्नि रनिजेवघ्नंतिसंतोधृति ॥१०॥

हे शुद्ध स्वरूप वस्तुनी प्ररूपणा थाय ठे
 तो एक प्रश्न इहां करवामा थावे ठे के ए चीना
 रोगादि अशुद्ध भाव एटले राग द्वेष मोह इत्यादि
 असंख्यात लोक मात्र विज्ञाव परिणाम बंध नि
 दान कहेतां ज्ञानावरणादि कर्म वं रको कारण एवु

शास्त्रमां रूढ्ये तेने प्रमाणे जाणवामां मानवामां
 पण ते अने शुद्ध ज्ञाना कहेतां शुद्ध चिन्मात्र
 एतले शुद्ध ज्ञान चेतना मात्र ते एम एवो ज्यो
 ति स्वरूप अस्तु ते तो अतिरिक्त कहेता तेथी जु
 दो ते समति एक प्रश्न तो ए ते तथा गगद्वेष
 मोहादि परिणामनु थवु तेनु कारण कोण ते
 एतले आत्मा कहेता जीवद्रव्य कारण ते ते
 पररूप कहेतां मोहरूप पण ए ते अथवा पुद्ग-
 लद्रव्य ते ते पीप्परूप कारण ते हवे ते वने प्र
 श्नो उत्तर एवो रते ते के वस्तुस्वभाव कहेता
 ए वस्तुनु स्वरूप तो प्रगटपणे मदाथ निक्षेप ते
 तथापि जे कारण आश्रीने कहेवु ते तेनो वि
 चार कहे ते जीवद्रव्य ते तेत्रणे काल एतले वृत्,
 जविष्य अने वर्तमानकालमाहि जे आत्माने
 विषे रागादि अशुद्ध परिणति ते तो निमित्त
 मात्र ए पोता सबधि ते एतले आत्माज इहा गग
 द्वेषनु जो निमित्त कारण ते जे राग द्वेष मोह इत्या
 दि अशुद्ध परिणाम तेनुं कारण तो आत्मस्वरूप
 परिणाम तो नथा एतले इहा जावार्थ समजवानो
 एवो रते ते के द्रव्यना परिणामननुं कारण वे

प्रकारे ठे एक उपादान कारण अने वीजुं निमित्त कारण ते मध्ये जे उपादान कारण ठे ते तो द्रव्यने अंतर्भूत रहे ठे एटले पोतपोताना परिणाम पर्याय रूप परिणामन शक्ति ठे ते तो जे जे डव्यनी शक्ति ते ते डव्यमांहिज ठे एम निश्चे ठे तथा निमित्तकारण कहेतां अन्य डव्यनो संजोग पामवाथी ते अन्य डव्य पोताना पर्यायरूप थइने परिणामे ठे ते तो जे डव्यनो ते डव्यमांहि अन्य डव्य गोचर थाय एम निश्चय जोवामां थावे ठे अत्र उद्यत जेम मृत्तिका द्रव्य घटपर्यायरूप परिणामे ठे तेनुं उपादान कारण मृत्तिकामांहि ठे एटले घटरूप परिणामवानी शक्ति मृत्तिकामां छे हवे जे निमित्तकारण ठे ते तो वाहरूप ठे एटले चक्र, बीवर, दंरु इत्यादि वाह्य थी दीसे ठे ते कइ घटरूप परिणामता नथी तेमज जीवडव्य अशुद्ध परिणाम मोह, राग ठेप रूप परिणामे ठे ते तो उपादान कारण ठे केनथी अपितु नथी गामाटेके जीवडव्यमांहि अंतर्गर्णितरूप भाव नथी अने जीवडव्यने विषे जे विभावरूप अशुद्ध परिणाम शक्ति ते तो निमित्तकार-

एमां ठे शामाटे जे चास्त्रिमोहनी तथा दर्शनमोहनीते हेतुवने कर्म वां ठे ते जीवना अने कर्मना प्रदेश एकदेत्र अयगाह। रहे छे ते पुद्गल अयनो पॉम तेनो उद्योत कहेतां जे उदय मोहनीकर्म रुप पुद्गलनो जे ठे तेने बाह्यथ्री जे कर्मनी प्रकृतिनो उदय होय तेनाम कहीने बोलावे ठे जेम देव अथवा मनुष्य इत्यादि पण ते चेतन तो एथी न्यारो छे ए रुप तो पुद्गलनु देखाय ठे शामाटे जे पुद्गलअय्य शु कर्म व्याप्य व्यापक रुप छे पण जीवअय्य शु व्याप्य व्यापक नथी तथापि मोहनीकर्म उदय थतां जीवअय्य आपणे विज्ञाव परिणामरुप परिणामे ठे एवो वस्तुनो स्वज्ञाव ठे ए वान तो कही ठे नहि इहा अ घात कहे ठे

जेम स्फटीक रत्न रातुं, पीळु इत्यादि देखाय छे ते निमित्तकारणथी ठे पण उपादान कारण ते नहि शामाटे के स्फटीक रत्न स्वज्ञावे निर्मल ठे तेनु उपादान कारण ए पोते ठे हवे उपादान ते आत्मस्वरुप स्वस्वज्ञाविक ठे हव निमित्तकारणनु स्वरुप किचित् देखाडे छे के जेने

जेवी संगत मळी ते तेवुं थयुं. जो सत्संगत मळी तो साधु कहेवाणो अथसत्य संगत मळी तो असाधु कहेवाणो पण ए सारो वा नवळो कहेवाणो ते आत्मा नहि एतो संगतना जोगथी ठे अथवा धर्म आश्री जेने जेवा गुरु मळ्या तेणे तेवु धर्म कर्युं, पण ते अंइ धर्म वस्तु नहि धर्म तो एक न्यारुं ठे, एक निमित्त वा उपादान एक आत्माने विपे परिणति छे ते आत्मा विषय साथे बंधाणो तेथी जेवी संगत तेवु धर्म करे छे.

उक्तं च,—अध्यातम सारग्रंथे

विषयात्मानुबंधैर्हि, त्रिधाशुद्ध्यथोत्तरं ।

ब्रुवते कर्म तत्राद्य, मुक्त्यर्थं पतनाद्यपि ॥ २५ ॥

अज्ञानिनां द्वितीयंतु, लोकद्रष्टायमादिकं ।

तृतीयं शांतवृत्त्या तत्तत्त्वं संवेदनानुगं ॥ - ३ ॥

आद्यानाज्ञानबाहुल्यान्मोक्षबाधकबाधनं ।

सद्भावाशयलेशेनो, चित्तं जन्मपरेजगु ॥ २४ ॥

द्वितीया दोषहानि स्यात् क्वचिन्मंरुकचूर्णवत् ।

आत्यंतिकितृतीयातु, गुरुलाघवचितया ॥ २५ ॥

अर्थ-जे ए धरमने विपे त्रणे प्रकार कह्या

ते त्रणे प्रकार एक एकथी शुद्ध ठे ते मध्ये प्रथम जेद कहे ठे जे पोताना आत्माने कर्मथी मुकाबीने सिद्धि वरवाने वास्ते कोशक तो क्रिया करे कोशक कान फडावे, कोशक जटा वधारे, कोशक राख चोले, कोशक पाणी माटीथी पवित्रपाणुं माने, कोशक पचासि तापे कोशक उधे माये झूले, कोशक अन्न पाणीनो त्याग करे कोशक ऊपापात करे, अथवा कोशक जनावरना कले-वरमां पेसीने बाध पासे पोतानु शरीर खवनाये, इत्यादि अनेक तरेहथी कष्ट करीने मुक्ति माने ते सर्वे अज्ञान ठे ए पहेलो जेद कह्यो हवे अज्ञानिना द्वितीयतु कहेता जे अज्ञानी जीव आत्मशुद्धिने वास्ते करणी करे ए बीजो जेद तेनो अर्थ कहे ठे के लोकउष्टि यमादिक एटले लोकउष्टिए पाच यम, त्रण नियम तेनु स्वरूप किंचित् कहे ठे के जे पोताना मनना इग थाय तेने स्थिर करे, एटले व्रत, नियम आदि देखने करे ए निज शक्ति एटले पोतानी शक्ति प्रमाणे करे हवे तेमा प्रथम यमने विषे जे हि सादि कारण त सर्वे तजे

अहिंसादिनी वारता उपर बहु प्रेम राखे अने पाळवानो तथा सांजळवानो ए जीवने प्रेम घणो ठे वळी एम जाणे के हु जगवाननी आज्ञा आराधुं नु अने बीजी वात सर्वे एने माठी लागे ए प्रथम यम कह्यो ? बीजे यमे प्रवृत्ततो थको जगवाननी आज्ञामांहि घणो अग्रेसरी थझने चाले व्रत, नियम आज्ञा प्रमुख पाळवाने वास्ते ए साधु तपर रहे, पण त्यां प्रमाददशा घणी ठे ए बीजो यम जाणवो १ हवे बीजा यमने विषे निरतिचार चारित्र पाळे अप्रमत्तजावे अने शुद्धरूपे रहेतो थको जे जे परिसह उपजे देव, मनुष्य, अने तिर्यचना करेला अनुकूल प्रतिकूल ते रुमी रीते समजावे तेनुं सहन करतो थको संतरूप रहे ए बीजो यम कह्यो २ हवे चौथा यमने विषे शुद्ध जाव जेद ज्ञान साथे अथवा चतुर्थ गुणस्थान अथवा याता, भ्येय शुद्धपणुं व्यवहारयी इत्यादि जावे वर्ते, एम जोगदृष्टि समुच्चयमां कहुं ठे ए बीजो जेद जाणवो

हवे बीजे जेदे शात वृत्ति एटले ज्ञान, दर्शन चारित्रनुं वेदवुं ए बीजो जेद ठे ए त्रण

ते त्रणे प्रकार एक एकथी शुद्ध ठे ते मध्ये प्रथम जेद कहे ठे जे पोताना आत्माने कर्मथी मुक्तानीने सिद्धि वखाने वास्ते कोशक तो क्रिया करे कोशक ज्ञान फडावे, कोशक जटा बधारे, कोशक राख चोले, कोशक पाणी माटीथी पवित्रपण माने, कोशक पचात्रि तापे कोशक लुंधे माथे झूले, कोशक अन्न पाणीनो त्याग करे कोशक जपापात करे, अथवा कोशक जनावरना कलेवरमां पेसीने बाध पासे पोतानु शरीर खवमावे, इत्यादि अनेक तरेहथी कष्ट करीने मुक्ति माने ते सर्वे अज्ञान ठे ए पहिलो जेद कह्यो हवे अज्ञानिना द्वितीयतु कहेतां जे अज्ञानी जीव आत्मशुद्धिने वास्ते करणी करे ए बीजो जेद तेनो अर्थ कहे ठे के लोकदृष्टि यमादिक एटले लोकदृष्टि पाच यम, त्रण नियम तेनु स्वरूप किंचित् कहे ठे के जे पोताना मनना इवा थाय तेने स्थिर करे, एटले व्रत, नियम आदि देऊने करे ए निज शक्ति एटले पोतानी शक्ति प्रमाणे करे हवे तेमा प्रथम यमने विषे जे हि सादि कारण त सर्वे तजे

अहिंसादिनी वारता उपर बहु प्रेम राखे अने पाळवानो नया सांजळवानो ए जीवने प्रेम घणो ठे वळी एम जाणे के हुं जगवाननी आजा आराधुं वुं अने बीजी वात सर्वे एने माठी लागे ए प्रथम यम कह्यो ? बीजे यमे प्रवृत्ततो थको जगवाननी आज्ञामांहि घणो अग्रेसरी थऊने चाले व्रत, नियम आज्ञा प्रमुख पाळवाने वास्ते ए साधु तपर रहे. पण त्यां प्रमाददशा घणी ठे ए बीजो यम जाणवो १ हवे बीजा यमने विषे निरतिचार चारित्र पाळे अप्रमत्तज्ञावे अने शुद्धरूपे रहेतो थको जे जे परिमह उपजे देव, मनुष्य, अने तिर्यचना करेला अनुकूल प्रतिकूल ते रुनी रीते समजावे तेनुं सहन करतो थको संतरूप रहे ए बीजो यम कह्यो ३ हवे चौथा यमने विषे शुद्ध ज्ञाव जेद ज्ञान साथे अथवा चतुर्थ गुणस्थान अथवा ध्याता, ध्येय शुद्धपणुं व्यवहारथी इत्यादि ज्ञावे वर्ते, एम जोगप्रति समुच्चयमां कह्यु ठे ए बीजो जेद जाणवो

हवे बीजे जेदे शात वृत्ति एटले ज्ञान, दर्शन चारित्रनुं वेदवु ए बीजो जेद ठे ए त्रण

चेद मध्ये जे प्रथम चेद कह्यो तेने विषे तो अज्ञाननी बहुलता कहता घणुज अज्ञान भरेबुठे तेने विषे ज्ञाननो लेश ठे नहि एतो उल्लेख धर्मनो नाश करे ठे न्मोठनाथक बाधन कहतां जे मोढे जाता बाधक कहता आत्मोपहार अज्ञाने पदे ठे तथा बाधन कहता निवृत्त वज्ररूप कर्म व्रत आत्माने थाय तथा सद्वाशय लेशेनो कहतां एक सद्वासे शुभ प्रकृतिनो लेशमात्र गुण प्रगट्यो ठे तो एथी शु प्राप्ति थगे उच्यते कहता ते कहे ठे चितं जन्मपरेजगु कहता जगदीश एखे परमात्मा केवली जगमान एम कहे ठे जे जन्म मरणनी परपरा वचारे एखे अचरता ससार चार गतिमा ए जीव रखडे ए जीवने कष्ट कस्वाथी कष्ट पो तानु कल्याण थाय नहि एखे ए पहिला चेद नो अर्थ कह्यो

हवे गीजो चेद आत्मशुद्धि नामे छे तेनो अर्थ कहे ठे जे यमादि कह्या ते अप्रमादि साधु निरतिचार चारित्र पाळ्यावाळ्या आदि पूर्वे कह्या ते जोग पाळ्याथी केवळ क्लेश ठे एकलेश मात्र अहियां दोषनी हानि थाय पण परपरा ए

दोष वृद्धिनुं कारण ठे जेम एक देमकाना कलेवरनुं
 चूर्ण करीए त्यां कोई एम समजे के देमकानुं हवे
 बीज वळी गयुं पण ए चूर्णना जेठला कणीया थाय
 एटलाने वरसादना जळना ठांय अमवाथी तेठलाए
 देमकां नवां उत्पन्न थाय, एटले एकनो नाश कर-
 तां हजारो उत्पन्न थइ गयां तेग ए जे यमादि
 बाह्य कारण तेथी जाणे जे, मारा कर्मनो नाश
 थयो, अने मारी मुक्ति थशे ते सर्वे असत्य कल्पना
 ठे. तेणे किंचित कर्मनो नाश करतां नयां कर्म
 घणां उपाज्यां आमाटे जे निश्चय स्वरुप पोतानुं
 शुद्ध मार्गानुसारीपद ते हाथमां आव्युं नहि अने
 अशुद्ध आत्माना जोगथी ए कारण सर्वे मे-
 ल्यां, तो कर्मबंध शावमे ठळे, कष्ट प्रयोगे तथा
 जोग प्रयोगे किंचित कर्म हानि ठे पण नवा
 कर्मनुं आववुं तो बंध थयुं नहि माटे ए बीजी
 शुद्धि पण मोक्षसाधन मार्गे खपनी नहि ए
 बीजो जेद कह्यो.

हवे बीजा जेदे जे तत्त्व शुद्धि ठे एटले
 ए शुद्धिथी कर्मनी हानि घणी घणी थाय ते
 कहे ठे गुरु कहेतां पुद्गल पीड तेनो विचार

करणो, तथा लघु कहेतां आत्म स्वज्ञान तेनो
 विचार करणो एतले पुद्गलपीठ अनती कर्मनी
 वर्णणात् आत्मा माथे लागी ठे तेनां विचार
 करता शुक्रयाननो पहेलो पायो प्रगट थाय तथा
 आत्म स्वरूप अरूपी पदाथे एकत्रपणे अने सर्व
 प्रज्ञापरहित ए विचार शुक्रयानना पहेला पा
 यामा ठे एतले ए त्रणे शुद्धि कही एज अव्य,
 गुण, पर्याय एकत्रज्ञाने स्थिर थाय त्तारे शुक्र-
 याननो बीजो पायो आवे ए जे यमादि बाह्य
 प्रवर्तन ते निमित्त कारण ठे ते कड आत्मस्व-
 रूपनु उपादान कारण नथी बाह्यदृष्टि अज्ञा
 नी जीव निमित्त कारण देखीने तद्रूपतेने माने
 ठे जेम कोश कहेसे के घीनो घडो लाव्य तो
 तेने अज्ञानपणे निमित्त उपादाननी समरिना
 बोलवु थयु पण घट तो माटीनो ठे घृतनो घट
 थाय नहि ते घटमा घी ज्यु ते निमित्तमात्र ठे
 अने निमित्त ते कंड ते अन्यमा ठे नहि तेम आ
 त्ताने विज्ञानपर्यायना जोगथी अनेक कर्म उ
 पाधि उदय थयो ते तो निमित्तमात्र ठे त्या तेवे
 ज्ञाने परिणमे तेने बाळजीणे तेबोज करी मान,

पण जे निमित्त रूमादि ते, आत्म अव्यमां ठे
 नहि, तेथी आत्म अव्य तो जिन ठे माटे नि
 मित्त तथा उपादान कारण नयना ग्रंथथी स
 मजवां उक्तं च -

न जातु रागादि निमित्तज्ञावमात्मानो या-
 ति यथार्कवक्त, तस्मिन्निमित्तं परसग एव वस्तु
 स्वज्ञावो यमुदेति तावत् ॥ १३ ॥

हवे जे ज्ञानी जीव वेवा होय ते कहे ठे,
 पूर्वे कही गया जे जे जेद ते अव्यथी तथा
 ज्ञावथी पोते जाणे एटले वस्तुनो धर्म कहेता जे
 अव्यनुं स्वरुप शुद्ध चेतननुं स्वरुप जाणे अने
 तेनो अनुभव सदाय करे ते धणी सरागज्ञाव
 करे नहि एटले राग द्वेष मोहरुप अशुद्ध परि-
 णाम तेमा न प्रवृते पोते तेनो अनुभव न करे
 अने जे जे कारण वने ते सर्वे पूर्वकृत्य कर्मना
 उदयनी उपाधी ठे एम जाणे पण पोते ते रा
 गादि अशुद्ध परिणामनो कर्ता न थाय. पोते
 तो शुद्ध स्वज्ञावमा रमे पण परनुं स्वामीत्वपणुं न
 करे ए ज्ञानीनुं लक्षण ठे एम जाणवुं

उक्त च

इति वस्तु स्वप्नावंहि, ज्ञानी जानाति तेनस ।
रागादीन्नात्मन कुर्यान्नात्योन्नवतिफारक ॥१९॥

एवी रीते आत्मस्वरूपनो जाण ते पुरुष
कांश् कर्म बावतो नथी ए आध्यात्मपदार्थी वि-
चार लख्यो, तथा कर्मग्रथना पदार्थी वध शी
रीते बाधे ? ते कहे ठे अपितु कर्मपयमीने विपे
तो राग द्वेष ज्ञावकर्म एहीज चेतनने डु खदाश्
ठे, अने एवमेज ससारमां रख्मवु थाय तथापि
कर्मग्रंथने विपे डव्यकर्म ग्रहण कर्या तेना आठ उ
चेद तेनी प्रकृतिवध आश्रीने १२० एकठो ने वीश
कहीठे तेनो विचार पूर्वं पन्नवणाजीना अधिकारमां
कह्यो ठे अने इहा पण किंचित् वव आश्रीने कहे
ठे केमके ज्ञानीने वधनी ना पानी अने कदापि को
इ कर्मना उदयथी मिव्यात्व गुणगणामा जाय तो
पण तेने एक कोमाकोमी सागरपमनो बंध कह्योठे,
ते माटे ज्ञानी पदतो कइ प्रहेले गुणगणे नथी, ए
तो चोथा गुणगणाथी उपला जागमा लाधे, हवे
अहीआ गुणगणे वपनी प्रकृति कहे ठे इहां
गुणगणानो शब्दमात्र अर्थ साथे नाम कहे ठे के,

प्रथम मिथ्यात्व गुणगणुं १ मिथ्या (कहेतां) असत्य पोताना स्वरूपने लुले परस्वरूपने पोतानु माने एवो विपरीत जाव तेने मिथ्यात्व गुणगणुं कहीए वीजुं सास्वादन गुणगणुं, ते औपशमिक समकित जाव वमीने पाठो परतो मिथ्यात्वे पहोच्यो नहि, वचमां खट आबलीना काळ प्रमाण रह्यो तेने सास्वादन समकित कहीए, एट्ये खीर वमन समान समकितनो स्वाद रहे २ त्रीजुं मिश्र गुणगणुं (कहेतां) स्वस्वरूप अगर परस्वरूप लपर सरखो जाव रहे ए अज्ञानपणुं ठे सत्य असत्य स्वरूपनुं ग्रहण नथी, ए त्रीजुं मिश्र गुणगणुं ३ हवे चोथुं अविरति समकित गुणगणुं, ए गुणगणुं समकितनी प्राप्ति ठे शुद्ध स्वरूपनी श्रद्धा, परजावनो त्याग, पांच ज्ञान पट अव्यनुं जाणपणुं, आत्म स्वरूपनी लळखाण कि चित् जाग ठे, तेने अविरति चोथुं गुणगणुं कहीए ४ पांचमुं देशविस्ती गुणगणुं तीहां देशथी परजावनो त्याग करे, ते पांचमुं ए ठवुं प्रमत्त गुणगणुं प्रमत्त (कहेतां) पांच प्रमाद रह्याठे तथापि परजावनो त्याग विशेषे ठे तोपण ते ठेकाणे

जीवने प्रमाद छु खदा छ ठे, ए ठुं ६ तथा सातमुं
 अप्रमत्त गुणठाणु ते ठेकाणे प्रमादनो प्रवेश नथी
 एक आत्मस्वरूपनी रमणता स्वभावानदीपणुं छे,
 ए सातमु गुणठाणु ७ आठमु अपूर्व गुणठाणु
 एट्ठे पुर्वे आत्मानो स्वभाव प्रगट न थयो थने
 अहीयां थयो माटे अपूर्व, ए आठमु गुणठाणु
 ८ नवमु अनिश्चिन्नादर गुणठाणु (कहेता) अ
 हिआ वादर कषायनो तथा वेदनो आदे देइने
 त्याग थाय थने आत्मज्ञान विशेषे प्रगटे, ए न
 वमु गुणठाणु ९ दशमु सुद्ध सप्राय गुणठाणु
 (कहेता) एक सुद्ध लोचन अणुमात्र उदयमां
 होय, अहिआ गकी सर्व मोहनीकर्मनी प्रकृतियो
 उदयमा नथी कोइक जीवने सत्तामा पण नथी
 अहिआ आत्मगुण पर्याय, स्वभाव लक्षण विशेषे
 प्रगटे ए दशमु गुणठाणु १० अगीयारमु उपशात
 मोह (कहेता) मोहनीकर्म संपुर्ण उपशमी गयु त्या
 वीतरागपद थयो पण ते उपशम जावनो ठे,
 सत्ताये मोहनीकर्म मावीत ठे, ए अगीयारमु गु-
 णठाणु ११ वारमु क्षीणमोह (कहेता) मोहनी
 कर्मनो क्षय थयो ए संपुर्ण वीतराग ह्ये पाठा

पम्बाना नथी, ए वारमुं गुणठाणुं १२ तेरमुं सजो-
गीकेवळी गुणठाणुं, सजोग कहेतां मन वचन अने
कायाना जोग ठे परंतु ज्ञान, दर्शन, चास्त्र, वीर्य
सपुर्ण द्वायकजावनु पाप्या ठे ए अरिहंत थया,
ए तेरमुं गुणठाणु १३ चौदमु अयोगी केवळी गुण
ठाणुं त्यां मर्वे जोगरहित ठे ए चौदमु गुणठाणु
१४ हवे ए चौदे गुणठाणे जे जे कर्मप्रकृतिनो
बंध ठे थान्वा नथी ते कहे ठे प्रथम मिथ्यात्व
गुणठाणे १९० एकशोने वीज प्रकृति जे पूर्वोक्त
कहीठे तेमांहेली एकशोने मत्तर ११७ प्रकृतिनो वध
होय ते त्रण प्रकृति जुंठी थई तेना नाम तीर्थकर
नामकर्म १, आहारक शरीर २ अने आहारक अं-
गोपाग ३, ए त्रण घटानीए एठले एकशोने म
त्तर प्रकृति रहे ए पहेले गुणठाणे वध कह्यो १,
बीजे मास्वादन गुणठाणे एकशोने एक १०६ प्रकृ-
तिनो वध होय त्यां सोळ प्रकृति घटान्वा, तेनां नाम
नरकनी गति १, नरकनी आनुपूर्वी २, नरकनु
आयुष्य ३, एकेंडीनी जाति ४, वेरडीनी जा-
ति ५, तेरडीनी जाति ६, चौरेंडीनी जाति ७,
स्थावर नामकर्म ८, सुक्क नामकर्म ९, अपर्या-

सो नामकर्म १०, साधारण नामकर्म ११, हुंमक
 सस्थान १२, आताप नामकर्म १३, ठेवतु संघ
 यण १४, नपुंशकवेद १५, मिथ्यात्व मोहनी १६
 ए मोळ प्रकृति ११७ एकशोन सत्तरमांहिथी
 ऋढीए एटले एकमोने एक प्रकृति ग्ही ए १०१
 प्रकृतिनो वत्र वीजे गुणठाणे लाधे हवे त्रीजे
 मिश्रगुणठाणे ७४ चुर्वोतेर प्रकृतिनो बंध होय, त्या
 प्रकृति ७७ घटी तेना नाम तिर्यचनी गति १,
 तिर्यचनी आनुपूर्वी २, तिर्यचनुं आयुष्य ३, थी
 ण्ढीनिडा ४, प्रचलाप्रचलानिडा ५, अने निडा
 निडा ६, दुर्जाग्य नामकर्म ७, दुस्वर नामकर्म
 ८, अनादेय नामकर्म ९, अनतानुबंधी क्रोध १०
 अनतानुबंधी मान ११, अनतानुबंधी माया १२,
 अनतानुबंधी लोभ १३, मध्यनां चार सस्थान
 १७ अने मध्यना चार सघयण ११, नीच गोत्र
 १२, उद्योत नामकर्म १३, अशुभवीहान्त गति
 १४, स्त्रीवेद १५, मनुष्य आयुष्य १६ अने दे-
 वतानु आयुष्य १७, ए सत्तावीश प्रकृति १०१
 माथी घटाणीए एटले ७४ चुर्वोतेर प्रकृतिनो बंध
 रहे, ए त्रीजा गुणठाणानो विचार कस्यो ३ हवे

चोथा अविरति समकिति गुणठाणे पूर्वोक्त ७४
 चुंबोतेर प्रकृतिमां ३ त्रण प्रकृति वधारीए त्यारे
 सीतोतेर ७७ प्रकृतिनो बंध थाय ते त्रण प्रकृ-
 तिनां नाम तीर्थकर नामकर्म १, मनुष्यनुं आ-
 युष्य २ अने देवतानुं आयुष्य ३, ए सीतोतेर
 ७७ प्रकृतिनो बंध चोथा गुणठाणे होय. ४ हवे
 पांचमुं देशविरति गुणठाणे ६७ समसेट प्रकृति-
 नो बंध होय. पूर्वे चोथा गुणठाणे ७७ कही हती
 तेमांथी १० घटी तेना नाम वज्ररिपन्नाराच सं-
 घयण १, मनुष्यनी गति २, मनुष्यनी आनुपूर्वी
 ३, मनुष्यनुं आयुष्य ४, अप्रत्याख्यानीय क्रोध ५
 अप्रत्याख्यानीय मान ६, अप्रत्याख्यानीय माया
 ७, अप्रत्याख्यानीय लोच ८, उदारीक शरीर ९,
 उदारीक अंगोपाग १० ए दश प्रकृतिनो नाश
 थये पांचमे गुणठाणे ६७ समसेट प्रकृति लाधे-
 ५ हवे ठडे गुणठाणे ६३ त्रसेट प्रकृतिनो बंध
 होय इहां ४ चार प्रकृति घटी तेनां नाम. प्र-
 त्याख्यानीय क्रोध १, प्रत्याख्यानीय मान २, प्र-
 त्याख्यानीय माया ३, प्रत्याख्यानीय लोच ४, ए
 चार प्रकृतिनो नाश करेथी संयतीपणु होय ए ठडे

प्रमत्त गुणगणे जाणवुं ६ हवे अग्रमत्त सात-
 मा गुणगणे ५९ लंगणसाठ प्रकृतिनो बंध हो
 य, तो अहिच्यां प्रकृतिनो विवरो कहे ठे. शोक
 १, अरति २, अस्थिर नामकर्म ३, अशुभ नाम
 कर्म ४, अयश नामकर्म ५, अशाता वेदनीय ६,
 ए ठ प्रकृति अथवा देवनु आयुष्य बांधे तो सात
 प्रकृति ए सात घटना ५६ ठपन प्रकृति रही जो
 देवतानु आयुष्य न बांधे तो, अने बांधे तो स-
 तावन रही देवतानु आयुष्य बांधे तारे देवतानां
 अंगोपांग पण बांधे तो ५७ अठवन प्रकृ-
 तिनो वध थाय अथवा ए देवतानुं दुग न
 होय तो ५६ प्रकृति ठरे अहिच्या चरचा
 घणी ठे पण ६३ त्रैसेटमाथी ६ काहामीए
 एटले ५७ प्रकृति रही अने तेमां २ प्रकृति
 व मारीए एटले ५९ लंगणसाठ प्रकृति रही एम
 समजवु ए सातमा गुणगणानो विचार तेमां दे
 वतानु आयुष्य बांधीने आयुष्यो होय तो अंगो
 पांग इहा बांधे तो अठवन प्रकृतिनो बंध होय
 ७ हवे अपूर्वकरण आठमु गुणगणुं तेनो वि
 चार कहे ठे तेना सात जाग ठे तेना पहेले

प्रागे तो ए अष्टावन प्रकृति बांधे तथा बीजे
 प्रागे निजा १, अने प्रचला २, ए वे प्रकृतिनो
 अंन करे एटले षण्ण ६ प्रकृति बांधे. ठेवटे सातमे
 प्रागे २६ षवीश प्रकृति बांधे एटले त्रीश प्रकृति
 घटे तेनां नाम कहे ठे देवतानी गति १, देव-
 तानी आनुपूर्वी २, पंचेडिनी जाति ३, शुभ्रवि-
 हाल गति ४, त्रस नामकर्म ५, वादर नामकर्म
 ६, पर्याप्तो नामकर्म ७, प्रत्येक नामकर्म ८. स्थिर
 नामकर्म ९, शुभ्र नामकर्म १०, सौभाग्य नाम
 कर्म ११, सुखर नामकर्म १२, अने आदेय नाम-
 कर्म १३, वैक्रीय शरीर १४, अहारक गति १५,
 तेजस नामकर्म १६, कार्मण नामकर्म १७, वै-
 क्रीय अंगोपांग १८, अहारक अंगोपांग १९,
 समचौरस संस्थान २०, निर्माण नामकर्म २१,
 जीन नामकर्म २२, वर्ण २३, गंध २४, स्पर्श २५,
 अगुरुलघु नामकर्म २६, अन्नना
 मकर्म २७, लपघात नामकर्म २८, अन्नना
 नामकर्म २९, ए त्रीश प्रकृतिनो अन्नना
 ठेवटे सातमे प्रागे २६ षवीश प्रकृति बांधे अन्नना
 य. ए अथपूर्व गुणगणनो किये अन्नना

वमुं अतिवृत्ति वादर गुणठाणे पहेले जागे २२
 वावीश प्रकृतिनो बंध होय इहां च्यार प्रकृति
 घटे तेनां नाम. हास्य १, रति २ डुगंठा ३ अने
 ज्ञय ४, ए च्यार प्रकृति ठवीसमाथी काढीये
 त्यारे २२ वावीश प्रकृतिनो बंध रहे अने ठेले
 जागे १० अद्वार प्रकृतिनो बंध रहे ए च्यार प्रकृति
 घटे तेना नाम पुरुषवेद १, सज्वलनो क्रोध २,
 सज्वलनो मान ३, सज्वलनी माया ४ ए चार प्रकृ-
 ति वावीशमांथी घटानीए एठले १० अद्वार प्र-
 कृतिनो बंध रहे सज्वलनो लोभ घटानीए तो
 दशमे सुद्ध मपराय गुणठाणे १७ सत्तर प्रकृतिनो
 बंध रहे अगाअरामु तथा वारमुं तथा तेरमुं ए
 त्रण गुणठाणे तो एक शतावेदनीयनोज बंध ठे
 अने चलदमु गुणठाणुं अवध ठे ए कर्म-
 ग्रथना पक्षथी गुणठाणे गवेखीने कर्म बंध
 कह्यो हवे ए प्रकृतिचिना बधनी जे स्थिति ते
 पांचमा कर्मग्रंथथी जाणजो अहिआं कही न-
 थी शामाटे के ग्रथ वधी जाय. हवे ए कर्मनो
 बंध शावने थाय ठे ते चोथा कर्मग्रथने विषे
 चार बंध हेतु कहा ठे मिथ्यात्व) १ अमृत, २

कपाय ३, ध्यने योग ४ ए चार कर्मबंधना हेतु
 कहा ठे पण ए सर्वनो हेतु एक अशुद्ध उपयोग
 ठे ते अशुद्ध उपयोगने तजवानी खप करवी ध्यने
 कर्मग्रंथने विषे प्रकृतिउं कही ते व्यवहारनयथी
 कही ठे ध्यने जे गाथानी सादी माहानिशीय-
 सुत्रनी ध्यापी ठे ते रीते समजवी तथा जावग्रंथनो
 जावार्थ ध्या गाथां जे कह्यो ते उपर उपयो-
 ग राखीने ज्ञाननी खप करवी ए दशमी गाथा-
 नो अर्थ कह्यो.

अव्यादिक जाणे जे ज्ञानी, तेहने केवली कहीएरे;
 केवलीने ए वेमां अंतर नही, बृहत्कल्पजास्ये
 लहीएरे ज्ञान० ११

अर्थ-अव्यादिक चिताए कहेतां जे अव्यानु-
 योगनो जाण एटले चारे अनुयोगनो जाण थाय
 पण च्यारमांहि अव्यानुं योगनुं जाणपणुं ते घ-
 णुंज कठण ठे. ते बाळ जीवना जाणवामां न
 थावे. शामाटे के त्रण अनुयोगने तो बाळ जीव
 समजे पण चौथो अव्यानुं योग ठे तेने तो ज्ञा-
 नीज समजे. ए सद्गुरुनी सेवाथी तथा क्षयो-

पशमना बळथी जाणवामां श्यावे ठे, ए लक्षण
 स्वभाव स्याद्वादशैलीए जे जाणपणुं थाय ते य-
 थार्थ स्वरूपने लुळखे तेने केवळज्ञानी कहीए
 एटले केवळज्ञानीमां श्यने डव्यानुयोगना जाण-
 वावाळा पुरुपमां कइ पण श्यतर न जाणवो.
 जेम केवळज्ञानी केवळज्ञानवमे जाणे श्यने के-
 वळ दर्शनवमे देखे ठे तेमज श्रुतकेवळी श्यनुभव
 ज्ञानवमे जाणे देखे ठे स्वरूप यथार्थ प्ररूपे ठे
 श्यने जाणवामां पण यथार्थ ठे माटे ए वेमां
 कांइ जीन्नपणुं जाणवुं नहि एवु बृहत्कल्पनी
 प्रास्यने विशे कह्युं ठे श्यने समजवामा पण
 एमज श्यावे ठे. पठी तत्व तो केवळी जाणे.

उक्त च-

गीयन्तोय केवळीण चतुर्विधे जाणणेय कहणेय ॥
 लद्धे रागद्वेषे श्रणंत कायस्सर्वज्ञ जाणवा ॥

एम जाणीने जे डव्यानुयोगना जाण
 ज्ञानी पुरुप तेमनो श्यविनय न करवो तेमनी
 सेवा प्रक्ति करवी तेमनी श्याज्ञा माथे चढाववी
 एम करे ते जीवने सुखे सुखे धर्मनी प्राप्ति थाय

अने ते जीव वहेलो कर्मनो नाश करीने मोक्षे
 पण जाय. अने अविनय आदि कखावाळा ते
 दुर्लज्जबोधी थाय, तथा बहुल संसारी थाय एम
 समजवुं हवे प्रसंगे अव्यानुयोगनी वारता किं
 चित् कहे ठे ते अव्यनां नाम. धर्मास्तिकाय १,
 अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्तिकाय ३, पुद्गला-
 स्तिकाय ४, जीवास्तिकाय ५ अने काळ ६. ए
 ठ अव्य ठे. हवे ते अव्यनी जुळवाण कखी
 एटले अव्य कहेतां शुं तो जे गुण पर्याय सहित
 होय अने त्रणे काळ एक रुपे रहे तेने अव्य
 कहीए. जेम पर्याय पलटे, तेम अव्यनुं पलटवुं
 न थाय तेने अव्य कहीए एटले गुण पर्याय क-
 हेतां जीवव्यनो ज्ञानादि गुण अने पुद्गल अ-
 व्यनो रक्तत्वादि गुण इत्यादि पर्यायनी पेठे अ-
 व्य पलटे नहि. जेम मृत्तिका अव्य तेनो जे गु-
 णपर्याय घटादि ते सर्वे पर्याय ठे मृत्तिका ते
 अव्य ठे आधाराधेय ते गुण ठे ए रीते सम-
 जवुं इहां अव्य शक्ति जावे गुणपर्यायमां रही
 ठे अने व्यक्ति जावे ते गुण पर्यायनो प्रगटपणो
 आवरणना अजावे थाय. हवे तेद्रव्यवे प्रकारना

ठे एक सामान्य, अने बीजो विशेष. सामान्य ते
 द्रव्य स्वरूप ठे, अने विशेष ते गुणपर्यायरूप ठे एम
 जुदो जुदो चिन्नपणानी वक्तव्यताने सुमतिग्रथ-
 थी जाणजो हवे एम चिन्नपणु एकाते जो मा-
 नीए तो डव्य गुण अने पर्याय ए त्रणे चिन्न
 थइ जाय तो मोये विरोध आवे शामाटे के गुण
 पर्यायने ज्यारे जुदा मानीए त्यारे डव्य ते शाने
 कहीए ? जेम सुवर्ण डव्य ठे अने तेना घट
 अनेक ठे ते कइ सुवर्णथकी चिन्न नथी. तेमज
 ज्ञानादि गुणो ते आत्माथकी जुदा नथी आ-
 त्मा एज ज्ञान, अने ज्ञान एज आत्मा ठे. अ-
 हिध्यां कोइ एकांतवादी एम जाणशे के अमो
 एमज मानीए ठीए, शामाटे के मृत्तिकाथकी घट
 जुदो नथी, तेमज आत्मा अने ज्ञान एक रूपेज
 ठे पण चिन्न कोइ काळे सजवे नहि तेने उ-
 त्तर के, जे एकत्व वचन तुं कहे ठे ते एकत्व
 मार्ग वितरागनो नथी अहिध्यां तो स्यादादमा-
 र्ग ठे कोइ जगाए जेद होय अने कोइ
 जगाए अजेद पण होय एमां कइ विरोध न-
 थी अहिध्यां शिष्य प्रश्न करे ठे. के स्वामी एक

अव्यने विपे जेद अने अजेद ए वे धर्म केम पामीए एतो प्रत्यक्ष विरोध ठे ज्यां जेद होय त्यां अजेद न होय, अने ज्यारे ए वे धर्मनी एक स्थानके प्राप्ति थाय त्यारे तो महा विरोधकारी दीसे. जेम जे जगाए अंधारुं होयते जगाए अजवाळुं न होय तेम जे जगाए अजवाळुं ठे त्यां अंधारुं न होय तेमज एक अव्यमां जेद अने अजेद केम संजवे तेनो उत्तर जे श्रुतज्ञाननी स्मणता करो एटले तमोने समज पमशे, अने ज्यांसुधी श्रुतज्ञाननी स्मणता न थाय, त्यांसुधी चारित्रधर्म पण फळदायक थतो नथी, अने कोश चारित्रीउं समाधि पण पामे नहि. ते श्रीआचारांगजीमां कह्युं ठे.

यदुक्तं-

वीतीगीढ समावनेणं अप्याणेणं तं लज्जंती
समाही

जे घट घटा जावादिकने यद्यपि विरोध ठे तो हे पण जेदाजेदने विरोध नथी शामाटे के सर्व अव्यने विपे अथवा सर्व ठामने विपे वे धर्म रह्या ठे. जेद धर्म ठे अने अजेद धर्म पण ठे. ए वे धर्म अविरोधी जावे रह्या ठे. एकत्व

वर्तीपणे दीसे ठे, एटले एकत्वभाव अज्ञेद स्व-
 ज्ञात ते माचो, अज्ञे ज्ञेद स्वभाव उपाधिपणे
 माटे जुगो एम कोड कहे ते पण अनुभव
 सत् ज्ञासन थतो नथी एटले व्यवहारनयपर
 अपेक्षा ए वेहुनो गुणादिकनो ज्ञेद, अथवा गु
 णादिकनो अज्ञेद ए वचन तो एक ठामे नथी
 जे घटादि डव्यने विषे सर्व लोकनी शाखे प्र
 त्यक्ष प्रमाणे दीसे ठे के रक्तत्वादि गुण पर्या-
 यनो ज्ञेदाज्ञेद जे लहीए ठीए तो तेनो विरोध
 कहो केम कहीए जे प्रत्यक्ष ते घटने विशेषे
 गध रस स्पर्श रक्षा ठे, अज्ञे सर्व नोखा नोखा
 कार्यना कर्ता ठे अज्ञे एक डव्य आश्रीने वरती
 ठे ते आपणने प्रत्यक्ष अनुभव थाय ठे तो
 विरोध कहो केम कहेवाय ? तेज रीते सर्व डव्यने
 विषे ज्ञेदाज्ञेदनु जाणवु

उक्त च—नहि प्रत्यक्ष दृष्ट्यर्थविरोधाना
 मत धा प्रत्यक्ष दृष्ट हवे ज्ञानतनु पण कार्य न
 थी उक्तच—केदमन्यत्र दृष्ट्या मोहनी पुर्णता
 तत्र दृष्टान पाच सेयत्वं प्रत्यक्षप्यनुमानवत् ॥१॥
 हवे ते ज्ञेदाज्ञेदनु स्वरूप प्रत्यक्षपणे पुद्गल

अन्वयमां देखामे ठे जेम प्रथम जे घट हतो ते
 श्यामवर्णे हतो तेज घट पाठो रक्तवर्णे थयो तो
 ए प्रत्यक्ष जेद जाणवो तेज घट घणे काळे जो-
 श्ण तो मृत्तिकारूप ठे त्यां अजेद ठे ते ठेकाणे पु-
 द्गल स्वभावो जेद तथा अजेद स्वरूप विचारतां
 सप्तजंगी लागु पने ते कहे ठे स्यात् अस्तित्व
 १, स्यात् नास्तित्व २, स्यात् अस्तिनास्तित्व ३,
 स्यात् अवक्तव्य ४, स्यात् अस्ति अवक्तव्य ५,
 स्यात् नास्ति अवक्तव्य ६, स्यात् अस्ति नास्ति
 युगपत् अवक्तव्य ७. ए सप्तजंगी जे ठे, ते प्रत्ये-
 के प्रत्येके करीए तो करोमो गमे सप्तजंगी थाय
 तथापि लोकने विषे प्रसिद्ध वाक्य जे घटनी ग्री
 वादि पर्याय सहित घट ठे तो तेहिज घट स्वक्षे-
 त्र, स्वभाव्यादि के अस्ति ठे पररूपे जोश्रण तो
 नास्ति ठे एम समजीए हवेए सप्तजंगीनुं स्वरूप
 देखामे ठे. स्वअन्वय १, स्वक्षेत्र २, स्वकाळ ३ अने
 स्वभाव ४ अपेक्षाए घटछे परद्रव्य, परक्षेत्र, पर का-
 ल, अने परभावनी अपेक्षाए घट नथी एक वखते
 स्व, पर वेहुनी साथे विवदा करतां अवाच्य ठे
 शामाटे के जे वे पर्याय एक शब्दे मुख्य रूपे न

स्यंतो तस्सज बालाश्या पज्जवन्नेया बहू विय-
प्पा ॥ १ ॥ इति सुमती गाथाय ॥

हवे जुना न्यायकने एवी शङ्का रहे ठे के,
ज्यां जेद होय त्यां अजेद न होय अने अजेद
होय त्यां जेद न होय एवीशङ्का राखे ठे ते शं-
ङ्का टाळवाने वास्ते तेने समजावे ठे के इहां श्याम
वर्ण अने रक्तवर्ण धर्मनो जेद ज्ञासे पण घट
धर्मनो जेद न ज्ञासे, एम जो कहीए तो जन्म
चेतननो जेद जुदो पमे पण जन्मत्व चेतनत्व ध-
र्मनो जेद पण जन्म चेतन धर्मनो जेद नहि ए-
टले शुं कहुं के जन्मपणुं अने चेतनपणुं जिन
थयां पण अव्यपणुं जुहुं न थयुं एम अथव-
साय थाय. धर्मनि प्रतियोगपणे उळखे तो वेहु
गम सरखा ठे एटले अव्य एकनो एकज रह्यो
अने जेद अजेद वन्ने जणाया ए अर्थ प्रत्यक्ष
सिद्ध थयो एम जन्म चेतनमांहे जेदाजेद कहेतां
शुद्ध अर्थ थाय ठे ते माटे जे जिनरूप जीवा-
जीवादि तेमांहे रूपांतर अव्यत्व पदार्थत्वादि अ
जेद पण आवे एटले जेदाजेदने सर्वत्र व्यापक-
पणुं कहुं ठे ए पदार्थ संक्षेपे कह्यो, तेने हवे वि-

जावे होय त्यांतो सप्तजंगी करो, पण ज्यां प्रदेशना प्रस्तावादिक विचार होय त्यां त्रिजा नयथी मांतीने सातमा नय सुधी अथवा पांच नयनो अथवा ठ नयनो अथवा सात नयनो इत्यादिके निन्न निन्न विचार होय त्यांतो अधिक जंग जाळ होय तेवारे सप्तजंगीनो कंइ नियम रहे नही तो अहींयां शो विचार करवो ? त्यारे गुरुराय उत्तर कहे ठे के त्यां पण एक नयना अर्थनो मुख्यपणे विधि ग्रहीए बीजा सर्व नयोनो निषेध करीए एम लेइने प्रत्येके प्रत्येके अनेक सप्तजंगीज करीए. अमारा समजवामां तो एमज ठे के सकल नय अर्थ प्रतिपादक तथा पर्यायास्थीक कारण वाच्य ठे एटले पर्याये करीने नयजेद सर्वे. थाय ए लक्षण लेइने सर्व नयनो सत्कार करवो. अने सर्व नयना समुदायनुं आखंवन ग्रहं कुं कोइ जंगनो अहियां निषेध नथी अहियां कोइ अज्ञानी मूढ अष्टिनो धणी व्यवहार कट्य शुजाशुज नये ग्रहवा चाहे ठे पण एम नथी समजता जे प्रथमनी चार नयोमां तो व्यवहार कट्य आश्रीने जोतां धर्मज नथी अने कहेशे के

ए नये वधीये प्रमाण खरीके नहि तेने कहीए के
 जाइ ए नयो कंइ कल्प व्यवहार वास्ते प्ररूपी
 नथी, अने तमे कल्प व्यवहारमां ए लगावीने
 शुजाशुभ मार्गने स्थापो ठो, ते कुनय थाय शा
 माटे के व्यवहार ठे ते मूळमा त्रीजो एकज नय
 ठे तेमां तमे सात नय शी रीते जतारो ठो ?
 ए तो प्रत्यक्ष कुनय थाय माटे सबळु समजीने
 नथनो विचारनय अथोथकी जाणवो जोइए
 अने भगवाने नय अधिकार प्ररूप्यो ठे ते
 डव्य पर्याय ग्रहण करवा वास्ते ठे एखे वस्तु
 धर्म ग्रहण करवा अने अंशे अंशे जिन्नपणुं दे-
 खानुं, अने वस्तु स्वरूपनुं लंळखाववु, तेने वा-
 स्ते नयो कही ठे पण कंइ कल्प व्यवहार वास्ते
 कही नथी, ए तो कुनय ठे, ए अधिकार सम्म-
 ति अंथ मध्ये ठे एखे डव्यार्थिक अने पर्या-
 यार्थिक ए वे नय अद्यापि ठे, ते मध्ये डव्यार्थि-
 कनी चार (४) नय अने पर्यायार्थिकनी (३) न-
 य ए डव्यार्थिकनि डव्य ग्रहण करता ठे, अने
 पर्यायार्थिकनी पर्याय ग्रहण करता ठे, ए तो व-
 स्तु धर्ममा ठे, पण कल्प व्यवहारमा लगाववी ते

कुनय ठे. एम समु समजो. अथवा अर्हियां स-
सजंगी कही ते वने नय जे उव्यार्थिक अने प-
र्यायार्थिक वस्तु ग्रहण आश्रीने कही ठे व्यंजन
पर्यायने ठामे वे जंग कह्या ठे ते अर्थ सिद्धिना
अधिकारने विषे. उक्तं च.

एवं सत्त विअरको, वयण पदो होइ अ-
ठपनीये. वंजणपनीए पुण, सविअरपो निविअर-
यावीतिन्न अतिन्न अ वाच्यो रे ॥ १ ॥

अर्थ-ए जे पूर्व कह्या ते प्रकारे ए सात
विकल्प ठे. ते साते प्रकारे वचन प्रवेश ससजंगी
रूप वचनमार्ग ते अर्थ पर्याय ठे एटले सात प्र-
कारना वचनवमे अर्थनी प्राप्ति थाय तेने अर्थ
पर्याय कहीए. अस्तित्व नास्तित्वपणाने विषे
होय, हवे जे व्यंजन पर्याय ठे, ते घट कुंजादिक
शब्दवाच्यक ठे ते सविकल्प जे विधिरूप अने
निर्विकल्प ते निषेधरूप एटले घटादिकने विषे वि-
कल्प सहित विचार-करवो, अने एक निर्विकल्प
विचार करवो, ए वे जांगा होय पण अवक्तव्या-
दिक जांगा न होय शामाटे जे अवक्तव्य शब्द

विपे कहीए तो विरोध थाये, ए नय अहियां
 लागु पस्तो नथी जे समजिरुह नयने मते
 सविकल्प ठे, अने एवजुत नयने मते तो विक-
 ल्प ठेज नहि ए नय तो निर्विकल्प ठे एम वे
 जंग जाणवा अथवा अर्थ नय प्रथमनी चार नय
 तो व्यंजन पर्यायने मानेज नहि, एतले व्यंजन
 पर्यायपत्थे तो प्रथमनी चार नयोने मानतो ज न
 थी ते माटे नयनी अहिया प्रवृत्ति नथी, अने
 अधिकु जोबु होय तो अनेकांत विवदाथी जा-
 णवु ते माटे सप्तजगनो छह अन्यास कस्वो,
 सर्वने विपे ए सप्तजंगी लागे जे जे देगे जे जे
 वस्तुने ग्रहण करीए त्यां सप्तजंग प्रमाण होय
 सिद्धमा पण सप्तजंगी लागे, अने नयो तो
 कोइ जग्याए लागे अने कोइ जग्याए न
 लागे, अथवा सिद्धमां तो लागेज नहि.
 माटे सप्तजंगनो अन्यास कस्वो. अहियां प
 रमार्थे जीवाजीवादिक जेद अथवा अव्य प-
 र्याय ग्रहण कराने वास्ते स्यादाद परिज्ञान ठे.
 ते जैनशासननु मूळ ठे अने ए तर्कवाद ठे तेने
 जैनी कहीए अने तेनोज जैनजाप लेखे ठे एम

निश्चययत्की समकितादि परिज्ञान तेने सम-
 कित कहीए तेने साधु पण कहीए तेने ज्ञानी
 कहीए. अने तेनीज मुक्ति थाय ठे ते बिना जे
 व्यवहार क्रिया करे ठे अथवा चरणसित्तरी अने क-
 रणसित्तरी जे पाळे ठे ते जीव तो संसारमां रख-
 शे तेनी मुक्ति थवानी नथी ज्यारे ल्यारे ए
 स्यादाद परिज्ञान पूर्वोक्त थशे, ते दहामे ते
 आत्मानुं कल्याण थशे, अने सर्व कर्मथी रहित
 थशे मुक्तिनां सुख जोगवशे एवुं सम्मत्तिग्रंथमां
 कह्युं ठे.

उक्तं च.

चरण करणप्पहाणा,
 ससमय परसमय मुक्कवावारा ॥
 चरण करणस्ससारं,
 नच्चिय सुद्धं न याणंति ॥ १ ॥

हवे नय प्रमाणे किंचित् विवेक करीने दे
 खामे ठे के जे घट पटादि पदार्थ अथवा जी-
 वाजीवादिक पदार्थ अथवा अव्य गुण पर्याय-
 रूपे त्रण-त्रण स्वरूप भेद थाय तेनो अर्थ एकज
 ठे शोमाटे के घटादिक पदार्थ मृत्तिकारूप ठे. ते

गुण ग्रहण थयो ए उपाधिसहित ठे तेने अशुद्ध निश्चयनय कहीए तथा चाँदे गुणठाणांते पण अशुद्धतामांज लखे ठे शुद्ध स्वरूपना उच्यते देखवावाओ जे चेतन उच्यते तेनेज शुद्ध माने ठे ए उच्य संग्रहने विषे कहु ठे उक्त च

मगण गुणठाणेहिं, चउदसहि हवतितह ॥

अशुद्धनया विषेयाससारी, सवशुद्धाहु शुद्धनया ॥१॥

अर्थ अथवा व्यवहार नयपदे सिद्ध अने संसारी जीवना जेद वेहेचीए त्यां पण चउदे गुणठाणे व्यवहार कह्यो तो ए पण अशुद्धज ठे शामाटे के सदाय काल उपाधिसहित ते अशुद्धज ठे, अने उपाधिसहित ते शुद्ध ठे, एटले निश्चयनयना शुद्ध अने अशुद्ध ए वे जेद कह्या एटले निश्चय कहेतां जेद ज्यां न होय एकलो अजेद वस्तुने ग्रहण करे तेने निश्चयनय कहीए, अने व्यवहार नय कहेतां जेद वेहचे वस्तुने अंशथकी जिनजिन दर्शावे तेने व्यवहारनय कहीए ते व्यवहारनयना वे जेद एक सदचूत व्यवहारनय अने बीजो असदचूत व्यवहारनय एक उच्य आश्रित ते सद-

श्रुत व्यवहार, परविषयता ते अस्मद् श्रुत व्यवहार.
 हवे पहिलो जेद जे सदश्रुत व्यवहार कह्यो तेना वे
 प्रकार ठे एक उपचलित सदश्रुत व्यवहार, १ अने
 बीजो अणु उपचलित सदश्रुत व्यवहार २, जे
 उपाधिसहित गुण गुणी जेद देखामे जेम जीव
 शमतिज्ञानी ते उपाधिसहित थयो. उपाधि
 ते उपचारे ठे अने जीव ज्ञान ए सद्भाव ठे, ए-
 टले ए सदश्रुत उपचलित ए पहिलो जेद कह्यो.
 हवे अणु उपचलित सदश्रुत व्यवहार ते गुणगु-
 णी जेद करे. ए बीजो जेद जेम जीव ते केवळज्ञा-
 नी तो केवळज्ञान. उपाधिरहित ठे एटले उप-
 चार अहिथ्यां ठेज नहि अने जीवने, ज्ञान ए वे
 जेद थया एटले ए अणे जेदमां उपचलित सदश्रुत
 व्यवहार थयो हवे अस्मद् श्रुत व्यवहारनयनां पण
 वे जेद ठे, एक उपचलित अस्मद् श्रुत व्यवहार अने
 बीजो अणु उपचलित अस्मद् श्रुत व्यवहार. त्यां
 पहिलो जेद असंसलेदित योगे जेम जीवनां क-
 र्म ए ससंबंध स्वस्वामित्व जाव रुप कट्टिपत ठे,
 शामाटेके कर्म ठे ते जुदां उपचारे ठे, केमके ज्यारे
 त्यारे

थ्यां, अने जीवते कर्म बंधन

ठेदिने जुदो पने अग्रज कर्म सर्वे सादी सांत प्रांगे
 ठे ते स्थिति प्रमाणेज आत्मप्रदेशे रहे माटे ए उप-
 चलित अने जीवथि कर्म जुदां तेथी असद्व्रुत
 एम समजवु, एखे ए असद्व्रुत उपचलित
 व्यवहार कह्यो हवे बीजो जेद जे ठे ते संसले-
 क्षितजोगे ठे ए संवध एम जाणवो के जेम जी-
 वने रागादिक परिणाम ए संवध कर्मनी परे नज
 जाणवो, तेनो अनादि संवध ठे, तो ए विपरीत-
 ज्ञावयकी आत्मा जुदो थायज नहि ए तो श्रे-
 णीग ते शुक्लध्यानना पहलो पायो ध्याइ रहे,
 अने बीजे पाये ध्यानारूढ थको वितराग जावे
 जाय ते वखते पुद्गलथी आत्मा ताड्रश जुदो पने
 ते माटे ए कइ उपचारकृत्य ठेज नहि माटे अनुपच-
 लित कहीए, अने जीवनो विषय शुद्ध अने रा-
 गादिकनो विषय अशुद्ध एम जिन विष्य ठे माटे
 अणउपचलित असद्व्रुत व्यवहार थयो, एम
 नयजेदना अनेक विकल्प थाय ठे. वस्तु धर्म
 अंशे ग्रहीने, उव्यना अनेक जेद थाय ठे, ते
 पण उव्यनी लुब्धवाण करवा वास्ते मुळजेद त्रण
 कह्या ठे उत्पाद ॥१॥ व्यय ॥१॥ अने ध्रुव ॥१॥

ए त्रण पदे करीने सहित होय तेनेज ड्रव्य क-
हीए, हवे ए त्रणे पदनीं उळखाण. सर्व अर्थ
व्यापकपणुं धारवुं एटले जीनशाशनने मते ए
त्रण गुण विना कोश ड्रव्य ठेज नहि. इहां केटला-
एक आत्मादि ड्रव्यने नित्य माने, केटलाएक अ-
नित्य माने, अने केटलाएक ड्रव्यना एकाकि जेद
वहेचे. ठे ते रीत सत्य ठेज नहि. नित्य अनेकांत
अने अनित्य अनेकांत, एवुं जे बोलवुं ए पद
पण लोकथकी विरुद्ध ठेज ते माटे सर्वे पदार्थने
विषे उत्पादव्यय ध्रुवसहित आदाणे मानवुं एम
श्री हेमचंद्राचार्यजी कृत्य स्यादादमंजरी ग्रंथमां-
हे पण प्रमाण ठे. उक्तं च.

आदिष्टमाद्यां समस्त वस्तु स्यादादमु-
जानती जदी वस्तु तन्नित्यमे वैक मनित्यमन्य,
दितित्वदाज्ञाद्द्विशतां प्रलाप. ॥ १ ॥

अर्थ—के अदीपं एटले दीपादार कहेतां
ध्रुवन प्रकाश दीपक बोम्य मरजादा करे त्यां स-
र्व वस्तु पदार्थ स्वरूप समस्त जाव एटले सर्व प-
दार्थने देखामे के आपदार्थ स्वरूप ड्रव्यपर्यायात्मी-

कमिति तथा च वाचक मुख्य उत्पाद व्यय अने
 ध्रुव उक्तंच स्तदीति समसजाव फरत येहीज जाव
 वीवरीने कहेवे के उत्पाद १, व्यय २, अने ध्रुव ३ ए
 त्रण लक्षण तो पटे डव्यमाही समय समय प्रणमे
 वे अहिआ कोऽ एवी शका करशे के ज्यां उ-
 त्पादव्यय होय त्यां ध्रुवपाणुं होयज नहि, अने ज्यां
 ध्रुवपाणु होय त्या उत्पादव्यय होयज नहि, ए तो
 विरोधनी वारता वे तो त्रण लक्षण एक ठामे
 होय वे ते केम मनाय ? ज्या गायवे त्यां ताप
 होयज नहि, अने ज्या ताप वे त्या गाय होयज
 नहि ए एक ठामे वेवाना होयज नहि, तेम ए
 त्रण लक्षण पण एक ठामे होयज नहि, एम
 कहेनारनी शका टाळाने वास्ते सदगुरुसाय उत्तर
 कहे वे के जे सीत तथा उष्ण जळने विपे तथा
 वहिने विपे परस्पर मांहोमांहो एक एकना विरोधी
 होय ते एक ठामे नज होय ए प्रत्यक्ष विरोधी
 वेज पण अहिआ तो आ त्रणे लक्षण सर्व पदा-
 र्थने विपे प्रत्यक्षपणे दीसे वे तेहनो परस्पर त्याग
 केम थाय ? प्रत्यक्ष सिद्ध वे तेनी ना केम पनाय ?
 अहिया विरोध केम कहेवाय ? अनादि काळना

एकांतवासनाए मोहद्रष्टिमां व्यापीने तथा प्रणमी-
 ने रहेला जे जीव होय तेने एनो विरोध नासे
 प्रण जे ज्ञानि जीव होय ते परमार्थ विचारीने जुवे
 तो तेनो विरोध थावतो ज नथी, समय तत्ताइ परती
 एज वचन विरोधजंजकठे तेहिज स्वरूप देखामठे.
 के एकज कंचन इव्य ठे. तेनो पूर्वे कुंमळ घाट हतो
 ते कुंमळघाटनो नाश थयो अने मुगटाकारे उत्पत्ति
 थइ अने कंचनाकारे स्थिति ठे ए त्रणे लक्षण
 प्रगट दीसे ठे. शामाटे के हेम कुंमळ जागीने मु-
 गट कर्यो ठे तेवारे घाटनो नाश थयो माटे कुं-
 मळाकारे व्यय थयो ए सत्य ठे अने हेम मुगटाकारे
 उत्पत्ति थइ एटले उत्पात ए पण सत्य ठे अने
 हेम इव्ये स्थिरजाव ठे एटले ध्रुव ठे एम उत्पाद
 व्यय साधीए अथवा बीजो द्रष्टांत कहे ठे यथा
 गोरस एटले गोरस शब्द एक ठे हवे गोरस कहेतां
 इधनो नाश, त्यां दधिनी उत्पत्ति. अने गोरसजावे
 स्थिति एटले इधनो नाश एटले व्यय कहीए
 अने दधिनी उत्पत्ति ते उत्पात कहीए अने
 गोरसजावे स्थिति एटले ध्रुव कहीए ए रीते उत्पाद
 व्यय. अने ध्रुव ए त्रणे लक्षण एक द्रव्यमां ठे अ-

द्विधां उत्पादव्यय विना कोऽ द्रव्य दीसतो ज नथी
 तेम ध्रुवतापणा विना कोऽ द्रव्य दीसतो ज नथी जे
 मुगटाकारे स्पष्ट उत्पाद ठे ते पण हेम द्रव्य विना
 नथी अथवा हेम द्रव्य पण कोऽ घाट विना नथी
 हेम पर्यायनु परावर्तन धर्म ठे त्यां उत्पादव्यय थाय
 ठे अने ध्रुवतापणानुं ध्रुवता धर्म ठे त्यां ध्रुवपणुं स्हे
 ठे एम ए त्रणे गुण मळीने द्रव्य थाय ठे तेवारे ध्रुव
 तापणानी परतीत पण थाय ठे तेमाटे तद्भाव आत्मा
 ए नित्य ए लक्षण परिणामे माटे ध्रुव ठे अने अ-
 ज्ञेदपणामां आद्रव्य एम सर्व भाव उपचारे ठे. हवे
 उत्पाद व्यय ध्रुवनो अज्ञेद संबंध तेनो ज्ञेद सरूप
 पणे देखामे ठे के जेम हेम घाटनो व्यय अने मु-
 गटनी उत्पत्ति ते एकाकार जाणीए ठीए ते माटे
 विज्ञाव पर्यायनी उत्पत्ति तथा व्यय ते सतान
 ठे तेथी घाटनो नाश थाय एम व्यवहारे संज्ञे
 ठे ते माटे उत्तर पर्यायनी उत्पत्ति त्या पूर्व पर्या-
 यनो नाश जाणवो, अने कंचन इव्यनी ध्रुवता
 पण तेहीज ठे. ए त्रणे लक्षण एक द्रव्यमां
 एक समये वस्ते ठे, एम जिन तथा अजिन श-
 क्तिज्ञेदे अने कारणज्ञेदे समजवुं, सामान्यरूपे द्रव्य

जाणवो अने विशेषरूपे उत्पादव्यय जाणवो एमां
 कसोये विरोध आवे नही, एम आत्माने विषे त्रण
 लक्षण मानवां, पूर्व पर्यायनो नाश त्यां नवा पर्या-
 यनी उत्पत्ति अने आत्मद्रव्ये स्थिति एटले पूर्वे
 जे द्रव्यनुं जाणवुं हतुं ते द्रव्य बीजे समये न्यून्य
 वृद्धिपणे जाणवामां आव्यो, तेवारे पूर्वना जाणप-
 णानो नाश थयो, नवा जाणपणानी उत्पत्ति
 थइ अने ज्ञानजावे ध्रुव ठे एम त्रण लक्षण
 जाणवां, अथवा पहेले समये दीतुं बीजे समये
 जाण्युं अने आत्मजावे स्थिति एटले पूर्व पर्या-
 यनो नाश, त्यां नवा पर्यायनी उत्पत्ति अने द्रव्य
 स्वरूपे ध्रुव एम पट गुण हानि वृद्धि ते पण
 पर्याय ठे, त्यां स्व परपर्यायनो विचार जाण-
 वो, त्यां नाश उत्पत्ति तो थइज रही ठे, पण
 आत्मस्वरूपे ध्रुव ठे एम स्वजाव लक्षण गुणप-
 र्याय आदे विचार घणो ठे ते सदगुरुना मुख-
 थकी जाणजो अहियां पण प्रसंगे आवशे ते
 आ ग्रंथमां नाखीसुं, इत्यादिक द्रव्यानुयोगनुं
 जाणपाणुं जे पुरुपने तादृश्य थयुं ठे तेने केवळ-
 ज्ञानी कहीए, ते पुरुपमां अने केवळज्ञानीमा

कश्यप ऋषिपणु जाणवु नहि, जे ऋषिपणुं जाणे ठे ते मिथ्यादृष्टि ठे, अने समकितदृष्टि तो सरखा जावे जाणे, शामाटे जे गणधरदेवे तो वनेने सरखा कह्या ठे तेनी साख बृहत्कल्पना प्राण्यनी गाथा साथे पूर्वे कही गया ठे तेथी जाणजे

एटले गणधरदेवना कहेवामां तो वने सरखा ठे तेमणे तो जंग अधिकतापणुं कह्यु नहि अने ते वचनेने अणसद्वहता जंग अधिकता पणु कहे ठे ते गणधरदेवना वचनथकी उपरां ग थया तेवारे जगवानना वचननी श्रद्धा तेमने ठसी नहि तेथी प्रत्यक्ष तेमने मिथ्याजाव प्रगट थयो माटे एने मिथ्यादृष्टि कहेवा, ए वातमां काश् दूषण ठे नहि, एटले ए अगीयारमी गाथानो अर्थ कह्यो

चारित्र गुणे जे ठे हीणा, पण ज्ञानगुणे जे वासी रे । इशा योग लक्षण कालादिके, ललीत विस्तार साख खासी रे ॥ ज्ञान० ॥१२॥

अर्थ-चारित्र गुणे जे ठे हीणा कहेता जे व्यवहार चारित्र एटले वरणसीतरी अने करणसी-

तरीयकी जे हीण ठे तोपण ज्ञानगुणने विपे जेनी स्मणता ठे ते पुरुषनी मुक्ति थशे एवं पूर्वे अगीयारमी गाथाना अर्थ विपे सम्मति ग्रंथनी शाख आपेली ठे त्यांथी जोइ लेजो एटले श्वा योग कहेतां सूत्र अर्थ ज्ञानने विपे स्मणता तेमने कांइ प्रमादी साधु कह्या नथी, अने कालादिक विकल योगी एटले काल ग्रहणादिक व्यवहार क्रियाथकी जे उपरांठा ठे अने श्वा जोग ज्ञानने विपे रह्यो ठे, ते विशेषे करीने मुक्तिपंथनो साधक ठे एवं ललित विस्तरा टीकामां कहुं ठे.

उक्तं च-

कर्तुमिहो श्रुतार्थस्य, ज्ञानिनोपि प्रमादिनः ।
कालादिविकलोयोग, श्तीहायोग लक्षणं ॥१॥
॥ ललित विस्तरादौ ॥

अर्थ-एने विपे ज्ञाननुं बहुमान कहुं पण व्यवहारनुं बहुमान कहुं नथी, माटे आत्मा ज्ञान गुणमां वासेलो होय तो तेने कांइ व्यवहारादिकनी जरूर नथी, पण जेनो आत्मा ज्ञानगुणमा वासित न थयो होय तेने व्यवहार खपनो ठे,

जेम स्तनना आच्युपण जे पुरुषने पहेरवा मले
 तेमने काइ कथीरनां आच्युपणनी खप नथी,
 पण जेने रत्नादि आच्युपण न मले तो ते पुरुष
 कथीरादि आचरणनो खप करेज, जे पेळो आ
 च्युपणरहित फरे तेथी तो ए घणो सारो देखाय ठे
 एटले जेने ज्ञान गुण प्रगट ठे तेमने कल्प व्य
 वहारनी खप नथी तेमने तो एक ज्ञाननी खप ठे
 ॥ लुक्त च अन्व्यात्मसारग्रथे योगा अधिकारे ॥

नपर प्रतिबधोस्मिन्नव्योप्येकात्मवेदनात् ।

शुच कर्मोपि नैवात्र व्याक्षेपायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ-एटले शुचकर्म तो ज्ञानमार्गने वि
 पे खपनुं नथी ए तो मोक्षे जतां आत्मो ज रुंगल
 थइने पने ठे, माटे अहीयां व्यवहारमार्ग आ-
 त्माने अहितकारी ठे, आत्माने हीतकारी तो
 एक ज्ञानमार्ग ठे, ते ज्ञानीने तो कोइ वस्तुनो
 प्रतिबध होयज नहि तो शुचव्यवहारनो प्रतिबध
 केम होय, अने जे वारे शुच व्यवहार ग्रहण
 करे तेवारे ज्ञान ध्याननो नाश थाय, ए तो
 मोक्षे विक्षेप आवी पने तो धर्म रहे नहि अने
 आत्म स्वरूपनी रमणता थाय नहि अने आत्म

स्वरूपनी रमणतां थया विना आत्मानी तादृश्यं ल
 लखाण थाय नहि, अने आत्मा ललखां वि-
 ना समकितेगुणं आवे नहि तो चारित्र धर्मनी
 आशा सेनी राखवी, माटे प्रथमज आत्मद्रव्य-
 ने ललखे पठी धर्म आवे माटे धर्मनी खप होय
 तेमने पहिली आत्मानी ललखाण करवी ते आ-
 त्मानी ललखाण शावने थाय ते कहे ठे; आ-
 त्मानां लक्षण तथा स्वभाव ए वे वस्तु प्रथ-
 म जाणवी जोश्र, ते लक्षण वे प्रकारनां ठे
 तथा स्वभाव पण वे प्रकारना छे ते स्वरूप
 नाम साथे कहे ठे; आत्माने विषे सामान्य ल-
 क्षण ७ ठे विशेष लक्षण ६ ठे अने सर्व द्रव्ये
 आश्रिने कहेतां सामान्य लक्षण १० ठे अने
 विशेष लक्षण १६ ठे तथा सामान्य स्वभाव ११ ठे,
 अने विशेष स्वभाव १७ ठे ए सर्वे ललखां जो-
 श्र ते अनुक्रमे नाम कहे ठे पठी तेनो अर्थ
 आगल कहीशुं; १ अस्तित्वं २ द्रव्यत्वं ३ प्र-
 मेयत्वं ४ अगुरुलघुत्वं ५ प्रदेशत्वं ६ चेतनत्वं
 ७ अचेतनत्व ८ मूर्तत्वं ९ अमूर्तत्वं १० ए
 दश सामान्य लक्षण कहां, हवे विशेष ११

३ प्रमेयत्वं कहेता प्रमाण परिच्छेदरूप ते प्रमाण एनो जे विषय तेने प्रमेयत्वं कहीए ते पण कथंचित ते अनुगतरूप सर्व साधारण गुण ठे, ए नो परपरा सन्धे प्रमाणत्व ज्ञाने प्रमेयत्व व्यवहार थाय ठे, ते माटे प्रमेयत्व गुण रूपथी अनुगत ठे पण साधारण गुण ठे माटे अहीयां गणेलो ठे ४ हे अगुरुलघुत्व कहेता अगुरु लघु गुण आज्ञाग्राही ठे वली सूक्ष्मतत्व एखे एकेनो हेतु निर्वाहनो कर्ता ठे अहिया आज्ञा सिद्ध ठे अन्यथा वादीजन समजे केमके अगुरुलघु पर्याय ते सूक्ष्म अविगोचर ठे ५

प्रदेशत्व अविज्ञागी पुद्गल, क्षेत्र स्वभाव जे व्यापियोजी । चेतनता अनुभूति अचेतन, भाव अननुभव व्यापियोजी ॥ मूर्तता रूपादिक सग ति, अमूर्तता तदभावोजी । ए दस सामान्य गुण प्रत्येके आठ आठ ए भागोजी ॥

अर्थ—हेवे प्रदेशत्व कहेतां अविज्ञागी पुद्गल एखे एक परमाणु जेना वे भाग न थाय तेने परमाणु पुद्गल कहीये ते एक क्षेत्र अवगा ही कहेता, एक आकाशप्रदेशेज अवगाहीने

रहे; तेने एकप्रदेशत्वं कह्ये ३ हवे चैतन्यत्वं
 कहेता जीवात्मानो अनुभवरूप गुण कह्ये, ते
 सुख अथवा दुःख चेतें ठे (जाणे) ठे अथवा
 तेथकी जाति, कुल, वृद्धि, हानि इत्यादिक स्वरू-
 पने जे जाणे ठे ते धर्म चैतन्यपणानो ठे ७.
 अचैतन्य कहेतां चेतनापणारहित एटले चेतन-
 पणाना गुणथकी रहित एटले तेथकी उपरांतो
 मुक्ति संसार सुख दुःख न जाणे तेन अजीव
 कह्ये एटले अचैतन्यत्वं ८. मूर्त्तित्वं कहेतां जे
 मूर्त्तिगुण ते रूपादि समावेश कहेतां जे वर्ण गं-
 ध रस स्पर्शादि ए पुद्गलद्रव्यमां छे ९ अमूर्त्ति-
 त्वं कहेतां जे अमूर्त्तिगुण ते वर्णादिकरहित ए
 स्वभाव ठे, तेने अमूर्त्तित्वं कह्ये १० हवे अ-
 चेतनत्वं अने मूर्त्तित्वं अने सचेतनत्वं अने अ-
 मूर्त्तित्वं जावरूपत्वान गुणत्वं मीतिनासकं नीहं
 एटले अचेतनपणं अने अमूर्त्तिपणं अने सचेत-
 नपणं अने अमूर्त्तिपणं ए गुण चेतनने विषे न-
 हि लाधे अने अचेतनपणं अने मूर्त्तिपणं ए जे
 वे गुण ठे, ते कार्य कारणने विषे हेतु ठे ए
 व्यवहार विशेषने माने ठे ए प्रथकत्वगुणत्वात्

एटले ए नौखानौखा गुणनु देखामवुं नौखानौ
खा अर्थनु साधवु, अथवा गर्जपदवाचक जोतां
शीत लक्षण इत्यादिक जावनु जे विचारपणे जे
परीक्षानु आपवु, ए सर्व व्यवहारनु जोरवु ए
सर्व कार्य कारणपणे खपनु ठे ए दश सामान्य
गुण जे ठे ते मध्ये चेतन अचेतना मूर्ति अमृ
र्ति ए चार लक्षण परस्पर विरोधी ठे, ते माटे
प्रत्येके एक अव्यने विशेषे आठ आठ गुण पा
मिये शामाटे ? ज्या चेतनपणु ठे त्या अचेतन
पणु नथी, अने ज्या अचेतनपणु ठे त्या सचेत-
नपणु नथी मूर्तिपणु ठे त्यां अमूर्तिपणु नथी,
अने अमूर्तिपणु ठे त्यां मूर्तिपणु नथी एटले चे-
तनने विषे मूर्तिपणु अने अचेतनपणु ए बे गुण
नथी, बाकीना आठ गुण ठे तथा धर्मास्तिका-
य, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने का
ल ए चार अव्यने विषे चेतनपणु तथा मूर्तिप-
णु ए गुण नथी बाकीना आठ गुण ठे पुद्गल
अव्यने विषे अमूर्तिपणु तथा चेतनपणु ए बे
गुण नथी बाकीना आठ गुण ठे एटले ए पट
अव्यने विषे सामान्य लक्षण सक्षेपथी कल्या

हवे विशेष लक्षण कहे ठे

ज्ञान डष्टि सुख वीर्य स्पर्श रस, गंध वर्ण
ए जाणोजी । गति स्थिति श्रवणाहना वर्तन,
हेतु ज्ञाव मन आणोजी ॥ चेतनादि चारे ज्ञे-
ला, विशेष गुण ए सोखेजी । पट पुद्गल आत-
मने तिनह, अन्य अव्यने टोखेजी ॥ ३ ॥

अर्थ-आत्मानां ठ लक्षण विशेषठे ज्ञा-
न, दर्शन, चारित्र, वीर्य, चेतनत्वं, श्रमूर्त्तित्वं ए
ठ गुण आत्माने विषे ठे वर्ण, गंध, रस, स्पर्श
मूर्त्तित्वं, अचेतनत्वं ए ठ गुण पुद्गलअव्यने वि-
षे ठे. श्रमूर्त्तिपाणुं अने अचेतनपाणुं ए चार अ-
व्यने विषे ठे अने अकेको गुण जुदो ठे, ते कहे
ठे. गतिहेतुत्वं, स्थितिहेतुत्व, श्रवणाहनाहेतुत्वं
अने वर्तनाहेतुत्वं ए गुण अकेक तथा प्रथमना
ववे गुण लक्ष्णे जोम्वा, एटले त्रण त्रण गुण
थाय ए प्रमाणे विशेष गुणने समजवा अहि-
यां कोशना मनने शंका पमशे जे, चेतन, अचे-
तन, मूर्त्ति, श्रमूर्त्ति ए चार गुण सामान्य स्व-
ज्ञावमा कख्या ठे अने विशेष स्वज्ञावमां पण क-

ह्या ठे तेनु शु कारण ठे ? तेनो उत्तर-के स्व
 अपेक्षाए सामान्य ठे अने ते परअपेक्षाए वि
 शेष ठे, एखे स्वअपेक्षा कहेता स्वजाति एखे
 पोतानी जाति आश्रीने सामान्य ठे अने परअ
 पेक्षा कहेता विजाति एखे परजाति आश्रीने
 विशेष ठे एखे ज्ञान, दर्शन, चरित्र अने वी
 ए आत्मइव्यने विषे ठे, बीजा इव्यने विषे
 थी पुद्गलइव्यमा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श ए
 शेष गुण ठे ए कह्युं ते स्थूल व्यवहार
 जाणवो, शामाटे जे सिधना आठ गुण
 ठे अथवा एकत्रीस पण कहा ठे अने
 तो चार गुणज लीवा ठे अथवा जीवनां
 द्वाण कहा ठे ज्ञान, दर्शन, चरित्र, वीर्य,
 अने उपयोग ए ठ लक्षण पण सिधान्तमां
 ह्या ठे अने अहिया तो चार लक्षण लीवां
 माटे स्थूल व्यवहार ठे एम विशेष गुण गणीए
 तो अनता ठे, ते उद्वस्थथी शी रीते गणाय,
 अथवा पुद्गलना पण एक गुणो कालादिक अ-
 नता चेद ठे, ते रुद्र गणाइ
 दि सामान्य विशेष लक्षण

अहियां तो संक्षेपथी कह्युं ठे, एटले ए गुण ल
 दाण अनुवार्ति, व्यावृत्ति संबंधे धर्म मात्रिनी
 विविदा करीने पोताना स्वज्ञाव गुणथी तो ए
 वेगळोज ठे, पण पोतपोताना रूपनी मुख्यता
 लइने अनुवार्ति संबंध मात्र अनुसरिने स्वज्ञाव
 ठे ते माटे गुण विजाग कहीए ठीए, हवे स्व-
 ज्ञाव विजाग कहीने देखामे ठे. त्यां सामान्य
 स्वज्ञाव प्रथम अगीयार ठे, ते मधे प्रथम जेद
 अस्तित्व स्वज्ञाव ठे ते कहे ठे, हवे आप आ-
 पणेरुपे प्रत्येके प्रत्येक अव्यने विपे अस्तिस्वज्ञा-
 व स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वज्ञावरुपे
 अस्तिपाणुं ठे जेम स्वस्वज्ञावे अस्तिपाणुं अने प-
 रज्ञावे नास्तिपाणुं एम अनुभव थाय ठे, एटले
 स्वज्ञावेज अस्तिपाणुं ठे कदापि अस्ति स्वज्ञाव
 न मानीए तेवारे परज्ञावनी अपेक्षाए नास्तिता
 पाणुं ठे तेमज स्वज्ञावनी अपेक्षाए अस्तितापाणुं
 थाय तेवारे सर्व शून्यता थई जाय, नास्तिकनो
 मत आवे माटे स्वद्रव्यनी अपेक्षाए अस्ति स्व-
 ज्ञाव मानवो, हवे परज्ञाव परद्रव्य अपेक्षाए ना-
 स्तिस्वज्ञाव कहीए, जोइ कदेशे के,

रजावपणे सत् अस्त कहेतां सर्वे स्वरूप अस्ति
 थयु, तेने कहीए के एम न थाय, परजाव ठे ते
 स्वजावनी अपेक्षाए असत्यज ठे, माटे नास्ति-
 पाणुंज ठे ने एम नहि माने तेवारे स्वपरनु जि
 नपणु नहि रहे, तेवारे जगत्रये वधे एकरूपे थइ
 जशे ते तो सकल शास्त्रथकी विरुद्ध थाय ते-
 वारे द्रव्याद्रव्यनी उल्लखाण रहे नहि, तेवारे प-
 रमजावनी अपेक्षाए नास्तिस्वजाव मानवो ते
 मत्य ठे, ए बीजो जेद हवे त्रीजो नित्यस्वजाव
 कहेता, सत्ताने विषे जे स्वाभाविक वस्तु ठे तेने
 उल्लखावे ठे, ते माटे ए सत्य ठे, तथा असत्य-
 ने स्वज्ञान प्रमुखनुं रक्षण करे ठे ते माटे एने
 कल्पना ज्ञान कहीए, ए ज्ञानना विषयने अस-
 त्य माने ठे एवो बौद्धनो मत ठे ते मतने खमन
 करवा वास्ते हवे कहे ठे के ते जे सत्तानी पेरे
 असत्ता मानी तेम नथी हवे स्फूर्ति कहेता ते
 व्यजक अणमलवाना वशथी पण शून्यपणाथी
 नहि तेम तुपणाथी पण नहि जेम ठतो ए स-
 र्वनो गंध, रस, स्पर्श विना जणाय नहि, एता
 असत्य नथी, केटलीएक वस्तुना गुण स्व

जावे जणाय ठे, केटलीएक वस्तु आश्रीने ज-
णाय ठे एम विचित्र प्रकारनी ठे, पण कोशनी
तुहता कहीए तो व्यवहारनो लोप थाय

उक्तं च—

समालिर्लोपा रहस्य प्रकरणे ॥ ते हुंति
परावेर कालंज मुह दांसिणो तिणाय उग ॥
दिठमिणं वेचीत्तं सराया कप्युर गंधाणंति ॥१॥

हवे तेज कहीए ठीए, आपणा जे कर्म-
जावि पर्याय नाना प्रकारना ठे श्याम, रक्त, इ-
त्यादिक जेदक ठे एटले जुदा देखामे ठे, पण
ए डव्य तेहिज जे पूर्वे अनुभव्यां हतां ते ज्ञा-
न तेथीज थाय ठे, ते माटे तेने नित्य स्वजाव
ज कहीए, तद्भावाज्ययं नित्यं पर्यायनी परिणति-
ने विषे अनित्य स्वजाव लहीए एटले ए रूपे
उत्पाद, व्यय ग्रहण थाय ठे, तेणे रूपे अनित्य
स्वजाव ठे, ठती वस्तुने रूपांतरथकी पर्याय वि-
शेषथी नाग थाय ठे तेणे करी ए द्विविध ठे,
आ रूपे नित्य ठे, आ रूपे अनित्य ठे एटले
ज्यथकी नित्य ठे, पर्यायथकी अनित्य ठे,

अथवा विशेषण सामान्य रूपथी अनित्य त्या
जेम घट अव्यनो नाश थये थके पण मृत्तिका
अव्यनो नाश नथी, तथा सामान्यनये मृत्ति-
कादि पण स्थूलादिके घटादिनो नाश ए अनि-
त्यता घट रूपे एम प्रतित थाय ठे, अथवा
सामान्य रूपे मृत्तिकाने विषे स्वस्वरूपे घट एम
युक्त तो ठे अने नयपक्षे अनेक रीतना जेद
थाय, पण कुनय टाळीने जेद करजो अने जो
नित्यपणु नहिज मानो तो अनित्यपणु मानतां
एकांत द्वाणिकवादिनो मत थावे ठे ते कहे ठे,
के एकांत द्वाणिकज स्वस्व लक्षण ठे, तेवारे स-
मये समये पर्यायनु पलटवुं ते अनित्यपणुं थयु
तेवारे नित्य स्वरूप न रहु, अनित्यपणाथकी
कारणनो अनुवर्तन थाय अने अनुवर्तन विना
कार्य निपजे नहि, शामाटे के कारण द्वाण रहु
तो कार्य पण द्वाण थाय त्वारे उत्पत्तिकाळे ना
श थयो एवो अनुभव ए अस्तानो थयो, तेवारे
कार्यने द्वाणप्रणती केम करीए, एतो अस्तु का
रण द्वाण कार्य द्वाण करे तो विनीष्ट कारणथी
कार्य निपजवु जोडए, अथवा अणुत्पन्न कार्य

नीपनुं जोइए एम तो कोइ काले वनेज नहि,
 एतो कार्य कारण जावनी विटंबना थाय ठे, अ-
 वविहित जे कारण दण ते कार्य दण करे एम
 कहीए तो ए रूपतो लोकमांहीतिरस्काररूप था
 य, शामाटे के दण रूपादिकने विपे तो उपा-
 दान मानीए अने आलोकादिकने विपे निश्चि-
 त मानीए तो ए विविदा केम घटे? जे माटे अ-
 नुव्यय विना शक्ति मात्रे पण उपादानमां नि-
 मित्त नहि पण कही न शकीए ते माटे उपा-
 दान ठे तेहीज अनुव्यय जाणवो अने अनुव्य-
 पण तेहीज नित्यस्वभाव ठे, हवे जो सर्वथा
 नित्य स्वभावज मानीए अने अनित्य स्वभाव
 सर्वथा न मानीए तो अर्थ क्रियारूप न घटे,
 शामाटे जे दलने कारण नय कारणरूपता परि-
 णति कथंचित् ए उत्पन्नपाणुंज आव्युं सर्वथा अ-
 नउत्पन्नपाणुं विघटे ठे, अने जो एम कहीए के
 तेहीज नित्य तद्वर्तिकार्य ते अवर्ज तो कार्य का
 रणने अज्ञेद संबध ते केम घटे? अने जेद संबध
 माने तो ते संबधने जुदीजुदी गवेपणा थाय, ते
 वारे समय फेरे अवस्था थाय त्यारे अनवस्था

तन धर्म ठे, माटे पर्यायना जेद नोंखा करवा
 पने अने जो जेद स्वप्नाव नहि मानो तो पर्या
 यने नाशे द्रव्यनो नाश थशे तो अजेद पण
 केने मानशो ? माटे जेद स्वप्नाव ठे ते सत्य छे
 अने जो अजेद स्वप्नाव नहि कहीए तो गुण
 पर्याय शा आधारे रहेशे तेवारे निराधार पद थ
 शे तेवारे शशशृङ्गवत् थयु एटले रक्तादि पर्या
 य आधारा आधेयादिक गुण ते घटद्रव्यने अ
 जेद संबंध नहि मानीए तो ए शा आधारे रह्या
 माटे अजेद स्वप्नाव पण मानवो जोइए ते उ
 परीए प्रवचनसारोहारनी गाथा कहे ठे.

॥ उक्तं च ॥

पविक्त देशत्ता पुवत्तमिति सासणं हि
 वीस्स ॥ अणत्त मत्तना वोणत्तपत्त वशवविक
 समगेति ॥ १ ॥

एटले जेदस्वप्नाव तथा अजेद स्वप्नाव ए
 वधे मानवा ए आठमो जेद थयो ऽ हवे जव्य
 स्वप्नाव कहे छे अनेक कार्य शक्तिए
 करीने द्रव्यनो जे ते

अतिक्रमीने अन्य स्वप्नाव परिणामे, तेने पलटन स्वप्नाव कहीए तेनुं नाम ज्ञव्य स्वप्नाव छे ए नवमो जेद कह्यो ए. हवे अज्ञव्यस्वप्नाव एटले त्रणे काल परद्रव्यमांहि रहेतां थकां पण पर-स्वप्नावमां न प्रणामे, तेने अज्ञव्यस्वप्नाव कहीए

॥ उक्तं च ॥

अनोन्नं पविसत्तादिना ॥ जगासमं एस्स-
मे लतावियण्णिच्चं ॥ सगसगजावं एविजहंति ॥१

तो ज्ञव्यस्वप्नाव विना शुजाशुज कार्यने विषे शून्यपाणुं थाय तो प्रज्ञावमां प्रवेश न होय अने स्वप्नावेज रहे, अथवा ज्ञव्यस्वप्नाव मानीए अज्ञव्य स्वप्नाव नहि मानीए तो द्रव्यने संयोगे द्रव्यंतरपाणुं थवुं जोशए, शामाटे जे धर्माधर्मादिकने अने जीव पुद्गलादिकने एक अवगाहना त्याग कारणे कार्य संक्र स्वप्नाव अज्ञव्य न थाय, एतो द्रव्यने तत्त्व कार्यहेतु त्यां कल्पना पण अज्ञव्य अज्ञावगर्जित छे आत्मा देश विरति अनतकार्ये जननी शक्ति ए ज्ञव्यत्व स्वप्नावने सहकारी संबंध छे शामाटे के ज्ञव्यस्वप्नाव

तथा अज्ञव्यस्वजाव सर्वे द्रव्यमां छे एटले सर्वे द्रव्य पोताना मूल धर्म वस्तुता जोतां अज्ञव्य स्वजाव छे अने परसंगते मळना ज्ञव्यस्वजाव छे जेम चेतन स्वरूपनो मूळ स्वजाव वस्तुताए निर्मल, निरावण, निष्कलक, अदाय, अमूर्ति स्वजाव छे, ते अज्ञव्य स्वजाव छे अने कर्मादिसयोगे पर्यायनु पलटवु ते ज्ञव्य स्वजाव छे, अथवा ज्ञाननुं जाणवापणु ए अज्ञव्य स्वजाव छे परज्ञेयनी सगाते उपजवु, वीणसवुं, हानि वृद्धिनुं थवु ते सर्वे ज्ञव्यस्वजाव छे पर्याय कहेतां जेम घट जळधारणादि करवु ते अज्ञव्य स्वजाव छे अने श्याम रक्त नवादिनु पलटवु ते ज्ञव्य स्वजाव छे एम सर्वे ज्ञव्यने विषे ज्ञव्य तथा अज्ञव्य स्वजाव जाणवो ए दसमो जेद थयो १० हवे अगीयारमो प्रमेयत्व स्वजाव कहीए छीए स्वलक्ष्णत परिणामिकजाव ते प्रधानताए परमजाव कहिये जेम ज्ञानस्वरूपी आत्मा परमजाव स्वजाव न कहिये तो ज्ञव्यने विषे प्रसिद्ध रूप केम कहेवाय ? अतत धर्मात्मिक वस्तु छे एक धर्म पुरुषाकारे बोलावीये तेने परमजाव कहिये.

ए अग्नीयारमो स्वप्नाप जाणवो ए अग्नीयारे सामान्य स्वप्नाव कथा. हवे दस विशेष स्वप्नाव कहे छे विशेष कहेतां ते कोष्मां लाधे अने कोष्मां न लाधे, तेन विशेष स्वप्नाव कहिये हवे प्रथम चेतन स्वप्नाव कहिये जे चेतनापणानो व्यवहार थाय छे तेने चेतनस्वप्नाव कहिये. तेथी जलदो ते अचेतन स्वप्नाव जो जीवने चेतन स्वप्नाव न कहिये तो राग द्वेष न ठरे, तेवारे ज्ञानावरणादिकर्मनो अज्ञाव थाय.

उक्तं च

स्नेहास्यत्कशरीरस्य, रोणुनाश्लिष्यते यदा ।

गात्रं रागद्वेषाद्विक्रमस्य, कर्मबंधोन्नवत्येवमिति ॥१॥

जो जीवने सर्वथा चेतन स्वप्नाव कहिये अने अचेतन स्वप्नाव न कहिये, तो अचेतन कर्म अने नोकर्म तो ए डव्य जपलदितजनित विकार बिना थाय, तेवारे शुद्ध सिद्धिपणुं ता दृश्यपणे थाय तेवारे ध्याता ध्येयपणुं न रहे, गुरु शिष्यनी परवा न रहे. सिद्ध संसारीपणुं कहेबुं न रहे, तेवारे सर्व शास्त्र व्यवहार ते फोक थइ

जाय तेवारे शुद्ध नये जे अविद्या ठे तेनी निवृत्ति करवी तेनो शो उपकार थाय तेमाटे अचेतन आत्मा एम पण कथचित् कहिये ए वातमा काइ दूपण नथी स्याद्वाद मतनुं लक्षण एज छे हवे त्रीजो मूर्ति स्वप्नाव कहिये ठीए मूर्ति कहेतां जे वर्ण, गंध, रस स्पर्शादि सनिवेष ते जेथी धारिये, तेने मूर्ति स्वप्नाव कहिये तेथकी विपरीत ते अमूर्ति स्वप्नाव जो जीवने कथचित् मूर्तिज्ञाव न मानीये तो शरीरादिक संबध जीवने सजवे नहि अने शरीरादि संबध विना गता गति केम थामे ? अने गतागति नहि थाय त्यारे ससारनो अज्ञाव थामे अने जे लोक व्यवहार छे ते पण सर्वे दृष्टिमान् ठे अने दृष्टिमान्ने तो मूर्तिस्वप्नावज आत्मा मनाय छे ते मूर्तिस्वप्नावना हेतु शास्त्रगम्य छे पण अमूर्तिनो हेतु नथी, एम ज्यारे अमूर्तिपणु पण न मानीये तेवारे मुक्ति न घटे अने मुक्ति न घटे त्यारे धर्मादिक कारणनो नाश न थाय तेवारे शून्यवादि मत साचो ठरे तो ए वात खोटी, माटे अमूर्तिस्वप्नाव मानवो जोइए, केवी रीते मानवो के, संसारीजीव

कर्मना जोगथकी आज मूर्तिपणुं पाम्या छे ए
 पण अंतरथकी चेतनस्वभाव वस्तुने जोतां तो
 अमूर्ति स्वभावज ठे, एम समुं समजवुं अथवा
 ए चर्चा पूर्वे पण केटलीक आवी गइ छे एटले
 मूर्ति ने अमूर्ति स्वभाव कह्योज हवे एक प्रदेश
 स्वभाव कहे ठे. एक प्रदेश कहेतां एकत्वपरिण-
 ती अखंन आकारबंध कहेता सन्निवेश तेनो नि
 वास कहेतां प्राजनपणुं छे, अनेक प्रदेश स्वभाव
 कहेतां जिन प्रदेश संयोगे तथा जिन प्रदेश क-
 टपनाए थाय, अनेक प्रदेश व्यवहार कारणयो-
 गणुं ठे, जो एक प्रदेश स्वभाव न होय तो
 असंख्यात प्रदेशादि योगे बहुवचन प्रवृत्ति थाय
 तेवारे एक अव्य धर्मास्तिकाय कहिये ठीए, ते
 व्यवहार न रहे, तेवारे घणा धर्मास्तिकाय थया
 जोइए एम सर्वे अव्यमां आरु आवे ठे, तथा
 अनेक प्रदेश स्वभाव अव्यमानकहीए तो घटा-
 दिक अवीअवी (अवयवी) देशथी सकमं अथवा
 निसकम देखीए ठीए ते केम मलशे एवी एव कं-
 पेण अवी हवी न कंपे एम जो कहीए तो चली-
 त एम प्रयोग केम थाय एटले देशविरति कंप-

ज्ञानावर्णीयादि अने नोकर्म जे मन, वचन अने
 कायादि तेने चेतन कहीए. ते चेतन कृन सयो-
 ग माटे तेहीज मारु शरीर, हु अ्याम करुं इत्या-
 दि परमज्ञाव ग्राहक नये ते अचेतन स्वज्ञाव.
 शामाटे जे कर्म अने नोकर्म सों अचेतन ठे,
 असद्भूत व्यवहारनयथी जीवने अचेतन स्व-
 ज्ञाव कहीए, शामाटे ए जन् हुं चेतन इत्यादि
 व्यवहार ठे ते अनुमान जाणीने प्रतीत विलक्ष-
 एटले ज्ञानशुद्धि वेदांतने मने सद्भूत व्यवहार
 जाणगे, परम ज्ञाव ग्राहकनये कर्म अने नोक-
 र्म ए मूर्ति स्वज्ञाव एटले असद्भूत व्यवहारन-
 यथी जीवने मूर्तिस्वज्ञाव पण कहीए एटले एम
 आत्मा हुं देखु. तु जाणुं तुं ए व्यवहार ठे, परम
 ज्ञाव ग्राहक नय पुद्गल अव्य विना बीजा सर्व
 द्रव्यने अमूर्ति स्वज्ञाव कहीए जेम चेतनने सं-
 योगे दयादिकने विषे जेम चेतनत्व लपचारे ठे
 तेम अमूर्ति लपचारता नथी तेमाटे असद्भूत
 व्यवहारथी पण पुद्गलने अमूर्ति स्वज्ञाव न क-
 हीए, त्या केम न लपचार कहीए के जो, एक
 सपधने देखी जे ज्ञाव ते व्यवहार ठे, ते

पण सर्व धर्मनो उपचार न होय ए ज्ञाव सम्म-
ति ग्रंथमांही कह्यो ठे एटले अनुगत संबंध अ-
त्यंत एटले सर्व अर्थ क्षीर नीरनी पेरे गण्युं,
विशेषे करीने शुद्ध पुद्गल जीवलक्षण तथा औ-
दारिकादिक वर्गणा निष्पन्न ठे अने ज्ञान ध्यान
आत्माने असंख्यात प्रदेशी जिन ठे.

॥ अत्र गाथा-उक्तं च ॥

अणुनागयाणं इम वंतवन्त विज्ञयणमजुक्तं ॥

जह दुद्धपाणियाण जावंत विशेषपज्जाया ॥१॥

तेथी उपचारे पण अमूर्ति स्वज्ञाव पुद्गल
ने न होय एम कहेतां तो एकवीसमो स्वज्ञाव
लोपाइ जाय तेवारे एकवीसन्ती ज्ञावासु जीव
पुद्गलीज मानो ए वचन अन्यथा थइ जाय, ते
वचनने राखवाने वास्ते असद्भूतव्यवहारनय क-
रीने परोक्ष जे पुद्गल परमाणु ठे तेने अमूर्ति
कहीए, श्यामाटे के व्यवहारथकी कंइ दृष्टिगो-
चर आवतो नथी, अने मूर्ति होय तो दृष्टिगो-
आववुं जोइए, अने व्यवहार ठे ते प्रत्यक्षने ग्र-
हणकर्ता ठे, हवे काल तथा पुद्गल परमाणुने
ए वनेनो परमज्ञाव ग्राहकनय एकप्रदेश स्वज्ञाव

ठे ए वे द्रव्यने टाली वीजा द्रव्यने विपे जेद क-
 ल्पनारहित शुद्ध द्रव्यार्थिकनये एकप्रदेश स्वभाव
 कहीए, अने जेद कल्पनासहित शुद्ध द्रव्या-
 र्थिकनयनुं कहेतां प्रमाण विना सर्वे द्रव्यने अ-
 नेकप्रदेश स्वभाव थवानी योग्यता ठे, ते माटे
 उपचारे करीने अनेकप्रदेश स्वभाव कहीए शा-
 माटे जे द्विप्रदेशथी मांतीने अनंतप्रदेशी सुधी
 खध थाय ठे ते सर्व उपचरित ठे, तथा काल-
 मांही तो उपचारे पण थवानी शक्ति नथी. एक
 सामान्ये वीजो समय चलतो नथी शामाटे जे
 प्रथम समयनो नाश थाय अने नवा समयनी
 उत्पत्ति थाय, तेमाटे तेने विपे सर्वथा उपचार
 स्वभाव लागु थाय नहि तथा शुद्धाशुद्ध अ-
 व्यार्थिकनये समुगधी अग तेने विज्ञाव स्वज्ञाव
 कहीए एटले वे मलीने विज्ञाव स्वज्ञाव थाय ठे
 एटले चेतन ते शुद्ध अने राग द्वेष ते अशुद्ध
 ए वे मलीने विज्ञाव थयो, अथवा पुद्गलने विपे
 रक्त तथा श्याम मलीने जांबु जेवो रग थाय ठे
 ते विज्ञाव ठे. तेम वे अव्यना मलवाथकी अथ
 थवा परिणतिना मलवाथकी विज्ञाव स्वज्ञाव

थाय ठे ते जाणवो. शुद्ध अव्यार्थिकनय शुद्ध स्वभाव एटले शुद्ध स्वभावे ज्ञान, दर्शन, चारित्रनो पुंज जेद कटपनासहित एकत्य भावे शुद्ध वस्तु तेने सुद्ध स्वभाव कहीए ते सुद्ध अव्यार्थिके सुद्ध ग्रहण थाय, तथा अशुद्ध अव्यार्थिकनये अशुद्ध ग्रहण थाय, जेम रागद्वेषनी परिणति तथा विषय कषाय सर्वे अशुद्ध चेतन ठे तथा ज्ञानआत्मा दर्शनात्माए कहेवुं ते सर्वे अशुद्ध चेतन ठे, ज्यां परपरिणतिनुं मलवुं अथवा एक वस्तुना जेद करवा ए सर्वे अशुद्ध स्वभाव ठे, असद्भूत व्यवहारनयथी उपचरित स्वभाव ठे एटले चेतनने मूर्तिपणुं अचेतनपणु कहेवुं ते सर्वे उपचरित स्वभाव ठे. ए एकवीसे स्वभाव जेदज्ञाननी अपेक्षाए करीने देखाब्या ठे, अने ए एकवीस स्वभाव जाणवामां घणो सार ठे. ए स्वभाव उल्लखवायकी जीव अजीवादि पद्दव्यनी उल्लखाण थाय अने जीवनी परिणतिना स्थानकने पण उल्लखवामां थावे. तथा सत्य स्वरूप सर्वे अव्यनुं उल्लखवामां थावे संसारीनुं तथा सिद्धनुं स्वरूप स-

मजवामा आवे माटे ए लक्षण गुण स्वभाव जे जाणे तेने कोइक दिन सिद्धि वरवानी वखत पण आपे, पण ते विना जे कांइ कार व्यवहारदिकथकी सिद्धि वरवानी आशा राखे ठे ते आकाश कुसुमवत् जाणवुं शिष्यवाक्यं-तमोए कह्यं जै ए जाणवाथकी सिद्धि केम थाय ? कखा विना सिद्धि थशे ? अन्वी पण जाणे ठे तो तेनी सिद्धि थवी जोइए तेनो उत्तर-जे ते कह्यं जे जाणवाथकी सिद्धि थाय, कर्या विना ते जाणवाथकी सिद्धि ठे शामाटे जे यथार्थ वस्तु जे जंलखवामां आवी तेवारे सद्वस्तु होय ते ग्रहण थाय अने असत्य वस्तु होय ते पनी रहे तेने कोइ ग्रहण करे नहि जेम वा व्यापस्थाने विषे, धूललीलाने विषे अनेक क्लेश करे ठे तेज युवावयथकी ते धूलनी लीलाना घर केम करतो नथी तेणे जाण्यु जे ए घर कइ रहेवा खप लागे नहि माटे असत्य हतु ते बुटी गयु ने सत्य हतु ते अंगीकार कर्यु एम सत्य धर्म पोताना चिदानन्द प्रगवाने जाण्यु ते वारे शुद्ध धर्म अंगीकार कर्यो, परधर्म हतो ते

पर जाण्युं ते वृष्टी गयुं एतले ए चेतननुं क-
 व्याण थइ गयुं हवे तें कहुं के कर्या विना न-
 हि थाय ते केने कराय ठे जे सुद्ध चैतन्य ठे
 तेमां तो करवानी शक्ति नथी अने जे करवानी
 शक्ति तो विज्ञावमां रही ठे अने विज्ञाव तो अ-
 नादि कालनो चेतनने वळगेलोज ठे ते विज्ञाव
 ज्यारे वृष्टशे अने स्वज्ञाव आदरशे त्यारेज चेत-
 ननी मुक्ति ठे पण करवामां मुक्ति ठे नहि क-
 र्वाथकी तो चार गति संसारज ठे. शिष्यवाक्य-
 जे अनादि विज्ञावनुं वृष्टवुं अने स्वज्ञावनुं आ-
 दरवुं ते कर्या विना शी रीते वृष्टशे ? तेनो उत्तर
 जे विज्ञावनुं वृष्टवुं अने स्वज्ञावनुं आदरवुं ते
 कंइ वे काम नथी, एकज काम ठे. जेम सूर्यनुं
 जगवुं, अने अंधारानुं नासवुं ए वने एकज ठे,
 तेम अहियां स्वज्ञावनुं उत्पन्न थवुं एतले विज्ञा-
 वनो नाश ठेज हवे तें कहुं के, कर्या विना के-
 म थाय ? तेनो उत्तर-के अहियां कृत्य वे प्रका-
 र्नां ठे एक परानुयायी, बीजो स्वानुयायी ते-
 नां करावनारा आचार्य वे ठे एक शुजाशुज
 आचार्य, शुजाशुज आचार्य, बीजो शुद्ध आ

चार्य जे कर्माशुभ आचार्य ठे तेनो उपदेश
 अने तेना उपदेशने विषे परानुयायी कृत्य ठे,
 एटले परानुयायी कहेतां; प्रजाव, व्रत, नियम,
 तप, जप, तीर्थयात्रा, क्रिया, आचार तेने विषे
 ते मुक्ति माने ठे पण ए कारण शुभाशुभ ठे
 तेने विषे पुण्यवध थाय, तो एतो चार गति सं-
 सारमां रखवानुं ठे, एमां कइ मुक्ति ठे नहि
 अकृत्यने धर्म माने ठे ए मोटुं अज्ञानपणुं ठे,
 अने एथकी पुण्यवध थाय. कदापी सुख मले
 तेपण कइ सुखमां गएयुं नथी एतो एक औप
 चारिक सुख ठे एवुं विशेषावश्यकग्रथे पण कह्युं ठे
 उक्तं च-

जतोच्चीय पञ्चकं, सोम सुह नहि उ खमेवेदं ।
 न पन्थियारविजतं, तो पुत्र फलंति उक्तति ॥१॥

अर्थ-ते सुख जे ठे ते पौद्गलिक ठे. ए
 कइ आत्मानुं सुख नथी, अने पौद्गलिक सुख ठे
 ते पण उ खरूपज ठे, जे तत्त्वज्ञानना अजाण
 ठे ते पोताना अज्ञानना लीवाथका पुण्यने सारु
 कहे ठे पापने नबहु कहे ठे. सुखउ ख पौद्गलि-
 क अनुभवे ठे पण एम नथी समजता के, पूर्व

कृत्य जे कर्म ते पोताने जोगववुं तेमा आत्माने
शुं फायदो थयो. एतो जलदा आत्माने हानि
करता एक विषयसुखनी इज्ञाना ज्यथा थका त-
त्त्वस्वरूप आत्मधर्म, पामता नथी थने एक पुण्य
पाप पोकारता फरे ठे पण ए वने छ. स्वरूप ठे

उक्तं च-

असुखमात्रमवसाध्यति प्रतिष्ठ ॥ कृत्वाति ल-
ब्ध परिपालन वृत्तिरेव ॥ नतिश्रमापगमनाय य-
था श्रमाय ॥ राज्यं स्वहस्तधृत दंममिवातपत्रं
॥ १ ॥ विसयसुहं छ. खंमिय छ खपन्निश्चार ज-
त्तिग ठव ॥ तं सुहमुवयाराज न जयारो विणा
तचं ॥ १ ॥ सायासायं छःखं, सविरहंमि य सुहं
जज तेणं ॥ देहं दियसु छःखं, देहं दीयाजावो ॥

अर्थ-जे पुण्य फल ठे ते तत्त्वथी एनुं स्व-
रूप विचारीने जोइए तो छ स्वरूप ठे थने वि-
षयसुख ठे ते पण तत्त्वथी विचारीने जोइए तो
तदन छ स्वरूपज छे जेम रोगी ठे, एक काथनुं
पीवुं अथवा शस्त्रप्रमुखे छेदवुं अथवा अग्निप्रमु-
खे इत्यादिके चिकित्सानुं करवुं जेम हि

तज्ञापण थाय ठे तेमज ए पुण्यहित ज्ञापणथा
य पण परिणामे जोता तो दुःखरूपज ठतु ठे
एमा कइ शका करवी नहि ए सुखतो एक उ-
पचारमात्र ज्ञासे छे, एने उपचार ठे ते तो पर-
मार्थे जोतां सुख नथी सुखतो एक उपचार-
हित आत्माने मुक्तिरूप स्वज्ञाविक ए प्रतिकार
रूप आत्मिक ध्यानदज छे, तेज सुख सत्यरूप
छे, तथा जे सत्ताने उदये पण दुःख ठे, तेनु
कारण कहु ते सांजये जे शाता ठे ते पण क-
र्म छे, अने ते कर्मनो विपाक ते गुणरोधक ठे,
अने स्वगुणनो ज्यां रोत्र ठे, तेने सुख कोण क
हे ठे तेतो अज्ञान होय ते सुख माने छे, ते
माटे ससार सर्वे दुःखरूप ठे, एटले शुजाशुज स-
र्वे दुःखज ठे, सर्व प्रज्ञावथकीरहित तेज सुख
स्वज्ञाविक ध्यानद ठे, तेने परमानंद कहीए,
एम समजीने जे करवु, कराववु, ते सर्वे परानु
यायी ठे, तेना उपदेश करनारा जे आचार्य ते
शुद्ध स्वरूप पाम्या नथी हवे जे शुद्ध आचार्य
छे ते तो स्वअनुयायीवृत्तिवाळा ठे, ते प्रज्ञावनी
पोषणता करता नथी, एक स्वज्ञावनो उपदेश

करे ठे के जेथी संसारमां रख्मवुं न पने, अने
 प्रजाव ठे, एतो संसारमां जन्म मरण करवानुं
 कारण ठे, माटे करवु कराववुं एतो मोटुं अज्ञा-
 ठे, ते पूर्वे सम्मतिनीगाथा सादी मोटे लखी ठे
 तेमां पण चरणसित्तरी अने करणसित्तरीनुं फळ
 चार गति संसारमां रख्मवानुं बतावेवुं ठे, माटे
 शुद्धस्वरूप निरावरणता तेज मुक्तिनो हेतु ठे, ते
 ज कव्याणकारी ठे, तथा पूर्वे तें जे कह्युं हतुं
 के, अन्नवी पण जाणे ठे तो तेनी पण मुक्ति
 थवी जोइए ? तेनो उत्तर-जे अन्नवी ठे ते कंइ
 जाणतो नथी, अहीयां कोइने शंका पने के अ
 न्नवी नव पूर्वे सुधी जाणे ते बेम नथी जाणतो
 तेनो उत्तर-ए अधिकार कंइ सिद्धांतमां ठे न
 हि, एक प्रकरणथकी लइ चागवुं उष्टांत ठे,
 तथा जे जाणवापणुं ठे तेना पण बे प्रकार ठे
 एक तो पोताना द्वयोपशमथकी पोताना स्व-
 रूपने जाणे, एक कोइना कीधायकी जाणे, ह-
 वे जे पोताना द्वयोपशमथकी जाणे तेनुं तो
 कव्याण थायज, अने जे कीधायकी जाणे ते
 ना वे हित, २ श्रद्धारहित एटले

कहेवा मात्रज हवे जे श्रद्धावान् ठे ते सद्गुरुना
 उपदेशथकी तथा शास्त्रना वांचवाथकी आत्म-
 स्वरूपनी श्रद्धा करी ठे, तेनुं पण कार्य थारो
 थने जेने श्रद्धा नथी तेना सद्गुरुना वचनथ-
 की थथवा शास्त्रना वांचवाथकी आत्मस्वरूपनी
 वार्त्तांज करीने जाणे पण पोताने श्रद्धा नथी,
 यथा शुकवत् एटले जे पोपट छे ते राम कृष्ण
 इत्यादिक नाम ले ठे, पण तेने राम कृष्णनी
 जळखाण नथी, ते भृत्तिं उपर बेसीने विष्ठा करे
 ठे, तेमज बीजा जे जीव ठे ते श्रद्धारहित थने-
 कात्मानी चर्चा करे ठे ते ए पोपट सरीखा जा-
 णवा, थने थनवीने तो श्रद्धा होयज नहि,
 थने जळखाण पण होय नहि माटे एनु जाण-
 णु तो कशाए खपनु नथी, जेम मावठानो वर
 साद कमोय पण गुणकारी नथी, तेम तेनु जा
 णणु ते कश्पण कामनु नथी माटे शुद्ध स्वरू-
 पनुं जाणवु एज सत्य छे, करवु कराववु ए थ
 सत्य ठे माटे जे शुद्ध स्वरूप जाणे ते कर्म ख
 पावीने सिद्धि वरे, एटले सिद्धपद ठे ते महा
 सुखदायी ठे, तेने फरीथकी जन्म मरण नथी,

माटे एवा सिद्धपदनी जेने खप होय ते तो शुद्ध
स्वरूपनेज समजे अहींयां करवाथकी कंइ मु-
क्ति ठे नहि, शामाटे के करवु तो एक जेद ठे,
अने सिद्धना तो पंदर जेद ठे, जेम कोइ जैन
धर्मनुं वा नोकारनुं नामे नथी जाणता ते पण
स्याहाद रीते आत्मतत्त्व प्राप्त करीने माके जाय
ठे माटे सिद्धपद तो एक आत्मस्व रूपमां ठे,
ते सिद्धना जेद पंदर प्रकारे ठे ते क हे ठे ॥

उक्तं च पत्रवणासूत्रे ॥

१ तिष्ठसिद्धा, २ अतिष्ठसिद्धा, ३ तिष्ठ-
यरसिद्धा, ४ अतिष्ठयरसिद्धा, ५ स्वयंबुद्धसिद्धा,
६ प्रत्येकबुद्धसिद्धा, ७ बुद्धबोहियसिद्धा, ८ स्त्री
लिंगसिद्धा, ९ पुरुषलिंगसिद्धा, १० नपुसकलि-
गसिद्धा, ११ स्वलिंगसिद्धा, १२ अन्यलिंगसि-
द्धा, १३ गृहिलिंगसिद्धा, १४ एकसिद्धा अने १५
अनेकसिद्धा.

१ तिष्ठसिद्ध-तीर्थ प्रवर्त्या पढी मोक्षे जाय
तेने तीर्थसिद्ध कहीए.

२ अतिष्ठसिद्ध-तीर्थ प्रवर्तावेला मोक्षे जाय.

- मरुदेवाजी प्रमुख जाणवा ए अतिवसिद्धा.
- ३ तीर्थकरसिद्ध-जे ऋषजादिकं तीर्थ प्रवर्ता-
वीने मोक्षे गया तेमने तीर्थकरसिद्ध कहीए
- ४ अतीर्थकरसिद्ध-जे तीर्थकर विनाना मोक्षे
गया गौतमस्वामी प्रमुख जाणवा ए अ
तीर्थसिद्ध
- ५ स्वयंबुद्धसिद्धा-गुर्वादिकनो उपदेश सांज-
द्व्या विना पोतानी मेळे बोध पामीने मो-
क्षे गया ते कपिलादिक जाणवा ए स्व
यंबुद्धसिद्ध कह्या
- ६ प्रत्येकबुद्धसिद्धा-कारणादिक पामीने पोता-
नी मेळे बोध पामीने मोक्षे गया करकहु
प्रमुख ए प्रत्येकबुद्ध जाणवा,
- ७ बुद्धबोधितसिद्धा-जे गुर्वादिकनो उपदेश
पामीने मोक्षे गया ते, पुमरिक् प्रमुख जा
णवा ते बुद्धबोधितसिद्ध जाणवा
- ८ स्त्रीलिंगसिद्ध-चंदनमाला प्रमुख जाणवा
ए स्त्रीलिंगसिद्ध जाणवा
- ९ पुरुषलिंगेसिद्ध-जे पुरुषपदे वेदना विषयनो

दाय करीने मोक्षे पहोच्या वरदत्त प्रमुख
जाणवा. ए पुरुषालिगे सिद्ध जाणवा

१० नपुंसकलिगसिद्ध—जे नपुंसकवेदे सिद्धि वर्या
गंगीया प्रमुख जाणवा ए नपुंसकलिगे
सिद्ध ते कृत्रिम नपुसक जाणवा

११ स्वलिगसिद्ध—जे जैनदर्शननुं लिग पामीने
मोक्षे गया. जंबु प्रमुख ते स्वलिगे सिद्ध
जाणवा.

१२ ध्यन्यलिगसिद्ध—जे जैनना लिग विना जे
सिन्ध्या तेमने ध्यन्यलिगसिद्ध कहीए ते
वकचूल प्रमुख जाणवा.

१३ गृहस्थलिगसिद्ध—जे जैन गृहस्थना वेपसाथे
मोक्षे गया. मरुदेवा प्रमुख जाणवा ए ग्र
हस्थलिगसिद्ध कहेवा

१४ एकसिद्ध—जे एकलाज मोक्षे गया. साथे
कोश नहि ते वीर प्रमुख जाणवा

१५ ध्यनेकसिद्ध—जे घणासाथे मोक्षे गया ते
पार्श्वनाथ प्रमुख ते ध्यनेकसिद्ध जाणवा.

इंद्र जेदे सिद्ध कहा तेमनो शब्दार्थ

करीने कह्यो हवे विस्तारीने कहे ठे. हवे तीर्थ-
 सिद्ध कहेता जे तीर्थ चतुर्विधसंघमांही उपजीने
 कहेतां जे साधुपाणु तथा साध्वीपाणुं तथा श्रावक-
 पाणुं तथा श्राविकापाणु पाग्या पठी अथवा एज
 चतुर्विधसंघ स्थापना थया पछी, अने सिद्धांतनु
 प्रवर्तन थया पछी सिध्या तेमने तीर्थसिद्धया
 कहीए तथा तीर्थ कहेता जे ससारसमुद्रनो त्या-
 ग ए नित्यतीर्थ कहेवाय यथार्थथी तथा जीवा-
 जीवादिक पदार्थ प्ररूपक परमगुरु प्रणीतचन
 देशना प्रवर्ते छे तेमने तीर्थसिद्ध कहीए अथ-
 वा निरावार न ज्ञपति कहेतां सिद्धांत प्रवर्तन
 थया विना नहि, अथवा सघ स्थापन थया वि-
 ना पण नहि, ए रीते जे सिद्धिवर्या तेमने ती-
 र्थसिद्ध कहीए, अथवा गणधरादिक व्यवहार
 प्रवर्तन उत्पादव्यय ध्रुव निरूपण थया पछी मो-
 दे जाय तेमने तीर्थसिद्ध कहीए ए पहेलो जे
 द जाणयो १. हवे बीजो जेद कहे छे अतीर्थ-
 सिद्ध कहेता तीर्थकरना वारा विना तीर्थ प्रवर्ता
 वी सिद्धांत गणधरादि व्यवहार थया पहेलां मो-
 दे गया तेमने अतीर्थसिद्ध कहीए, ते मरुदेवा

प्रमुख सिद्धिवर्या अथवा श्रीसुविविनाथधी मांढी
 ने धर्मनाथसुधी वच्चे आंतरे आंतरे धर्म विभेद
 गयो ठे त्यां कोइ जीव शुद्ध स्वरूप स्वभावे अ-
 नुभवी एकत्वभाव ग्रहीने कर्म खपावी मोक्षे ग-
 या तेमने पण अतीर्थसिद्ध कहिए ए बीजो जेद
 २. हवे त्रीजो जेद तीर्थकरसिद्ध कहेतां, जे ति
 र्थकर पदवी पामीने चोत्रीश अतिशय, पांत्रीश
 वाणी गुण, वार गुणे करी विराजमान एहवी प
 दवी पामीने मोक्षे गया. ऋषजादि चोवीसे ती
 र्थकर अथवा अनंता तीर्थकर मोक्षे गया तेमने
 तीर्थकरसिद्ध कहिए, ए त्रीजो जेद ३ हवे चो-
 थो जेद अतीर्थकरसिद्ध कहेतां जे तीर्थकरनी प-
 दवी पाम्या विना सामान्यकेवली गौतमादिक
 अनंता सिद्धि वर्या अथवा, अंतगमकेवली गज-
 सुकुमार प्रमुख अनता सिद्धि वर्या, तेमने अ-
 तीर्थकरसिद्ध कहिए, ए चोथो जेद ४ हवे स्वयं
 बुद्धसिद्ध कहेतां जे गुर्वादिकना उपदेश विना
 पोतानी मेळे प्रतिबोध पामीने दीक्षा प्रमुख अं
 गिकार करे, कर्म खपावी मोक्षे जाय ते तीर्थकर
 सर्वे, अथवा सामान्यकेवली, कपिल केवली आ

दे देहने, अथवा अंतगमकेवली मरुदेवानी आ
 दे देहने जे सिद्धि बर्या तेमने स्वयंबुद्धसिद्ध क-
 हीए १ हवे ठठो प्रत्येकबुद्ध ते कोइ निमित्त
 कोइ कारण देखी धर्म पामीने मोढ़े गया तेमने
 प्रत्येकबुद्धसिद्ध कहीए, करकरु प्रमुख ए ठठो जेद
 ६ शिष्यवाक्य-स्वामी स्वयंबुद्धमां अने प्रत्येक-
 बुद्धमां शो फेर हशे? वने पातानी मेळे बोध पा
 मीने मोढ़े जाय ठे तो जिनपणुं शायी कहो
 ठे? तेनो उत्तर गुरुराज कहे ठे के हे ज्ञाइ वने
 मां जिनपणु कारणे ठे ते कहे ठे, तेना चार जे
 द ठे १ बोध, २ उपधि, ३ श्रुत, ४ लिंग ए
 चार प्रकारे स्वयंबुद्धमांही विशेष ठे हवे बुद्ध
 कहेतां कोइना उपदेश विना अने कोइ कारण
 पण दीवु नथी अने सहेजेज जातिस्मरणदिक
 ज्ञान पामीने बुजे शिष्यवाक्य-स्वामी मृगापुत्र
 साधुने देखी बोध पाम्या तथा कपिलकेवली जा
 तिस्मरण विना प्रतिबोध पाम्या तो तमे कारण-
 नी नापामी अने जातिस्मरणज्ञाननी हा पामी
 तो ए बात शी रीते ठे? तेनो उत्तर के सिद्धांत-
 माही तो कारण वा जातिस्मरण कह्य नथी, प-

रंतु टीकाकारे आ गवेपणा करी ठे ते वचनो प-
 राश्क छे, ते उपरथी कंइ शंका कंखा राखवी
 नहि. हवे जे स्वयंबुद्ध ठे तेना वे जेद. १ ती-
 र्थकरबुद्ध, २ तीर्थकर विनाना स्वयंबुद्ध, एटले
 ए बोध कह्यो हवे उपधि कहे छेफे स्वयंबुद्धने
 बार उपगरण पण होय बार ते मध्ये सात तो
 पात्रांना होय, त्रण पोताना, अने उंधो, मुहप-
 त्ति होय, ए बार उपगरण होय अने प्रत्येकबु-
 द्धने तो उंधो ने मुहपत्ति ए वे उपकरण ज
 होय ते जघन्यथकी जाणवा तथा उल्लूट नव
 उपगरण होय ते मध्ये सात पात्रांना होय अने
 उंधो, मुहपत्ति होय एटले ए नव थया, ए उ-
 पधिनो अधिकार कह्यो तथा हवे सूत्रनो अधि-
 कार कहे छे, स्वयंबुद्धने पूर्वजवनुं श्रुत होय,
 कोइने न पण होय, जेने न होय ते गुरु पासे
 जइने पण सीखे अथवा अन्य हरकोइ गहमां
 रहीने शीखे, जेने पूर्वजव रहित सूत्र होय तेने
 तो लिग देवता आपे, जेने पूर्वाधित श्रुत नथी
 अने अनेरा पासे श्रुत पामीने पोतानुं सामर्थ्य
 होय तो एकाकीपणे विचरे, स्व इडाए विहार

करे ए पूर्वाधीत श्रुतवाळाने तो ए निश्चयज छे
 अने जेने पूर्वाधीत श्रुत नथी ते तो सामर्थ्य
 होय तो एकाकी विचरे, नहि तो हरकोशना गह
 जेगो विचरे, अने प्रत्येकबुद्ध जे छे तेमने तो पू
 र्वाधीत श्रुत निश्चय छे, जघन्यथकी ११ अंगनुं
 श्रुत होय अने उत्कृष्ट देशे जणो दश पूर्वनुं
 ज्ञान होय, तथा लिग जे छे ते प्रत्येकबुद्धने दे
 वता आपे तथा कोष्ठ लिगरहित पण होय इति
 स्वयंबुद्धमां तथा प्रत्येकबुद्धमां एम विशेषाधिक
 जाणवानु छे ए अधिकारटीकाथकी जाणजो ए
 वचनमां शंका कखा करवी नहि, वमानु वचन
 प्रमाण करवुं ए ठळो जेद ६. हवे बुद्धबोधितसि
 द्ध कहेता जे तीर्थकर, केवली, गणधर, साधु
 आदे देहने उपदेश करीने जे जीवने प्रतिबोध
 पमाट्यो ते जीव बोध पामी मोक्षे गया तेमने
 बुद्धबोधित कहीए ए सातमो जेद ७ हवे स्त्रीलि
 गसिद्ध कहेता ते स्त्रीलिगना त्रण जेद ठे वेद
 १, शरीराकार २, गतिपथ ३ तेमांही स्त्रीलिग ते
 शरीराकार जाणजो एट्ठे जे शरीरनो आकार
 तेने लिग पण कहीए जे जणी वेद त्रण छे ते

वेदने ज्यारे छेदे तेवारे केवल पामे ध्यने पथ कहेता जे वस्त्र आच्युपणादिक वेष पहरेखो तेने स्त्री कहीए, तो ते वातनो तो कंइ निश्चे नथी ते तो पुरुष पण स्त्रीनो वेष पहरे छे तथा स्त्री पण पुरुषनो वेष पहरे ठे तेथी ए वात अग्रमाण ठे ए जेद तो कंइ स्वपना नथी तथा लिगने शरीरकार ए वे जेद कह्या ते एकज ठे, शामाटे जे शरीरनो आकार तेनेज लिग कहीए, अहिया जिनपणुं नथी, एकज जाव जाणवो, अहियां कोइ दिग्म्बरमती एम कहे ठे जे स्त्री तो कंइ मोढ़े जाय नहि ए तो अ्यसत्य वचन छे अ्यने अ्यशुद्ध पण ठे जे माटे जे शुद्धज्ञान, शुद्धदर्शन, शुद्धचारित्रि जे जीव पामे ते जीव मोढ़े जाय त्यां कांइ लिगनुं कारण ठे नहि, पुरुष वा स्त्री वा नपुंसक ए त्रण वेदमां एके वेदे मोढ़े जता नथी श्यामाटे के अ्यवेदी पदनो मोढ़ा छे, अ्यने ए तो त्रणे वेद ठे ते कंइ मोढ़े जतानथी अ्यहियां तो शुद्ध ज्ञान, दर्शन अ्यने चारित्रिए रत्न त्रय तेज मोढ़े जाय, मोढ़नो मार्ग तो ए त्रण रत्नत्रय शुद्ध अ्यथये मोढ़े जाय, तथा व्य-

वहार मार्गें पण स्त्रीजं पुरुषनी पेठेज धर्म आ-
 राधे ठे श्यामाटे के स्त्रीजं पण सूत्र ज्ञान, अ
 गीयार अंग सुधी जाणे तथा स्त्रीजं शुद्धसम-
 कित तथा व्यवहारसमकित पण धारण करे ठे,
 सत्तर जेदे संयम पाळे ठे मासकामणादि तप
 पण करे ठे ते माटे स्त्रीजं मोदे केम न जाय?
 दिगम्बरोवाच ॥ जे स्त्रीजंने शुद्ध ज्ञान दर्शन
 होय पण चास्त्रि होय नहि श्यामाटे जे स्त्रीजं
 ने वस्त्रनो परिग्रह घणो होय ठे अने ज्यां परि-
 ग्रह होय त्या चास्त्रि ठे नहि अने वस्त्र ते तो
 नव प्रकारना परिग्रहमा गणेल्यां ठे अने स्त्रीवस्त्र
 न राखे तो नममुद्राए विक्रताकार दीसे अने
 पुरुषने अजीजननी पण होय तथा लोकमध्ये प-
 ण घणी हासी निदा थाय ते माटे वस्त्रनो परि-
 ग्रह होय अने परिग्रह होय त्यां चास्त्रि होय
 नहि तेनो उत्तर जे परिग्रह ते तो मूर्खा नथी
 त्यां परिग्रह मानता नथी अने जो परिग्रह मा-
 नीए तो सिद्धातथकी विरुद्ध थाय, अने ग्रहस्थ
 लिगादि जेद सर्वे जुग पमे श्यामाटे जे जस्त-
 चक्रवर्ति महापरिग्रह आरजमां रखाथका केवल

ज्ञान पाम्या जो मूर्छा नहि हती तो एटलावधा परिग्रहथका केवलज्ञान पाम्या ते परिग्रह तो कंइ केवलज्ञान पामतां नब्बो नहि तो शुं व-
 स्रनो परिग्रह मोक्षे जतां अथवा केवलज्ञान पा-
 मतां आनो पन्दो थइने रहेशे, माटे विचारी
 जुगो के मूर्छा तेज परिग्रह ठे के मुळा परिग्रहो
 बुत्तो इति वचनात्, माटे जे वस्र ठे ते तो चा-
 रित्रिना उपगरण ठे ते परिग्रहमां केम गणाय?
 दिगंबरो उवाच ॥ सर्वथकी उत्कृष्टु पुरुपनुं स्था-
 नक परिग्रह आरजना योगथी सातमी नरके
 जाय, एटली शक्ति पुरुपमां ठे, अने वीर्य ए-
 शक्ति स्त्रिने विपे नथी केमके सातमी नरके तो
 स्त्री जाय नहि तो सर्वथकी सुखनुं स्थानक उ-
 त्कृष्टामां उत्कृष्टु मुक्ति ठे तो त्यां केम करीने
 जशे, अथवा वासुदेवादिक पदवी पण तेमने
 प्राप्त होती नथी तथा पूर्वधर लब्धि ते पण ए-
 मने न होय एटले पूर्वनुं ज्ञान पण एमने आवे
 नहि एटलो दायोपशम तो एमने ठे नहि अने
 केवलज्ञान तो दायिकजावनुं ठे ते केम प्राप्त
 थशे ?

। लब्धि तेपण एने आवे

नहि तेनो उत्तर जे सातमी नरके न जाय तेनुं
 कारण ए ठे के सग्रामादिक आकराकर्म विशेषे
 स्त्री बांधती नथी बली जमीन फोन्वानु काम
 ते पण स्त्री करती नथी, ए कामनो करवावालो
 तो पुरुष ठे तेणे करीने स्त्री सातमी नरके न
 जाय शामाटे के उत्कृष्ट मनना अथ्यवसायनुं
 बल नथी तथापि तोए ज्ञान दर्शन चारित्रि अथने
 तप प्रमुख स्त्रीने उत्कृष्टापणे करीने विशेषे होय
 तथा जे वासुदेवादिक पदवी ते तो पुरुषवेदे ठे,
 माटे जे संसारव्यवहार सर्वे पुरुषथकी ठे पुरुष
 प्रधानो धर्म इति वचनात् राज्यकाजव्यवहार
 ए सर्वे पुरुषथकीज ठे स्त्रीथकी नथी तथा चा
 रणादिक लब्धि ते तो उत्कृष्ट मनना अथ्यव-
 सायवमे तथा तपोमले करीने प्राप्त थाय ठे ते
 कइ स्त्रीना अथ्यवसाय मनना तथा तपोबल ते
 अधिक छे नहि कदापि तमो कदेशो के एटला
 बदल मोढ़े न जाय ए तमारु कहेबु अस्त्य ठे
 शामाटे जे मोढ़े जावुं ए तो आत्ममलवमे ठे
 अथने आत्ममल तो स्त्री वा पुरुष सर्गे सरखु
 ठे अथने मन वचन कायादिक बल ते पूर्वकृत

कर्म ठे तो ए तो कर्मनी प्रकृतियो छे माटे कर्मनी प्रकृतिज्यकी जे बलनुं पामवुं ते तो गति आश्रित वा वेदआश्रीयने ठे, तेमां कंइ मुक्तिनुं जुं काम आवे नहि अने योगाश्रिय तथा वेदाश्रिय तथा बलाश्रिय जो धर्म मानता होय तो देवता मोढ़े जाय, केमके ए सर्वे वाते अधिक ठे पण तेने तो एक श्रावकनुं पण वृत आवतुं नथी अने जे विचारा पशु तिर्यच पंचेंद्रिय ते पण पांचसुं गुणठाणुं पामे ठे, पण देवता तो पामता नथी माटे पौद्गलिकशक्तिने धर्मशक्ति हारे (साथे) मेलवशो तो ए प्रत्यक्ष अजुक्तुं (अयुक्त) ठे शामाटे? जे वासुदेवादिक लब्धि ते पण पूर्वकृत कर्मनी शक्ति ठे, अने स्त्रीवेद उपार्जवो ते पण पूर्वकृत कर्मनी शक्ति ठे, ते घणी निर्वल ठे, तेना पुद्गलनी शक्ति एवी नथी के लब्धि पामे, एतो एना वेदमांज लदय नथी पण कंइ मोढ़े जावुं त्यां पूर्वकृत कर्म वा वेद एके खपनां नथी, अहियां तो आत्मशक्ति प्रगट करीने मोढ़े जावुं ठे, ए वातमां, कंइ शंका नथी तथा तमे

... ी जाय अने हेठल सा-

तमी नरकसुधी केम न जाय ? एनो उत्तर-जे
 चृजपरिसर्प वीजी नरकलगी जाय अने खेचर
 पंखी त्रीजी नरकसुधी जाय तथा वाघ, सिंह चो
 थ्री नरकसुधी जाय तथा उरपरिसर्प पांचमी न
 रकसुधी जाय तथा महादिक सातमी नरकसुधी
 जाय, एम अधोगति तिर्यच पंचेन्द्रिय सर्वेनी
 जिन्र जिन्र ठे, अने उर्ध्वगतिए तो सर्वे तिर्यच
 पंचेन्द्रिय आठमा सहस्रार देवलोकसुधी जाय
 तो आहिया उर्ध्वगति तथा अधोगतिनुं कंइ स-
 रखु प्रमाण नथी जे कंइ उर्ध्वगतिए आठलो
 जाय ते अधोगतिए आठलो जाय एवो तो कंइ
 नियम ठे नहि, ते माटे स्त्री सातमी नरके न जा
 य पण मोक्षे तो जाय आहियां तो केवलज्ञान
 केवलदर्शन अने दायकचारित्रिना आराधनवमे
 जावु ठे, पणे तो कर्मप्रकृतिना बंधवमे जावु ठे
 माटे आत्मिकस्वभाव अने पौद्गलिकस्वभाव ए वे
 मलता न होय पौद्गलिकस्वभाव पुद्गलमां राखो
 अने आत्मिकस्वभाव आत्मामां राखो. एम सत्य
 स्वरूप समजीने स्त्रीने मोक्षे जवुं कबुल राखो ते
 करतां अमारु कहु कबुल न करो तो जले तो

पण तमारा मतनो ग्रंथ “गोमट्टसार” नामे ठे तेने विषे पण स्त्रीने मोढे जावानुं कहुं ठे. ते ग्रंथनी गाथा साक्षी माटे लखीए ठीए

॥ उक्तं च ॥

अम्याल पुंवेया, श्रिवेयायहुंतीचालीसा ॥

वीसनपुंसकवेया, समएगेण सिजंति ॥ १ ॥

अर्थ-उक्त्या पुरुषवेदे सिजे तो एकसोने आठ सिद्धि वरे अथवा अमतालीस पण सिद्धि वरे अने स्त्रीवेदे तो एकसमये चालीस सिद्धि वरे अने नपुंसक सीजे तो एकसमये वीस सिद्धि वरे, ए उपर लखेली गाथानो अर्थ ठे तथा अमतालीस कह्या अथवा एकसाने आठ कह्या तेनो विचार आगल वर्णवामां आवशे ए गाथामां तो अमतालीसज कह्या ठे पण वनेनो जाव आगल कहीशुं, एम तमारा ग्रंथने अनुसारे स्त्री चालीस मोढे जवानी कही ठे ते माटे स्त्रीने मोढे जावानुं कबुल राखवुं जोशए तथा साधु साध्वीने वस्त्र राखवानुं ते परिग्रहमां गणतुं नथी ते तमारा “जगवतीसार” ग्रंथने विषे वस्त्र राखवानी साधुने हापामी ठे माटे वस्त्र

ठे ते कंश् परिग्रहमां गणातां नथी भाटे एमसमु
 समजीने स्त्रीने मुक्ति पामवी ए वात सत्य जा-
 एवी ए वातमा शङ्का राखवी नहि एट्ठे स्त्रीने
 मोक्षे जवानो श्याठमो अधिकार कह्यो. ८ तथा
 पुरुषलिगे सिद्ध-कहेता जे पुरुषवेदे मोक्षे जाय
 एट्ठे पुरुषाकारे ठे, पण वेदनो तो दाय थयो
 ठे वेदरहित पुरुषाकारे मोक्षे जाय तेने पुरुषलि
 गसिद्ध कहिये, एट्ठे ए नवमो अधिकार कह्यो
 ए हवे दसमो नपुसकलिग कहे ठे नपुंसक
 कहेता नहि पुरुषवेद थने नहि स्त्रीवेद वनेथकी
 न्यारो ते नपुसकना वे जेद ठे एक जन्मनपु
 सक १ ने बीजो कृत्रिमनपुसक २, ते मध्ये ज-
 न्मनपुसक सिद्धि न वरे ने कृत्रिम नपुंसक सि-
 द्धि वरे ए अधिकार जगवतीजीमां कह्यो ठे. कृ-
 त्त्रीमनपुसक जे मोक्षे गया ते, गंगीया (गागेय)
 प्रमुख जाणवा एट्ठे ए दसमो जेद कह्यो १० हवे
 स्वलिंगसिद्ध कहेता जे कोश् श्री, जैनशासनना
 मतनो लिग कहेता जे वेपधारण करे, ते लिग
 साथे मोक्षे जाय तेने स्वलिंगसिद्ध कहीए, ते
 लिगना त्रण जेद ठे प्रथम तीर्थकरना वारानो

लिग जिन्न ठे अने वावीस तीर्थकरना वारानो
 लिग पण जिन्न ठे तथा जिनकटपी तथा स्थविर
 कटपी इत्यादिक अनेक जेद ठे पण ते सर्वे लि
 ग ए जैनमतनो जाणवो. ते लिग धारण कर्या
 पठी मोढे गया तेमने स्वलिगसिद्ध कहीए. ए
 अगियारमो जेद कह्यो ? हवे अन्यलिगसिद्ध
 कहेतां ज्या जैननो लिग नथी ते विनानां अ-
 नेक लिग ठे. खाखी, योगी, वैरागी, सन्यासी,
 फकीर प्रमुख अथवा आर्य, अनार्य, सर्वे जैन-
 लिग विनाना जे मोढे जाय तेमने अन्यलिग-
 सिद्ध कहीए, एटले वंकचूल प्रमुख अनेक जीव
 मोढे गया तेमने अन्यलिगसिद्ध जाणवा ए
 वारमो जेद कह्यो ? हवे ग्रहस्थलिगसिद्ध कहेतां
 जे ग्रहस्थपणे जैनधर्मनो पण जेख (वेप) लीधो
 नथी, तेम अन्य धर्मनो, आर्य अनार्यनो जेख
 लीधो नथी अने ग्रहस्थावासमां रक्षाथकां कोइ
 कारण वैरागनु मळवाथकी अनित्यादिक प्राव-
 ना आवी अने शुद्ध स्वरूपनी रमणता, आत्म
 स्वरूपनु एकत्वपणु आतेथके मोढे गया तेना वे
 जेद ठे ? अंतगमकेवली तुर्त शैलेशी करण

करीने मोक्षे गया ते मरुदेवा प्रमुख तथा २ जे
 जेनुं ध्यावखुं वधारे होय ते एकत्वजावादिकथकी
 केवलज्ञान पामे पण ध्यायुष्य वधतुं ठे तेथी
 जेने लिग देवतां ध्यापे त्यां परमात्मपद तो ग्रह
 स्थीपणाथकोज थयुं ठे केमके केवलज्ञान तो
 ग्रहस्थावासमांज उत्पन्न थयुं माटे एने ग्रहस्थ-
 लिगसिद्ध कहीए, एमां कंइ दूषण ठे नहि ज
 रतादिकनीपेरे एंठले ए ग्रहस्थीलिगे सिद्ध कंहा
 ए तेरमो जेद थयो १३ एकसिद्ध कहेतां जे ए
 फलाज मोक्षे गया साथे कोइ साधु प्रमुख बीजा
 नथी गया तेमने एकसिद्ध कहीए, ते महावीर
 स्वामी ध्यादे जाणवा, ए एकसिद्धनो चौदमो
 जेद कह्यो १४ अनेकसिद्ध कहेतां घणा पुरुषा
 दि साथे मोक्षे गया पार्श्वनाथ प्रमुख तेमने अ
 नेकसिद्ध कहीए, ए पंदरमो जेद जाणवो १५
 हवे सिद्धि वरवानो विचार कहे ठे के-एक स-
 मये केटला सिद्धि वरे अथवा केटला समयसुधी
 लागट सिद्धि ध्याय अंगर सिद्धि वरे अने केट-
 ला विरहकाळ कहे ठे ते
 ध्यां ठे

॥ उक्तं च ॥

वत्तीसा अम्याला, सठी वावतरीय बोधवा ॥
 चुलसीइ ठन्नऊइ, डुरहिय महुत्तरसयं च ॥१॥
 अमसगठपञ्च चउ,तिनिहुन्नइकोयसिठमाणेसु ॥
 वतीसाइ सुसमीया, निरंतरं अंतरं उवरी ॥ २ ॥

अर्थ-हवे प्रथम समय जघन्यथकी एक जीव सिद्धि वरे, उक्तृष्टा वत्रीस सिद्धि वरे एम बीजे समये पण जघन्यथी एक वे उक्तृष्टा वत्री स एम यावत् आठ समयसुधी जो सिद्धि वरे तो ते उपरांत अवश्य विरहे पने तथा प्रथम समये जघन्यथी तेत्रीस अने उक्तृष्टा अमतालीस सिद्धि वरे. एम बीजे समये पण जघन्यथी तेत्री स उक्तृष्टा अमतालीस एम सात समयसुधी जो यावत् सीजे तो ते उपरांत विरहे काल अवश्य पने. तथा प्रथम समय जघन्यथी जंगणपचास अने उक्तृष्टा साठ एम बीजे समये पण जघन्यथी जंगणपचास अने उक्तृष्टा साठ एम ठ समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरहे काल पने तथा . . . जघन्यथकी एकसठ अने उ

कृष्ण वीजे एम वीजे समये जघन्यथी एकसठ
 थने उक्तृष्ण वीजे एम पांच समय लागट सि
 छि वरे तो विरह पने तथा प्रथम समये जघ
 न्यथी तौतेर थने उक्तृष्ण चोरासी एम वीजे स
 मये जघन्यथी तौतेर थने उक्तृष्ण चोराशी एम
 चार समयसुधी लागट सिद्धि वरे तो विरह पने
 तथा प्रथम समये जघन्यथी पंचासी थने उ
 क्तृष्ण उन्नु एम वीजे समये जघन्यथी पंचाशी
 थने उक्तृष्ण उन्नु एम त्रण समयसुधी लागट
 सिद्धि वरे तो विरह काल पने तथा प्रथम स
 मये जघन्यथी सत्ताणुं थने उक्तृष्ण एकसोने वे
 एम वीजे ममये जघन्यथी सत्ताणुं थने उक्तृ
 ष्ण एकसोने वे एम वे समयसुधी लागट सिद्धि
 वरे तो विरह काल पने तथा प्रथम समये ज
 घन्यथी एकसोत्रण थने उक्तृष्ण एकसोनेथ्याठ
 एक समयनाज सिद्धि वरे तो फरी विरहे काल
 पने ते उ माससुधी मुक्तिनो मार्ग बंध रहे तथा
 उठा वधता जीव सिद्धि वरे तेना विरहकाल
 उठा वधता ते अधिकार घणा ठे ते मर्वे शास्त्र
 थकी जाणजो शिष्यवाक्य-स्वामी ए विरहका

ल ते आ प्रसक्तोत्र आश्रयिने कहो ठे के प
 नरे क्षेत्र आश्रयिने कहो ठो तेनो उत्तर. जे
 हे प्रसक्त ! सिद्धांतमां तो एक क्षेत्रनुं कंश् वचन
 नथी अहियां तो समुदाय सर्व सिद्धपद आश्र-
 यिने ठे मोक्षमार्गनोज विरह काल कह्यो ठे.
 पण एम जो समुदाये बोलीए तो परंपरा लो-
 किकव्यवहारने बाधकणुं लागे, शामाटे जे जे-
 ट्या आ प्रसक्तोत्रमां तीर्थकर थया तेमना पांच
 कल्याणक दशे क्षेत्र सरखा लहीए ठीए ने श्री
 रीषभदेव स्वामी तो एकसोने आठ पुरुष साथे
 मोक्षे गया ते तो सर्वे उत्कृष्टी श्रवगाहना
 वाला ठे ते तो मोक्षे जवानुं आश्रीत मानीए
 ठीए बीजा नानी श्रवगाह नाना धणी जो एक
 समये एकसोने आठ मोक्षे जाय तोपण ठ मा-
 सनो वीर हे काल कह्यो छे ए तो उत्कृष्टी श्र-
 वगाह नाना धणी मोक्षे गया तो अहियां श्रव-
 श्य विरह काल छ मासनो होय ए जोता समु-
 दाय मोक्ष मार्गनो विरह काल लेतां चक्रदेदे
 त्रे मुक्तिनो मार्ग छ मास सुधी बंध रह्यो जोशए
 तेवारे नवक्षेत्रे प्रगवाननां कल्याणक अहीना

तीर्थकरनी साथे एक समये मलतां न आवे ते वारे ते तीर्थकरना कल्याणक अने अहीना तीर्थकरनां कल्याणक आगल पाछल थइ जाय तेवारे सर्वे तीर्थकर दश क्षेत्रना तेमनां कल्याणक एक समयनां न ठरे, ते वारे अतीत अनागतना कल्याणकनो सो जरुसो रहे ? ते माटे आ एक क्षेत्रे लेतां सजवे, शिष्य वाक्य ॥ जे विरहे काखना अधिकारने विषे चारे गती चोवीसे दुरुकने विषे जे विरह काल कहेला ठे ते शुं आ क्षेत्र आश्रयिने ठे के गति आश्रयिने छे ? जो आ क्षेत्र आश्रयिने होय तो मुक्तिनो पण आ क्षेत्र आश्रयिने होय अने ते गति आश्रयिने होय तो ते क्षेत्रने विषे सर्व लोकना जीव आश्रयिने उपजे ठे, अने ते गतिमांथी चळीने सर्व लोकमा जाय छे एम जो ए गतीयोने आश्रयिने होय तेवारे एक क्षेत्रनुं कंई प्रमाण ठे नही तेम मुक्तिना विरह कालना अधिकारमां ठे ते मुक्ति गति आश्रयिने होय, तो सर्वे क्षेत्र आश्रयिने ठरे तेनो उत्तर के जे गतिने विषे उत्पत्ति वा मरण तेने आश्रयिने ठे ते तो सर्वे लोकना जीव त्यां

ऊपजे छे अने ते गतियोना जीव सर्वे गतियोमा
 उपजे छे, अने विरहे काल ते गतिने आश्रीने-
 ज छे पण मुक्तिना विरह कालनुं तें पुछ्युं तेनो
 विरह काल त्यां तो समुदायेज वचन ठे पण
 अहीयां समुदाय कहेतां पूर्वोक्त विचार आमा
 आवे ठे, तेथी हमे एक क्षेत्र आश्रीने संभववा-
 नुं कहुं पण शास्त्रने विषे जोतां तो मुक्ति गति
 आश्रीने छे; ए वातनो विचार तो केवली होय
 तो कहे अने अहीयां तो विचार घणानो ठे.
 पण परुपणामां तो एक क्षेत्र आश्रीनेज करवी
 पडे, पठी तत्त्व तो अरीहत जाणे, शिष्य वाक्य
 स्वामी एम विरह काल पने त्यारे मुक्तिनो मार्ग
 बंध रहे तो केवलाएक लोको एम कहे ठे जे
 मुक्तिनो मार्ग तो कीमी मंकोमीनी हारनी गोमे
 वहे ठे तो ए वात केम बनशे? तेनो उत्तर जे
 एम कोइ अज्ञानी लोक सद्गुरुना चरण कमल
 सेव्या विनाना बहु श्रुतनी प्रक्ति रहीत एवा जे
 जीवमती कल्पना करवा थकी बोले ते कंइ
 शास्त्रनी साथे मेलववानां वचन नथी ए पोतानी
 खुशी पने तेम लवे तेनो उत्तर तो कंइ शास्त्र-

श्री नाकले तेम नथी माटे तेना वचन उपर कंइ
 प्रतीत करवी नही, अने तेनां वचन सांजलवां
 पण नही एक बहु श्रुत निस्पृही मुनिरायनो
 विश्वास राखवो श्या माटे जे सिद्धांतमा रहस्य
 घणा र्हा ठे, अने कोइ लख्यु वांचीने ठवो
 तथा टीका सजलावशे पण रहस्य हाथमां नही
 आवे, माटे बहुश्रुत निस्पृहीनी सेवा करीने ते
 मना मुख थकी समजजो शा माटे के सिद्धांत
 माही तो अणमलता बोल घणा ठे अने शंका
 कंसा पण घणी ठे ते काचा पुरुष पासेथी सां-
 जलसो तो धर्म ब्रष्ट थइ जासो अने शंका
 कसामां पन्शो अने ज्ञाननु रहस्य तमारा हाथ-
 मा नही आवे अथवा जे मत पद्दी ठे अने
 पोताना मत ताणे छे, ते बीजाने खेंचवा चाहे ठे
 तेना वचननो पण जरुसो राखवो नही, ए तो जे
 मोंदेथी खुशी पने तेम लवे तेना वचननो जरुसो
 ते तो सेंनो होय, अने असत्य होय माटे ते
 उपर विश्वास करवो नही एटले ए संक्षेप थकी
 सिद्धनुं स्वरुप कह्यु पण ते सिद्धपदने काँण पामे
 के जे परजाव त्यागी, स्वजाव जोगी, शुद्ध स्व-

रूपने ललखी श्यादवादशैली लही पोतानुं
 स्वरूप एकत्व जावे थाय ते घणी सिद्धिचे. शिष्य
 वाक्य स्वामी एकत्व जाव शीरीते थाय ? तेनो
 उत्तर जे प्रथम लक्षण गुण स्वजाव कहीने
 श्याव्या ते रीते षट् ड्रव्यने ललखीने चार ड्रव्य
 तो अरूपी ठे, ते कंझ आत्माने नमता नथी ते
 आत्मा जेगा ठे पण नही अने पांचमो ड्रव्य
 जे पुद्गल ठे ते आत्माने अनादि कालनो जेगो
 वळगेलो ठे, अने तेहीज आत्माने अनादिकाल-
 नो संसारमां जमामे ठे माटे पुद्गल तथा आत्मा
 ए वे ड्रव्यनी सद्गुरु पासेथी ललखाण करवी,
 पण पोतानी मति कल्पनाए चालवुं नही, ते
 ड्रव्यने सारी रीते ललखीने जम चेतनना विजा-
 ग जाणीने जम जावनो त्याग करीने पोताना
 एकत्व स्वरूपमां रमण थाय तेमने एकत्व जाव
 कहीए, अहीयां किचित् जीव स्वरूप ललखावे
 ठे, के जीव कहेतां आत्म ड्रव्य ते तो शुद्ध
 ज्ञान दर्शन चास्त्रिनो पुंज ठे, महा ज्योति
 स्वरूप साक्षात् ठे, एवो जे आत्मस्वरूप दीसे ठे
 एखे सर्व पदार्थ ठे तेमां एक आत्माराम प्रत्यक्ष

वस्तु मात्र आश्रयकारी ठे, अनेक प्रव रूप एक
 समय देखाय ठे ए सर्व पात पोतानी द्रष्टिवने
 जोवामां आवे कारण के अहीयां द्रष्टि कहेतां
 ज्ञान द्रष्टि समजवी, चर्म चहुवाखो न जाणे,
 बाह्य द्रष्टिवाखाने ए वस्तु समजवामां आवे नही
 एनो जे घणी बाहीर आत्माना जावने ठोमनि
 अतर आत्मानो जाव जेने प्राप्त थयो ठे ते घणी-
 ना जाणवामां आवे ठे, अहीयां कोइ कहेशे के
 देखामो ते वस्तु कई देखामवा जेवी नथी शामाटे
 के अरूपीनो जाव तो अरूपी जाणे ए वात रूपी-
 ना जाणवामां न आवे, ए तो जेनी विजावदशा-
 ट्यी होय राग द्वेष जेना पातला पन्या होय
 समकित गुण प्राप्त थयो होय ते घणी, ए वस्तुने
 जाणे पण जेनुं मिथ्यात्व गयुं नथी अने अज्ञा-
 नमा राचीने रखा ठे अने इन्द्रिय सुखने विपे
 जेनी इच्छा ठे शुभाशुभ जावने विपे धर्म मानी
 वेठा ठे ते घणी सर्वथा ए वस्तु नज देखे, एतो
 जेने ज्ञाननी रमणता ठे ते ए आत्मस्वरूपने जाणे
 ए वातमा कंइ पण १ ए प्रत्यक्ष-
 पण जोतां स्वरूपज २ वस्तु

ते एक शब्द मात्रयी जलखीए ढीए, एटले
 शुद्धनय वस्तु मात्र आ एत कहेतां शुद्धनयने
 वस्तु धर्म प्राप्ति ठे एटले एनो अनुभव करतांज
 समकितनी प्राप्ति थाय शुद्ध स्वरूप ते केवुं ठेके
 एक वस्तु शुद्ध एकत्व ज्योति स्वरूपेज शुद्धपाणुं
 ठे ते कोइ काले बुटशे नही, जेवो ठे तेवो ने
 तेवोज वस्तु ए रहेजेज एज स्वरूप सिद्धनुं ए ठे,
 अने ए स्वरूप सर्व जीवनुं ए ठे, अहीयां कोइ
 कदेशे के जीव शुद्धता क्यारे थाशे ज्यारे आ
 संसारभावथी बुटशे त्यारे शुद्ध थाशे तेनो उ-
 त्तर कहे छे के जीववस्तु तो दृष्टिए विचारी जो
 शो तो त्रणे काल सदाए शुद्धज ठे जेम कंचन
 चंपारुप ठे एनुं मुख्य पण चंपानुंज अणाय ठे,
 तोलनुं अणायुं नथी, जेटलो तोल वधारे हशे,
 तेटलो ताप दीधे वठी जाय एटले मुळ होय ए-
 टलुंज रहे तेम आत्मा पण रागादि विभावनी
 संगे अनेक नाम धरावे तथापी ते आत्माथकी
 सर्व जिन ठे. आत्मा तो शुद्ध रूपज ठे तथा जे
 नव तत्त्व कहीए ढीए जीव, अजीव, पुण्य,
 पाप, सवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष ए

नवे तत्त्वेन विषे आत्मा प्रणमेलो ठे तथापि ए
 आत्माथी नवे जिन्नज ठे पोते पोताना शुद्ध
 स्वरूपमाज ठे जेम अज्ञानी होय ते अनेक नाम
 धरावे ठे काष्टनी, ठाणनी, इत्यादिक अनेक
 नामनी अग्नि कहेवाय ठे, पण एथकी अग्नि
 न्यारीज ठे शा माटे के, दाहक स्वभाव ठे ते-
 नेज अग्नि कहीए ठीए अहिया कंइ ए आ-
 कारनु नाम ते अग्नि नथी तेम आत्मां पण
 शुद्ध स्वरूपनु नाम ठे जेम ए अग्निना आकारे
 एने देखीने लोक तेवां तेवां नाम दे ठे पण
 अग्निनो स्वभाव तो एक दाहकज ठे तेम चेतन
 विभावनी सगते अनेक नाम धरावे ठे पण चेतन
 स्वरूप तो शुद्धनु नामज ठे, अने ए नाम तो
 सर्वे विकल्पे ठे, विकल्प ठे ते सर्वे जुळा ठे,
 पोते पोतानो एकत्व भाव ज्ञान, दर्शन चारि-
 त्रनो पुंज शुद्ध स्वरूपी, माहात् परमानंदरूप
 तेहीज सत्य ठे बाकी सर्वे ए विकल्पे ठे ऊक्तंच॥
 अत शुद्ध नयोपेत । प्रत्य गुज्योतिश्च कास्ति ॥
 नवतत्त्व गतवे पियदेकत्वमुचती ॥ ७ ॥

एवु शुद्ध स्वरूप तेने आत्मा कोइ काळे

तजे नही, हवे एवो आत्मा ठे तोपण जेदनय
 थी वे पद छे, एक तो अशुद्ध आत्मा ने बीजो
 शुद्ध आत्मा कहेतां जे विज्ञाव दशा एटले रा-
 गादि परिणाम शक्तिरूप ए सर्व जीवने विपेज
 पामीए. बीजो जे शुद्ध चेतन कहेतां जे वस्तु द्र-
 व्य रूप ठे तेनी कोइ मर्यादा नथी जे आटलो
 कालज जीववस्तु रहेशे, एनो तो सदाय अमर्या-
 दा काल ठे एटले शाश्वतोज ठे, अने जे रागा-
 दि विज्ञाव सहित ते अशुद्ध चेतना ठे, तेना का-
 लनी मर्यादा ठेज अहीयां कोइ शंका करशे जे
 ज्ञवी अज्ञवीने विज्ञाव साथे बुटको क्यारे थशे?
 तेनो उत्तर जे ज्ञव्य जीव ठे तेतो समकित पा-
 म्यो त्यांथी विज्ञावनो नाश थयो अहीयां पण
 कोइने शंका थशे जे समकित तो चोथे गुण
 ठाणे ठे अने विज्ञावनो नाश तो दशमा गुण
 स्थानकने अंते ठे तेनो उत्तर जे गुणठाणां ठे
 ते पण एक व्यवहार कथनी ठे तथापि चोथे गु-
 णठाणे जे समकित ठे तेतो अशुद्धज ठे अने
 शुद्ध समकित तो त्यां दशमा गुण स्थानकने अंते
 क्षपक अपेक्षाए ठे, शामाटे जे चोथे गु-

एतान्ण समकितनी प्राप्ति थइ त्यातो मिथ्यात्व
 स्वभाव रह्यो ठे अहीयां तो कंइ उपशमे ठे, कंइ
 क्षय उपशम थाय ठे तो उपशम तो ए मिथ्या-
 त्वसत्ताए सावीतज ठे अथवा क्षय उपशम थयुं
 तो ए सत्ताए सावीत ठे, शामाटे जे अगीयारमा
 गुणस्थानकना पमेला निगोदादिकने विषे रख
 ने ठे तो शा कारणथी के मिथ्यात्वादिक हतु ते
 छेइने गया, सत्तामां हतुं ते उदयमा आव्युं ते-
 थी ए जीव रखने ठे. अथवा कोइ कदेशे के क्षा-
 यक समकितवालाने बोधे गुणस्थानके शुद्ध
 स्वरूप ठे के नही? तेनो उत्तर के आगळ जे बे
 समकित कहा तेथी तो ए अन्त घणु शुद्ध ठे
 परंतु सपूर्ण शुद्ध तो नथी शामाटे जे त्यां सपूर्ण
 सत्य ने सत्य ने असत्यने असत्य जाणवुते ज्ञान
 हजु एने प्रगट्युं नथी अने एकत्व आत्म स्वरू-
 पनी प्राप्ति थइ नथी अने ज्या सुधी जेद ज्ञान
 ठे त्यां सुधी किञ्चित् मिथ्यात्व ठे अने अहीयां
 जेदज्ञानने विषे तो आत्माना जेद कखा, ज्ञान
 आत्मा प्रमुख अथवा उत्पाद व्यय प्रमुख तो आ-
 त्मा कंइ जिन नथी अने ज्ञानदर्शन ठे तेहिज

आत्मा ठे माटे आत्माने विषे जेदपाणु छे नहि.
 अने जेदपाणु मानवुं तेज मिथ्यात्व ठे अने अ-
 जेदपाणु एकत्वभाव थवो ए वारमे गुणस्थानके
 ठे त्यां तो कंइ-मिथ्यात्व छे नही ते कंइ हवे पां-
 छा पण पमे नही, जेम कोइए वृद्ध कापी नां-
 ख्युं पण तेनां मूखीयां पृथ्वीमां रक्षां ठे तो ते
 वृद्ध पावुं प्रगट थायज अने जेनुं मुल सुद्धां ग-
 युं ते पावुं प्रगट न थाय तेम मिथ्यात्वनुं मूळ
 मांही रहेवुं ते अगीयारमा गुणस्थानक सुधीना
 जीवोने पाछो मिथ्यात्व रूप वृद्धनो फेलावो थाय
 ठे ते जीव संख्यातादिक काल संसारमां रख्मे ठे,
 जे जीवने वारमुं गुणस्थानक स्पर्शुं ते जीवने मि-
 थ्यात्व वृद्धनुं मूल ठे नही, तेथी ते जीव संसार-
 मा पागे न पमे, अने ते जीव तरत मोक्ष जा-
 य, हवे अहीयां जे चोथे गुणस्थानके द्वायिक
 समकित कंइक शुद्ध कह्युं तेनी कोइने शंका प-
 म्शे जे चोथा गुणस्थानकनो जीव तो पाछो प-
 मे तेने कहीए के चोथा गुणस्थानकनो जीव पा-
 गो न पमे अने चोथाथी दशमा गुणठाणा सु-
 धीनुं मिथ्यात्व रह्युं ने मिथ्यात्व किञ्चित् ठे अने

तद्भ्रममांज ए मिथ्यात्वनो नाश थशे अने ते
 जीव तद्भव मोक्षे जशे माटे एने शुद्ध समकि-
 ती कहीए छीए, जेम कोइ पुरुष मखा सुतो अ-
 ने गले श्वास ठे तेने मुवोज जाणीए ते कंइ ह-
 वे जीववानो नथीतेम अहीया मिथ्यात्व पण कंइ
 रहेवानु नथी माटे एने शुद्ध समकित कहीए छी-
 ए, पण शुद्ध समकित जे सपूर्ण तेतो रागादि
 विज्ञाव दशानो नाश थये वारमे गुणस्थानकेज
 होय एम जाणवु माटे ते कालनी मर्यादा त्यां
 आबीज रहे माटे अव्य जीव अशुद्ध चेतनावालो
 रागादि विज्ञाव सगतिनी कालमर्यादा तो पूर्ण
 थाय पण शुद्ध चिदानंदघन ज्ञानदर्शन चारि-
 त्रनो पुज ज्योति स्वरूपी तेनी तो कंइ कालम-
 र्यादा ठे नही तथा जे विज्ञागरूप रागादि प-
 रिणाम अशुद्ध चेतना जे ठे ते पर्याय मात्र छे
 विचारीने जोइए तेगरे ए ज्ञानरूप नवतत्त्वरूपमा
 ढकाइ गयु छे एटले पूर्वोक्त शुद्ध चिदानंद स्वरूप
 नवतत्त्वरूप (तेने) वादले करीने आहादित थयुं
 छे एटले जीव वस्तु अनादिकालनो ए कर्ममां
 मा ढकाइ गयो छे तेतो ज्ञानी पुरुष होय तेज

मांहीथी, खोळी काढे, बीजाने जमे तेवुं नथी.

॥ उक्तं च-

पापाणेषु यथा हेम दुग्धमध्ये यथा घृतम् ॥
तिलमध्ये यथा तैलं, देहमध्ये तथा जीवः ॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्ति रूपेण तिष्ठति ॥
अथमात्मा शरीरेषु । यो जानाति स पंक्ति ॥

अर्थ-शामाटे के अथनादि संबंधे के जेमां
धातु कहेतां सोनुं, रुपु, त्रांबु, कलश, जसत, इ-
त्यादिनी पापाणमांही उत्पत्ति ठे ते कोशने स-
मजवामाज नथी के आ धातु फलाणा पत्थर-
माही ठे एवं तो जाणपाणुं कोशने ठे नहि ए
तो जे अकळकळा ठे तेज ए कांकरीनुने उं-
ळखे ठे के आ पत्थरमांही सोनु ठे अने आ
पत्थरमांही कथीर छे जेम जे पंक्ति पुरुष छे तेज
आत्माने उंळखे छे ने जेम पत्थरमां सुवर्णादिक
रहुं छे तेमज आपणी कायाने विपे आपणो आ-
त्मा परमात्मा सर्व उपद्रव रहित साक्षात् विरा
जमान छे तथा जेम दुग्ध कहेतां दुग्धमांही जेम
घृत रहुं आपणी देहनी मांही कोरे

रित्र आत्माथकी अळगु राखीने, जे मोक्षनुं साधन करवा चाहना करे, ते ते अज्ञान-ते, अने कोश दहामो मोक्षनु, साधन थशे नही. एवातमां कश शका राखवी, नही हवे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने आत्मा ए चारे, अज्ञेद रूपज ते ते देखामे ते

पहेला श्लोकनो, अर्थ-आत्मज्ञान, महात्मानां कहेतां जे जाण जीव, एटले जेणे पोताना आत्मानु स्वरूप पोते पोताना मांढळीकोरे जाण्यु ते पण ते क्यारे जाणे, जे वारे, मोहनीय कर्मना त्यागःथाय एटले जेटलो जेटलो मोहनो त्याग थाय ते नवुं जाणपणु थाय, समकीत पाम्या पठी मोहनो त्याग, थाय, जेटलो, मोहनो त्याग तेटहुं स्वरूपनु जाणपणु थाय तेनेज चाग्त्रि कहीए त्या मोहत्यागना वे जेद ते ? एक बाह्य थकी मोहत्याग जे, शरीर, स्त्री पुत्र कुटुंब परिवार धन धान्यादि, उपर थकी वैराग्य थावे मोह गमे, पण केवळ ज्ञान विनाना एवा जीव, ससारमा घणा प्रवर्ते, ते ते थकी कश तेना आत्मानु कल्याण, थाय नही,

अने जे जीवने पोताना आत्मस्वरूपनु जाण-
 पाण थयुं ठे, ज्ञान दर्शन चारित्रि एक रूपे जाणे
 ठे ते धणीने मोह तथा रागादिक परिणति आ
 लोक परलोक शुभ अशुभ पदार्थ उपरथी विरक्त
 पाण होय एम तत्त्वनो जे जाण थयो तेनी पासे
 चारित्रि होय शा माटे ? जे पखस्तु उप-
 रथी रागभाव गयो, अने आत्म स्वरूप सहजा-
 नंद ज्ञानरूप ते उपर ए साची श्रद्धा वेठी ठे
 जे मारो आत्मा केवल तत्व ठे, एम जाणे
 अने मनादिक जे पदार्थ ते सर्वे मारा थकी
 जिन जुदा ठे. एम जाणी मननो व्यापार वा-
 हिर पसरताने रोके, अने पोताना आत्म स्वभाव
 ने विषे रमे तद्वत् कहेतां तेहीज जाणपाणुं
 आत्मानु तेनेज चारित्रि कहीए, अने ते सर्व स-
 वरूप जाणवुं, अने तेहीज जे जाणपाणुं तेनेज
 ज्ञान कहीए अने ते ज्ञानवने जे वस्तुने जाणी
 ते साची वस्तु उपर जे श्रद्धा थइ ते दर्शन
 कहेतां आत्म स्वरूपनु जाणवुं तेनेज दर्शन क-
 हीए. शामाटे जे सम्यक् सद्वहणानुं नाम ठे. ए-

एखा माटे सहस्रणापूर्वक सम्यक्त्वदर्शन कहिए
एटले ए बीजा श्लोकनो अर्थ कह्यो

हवे त्रीजा श्लोकनो अर्थ कहे ठे आत्मा
ज्ञान कहेतां जे आत्मानु अज्ञानपणु एटले आ-
त्मस्वरूपनो अजाण थको जे जे कष्टादिक करे
अथवा धर्म धर्म पोकारे ते थकी आत्माने दु-
खनी वृद्धि करे पण ए थकी एनो आत्मा
सुखी न थाय

॥ उक्तं व ॥

उत्तमा आत्मचिन्ता च मोहचिन्ता च मध्यमा ॥
अधमा कामचिन्ता च परचिन्ताऽधमाधमा ॥ १ ॥

एटले शुं कहुं जे उत्तमजोव केनु नाम ठे जे
आत्मस्वरूपनो विचार करी परस्वरूप थकी आ-
त्माने जिन करे स्वस्वरूपमां रमण ते तेने उ-
त्तम कह्या ठे, पण ते थकी

पना मोहदशाम

माने ते

स्वरूप

दया ते

ज्ञान कहिए. ते जीव घणा काळ सुधी संसारमां
 रखमशे अने ते जीवुं ए प्रवमां रक्षां कोइ दी-
 न कल्याण थवानु नथी. एत्रा जीवने शास्त्रकारे
 तो अधममां अधम कहा ठे माटे ए उपरना श्लो-
 क थकी विचारी लेजो. ते कारण माटे आत्मस्व-
 रुपनुं जाणपणुं करवुं अने आत्मज्ञानने विपेज
 रमणता करवी, जेम पोतानो आत्मा स्थिर बेसे
 अने बाह्य अन्यंतरमां त्याग थाय तेज ज्ञानवने
 करीने सर्व दुःखनो नाश थायठे, माटे एवुं सम-
 जीने राग द्वेष मोह थकी उपशमवु, एटले सर्वे
 दुःखनो नाश थाय. जेम रविने आव्ये प्रजातकाळ
 दीसे ने अंधारानो नाश थाय अने उद्योत प्र-
 गट थाय, तेम आत्मज्ञानने प्रगटवे शुभाशुभ क-
 र्मनो नाश थाय ने दुःख मटे, अने संपूर्ण
 आत्मिक सुखने प्रोगवे. थोमा काळमां ते जीव
 मुक्तिना सुखने प्रोगवे तथा तपस्या एटले तप-
 स्या कहेतां आत्मविज्ञान रहित ते कर्मनो नाश
 न करे अहीया कोइ जीव शंका करे अने एवुं
 कहेजे तपस्या थकी पण नीकाचित कर्म जाय.
 अने हीयां कंइ कहेता नथी अने

आत्मज्ञानेज कर्मनोदय चतावो गो तेनो उत्-
 र जे अमो कइ अमारा घसु कहेता नथी प्रथ-
 म तो। ए काव्य उपरनो कह्यो तेना वे पद ग्रीजा
 तथा चोथा पदने विपेज कही गया छे तेथी अ-
 भे कह्युं छे तथा बीजा प्रकारे अणसणादिक तप
 एक उपवास थकी ते यावत् चरसी तप खगी ए-
 वा आकरा तप कोटानकोटी जव सुधी करे तो
 पण कर्म दायथाय नही, शामोटे जे ऐतो अना-
 दि अन्यास छे अने ज्ञान छे ते तो अपूर्व अ-
 न्यास छे. ते पोताना स्वभावमां स्थिरता कोइ क-
 र्म आववानो हेतु होय नही अने पूर्व कर्म पण
 मांही रहो शके नही एवो ज्ञाननो महोमा छे ने
 श्री हेमाचार्यजी कृतयोग शास्त्र ग्रंथमा कह्युं छे

॥ उक्तव ॥

अणिहंतिक्षणार्धेनसाम्यमाखंभ्यकर्मतत् ॥

यन्नहन्यात्नरस्तीव्रतपसाजन्मकोटिभि ॥१॥

हवे एनो अर्थ कही ए छी ए सम समालम्ब्य
 कहेता जे सम कहेतां समतापरीणाम एटले सम-
 परीणाम रागद्वेष रहीत स्वस्वभावनुं आखंवन क-
 हेतां पोताना स्वभावनेज ध्याइ रह्या छे एवुं जे

धर्म करतो थको द्वाण अर्थ कहेतां जे. आंख्य
मीचीने उघाडीए तेने द्वाण कहीए तेनुं अर्थ ते-
ने. अर्थी द्वाण कहीए ए अर्थी द्वाणज एवुं ए स-
मजावीक धर्मने विप्रे स्वस्वजावने आलंवीने ते-
टली वखतमां. जेटलां कर्म प्रणिहंति केहेतां हणे
एटले अर्थी द्वाण समजावे ज्ञानमां. थीर जावे र-
हेतां. टुटे. एटलां कर्म. बीजा थकीन, टुटे. ते कही-
ए छीए एटले जे. कोइ जीव. समजाव. त्रिना. राग
द्वेष, परीणतिनुं उठाण, जाणतो नथी स्थीरस्वजा-
व थयो, नथी अत्ते. तीव्र आकरा तप करतो. थ-
को जवकोटिजि. केहेतां कोटानकोटी जव. सुधी ए-
टले बाह्य, तपनो विचार. कहुंबुं श्रीरीखवदेवने. वारे
वरशी तप हतो, तथा. श्रीमहावीरने सासन. उमा-
सी तप हतो वचला. वावीश. तीर्थकरने वारे. आ-
ठमासी. तप हतो. ते मध्ये श्री. रीखवदेवस्वामीना
सासननो जाव. लश्ने. कहुंबुं जे. कोइ आठ वर्ष-
नी उमर थए थके व्यवहार धर्म. पाप्यो. होय तेनुं
क्रोड पूर्वनुं आउखु ठे त्यांसुधी वरस दहामा सु-
धी उपवास चोवी आहारा करे अने एक दहा-
डो पारणुं ीते. क्रोड पूर्वनुं आउखु पु-

ण करे, एवा कोटोनकोटी जव सुधी एवो तप करे
 अथवा कायलेशादीक अनेक रीतना तप करे
 तोपण कर्म खपे नहि एखे अर्धी दाणे ज्ञानी-
 नां जेठ्या कर्म खपे तेठ्या ए तप थकी न खपे.
 शा कारण माटे जे ए तप ठे ते कर्मवध हेतु ठे
 पण मुक्ति हेतु नथी जेम श्री बाह्वलस्वामी स-
 म्यग् गुण सहीत अथवा सम्यग्ज्ञान सहीत अ-
 थवा व्यवहार चारीत्र सहीत तथा ठडा सातमा
 गुणठाणाना निश्चय चारीत्र सहीत तथा काउस्स-
 गादीक अन्यतर तप सहीत व्यवहार थकी अण-
 सणादीक वशी तप सहीत हता, तोपण कर्म
 खप्या नहि शा माटे जे यथार्थ समजाव ना आ-
 व्यो रागद्वेष परणतिनो उठाव्ये रह्यो, तेथी करी-
 ने कर्म खप्या नहि जेवारे रागद्वेष परीणतीनुं उ-
 ठाण गयुं, अने समजाव स्वजावीक आत्मस्वरू-
 पमा गुणपर्यायनो ज्ञीन्न ज्ञीन्न विचार थयो तेवारे
 पठी एकत्वभाव थयो गुणपर्यायने द्रव्य एक रूपे
 ध्याया ते अवसरे कर्म दाय थझे केवलज्ञान उ-
 पन्यु तो जुथ्यो के वर्ष दीवस सुधी खुख तृपा-
 दीक बावीसे परीसह सहा पण कर्म खप्यां नहि

अने समजावे अर्थां द्वाणे कर्म दाय कर्मा तो एतो समकीतादि ज्ञान दर्शन चारित्र हतुं आत्मस्वरूपनुं जाणपाणुं गुणगणानी परिणति प्रमाणे हतुं, तोपण कर्म दाय अथां नहिं, अने आज तो समकीत रहीत जीवो प्राय दीसेठे ते जीवनां कर्म शाथकी खपशे माटे तप कष्टादिकथकी कर्म खपे नहिं अही कोश केहेगे जे ए श्लोकमां अडधीद्वारे जे ज्ञानी कर्म खपावे एटलां क्रोमो प्रवे पण तप वाळ्ये कर्म न खपावे एवुं कहुं तो अही एवो न्याय मालम पने ठे जे थोमा पण कर्म खपावे अने तमो कहो ठो कर्म न खपे तेनुं कारण शुं ठे ? तेनो उत्तर जे कर्म खपवानां थानक पहेले गुणगणेशीज ठे पण जे कर्म उदय आवे ते जोगवीने खेखे, पण ते ज्ञान गुणगणां सात ठे ते कर्म उदय आव्या वा अणआव्यां सर्वेनो नाश करे पण नवुं कर्म न बांधे, अने पहेला जे खेखे ते नवां कर्म बांधता जाय माटे एने कर्म खेख्यां न कहेवाय, शा माटे जे नवां बांधे तेने शुं कहेयुं ? जेम नदीनु पाणी वहुं जाय ठे तेम नवुं आवे ठे पण कंश नदी खाली थइ नहिं तेम ए

जीव कंश्च कर्म र्हीत थयो नहिं, थने ज्ञान गुणठाणावाळा तळावना पाणीने दृष्टान्ते ठेजे पाणी एमांथी गयुं ते थोवुंज थयु थंते सरोवर मुकाश्च जाय तेम ज्ञान गुणठाणावाळो जीव कर्म दाय करे थने नवां कर्म न बाधे थने सर्वे कर्म र्हीत थश्ने मोढे जाय एम समजवुं थही कोश्च कहेशे के तीर्थकरादिके तप कर्युं ते ज्ञानगुणठाणां नहिं? तेनो उत्तर, प्रथम तो ज्ञान गुणठाणांनां नाम कहू वुं थवीरतीसम्यक्दृष्टि १ थ पूर्वकरण २ थनिवृत्तिवादर ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथास्यात ५ सयोगीकेवली ६ थयोगीकेवली ७ ए सात गुणठाणा मध्ये ठहुं जे सयोगीकेवली ठे ते पण कर्म खेखे नहिं एटले ए गुणठाणे कर्म खेखवानी सामर्थ्य नथी थने ए साते गुणठाणांमां व्रतनियम तप इत्यादि कंश्च ठे नहिं. थही कोश्च कहेशे जे उपशातमोहगुणठाणुं ते तमे ज्ञानमा केम लीधु नहिं? त्या पांचमु ठहुं सातमु गुणठाणुं ते पण समकीत पाग्या पठीज होय ते ज्ञान गुणठाणाज ठे ते तमे ज्ञानमा केम गवेख्यां नहिं? तेनो उत्तर, जे पांचमु छहुं तथा सा-

तमुं गुणठाणु ए जव ग्राही ठे एटले जव पुरो था-
य त्यां सुधीज रहे, पण आगले जवे जेगुं जाय
नहिं अने ए गुणठाणामा जेठ्ठी कर्मनी प्रकृति-
नो दायोपशम थाय एटली ए प्रकृति आवाते
जवे प्राप्त थाय, तथा आ जवने विपेज ए व्यव-
हारचारित्रिना जावमां दणदण उठाळो करे,
अने दणदणमां उपशमे माटे ए गुणठाणा
ज्ञानजावमां शीरीते गणीए " केमके ज्ञानजाव-
मां जे कर्मनी प्रकृतिअोनो दायोपशम थयो अ-
थवा दाय थयो, ते प्रकृतिअो फरी पाठी आवाती
नथी, शामाटे जे दाय उपशमनी प्रकृतिअो अंते
दायकजावमां दाय पामे ठे एटले आठमे गुण-
ठाणेथी ते दसमा गुणठाणा सुधी दायोपशम
जावनी केठ्ठी प्रकृतिअो ठे ते गुणठाणानी वृद्धि
थये थके ते ते प्रकृतिअोनो दाय करतो आवे ते
वारे वारमे दायकजावनुं चारित्रि थाय अने वार-
माने अंते दायकजावनु ज्ञान तथा दर्शन तथा
वीर्य प्रगट थाय, माटे एने ज्ञानगुणठाणांज कथां.
गयां कर्म पाठां न आवे. अही कोड तर्क करणे
जे ।त । पण तमे ज्ञानमां गनुं ठे

ते गुणगणाना गणनां कर्म तो पाठा ध्यावे ठे
 तो एने ज्ञानमां शाथकी गण्युं ? तेनो उत्तर, जे
 तमने समजवामा कसर रही शामाटे जे सम
 कीतनु प्राप्त थवुं तेतो ध्यनादिमिथ्यात्व ज्यारे
 समकीत थाय ठे ते ध्यनादिमिथ्यात्व हवे पाबु
 ध्याववानु नथी ध्यही कोइ कदेशे जे मिथ्यात्व
 तो पाबु ध्यावे ठे तेने कहीए के तमो मिथ्यात्व-
 ना जेद समज्या नथी, केमके मिथ्यात्वना तो ध्य-
 नेक जेद ठे, केमके जीव ध्यनादि प्रमुख ध्यनेक
 जेदे ठे ते ध्यदिध्या लखता नथी केमके ग्रथ बो-
 होळो थइ जाय परतु मिथ्यात्वना चार जेद ठे
 ते मध्ये ध्यनादिध्यनतमिथ्यात्व ध्यजव्यने ठे, ध्य
 ने ध्यनादिसांतमिथ्यात्व जव्यने ठे, तथा सादि
 सांत मिथ्यात्व समकीतीने ठे, शामाटे के समकी-
 त पामीने वमे तेवारे मिथ्यात्व ध्यावे पण ते सा
 दिसांत जांगे होय ध्यने सादिध्यनत जागो मि-
 थ्यात्वमां लागे नहि, माटे ध्यनादिमिथ्यात्व गयु
 ते पाबु नज ध्यावे ते माटे ए समकीतगुणगण
 ज्ञानमां गण्यु ठे, ध्यने पाचमु उहुं तथा सातमु
 गुणगण एतो समकीतना मांहेला जेदज ठे ए

समकीतना गणगाररूप जाणवुं ते समकीतना
समसठ बोळ थकी समजी लेजो माटे चोथु गु-
णगणुं ते ज्ञानमांज ठे पांचमाथी सातमा सुधी
ए त्रणे गुणगणां ज्ञान मध्ये पण ठे तथा अ-
ज्ञान मध्ये पण ठे आमाटे जे समकीत पामीने
जे ए गुणगणाने फरड्यो अथवा अणफरड्यो
ते ज्ञान गुणगणामां गणाय एटले ए समकीत
गुणगणानी गणत्रीमां ठे तथा जे समकीत पा-
म्या विनाना जीव जे व्यवहारथकी समकीतप-
णुं तथा श्रावकपणुं तथा साधु पणुं ग्रहे ठे ए सर्वे-
अज्ञान गुणगणामां ठे तथा ए अज्ञान गुण-
गणामा मिथ्यात्वनो नाश थयो नथी अने जे
समकीत पामीने साधुपणा सुधी पोहोच्या तेने
अनादि मिथ्यात्वनो नाश थयो ठे. तथापि चो-
थे. गुणगणे धर्मध्यान ठे पण पांचमा आदि
गुणगणाने विठे धर्मध्यान ज्ञासन थतुं नथी
एवुं पूर्वान्तर्यना घणा . ग्रथोमां लेख ठे तथा-
पि सर्व ग्रथनी सारयो थपाती नथी तोपण ए
क ग्रथनी साख थपाती छद्म जे लमास्वाती वा-
चक जे मोग् थया अने जेण तत्त्वार्थ ग्रन्थ

कयो तथा प्रशमरति आदि घणा ग्रन्थो करेला
 ठे, ते घणीनो करेला गुणस्थानकनमारोह ग्र-
 न्थ तेने विषे कह्यु छे

॥ उक्तव ॥

प्रणिहतिदाणाद्धेनसाम्यमाखंन्यकर्मतत् ॥

यन्नहन्यान्नरस्तीव्रतपमाजन्मकोटिजि ॥ १ ॥

हवे एनो अर्थ कहिए-सम समाखन्व्य केहेता
 जे सम केहेता समता परिणाम एट्खे समपरिणाम
 रागद्वेष रहित स्वस्वजावनुं आखंवन केहेता पो-
 ताना स्वजावनेज ध्याइ रखावे एवुं जे धर्म करतो
 थको दाण अर्थ केहेतां जे आख्यमीचीने
 उघाणीए तेने दाण कहिए तेनुं अर्थ तेने अडधी
 दाण कहिए ए अडधी दाणज एवु ए समजावीक
 धर्मने विशे स्वस्वजावने अवलंबीने तेट्खी वखतमां
 जेट्खा कर्म प्रणिहति केहेतां हणे एट्खे अडधी
 दाण समजावे ज्ञानमां थीरजावे रहेतां टुटे एट्खा
 कर्म बीजा थकी न टुटे ते कहिए ठीए. एट्खे
 जे कोइ जीव समजाव विना रागद्वेष परिणतिनुं
 उठाण जाणतो नथी स्थिर स्वजाव थयो नथी
 तीव्र आकरा तप करतो थको प्रवकोटीजि

केहेतां कोटानकोटी ऋव सुधी बाह्य तपनो विचार
 कहुं वुं श्रीरीखवदेवने वारेवशी तप हतो तथा
 श्रीमाहावीरने शासने उमासी तप हतो वचला
 वावीशतीर्थकरने वारे आठमासी तप हतो ते
 मध्ये श्रीरीखवदेवस्वामीनां शासननो ऋव कहुं
 वुं. जे कोइ आठवसनी उमर थए थके व्य-
 वहार धर्म पाप्यो होय ते क्रोड पूर्वनुं आउखु
 ठे त्यां सुधी वस दहाडा सुधी अपवास चोवी-
 आहारा करे अने एक दाहाडो पाणुं करे एवी
 रीते क्रोड पूर्वनुं आउखुं पूर्ण करे एवा कोटान
 कोटी ऋव सुधी एवो तप करे अथवा कायकेशा-
 दिक अनेक रीतना तप करे तोपण कर्म खपे न-
 हि एट्ठे अडधी दणो ज्ञानीनां जेट्ठ्यां कर्म खपे
 तेट्ठ्यां ए तप थकी न खपे शाकारण माटे जे ए
 तप ठे ते कर्मबंध हेतु ठे पण मुक्ति हेतु नथी
 जेम श्रीबाहुवलस्वामी सम्यग्गुणसहित अथवा
 सम्यकज्ञानसहित अथवा व्यवहारचारित्रसहित
 तथा ठठा सात्तमा गुणठाणानुं निश्चयचारित्र-
 सहित तथा काउसग्गादिक अन्यंतर तपसहित
 दिक वरशीतपसहित हता

तोपण कर्म खप्या नहि, जामाटे जे यथार्थ सम-
 ज्ञावना आवायो रागद्वेष परिणतिनो उठाव्यो रह्यो
 तेथी करीने कर्म खप्यां नहि जे वारे रागद्वेषपरि
 णतिनु उठाण गयुं अने समजाव स्वजाविक
 आत्मस्वरूपमां गुणपर्यायिनो जिनजिन विचार
 ते वारे पठी एकत्वजाव थयो गुणपर्यायने
 अव्य एकरूपे ध्याया ते अवसरे कर्म क्षय थझे
 केवलज्ञान उपन्यु तो जुओ के वरसदीवस सुधी
 कृधादिक वावीसे परिसह सहा पण कर्म ख-
 प्या नहि अने समजावे अडधी क्षणे कर्म क्षय
 कर्था तो एतो समकीतादि ज्ञान दर्शन चारित्र
 हतुं आत्मस्वरूपनु जाणपाणुं गुण ठाणानी परि-
 णति प्रमाणे हतु तोपण कर्मक्षय गया नहि अने
 आ तो समकांतरहित जीवो प्राय दीसे ठे, ते
 जीवना कर्म शा थकी खपशे माटे तपकष्टादिक
 थकी कर्म खपे नहि अही कोइ केहेशे जे ए
 श्लोकमा अडनी क्षणे जे ज्ञानी कर्म खपावे एट्ला
 करोडो जेवे पण तपवाव्यो कर्म न खपावे एवु
 कह्यु तो अही एवो न्यायमात्रमपडेजे जे थोडा
 पण कर्म खपावे, अने तमो कहोवो कर्म न खपे

जे धर्म मुक्तिनो दातार तेने एक अंश मात्र करी
 बतावे ठे माटे ए व्यवहारना शास्त्र उपर कंश्पण
 प्रसंगो राखवो नहि अहिच्यां कोश कदेशे, जे
 सूत्र पण व्यवहारमां गयां तेने कहीए के सूत्र
 मध्ये तो नयत्रणनांज वचन ठे एटले नैगम १,
 संग्रह २, व्यवहार ३ नां वचन ठे अने धर्म तो
 शब्दनयथी ठे अने ए त्रण नयनावचन ते तो
 एना गजा प्रमाणे काम करशे शामाटे जे पांच
 चारित्रिसूत्र मध्ये कहां ठे ते मध्ये उपलां वे
 चारित्र मध्ये तो क्रिया कंश् ठे नहि अने प्रथम
 नां त्रण चारित्रमां क्रियाठे ते मध्ये त्रीजुं परि
 हार विशुद्धचारित्र तेनी क्रिया घणी उत्कृष्टीठे
 तो पण एने देवलोक तो बीजुं बतावे ठे
 उत्कृष्टुं आठमुं कहेठे तो त्यां सुधी तो तिर्यच
 पंचेष्टी पण जाय ने ए पण जाय तो श्युं विशेष
 माटे ए गुणगणा ज्ञानमां गवेस्यां नथी तथा
 जे पूर्वे बीजो श्लोकलखाव्योठे तेनो अर्थ समजो
 के ज्ञानीने प्रतिक्रमण प्रमुख क्रिया करवानी कंश्
 पण जरूर नथी शामाटे जे ए पदमां प्रथम कहां
 ठे २ गुणगणानी आदे देश्ने एटले

ज्ञानी पुरुषोंने खट ध्यापत्र्यादिक कंष्ट करवानी
 जरूर नथी अने ते करे पण नहि, एमां कह्युंते
 के सत् व्यान जोगमा रमे एटले ए समजाविक
 शुद्ध जावज होय एटले ए लंगणसाठमा श्लोक-
 नो अर्थ कह्यो माटे ए गुणगणा ज्ञानमां वदे-
 च्यां नथी ए तो चोथा गुणगणाने दीपावा वास्तेज
 ठे तथा जे लपसम गुणगणु अगियारमुं ठे ते
 ज्ञानमाज ठे पण ते गुणगणावाळो पावो पमेज
 माटे अमे ज्ञानमां गण्यु नथी ते माटे ए ज्ञान
 गुणगणामा तप, जप व्रत, पचखाण कंष्ट ठेज
 नहि अहिआं कोष्ट कदेशे जे सथारो करे तेने
 तपादिक थयो के नहि अने तीर्थकरोए मंथारो
 करयो ठे तेनो उत्तर जे जेने असनादिकनु जोग
 कर्म जे बांधेहु हतुं ते जोगवी रह्या एटले सथारो
 थज्ज रह्यो ठे कष्ट एमने सर्वेने सरखी रीते ठे
 नहि जेने जेठ्यो आहारनो लदय हतो एटलो
 जोगव्यो भगवान वीरस्वामीने वे दिवस आल-
 खामां थाकता असनादिकनो लदय मटी रह्यो
 ते वारे वे दहामा असनादिक न लीवुं अने
 सथारो तो क्योँज नथी तथा ऋषभदेवस्वामीए

ठ दिवस थाकते आहार बंध थयो बाकीना पांच दिवस अधिक न्यून छे पण आहारनो उदय मटेथी बंध थाय छे तेने व्यवहारवाळा तप माने जेम वीरस्वामीनुं निशाळगयणुं इंडे मिथ्यात्वमां कहुं ठे अने आजना लोको तेने धर्म मानीने वेठा ठे अने तेज काम करे ठे वळी जगवाननी मूर्ति ब्राह्मणना स्वामी नीचे बेसामेठे एवं अज्ञान प्रवर्ती रहुं ठे तेवुं व्यवहार प्रवर्तन ठे माटे व्यवहार मार्ग थकी अथवा तप कष्ट थकी कर्म दाय थाय नहि, कर्म तो ज्ञान वडेज दाय थाय पळ्ळे ए त्रीजा श्लोकनो अर्थ थयो. ह्वे चोथा श्लोकनो अर्थ कहिए ठीए—“तत्रज्ञानी कम्म” कहेता ते आत्मानुं जे अज्ञानपणुं ते वडे जे कर्म दळ आवीने वळग्यां ठे ते कर्मनो नाश करवाने मातमै कहेतां एज आत्मा चिदरूप कहेतां चिदा नंदरूपज ठे, शरीर कहेता शरीरने विशे आवीने रह्यो ठे ते कर्मने जोगे करीने शरीर प्राप्त थयुं ठे ते कर्मरूप शरीररूप सर्वनो नाश करवाने समर्थ बाह्य ज्दष्टीने निवारीने परजावनो त्याग करीने

वृद्धिनो कर्त्ता तथा पूर्ण ध्रुवो, ते कये गुणगणे
 छे शामाटे जे अहीयां तो अंशे गुण प्रगट्यो ठे
 संपूर्ण गुण वारमे गुणगणे थाशे ते गुण अहि-
 यांथी अंशथी वृद्धि करवी, ते आठमे गुणग-
 णेथी गुणनी वृद्धि थाय शामाटे जे पूर्वाचार्य-
 कृत ग्रंथने विषे वेदक समकीत आठमे जातां थाय
 ठे, माटे ए सम्यकज्ञान गुणनी वृद्धि आठमाथी
 ठे अहिआ कोइ पुठे जे वचला त्रण गुणग-
 णामां आत्मगुणनी वृद्धि न करे ते माटे पूर्वे
 कही गया ठीए ने ते पुदगलीक गुणनी वृद्धि
 ठे पण आत्मगुणनी वृद्धि ए ठेकाणे जणाती
 नथी शामाटे जे ए गुणगणावाळानी गति नव
 श्रैवेक सुधीनीठे ते उपरांत जणाती नथी ते पण
 प्रमादगुणगणावाळानी तो कांइ देवलोकनी गति
 यथार्थ माहुम पन्ती नथी अने जे आठमा देव
 लोक उपर जाय ठे ते ज्ञान ध्यानना बलवाळा
 जाय ठे ते अन्यमति पण जाय स्वमति पण
 जाय अज्ञव्य पण जाय ठे त्यां मिथ्यात्वी पण
 जाय ठे एमां कांइ विशेष नथी अहिआ कोइ

कहेशे जे क्रियाना बळवमे जायछे ते वात मिथ्या
 ठे आगळनी गाथामां क्रियानी गति हती ते
 देखाडी ठे जे ज्ञानध्यानवाळो जाय ते आत्म-
 उपयोगवाळो जाय अने आत्मउपयोग रहीत
 होय ते पण जाय पटले मिथ्यात्वादिक आत्म
 उपयोग विनाना ए जीवो जाय ठे, अने ते
 ज्ञानध्यान करेठे तेमज आत्मा आत्मा पोकारे
 ठे पण वस्तु धर्म आत्मस्वप्नाय पाम्या नथी एवा
 जीव आज पण ज्ञानी ध्यानी देखाय ठे ए सर्व
 व्यवहारथकी कहीए ते पण अन्व्य मतिमा कंश्क
 विशेष जोवामां आवे ठे ने स्वमतिने विपे तो
 घणा जीवमान पूजाना शोगी छे अने धमाधम
 आरजपरिग्रहमा लागेला ठे ते नोखे नोखे कारणे
 जोइ लेजो, अने ज्ञानध्यानमा तो कोइ जवह्वा
 जीव लागेला जणाय ठे, तथा आठमा देवलोक
 उपर जे जीवनुं जवु ते तो कोइक सख्याते
 अमख्या ते काळे जाय शामाटे जे उपर जवामां
 तो एक मनुष्यज खप लागे उपला
 ते कोकना देव पण देवनां

आयुष्य पण असंख्याता काळनां ठे, ते असंख्याते
 काळे आयुष्य पुरु थये एक देव चवे ते वारे एक
 देवनो समास थाय थने संख्याता देव माटे अ-
 संख्याते काळे अथवा संख्याते काळे कोशक
 अवसरे जाय एटलामाटे लपरनी गतिमां जनारा
 जीव घणा होय नहि माटे आत्मधर्मना पामवा
 वाळा कोशक जीव होय एटले आठमे गुणग-
 णेथी सम्यक् ज्ञान गुणनी वृद्धि थाय ते दशमा
 सुधी थाय एटले वारमें गुणगणे गयो त्यां रत्न
 त्रयीनी प्राप्ति थाय थने ते तेरमा गुणगणामां
 जइ ए ऋद्धि जोगवे पण तेरमा गुणगणामा
 कांइ पण गुणनी वृद्धि वा प्राप्त थवुं ठे नहि
 माटे ए वारमानी लपार्जेली शिद्धि जोगवे ठे ते
 वारे पठी चलदमे गुणगणे जे वारे जाय ते वारे
 जव संवंधी चार कर्म वळगोलां ठे तेनो त्यां नाश
 करे ते वारे आत्मा अवेदी तथा अवेदी, अनेदी
 अक्षय, अविनाशी, अनंत सुखमय मुक्तिमा जश्ने
 रहे एम ए वे चोथे तथा वारमे गुणगणे गुण
 प्रगटे ठे थने चोथाथी गुणनी वृद्धिकर्ता आठमुं

नवमु ने दशमुं छे अने तेरुं गुणगण पूर्वं
 उपार्जेली रिद्धिने जोगवानुं छे अने चउदमे
 गुणगणे भव संधी कर्मनो क्षय करीने स्वस्व-
 रूपमय अनेंत सुख प्राप्त थयु ते सिद्ध परमात्म
 पणे जोगवे ठे एट्या माटे ज्ञाननो अज्यास करवो
 ज्ञान विना दर्शन तथा चरित्र तथा मुक्ति होय
 नहि ने सर्व सुखनो दातार ते ज्ञानज ठे एवो
 पदार्थ कोइ बीजो दीसतो नथी.

॥ उक्तंच ॥

त्रिभुवनेस्ति परं ज्ञान, ज्ञान सर्वार्थ साधक ॥
 अनिष्ट वस्तु विस्तार वरकं ज्ञानमीरितं ॥१॥
 ज्ञानादि साध्य ते मुक्ति, ज्ञानज्स्वर्गाज्वंसुखं॥
 लज्यंते प्राणिनो यस्मात्, ज्ञान उमापम ॥२॥

अर्थ-हवे ए वे श्लोकनो अर्थ कहू ते सा-
 ज्ये त्रिभुवनेस्ति केहेतां जे त्रणभुवन स्वर्ग १
 मृत्यु २ पाताल ३ ए त्रणे भुवनने विशेषे ज्ञान जेवो
 बीजो कोइ पदार्थ तेवो मोटो दीसतो नथी एट्ये
 सर्व थकी अधिक एक ज्ञान पदार्थजठे पुनरपी
 ज्ञान केवु ठे के सर्वार्थ साधक केहेतां जे अथा

जगतनी मांहेली कोरे जेटला जेटला अर्थ पो-
ताना आत्माना ठे अथवा अन्य आत्माना ठे,
एटले अन्य आत्मा केहेतां विद्या सिद्ध आदे
अथवा देवलोक नरलोकादिक रिद्धिनुं प्राप्त थावुं
ते सर्वे ज्ञानयकीज ठे पण अन्य आत्मा केहे-
वानो हेतु एटलोज ठे जे ए जीव सम्यक्त्व पाम्या
नथी ते थकी ए जीव पुद्गलीक रिद्धिने चाहे छे
तेने अन्य आत्मा कहीए अने तेनुं ज्ञान तेने
पण अज्ञानज कहीए तथा जे संवेगधारी जीव
छे ते तो आत्मीक रिद्धिने चाहे छे तो तेने मति
श्रुत जावत केवळज्ञाननी प्राप्ति थाय तथा यथा
ख्यात चारीत्रनी पण प्राप्ति थाय तथा अनिष्ट
वस्तु केहेतां जे दुखना कारण जन्ममरणनां
वधारनारां अथवा क्लेश प्रमुखना करेलां घणी
जातनां विघ्न कहां ठे तेनो जे नाशकरता एक
ज्ञानज समर्थ ठे, ते विना कोश्रपण आपणुं दुःख
दुर करे एवा नथी एटले ए पहेला श्लोकनो
अर्थ कह्यो. हवे बीजा श्लोकनो अर्थ कहीए
छीए. ज्ञानादिक केहेतां ज्ञान आद्य पदे एनुं जे

साधन एटले ज्ञाननुंज साधन करवुं एटले साधन
तेज सद ते मुक्ति कहेतां एज मुक्तिनुं साधन
ठे ने एज मुक्ति सगाइ रही माटे एमां ज्ञाननु
साधन सदा करवु तथा तेमा ज्ञाननुं यथार्थ
साधन न थाय तोपण ए ज्ञान स्वर्गादि प्रोवन
सुखं एटले जो सर्वार्थसिठना सुख आदे देइने जे
सुखनी प्राप्ति थाय अने ते ज्ञान सुखे सुखे काढे
अने पठी मोक्षनु सुख पण पामे एवो ए ज्ञान
नो जीव ससारी ठे ते जीवोने ज्ञाननोज अन्या-
स करवो शा, माटे जे ज्ञान केवु ठे ? छुमापमगं
कहेता साक्षात् रूढगृहरूप ठे एटले जेम क
पपवृद्ध मनोमञ्चित पुरे तेम ए ज्ञान पण मनो
वाञ्छित पुरे, माटे ज्ञाननो अन्यास करवो, अने
जो ज्ञाननो अन्यास नहि थाय अने आत्म
स्वरूपनु जाणवु नहि थाय तो तेनी पासे सम
कित पण नथी शा माटे जे आत्मस्वरूपनी
श्रद्धा एने बेठी नहि, तेथी एनी पासे समकित
नथी, केमके समकित एवु नाम तो श्रद्धानुंज
ठे अने ज्यारे श्रद्धा न पेडी तो ए जीव मुक्ति

क्यारे पामशे ? एतो ज्यारे सम्यग्ज्ञान थशे त्यारे मुक्ति प्राप्त थशे. ए कारण माटे हे भव्य जीवो आत्मस्वरूपनो अणुजव अने जाणपणुं एनुंज नाम ज्ञान ठे. माटे तेनोज अन्यास करजो तो तेथीज तमारी मुक्ति थशे, एटले ए तेरमी, गाथानो अर्थ कह्यो.

क्रिया तो मिथ्यात्वी करेठे । तेम अणुवि जाणोरे ॥
असंजति कहीने बोलाव्या । पंचमे अंगे चित्त
आणोरे ॥ १४ ॥

हवे ए चौदमी गाथानो अर्थ कहीए छीए जे क्रिया कहेतां जे साधु श्रावकनी करणी एटले ते व्रत, नियम, तप, आवग्यकादि क्रिया ए सर्वे मिथ्यादृष्टि जीवो पण करे, तथा समकृती जीवो पण करे, तथा अणुव्य जीव पण करे माटे ए कर्तव्यमां कांशपण धर्म नथी ए तो एक कल्पनो व्यवहार बंधायो ठे ते व्यवहार प्रमाणे चाले जेम कोश एक नातिना व्यवहार अथवा कोशक गामनी रीत प्रमाणे व्यवहार कोश जे ठे, कोश जीवने नथी रुचतो

पण ते व्यवहार प्रमाणे चालवु पडे ते मध्ये जे
 जीवने रुचे ठे ते जीव कइ सर्वे परमार्थने जा-
 णता नथी पण तेमां रच्योपच्यो रहे ठे ए पण
 एक लोकरुढी प्रमाणे मार्ग ठे. तेमज अहियां
 मिथ्यात्वी आदे चार प्रकारना जीवोनुं कर्तव्य
 एक रीतनुज होय ते मध्ये कोइ रुचिथी कोइ
 अरुचिथी ते मध्येथी पण कोइ समजिने कोइ
 वणसमजाए सर्वे कुळाचार उपर चाले ठे ते म
 ध्ये केट्खाएक नवा नवा मार्ग अष्टिगोचरमां
 सास कहेनाय ते मार्गने लोक वळगी पड्यु छे
 ते तो मार्ग असत्यज ठे, तथा आ क्षेत्रने विषे
 पूजा जिनमदिरे जणावे तेनी पाठळ जमवानु
 जरु जोज् ए कोइ देशप्रवर्तने पण चाल
 नथी तथा कोइ शास्त्रे पण ए वात नथी तथा
 संकप्तो घेरथी जीख मागीमागीने एम पूजाजमण
 उरु करवु अने कहेवु जे जिनशासननी शोभा
 ठे ए शास्त्र रीते अथवा देशचाल जोता कोइ
 रीतथी धर्मनो मार्ग नथी तथा पुन्यनो पण मार्ग
 लोको ए काम आगेवान थडने चलवे

छे तेनी ध्याजिविका ठे ध्यने जे जमवा जेगा
 थाय ठे तेने पेट चरवानो स्वार्थ ठे ध्यने शास्त्रे
 तो एवुं कह्युं ठे के श्रावक ध्यजाची होय कोइ
 काळे श्रावक याचना करे नहि. ध्यने ध्या काळे
 अहियांना लोकोने जोइए ठीए तो वरसदिव-
 सने विपे एक दिवस पण एवो जणातो नथी
 जे ध्याज तो जीव नहि मागे एवो तो ध्यवसर
 लाघतो नथी तथा कोइनो काळ ध्यावी पहां-
 च्यो होय तो तेना घरनां ठोकरां तथा सगांव-
 हाळां तेने मालम न पड्या देतां तेना घरनुं सुं
 थियुं तथा सावरणी सुळां लइ जाय ठे ध्यने
 पाठळथी इनकार पण जाय छे ए सर्वे देराने
 थोठे कमाइ खाय ठे ध्यने जे पेला पेटचरा कह्या
 ते लोको तेनी प्रशंसा करता फरे ठे पण जि-
 नशासननी रीत ने शास्त्र जोता तो एमां मि-
 थ्यात्व ठे ध्यने ध्यनंतानुबंधीनी चोकडी सावित
 ज्ञासन थाय ठे. शा माटेशास्त्र तो मानवुनयी
 तथा परमात्मानी ध्याज्ञा पण मानवी नथी पो-
 तानुं दील्ल चाह्य तेम तोफान करता फरे ठे ते

पण जिनशामनमां उत्कृष्टा कहेवाय ठे. पण
 सिद्धातनु रहस्य तथा प्रवर्तन जोतां ए जीव
 महा माठी गतिना हेतु छे तथा जे कोइ जेख
 लेइने मायु नाम धरारे छे ने एनी पुष्टि करेठे
 ने एना जेगा जेठे छे ते जीव पण अर्नता जव
 नरकादि दुख जोगवजे ए वातमां कांइपण
 शका राखी नहि ए वात श्री माहानीपीथ
 सूत्र तेनु पांचमु रमणसार नामे अध्ययन ते म-
 ध्ये सावत्राचार्यनो अधिकार छे ते जोइने वाकेव
 थजो अमे ए सूत्रनो आलावो खरयो नथी
 ग्रंथ जारे थाय माटे एठे आ तो आज्ञा वि-
 रुद्धनी वार्ता अमे कही, एठे परमात्मा जा-
 खीत वस्तु सत्य करी माने, अने क्रिया करे
 तेने क्रियावादी कहीए ते क्रियावादीना मत १७०
 ठे ते मध्ये आ जिनमतोना क्रियावादी जाणवा
 त पण क्रियापदादिकु मत लेइने करे ठे ते
 जीव नरकने विषे जपजे ते श्री दसाश्रुत स्क-
 धने विषे कह्यु ठे

॥ उक्तंच ॥

सेकितेकिरियावाश्याविजवति अहियवादि
 आहियपन्ने आहियदिठि सम्मावादी नीयावादी
 संतिपरलोगवादि अठिइहलोए अठिपरलोगे
 अठिमाता अठिपिता अठिअरिहंता अठिचक
 वटी अठिवलदेवा अठिवासुदेवा, अठिसुकडडु
 कडाणं, फलवित्ती विअेपेसुचिणाकम्मा सुचि-
 णाफलाअवंतिइचिणा इम्मा इचिणफलाअवंति,
 सफले कल्लाणे पावए पिचायति जीवा अठिने-
 रइया, अठिदेवा, अठिसीद्धीसेएवंवादि एवपन्ने
 एवंदिठा ठंदए गमतिनीविठे आविलवति सेल-
 वंतिमहि जावउत्तरगामिएनेरइए ॥

अर्थ - एट्ठे ए क्रियावादी आठला बोल
 सर्वे सदहे अने क्रियामा राग रहे ते मरीने न-
 रकने विपेअपजे हवे अपर लखेला सूत्रपाठनो
 अर्थ कहुं ठुं. सेकंतं कहेतां कोण ते क्रियावादी
 ए प्रश्न थए थके जगवान हवे कहे ठे जे क्रिया
 वादी गुरु ते क्रियाने आस्तीरूपे माने ठे अने
 क्रियामां मग्न रहे ठे अने क्रियानोज उपदेश

करे ठे एवं जश्चावीजवती कहेता एवुज स्व-
 रूप होय अने अहीएवादि कहेता अक्रियवादी
 ते अहितकारी ठे अहीपत्रे कहेतां अहीतपरी
 गना ते रूप आदस्वाजोग आहीएदिठी कहेतां
 सम्यक्तरूप ते वदेतेहीत छष्टी कहीए तथा स-
 मावादो कहेता समकीतनेज कहे ठे नीत्यावा-
 दी कहेता नीत ते मोक्षनेज माने ठे पुनहराग-
 नो ने मननो अज्ञाव मानेठे सतीपरलोगा वादे
 एठले परलोकने मानेठे आलोकने मानेठे पर
 लोकने आस्तीपणे माने छे माताने आस्तीपणे
 माने ठे पीताने आस्तीपणे माने छे अरीहतने
 आस्तीपणे माने ठे चक्रवर्तीने आस्तीपणे माने
 ठे बळदेवने आस्तीपणे माने ठे वासुदेवने आ-
 स्तीपणे माने ठे सुकृत जे सामायकादीक तेने
 आस्तीपणे माने ठे दुकृत जे पाप कर्मने माने ठे
 एना फळनी वस्ती विशेष करी जाणे ठे तेमां वि-
 संवाद नथी पवीत्र कर्म तप सजमादीक तेनुं फ-
 ल शुभ कर्मज माने ठे वली पाप कर्मनु जे फळ
 ते माठां कर्म रूपज माने छे जेवु जेवु कृत्य तेवुं
 तेवु फळ माने ठे कव्याण ते धर्मनु फळ ने सत

जाणे ठे पावीअ केहेतां पापनुं फळ दुर्गती एट-
 ले नरकादीक पचाअंती केहेतां तेने विशे पचे
 ठे एटले नरकने विषे दूख जोगवे ठे जीवनुं आ-
 स्तीपणुं जाणेंठे नरकने आस्तीपणे जाणे छे देव-
 ने आस्तीपणे जाणेंठे सिद्धने आस्तीपणे जाणे
 छे सएववादी केहेतां एवो जेए क्रियावादी ते पु-
 र्वोक्त जे कह्या ए बोल सर्वेने सत् करी माने ठे
 अने मुख थकी पण बोल केहेछे एवुं ए प्ररुपे छे
 एवी ठे अष्टी जेनी एवो थको पण ठंद केहेतां
 जे पोतानी खुशीए एटले पोताना अतिप्राये क-
 रीने क्रियाने विशे ठे राग जेने एवी मतीए करी
 नीवीष्ट केहेतां जेनुं चीत छे तेवा जे पुरषो सेव-
 ती मही ठे एटले मोटी इछा वंछा रहीत ठे अ-
 हिथ्यां एटली क्रियाने विशे तथा कोइक जीवने
 परलोके रीद्धी पामवादीकनी इछा इत्यादीक मो-
 टी इछा होय ते माटेते जीव ए क्रियावादीज क-
 हीए ते जीव मरीने जाव उत्तरागामीने रह्या ए-
 केहेता जावत ए जीव मरीने उत्तर नरकने विषे
 उपजे शिष्य वाक्य. हे स्वामी उत्तरनरकमां उ-
 पजे त्यारे दक्षण नरकमा कोण उपजे एम अ

हिथ्या नरकनो जेद पामवानुं शुं काम छे ? गुरु
 वाक्य, हे देवानुप्रीय दक्षिण नरकने विशे पुर्वे
 जे ध्याज्ञा रहित नवाडी कहा ते उपजे ते थ्य
 लावो थ्या सुत्रमाछे पण थ्यहीथ्यां लखाव्यो नथी
 पण ध्याज्ञा रहित जे जीवो ते पोताने छंदे प्रव-
 र्तें ठे ने धर्म धर्म पोकारे ठे ते जीव दक्षिण न-
 रकने विशे उपजे थ्यने जे जीव ध्याज्ञा माने छे
 थ्यने क्रीया उपरज रुची रहेठे ते जीव उत्तर न-
 रकने विशे उपजे एवो थ्या सूत्रनो थ्यजिप्राय ठे
 तथा शो फरक ठे ते साजळ जे दक्षिण नरक
 थ्यने उत्तर नरक वेनी वेदनामां सिद्धांतनो रह-
 थ्य जोता कश्क सामान्य विशेष हशे बीजो फ-
 रक ए ठे जे ए ध्याज्ञा रहित प्रवर्तें ते जीवो कृ-
 ष्ण पक्षी कहा ठे थ्यने दुर्लज बोधी कहा ठे
 थ्यने थ्यानतो काळ ससारमा रखडगे तथा ध्याज्ञा
 सहित जे जीव क्रीयावादी कहा ते जीव शुक्-
 लपक्षी ठे थ्यने सुलजबोधी कहा छे थ्यने थोमो
 फाळज षट्फु थ्यागे एवो थ्या सिद्धांतनो रह-
 थ्य ठे माटे ए क्रिथ्यानो पक्ष तमने थ्योळखाव्यो
 हवे जे थ्यसजती कहिने बोलाव्या केहेता जे स

मकीतादिक गुण नथी पाम्या अथवा पामीने
 वम्या ठे अथवा अजवि ठे ए सर्वेने जैनमार्गनी
 आस्था ठे एट्खे जेने पुर्वे कहेला सिद्धांतना वो-
 ल ते सत्य करीने जाणे ठे पण आत्मस्वरूपनुं
 जाणपाणुं नथी तेने अज्ञानीज कहीए अने ते
 जीव जे नवगैवेके सुवी जाय एवु पाचमुं अंग
 केहेतां ऋगवतीजीमां कहुं ठे

॥ उक्तं च ॥

ऋगवती असंजय ऋवियदव देवाणजहने-
 णं ऋणवासोसुं उक्तोसेणं उवरिमि गविज्जेसु ॥
 एट्खे ए अज्ञावाने विणे असंजताने नवगैवेके
 उक्तपु जावानुं कहुं ते जीव समकीतादिक गु-
 ण रहित ठे पण जैनमतने विषे दिक्का अंगि-
 कार करी ठे अने वेहेवार ज्ञान ध्यानने विषे र-
 च्या पच्या होय एवो जीव कोशक जवलो जाय
 अहियां कोश केहेसे जे क्रिया कष्टादिवालो जा-
 य ते वात तो सर्वथा मिथ्या ठे शामाटे जे क्री-
 या कष्टवालानी गती जघन्य बीजु देवलोकने
 उक्तपु आठमुं देवलोक तो परीहार वीशुद्ध चा-

स्त्रि वालाने श्रीपन्नवणांजीमां कह्यं ठे हवे ते थ
की अधिक सामायक चारित्र तथा ठेदोपस्थाप-
न चारित्रमां तो कष्ट अधिक ठे नहि के ते धणी
कंइ अधिक जाए तथा सुक्ष्म संपराय चारित्र-
वाळो तो अनुत्तर विमान विना जातो नथी एवं
प्राये कहीए ठइए, पण ए गुणठाणामां मरण
नथो, पण अगिअरमा गुणठाणानी अपेक्षाए
बोल्या ठइए तथा यथाख्यात चारित्र वाळो तो
मोक्षेज जाय माटे विचारी जुवो के ज्ञान ध्यान
विना आठमा लपर कोण जाय ? माटे ज्ञान
ध्यानवाळोज जाय रुदापि तमे केहेगो जे ज्ञान
ध्यान वालाने तमो असजती केम कोहो ठो ते-
नु कारण अमे कइ ज्ञान ध्यान निश्चयेयी कीधुं
नथी अने ए वेहेवार ज्ञान ध्यान तेनु कइक जो
मननी स्थिरता होय तो फळ पामे अगर जथा-
स्थ मन स्थिर न रहेतो ए ज्ञान ध्याननु कांइ
पण फळ ठे नहि

॥ लक्तंच ॥

ज्ञाने ध्याने दाने माने मौने सदोयोतो ऋवतु ॥
यदिनिर्मलंन चीत्त तदाहृत ऋस्मनि समग्रं ॥१॥

के जेनुं चित्त केहेतां ज्ञान आत्म स्वप्ना-
वमां स्थीर नथी थयुं तेनुं ज्ञान ध्यान वलीने ज
स्म थइ जाय ठे एवो ए श्लोकमां अर्थ ठे माटे
ज्ञान ध्यान विनातो एट्ये जाय नहि शामाटे जे
पुर्वे जगवतीनो अलावो लखाव्यो ते घणो ठे प-
ण ते मध्ये सर्व जीव आश्री देवगतिनो जाव क-
ह्यो ठे ते जोता असंजती केहेतां जे गति अवर-
ती ठरे पण ते जाव अहिच्यां नथी शामाटे जे
श्रावकने तो वारमा देवलोक उपर वताव्युं नथी
तथा सम्यक्त्वादिक पामेला जे त्रीजं च तेने आ
ठमा देवलोक उपरंत वताव्युं नथी अहिच्यां को-
इ केहेशे जे अन्य मतना श्रमणादिक जता ह
शे तेपण वात अहिच्यां ठे नहि शा माटे जे अ-
न्य मतना परित्राजकने पांचमा देवलोक उपर
जवानुं कहुं नथी तथा बीजा तो सर्वे एथी नि-
चाज ठे, तथा आजिवीकामतिने वारमुं देवलो-
क कहुं ठे माटे ए ठेकाणे तो जैनना साधुज
जाय बीजो कोइ जाय नहि, पण जेनुं ज्ञान आ-
त्मस्वप्नावमां स्थीर थयुं ते जायते पण एक परा-
ए वचन ठे, शा माटे जे ए उत्कृष्टी जे गतिथ्यो

कही ठे त्यां कंठ घणा जीव गया मालम पद-
ता नथी शा माटे जे त्रीजव पंचेडी आठम दे
वलोकें जाय तेतो कोठ सूत्रमां गयो जणातो न
थी तथा श्रावकने वारमु देवलोक कहु ते पण
कोठ सूत्रमां श्रावक वारमे देवलोक गयो जणा-
तो नथी तो उपरखानो जगाना सेनां होय ? शा
माटे जे आठमा उपला देवलोकने विशे देव तो
संख्याता ठे ते पण एक पद्योपमने असंख्यातमा
जागे ठे अने ते देवानु आठसु जघन्य अराम
सागरोपमनु उत्कण्ठु एकत्रीस सागरोपमनु छे ए
ठले नवमे देवलोकें जघन्य अराम सागरोपमनुं
ठे अने नवमे अत्रैके उत्कण्ठु एकत्रीस सागरोप-
मनु ठे अने एक सागरोपमनां तो दश कोडा
काम पद्योपम जाय त्यारे एक सागरोपम थाय
छे अने अहिआ तो ए सखे देव अशने एक
पद्योपमने असख्यातमा जागे देवज ठे, तो ए
सज्या केदाहामे खाली थाय ने बीजो उपजे माटे
एतो कोष्क जवहो जीव जाय ठे, माटे ए परा
ए शब्द ठे ते श्री जगतीजीने विशे कहु जे अ
सजती नवअत्रैक सुगी जाय इति चणुदमी गा
थानो अर्थ सपूर्ण १४

॥ गाथा ॥

प्रमाद जावे क्रिया जाखी ।
 स्वजावे ज्ञान ते दाख्युरे,
 एह वचन शम्भति आढिक देखी ।
 ज्ञानशु चीतहु राख्युं रे ॥ १५ ॥

अर्थ.—ह्वे ए गायानो अर्थ कहीए ठह-
 ए एटले प्रमादजावे क्रिया केहेता जे क्रिया ठे
 तेतो परस्वजावने ग्रहीने ठे अने सस्वभावनी ग-
 ती जे आत्म उपयोगनी रमणता तेतो थीरता
 जावमां ठे अने तेतो अप्रमादो कहेवाय ठे ए
 तो अहीथा ठे नहि अने एतो परजावनोज उ-
 पयोग ने परजावनीज रमणता ठे तेतो ठग गु-
 णगणानी करणी अथवा पहेलां गुणगणानी
 करणी बने एकज ठे शामाटे ? जे निश्चे थकीतो
 समकीत फरसतो नथी अने मिथ्या छटीज ठे
 अने ते व्यवहार थकी चारीत्र अगीकार करे ठे
 अने बाह्य थकी व्यवहार क्रिया साधुनी करे ठे
 परंतु निश्चे जोता तो ए मिथ्यात्वज ठे. माटे प-
 हेला गुण गणानी करणी ठे तथा कोशक जीव

समकीर्त पामीने चारित्र्य श्रंगीकार करे ते जीव
पण प्रमाद गुण ठाणे रह्यो थको एज करणी
करे माटे मनेनी करणी एकज ठे श्रने ए कर-
णी करमा थकी कइ ए साधु थयो नहि साधु
तो स्व उपयोगमा रमे श्रने ज्ञान ध्यानवने श्रा
त्म स्वप्नावमां स्थीरता थाय तेने साधु कह्या ठे

॥ उक्तंच ॥

पाप कारण मात्राद्धि नमौ नविचिकित्सया ॥

श्रनन्य परमात्मा स्यात् ज्ञान योगी जवेन्मुनि ॥

एनो श्रथ जे पाप कारण कहेतां परणा-
ती पातादीक वृत उचरवाथी कंइ साधुपणु केहे
वाय नहि एनु कव्याण थाय नहि श्रने परमा
त्मा तो क्यारे थाय के ज्ञान जोगी जवेध मुनी
केहेतां ज्ञान जोगने विशे रमे एट्ठे सस्वप्नाव-
मा थीरतापणु पामे परस्वप्नावनो त्याग करे स
दा ए श्रात्म उपयोगी राग द्वेष रहीत एवा जे
जीवने मुनी कह्या ठे ने तेज परमात्मा थाय ते
विनाना जे रह्या ते पुरवे ए एवी क्रिया करे ते
उचे जणे चाहे तेवी सजा मेळवे एवा जे जीव
ठे ते तो नरक गामी छे

॥ उक्तं च ॥

अकारणं यस्य सुदुर्विकल्पैर्दहतं मनः शास्त्र
विदोपि नित्यं ॥ घोरैरघैर्नि ॥ श्रतनास्कायुर्मृत्यौ
प्रयाता नर केसनूनं ॥ १ ॥ योगस्य हेतुर्मनसः
समाधि. परंनिदानं तपसश्चयोग. ॥ तपश्चमूलं
शिवशर्मवल्यामनाः समाधी प्रज तत कथंचित्
॥ २ ॥ स्वाध्याय योगेश्वरण क्रिया सुव्यापारणै
र्द्वादश प्रावनाग्नि ॥ सुधी स्त्रियोगी सदसत्प्रवृ-
त्तिः फलोपयोगैश्च मनो निरुंध्यात् ॥ ३ ॥

एना अर्थ ए उपला श्लोकने विशे जे
ज्ञान जोगी प्रवेन मुनी केहेतां जे ज्ञान जोगी
तेने साधु कह्या पण माहावृतादी लेवावाळाने
साधु कह्या नहि माटे अहीश्यां ज्ञानीने साधु
कह्या पण जे विद्या प्रणे ने शास्त्र वाचे तेने साधु
कह्या नहि. शामाटे जे प्रथम श्लोकमा एवु कहुं
जे शास्त्र विलोकीनीत्यम शास्त्र केहेतां सिद्धांत
प्रमुख वाचे ठे सर्व लोकोने समजावे ठे पोते
पण जाणे ठे के अमे धरम पाभ्या छड्ए पण
ज्यां सुधी मन दूर विकल्प थकी हणाएड्डु छे ए-

टले अकारण कहेतां जे उपसरगादीक कंइ का-
 रण आवायुं नथी ते विनाज जेनां मन माठा वि-
 कल्पमां प्रवर्ते ठे ते जीव घोर नरकने विषे जइ
 ने पमे ठे अने कारणे वीकल्प थाय तेथी कंइ
 साधुपणुं जाय नहि अने एनुं धर्म पण जाय
 नहि ने ए माठी गतीए पण जाय नहि सुमंग-
 ल साधुवत् ते कारणे माटे वगर कारणे जेनुं मन
 दुर्भ्यानिमां रहे ठे ते जीव नरक ने विषे जाय ए
 श्लोकमां ए भावार्थ कह्यो एटले चाहे तो सूत्र
 वाचो चाहे तो पंचमाहाव्रत पाळो पण मनना
 माठा विकल्प न मट्या तो नरकेज जाय एटले
 ए कारणे सखे प्रमाद ज्ञावनाज ठे अने घणां
 शास्त्र वाचे जणे घणी प्ररुपणा करे घणा शिष्य
 शिष्यणीओ करे घणा श्रावक श्राविकाओ मे-
 लवे श्रुत्यादिक करे अने आत्मस्वरूपनुं जाण-
 पणु नथी अनुभव ज्ञान नथी आत्मस्वरूपनी र-
 मणता नथी ते जीव मरीने माठी गतीएज जाय
 एवु समत्ति ग्रथमां कहुं ठे ॥

॥ उक्तंच. ॥

सम्मत्तौ जह जह बहुसु असमत्त ॥ सीस
गुण संपरि बुद्धोय अविणीठित्त असमए ॥ तह
तह सिद्धंत पमिणीत्त ॥

एट्ठे ए श्लोकने विपे एवं कहुं ठे जे मोढो
ध्यामंवर करे घणी संपदा मेळवे पण आत्मस्व-
रूपनो अजाण ठे ने अनुभव ज्ञान प्रगट्युं नथी
तो ए माठी गतिए जाय ते कारण माटे बीजा
काव्यने विशे मन शुद्धनो विचार ठे ते कहुं
एट्ठे मननी शुद्धता केहेतां जे समाधिमां मन
रेहे तेनुं नाम जोग कहिए नीदानम केहेतां नि-
श्चे करीने ए तपनुं मुळ ते ए जोग ठे माटे तप-
श्या ते मन थीर करवुं एनुंज नाम ठे माटे मन-
नी समाधिमां रेहेवु एज मोक्षनु मूळ एज मुक्ति
रूपणी वेळ एज मोक्षे जवानी शरम केहेतां मर-
जादा एवी रीते मननी समाधिमां रेहे ते जीव
मोक्षे जाय ते विना बीजे प्रकारे मोक्षे जवानो
नथी ते कारण माटे हे ज्ञव्य जीवो ॥ तमे मन-
नी समाधिनु ज्ञज केहेतां एनुज रत्नोपु करो ए
थकी तमारुं कट्याण ठे ए बीजा काव्यनो अर्थ

हवे त्रीजा काव्यनो अर्थ कहतु स्वाध्याय केहे-
 ता जे ज्ञाननुं जे रमण एटले ते जोगे रमते थके
 चरण केहेता चारित्र कहिए क्रिया केहेतां एनुं-
 ज नाम क्रिया कहिए एटले ए ज्ञान जोगमां
 रमतां चारित्र तथा क्रिया ठेज तथापि ज्ञान
 जोग यथार्थ प्राप्ति न थायने रमण न करी शके
 तो ते जीवने चार ज्ञाननामा एवी ज्ञानना ज्ञानवी
 अहिंसां कोइ केहेगे जे एवा ज्ञाननी रमणता
 न होय तो ज्ञानना ज्ञानवी एवं काव्यमां तो
 कह्यु नथी तेनो उत्तर जे ज्ञाननाथो ठे ते ज्ञान
 ज्ञान तथा मन स्थिर करवानुं कारण ठे,
 पण ए कंइ ज्ञानरूप नथी, माटे ज्ञानज्ञान नहि
 प्रगटे तोज भावना ज्ञाने जेने ज्ञानज्ञान प्रगट्यो
 ने स्वपरनी वेचण थइ गइ तेने ज्ञाननानी ज-
 रुर नथी. ए वात योगशास्त्र प्रमुखने विपे कही छे
 त्याथी जोज्यो परतु ए ज्ञाननाए करीने पण
 मन, वचन ज्ञानना जोगने शोधने शुद्ध क-
 रवा अने सत्य प्रवर्तिने विपे आत्मस्वरूप लइने
 ज्ञानना ज्ञानवी, पण मनजोगने वुटो मुकशो
 अथने वुटो मुकशो तेवारे सत्य अथसत्य वे

रीतमां प्रवर्त्तेशे, तेवारे फळोपयोगे शचः कहेतां
 फळनी प्राप्ति थशे एट्ले शुभ्र मने शुभ्र फळ
 पामशो थने थशुभ्र मने थशुभ्र फळ पामशो,
 ते कारण माटे मन निरुध्यात् कहेतां मनने रुं-
 धवुं एट्ले मनने शुभाशुभ्र कारणमा घालवुं
 नहि थने शुभाशुभ्र कारणमा घालशो तो एज
 क्रिया पाठी तमने लागु पडशे थने प्रमादजाव
 नी क्रियामां पड्या तो चार गतिमां रखवुंज
 पमशे ते माटे ए क्रियाने विपे प्रवेश कस्वो नहि
 तोज थप्रमादी आत्मा थशे ए पूर्वे श्लोक गु-
 णस्थान क्रमारोहनो लखाव्यो ठे ते मध्ये ल-
 खाव्युं ठे के थप्रमादीने खट आवश्यक प्रमुख
 क्रिया होय नहि, माटे क्रिया ते प्रमाद जावेज
 होय. 'स्वजावे ज्ञानते दाख्युं रे' एपदनो थर्थ
 कहीए ठीए एट्ले ज्ञान ठे ते वांचवा जणवाथी
 आवतुं नथी, कोझुं दीधेळुं आवतुं नथी ज्ञान
 तो ज्ञानावणीं कर्मनो दाय उपसम थथवा दाय
 थाय तो ज्ञान प्रगटे ते तो स्वजावमां रखुं ठे,
 ते स्वजाव प्रगटवो ते तो आत्मानुं ध्यान होय
 तेने प्रगटे ठे, शा माटे जे आत्मामां थनंता धर्म

ठे, ते वस्तुने जाणे अने तेनी श्रद्धा करे, ते जीव तेमांज स्मरण करे ते पामे ।

॥ उक्तच ॥

नयप्रकरणे अनंत धर्मात्मकस्य । वस्तुन
एकांशव्यवसायात्मकं ॥ प्रकाशात्मकं ज्ञानं नय ।
श्रीसर्वज्ञमते सकलवस्तुअनंत धर्मात्मकं वणिमि-
स्तमयुराम्बत् ॥ यथामयुराम्मध्ये नानावर्णत्वम-
स्ति ॥ तदामयुरेजाते ॥ तत्पद्मादौ नानावर्णत्वं ॥
भवति । असक्तीमपिनोत्पद्यते ॥ आकाशकुसुम-
वत् शशशृंगवत् ॥ देवप्रादुर्भवती ॥ यथामृतपि-
ने घटघटीशरावज्जदचनादीनासत्तास्ति ॥ तदामृ-
त्पिने ॥ तैते घटादिपर्यायात् उत्पाद्यते ॥ चेस्पत्यश्च-
नतधर्मत्ववस्तुन्यस्ति ॥ तर्हि वस्तु एकधर्मत्व न क-
थमुच्यते ॥ सत्वमनतधर्मत्ववस्तुनिसत्तास्ति ॥
परं एकस्मिन्काले वस्तुन ॥ परिणामान्संख्येया-
श्चसंख्येयावाभवन्ति ॥ तथायस्मिन्कालेय परि-
णामोऽस्ति तस्मिन् ॥ काले स एव भवति ॥ नापर-
यद्दृश्यं ॥ यदायेन रूपेण परिणतं ॥ तदा तेनैव-
रूपेण परिणमति न नुरूपातरेणेति वचनात् ॥ यथा
॥ अथार्थ अथप्रमाणमिति

नय ॥ प्रमाणस्यैकाशयतन्नप्रमाण प्रमाण प्रमा
णं ॥ वाप्रमाणांशस्तथैवहिनासमुद्रवासमुद्रा
सोयथैवहि ॥ १ ॥

एनो अर्थ जे सर्वज्ञना मतने विपे सकळ
वस्तु अनंत धर्म आत्मिक वरणव्या ठे ते आ-
स्तिस्वजावे ठे तेनो विवरो कहूं ठुं के ठ छव्य
ठे ते मध्ये अनंता धर्म रह्या ठे परंतु पांच छ-
व्य अहियां कहेवानी जरूर नथी एक आत्म-
स्वजावने विपे अनंता धर्म रह्या ठे ते स्व कहेतां
पोताना धर्म ठे ते अनंता धर्म कहेतां अनंता
गुण अनंता प्रजाय अनंता स्वजाव अनंता ल-
क्षण इत्यादिक अनंता धर्म ठे ॥ शिष्यवाक्या ॥
स्वामी ए तो समुदाए वात थइ खुलासो क-
रीने अमने समजावो तो समज पने. तेनो उ-
त्तर के हे देवाणुप्रिया जे अनंता धर्म ते कंइ
कथनीमां कहेवाय नहि. शा माटे जे अनंता
धर्म कहेतां अनंतो काळज कहीए अने आपणो
तो काळ संख्यातो ठे माटे कंइ अनंतु धर्म तो
कीधामां न आवे. ए केवळीजगवान जाणे ठे,
तथा अनुजवी पुरुष ठे ते ए धर्मने रुडी रीते

अन्तुत्तवे ठे तथा भोगवे ठे ए कंइ मुखथकी
 उचारणमा तथा कीधामां न अ्यावे ए हुं तने
 कहुं तुं परतु किचित् भेद संक्षेपे अन्तताए पण
 भेद मटी अ्यावी जशे ते हुं वनाबु तुं हवे जे
 अन्तता गुण कह्या ते अ्यास्तिकपणे ठे एट्ठे जे
 ज्ञानादिक गुण तेना अन्तता भेद ठे शा माटे जे
 ज्ञान ठे ते स्वपरतुं जाण ठे तेमध्ये परपदार्थ
 पाच ड्रव्य ठे. धर्मास्तिकाय एक ड्रव्य ठे तेना
 प्रदेश असंख्याता ठे तेना गुणप्रजायादिक
 अन्तता छे ते ज्ञानथी जाणवामा अ्यावे ठे तथा
 अधर्मास्तिकायना पण तेज प्रमाणे तथा अ्या
 काशना पण तेज प्रमाणे एट्ठे विशेषे जे एना
 प्रदेश अन्तता ठे तथा काळड्रव्यना पण तेज
 प्रमाणे एना समय अन्तता ठे तथा पुद्गलड्रव्य
 अन्तता ठे तेना प्रदेश पण अन्तता ठे गुणप्रजा-
 यादिक पण अन्तता ठे तथा जीव पण अन्तता
 ठे, तेना प्रदेश असंख्याता छे, गुणप्रजायादिक
 अन्तता ठे ए सर्वे एक ज्ञानवने करीने जणाय
 ठे ते ज्ञान एक गुण कह्ये तथा एने अन्त
 तण पण कह्ये, शा माटे जे अन्त पदार्थने

स्कंध ठे तथा ए स्कंधने विषे केटलाएक समी
जाय ठे, केटलाएक गळी जाय ठे, केटलाएक
पमी जाय ठे, केटलाएक मळे ठे केटलाएक वि-
खरे ठे, केटलाएक स्कंध जीवग्राही ठे तेने विषे
अनेक जातना रोगव्यापित छे, केटलाएक दो-
पव्यापी छे, केटलाएक शोकव्यापित छे इत्या-
दिक सर्व पदार्थने जाणवुं ते नीन्न नीन्न द्रव्य-
प्रजाय अनंता छे, तेनु जाणपणुं ते ज्ञान
कहीए, ते ज्ञान पण नीन्न नीन्न जेवो ज्ञेय प
दार्थ तेवुं ज्ञान एटले अनंत ज्ञानतेज अनंता
गुण थया, माटे अनंत ज्ञान छे ते सत्य ठे,
अने ज्ञान शब्दवाच एकज छे अहियां कोइ
कहेशे जे गुणनी व्याख्या श्वेतांबर पदमां नथी
जणाती ते वात खरी ठे के कोइक कोइक प-
दमां ना पण पामी ठे ते धणी ए ज्ञानने प्र-
जायमां गवेख्या छे ए वात अहियां कंइ विरोधी
नथी. शा माटे जे घणा प्रजायनो समुह तेने
गुण कहीए ठीए एटले गुण कंइ नोखी वस्तु
ठे नहि एटले अनंत धर्म आत्मिक कह्या तो

लपजे एवं वचन तो छे नहि अने एवी वात
 पण संज्ञवे नहि ए तो एक केवलज्ञान सर्व प्र-
 देशे साथे ज्ञान लपजे वीजां ज्ञान तो कोइ प्रदेशे
 लपजे ने कोइ प्रदेशे न लपजे ए अधिज्ञानना
 अधीकारथकी समजजो तथा मतिआदिक ज्ञान
 वे ते जिन्न जिन्न लपयोगनु नोखेनोखे प्रदेशे वे माटे
 सर्व प्रदेशे साथे न लपजे अने जेवारे सर्व प्रदेशे
 साथेज लपजे तो सर्व प्रदेशानो एकज प्रदेश
 थइ जाय तेवारे प्रदेश व्याख्या जुठी पदी जाय
 अने अधियां तो प्रदेश प्रदेशना जीन्न जीन्न
 लपयोग जासनमा आवे छे तथा प्रदेशव्याख्या
 वे ते सत्य वे, हवे जे एक प्रदेशे अनंता गुणा-
 दिक कहा ते असख्याता प्रदेशे वे शा माटेजे
 पुद्गलद्रव्य अनंता प्रमाणरूपे छे तथा लपचरित
 द्रव्य स्कंधने कहीए ते स्कंध हीप्रदेशीथी मां
 नीने अनंत प्रदेशी सुधीना वे तेनो जातिस्व-
 ज्ञाव पचीश पचीश गुण एनामां रखा वे वर्ण
 ५, रस ९, सस्थान ९, फर्स ७ अने गंध २ ते
 थकेकाना प्रजाय परावर्तन धर्मना अनंत जेद
 वे अने ते अनते नेदे नोखी नोखी रीतना ए

स्कंध ठे तथा ए स्कंधने विषे केटलाएक समी जाय ठे, केटलाएक गळी जाय ठे, केटलाएक पनी जाय ठे, केटलाएक मळे ठे. केटलाएक विखरे ठे, केटलाएक स्कंध जीवग्राही ठे तेने विषे अनेक जातना रोगव्यापित छे, केटलाएक दोपव्यापी छे, केटलाएक शोकव्यापित छे इत्यादिक सर्व पदार्थने जाणवुं ते नीन नीन द्रव्यप्रजाय अन्त छे, तेनुं जाणपणुं ते ज्ञान कहीए, ते ज्ञान पण नीन नीन जेवो ज्ञेय पदार्थ तेवुं ज्ञान एटले अन्त ज्ञानतेज अन्त गुण थया, माटे अन्त ज्ञान छे ते सत्य ठे, अने ज्ञान शब्दवाच एकज छे अहियां कोइ कहेशे जे गुणनी व्याख्या श्वेतांबर पदामां नथी जणाती ते वात खरी ठे के कोइक कोइक पदामां ना पण पानी ठे ते धणी ए ज्ञानने प्रजायमां गवेख्या छे ए वात अहियां कंइ विरोधी नथी. शा माटे जे घणा प्रजायनो समुह तेने गुण कहीए तीए एटले गुण कंइ नोखी वस्तु ठे नहि एटले अन्त धर्म आत्मिक कहा तो

उपजे एवं वचन तो छे नहि अने एवी वात
 पण संज्ञे नहि ए तो एक केवलज्ञान सर्व प्र-
 देशे साथे ज्ञान उपजे बीजां ज्ञान तो कोऽ प्रदेशे
 उपजे ने कोऽ प्रदेशे न उपजे ए अविज्ञानना
 अधीकारथकी समजजो तथा मतिआदिक ज्ञान
 ठे ते निन्न निन्न उपयोगनु नोखेनोखे प्रदेशे ठे माटे
 सर्व प्रदेशे साथे न उपजे अने जेगरे सर्व प्रदेशे
 साथेज उपजे तो सर्व प्रदेशनो एकज प्रदेश
 थइ जाय तेवारे प्रदेश व्याख्या जुठी पमीजाय
 अने अहिया तो प्रदेश प्रदेशनां नीन्न नीन्न
 उपयोग ज्ञासनमां आवे छे तथा प्रदेशव्याख्या
 ठे ते सत्य ठे, हवे जे एक प्रदेशे अनंता गुणा-
 दिक कह्या ते असख्याता प्रदेशे ठे शा माटेजे
 पुद्गलद्रव्य अनता प्रमाणरूपे छे तथा उपचरित
 द्रव्य स्कधने कहिए ते स्कध हीप्रदेशीथी मां
 नीने अनंत प्रदेशी सुधीना ठे तेनो जातिस्व-
 भाव पचीश पचीश गुण एनामां रह्या ठे वर्षा
 ५, रस ५, सस्थान ५, फर्स ७ अने गध २ ते
 अकेकाना प्रजाय परावर्तन धर्मना अनंत जेद
 ठे अने ते अनते जेदे नोखी नोखी रीतना ए

जलनुं धर्म विशेषे ग्रहाने वेगो ठे अने तमे पर-
 धर्म ग्रहवानी केम ना कहो गो ? तेतो उत्तर
 जे परधर्म जीवज्व्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
 अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्यु जोवापां आवे ठे
 ते उपरधी जोशने तमो कहो गो पण तमे व-
 स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
 नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
 एम जासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
 करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध-
 रजो हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे
 हतो त्या तो काश् जीवितव्यपणानुं प्रगटपणुं
 हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
 कोश् जाव अखाध्य पदयो छेतेने गमे तेम करो
 तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
 जीवितव्यपणानी कांश्यण खबर नथी. हवे ते
 कोश् जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिजावे
 आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते
 अजाणथको वाळपणे मातापितानो वियोग थयो
 अग्रवा मृत्यु पाम्या पछी ते ठोकराने जे लेश्

जलनुं धर्म विधेये ग्रहाने वेगो ठे अने तमे पर-
 धर्म ग्रहवानी केम ना कहो गो? तेतो उत्तर
 जे परधर्म जीवज्वय सर्वथा ग्रहण करतो नथी
 अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्तुं जोवाप्रां आवे ठे
 ते उपरधी जोशने तमो कहो गो पण तमे व
 स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
 नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
 एम जासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
 करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विषे ध-
 रजो हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विषे
 हतो त्या तो काश् जीवितव्यपणानुं प्रगट्पणुं
 हतुं नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
 कोश् जाव अखाध्य पन्थो छेतेने गमे तेम करो
 तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
 जीवितव्यपणानी कांश्पण खबर नथी हवे ते
 कोश् जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे
 आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते
 अजाणथको वाळपणे मातापितानो वियोग थयो
 अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते ठोकराने जे लेश

एक ज्ञानगुणज अन्नता धर्म प्रगट थया अने
 एवा तो अन्नता गुण आत्मां ठे पण मुख्य-
 पणे एक ज्ञानगुणज ठे ते वर्णवीने देसामथो
 एम सर्व गुणादिक समजजो तथा पूर्वे ए अंथमा
 अमे संमतिनो अधिकार नांख्यो ते मध्ये दश
 सामान्यगुण तथा मोळ विशेषगुण तथा अ-
 गीयार सामान्य स्वभाव तथा दश विशेष स्व-
 भाव इत्यादिक त्यां कव्या ठे तथा बीजा
 अंथमां नोखी नोखी रीने कव्या ठे ते चीन्न
 चीन्न रीतना ठे ते सर्वे एक जग्याए कंइ कहे-
 वाता नथी पण सर्वे गुण आत्मामा अस्ति
 स्वभावे ठे ते पण ए गुण कव्यो ते पर अर्पेदाए
 छे अने स्वअर्पेदाए ज्यां आगळ कारण आवशे
 त्या कहेवाशे ते समजी लेजो एटले वस्तुनुं धर्म
 अन्नतु कव्य ते स्वअर्पेदाएज ठे ते परअर्पेदाए
 नथी अने परअर्पेदाए कहीए तेवारे वस्तुनो
 नाश थइ जाय, अने वस्तुनो स्वभाव तो एवा
 ठे के पोतानो धर्म गोमीने परधर्मने सर्वथा ग्रहे
 नहि अहिषा कोइ कहेशे जे जीवद्रव्य तो पु

जलनु धर्म विशेषे ग्रहाने वेगो ठे अने तमे पर-
 धर्म ग्रहवानी केम ना कहो गो? तेतो उत्तर
 जे परधर्म जीवद्रव्य सर्वथा ग्रहण करतो नथी
 अने जे प्रत्यक्षमां ग्रहण कर्यु जोवाप्रां आवे ठे
 ते उपरधी जोशने तमो कहो गो पण तमे व-
 स्तुनो स्वभाव तथा परवस्तुनो स्वभाव जोता
 नथी ने ए वातने विचारता नथी तेथी तमने
 एम चासन थाय. हवे हुं तमने एनो खुलासो
 करीने किंचित् समजावुं ते तमे हृदयने विपे ध-
 रजो हवे जे जीव निगोदादिक गतिने विपे
 हतो त्यां तो कांश् जीवितव्यपणानुं प्रगट्पणुं
 हतु नहि एतो एक केवुं स्थानक छे के जेम
 कांश् जीव अखाध्य पर्यो छे तेने गमे तेम करो
 तो तेने मालम नथी तेम ए निगोदना जीवने
 जीवितव्यपणानी कांश्पण खबर नथी हवे ते
 कांश् जीव निगोदादिकथी नीकळीने व्यक्तिभावे
 आव्यो तेने पूर्व पश्चिमनी हजी खबर नथी ते
 अजाणथको बाळपणे मातापितानो वियोग थयो
 अथवा मृत्यु पाम्या पछी ते ठोकराने जे लेश

गया ने उठेर्यो तेनेज मातपिता जाणे ठे तेम
 ध्या जीव निगोदथी ध्याव्यो ते ज्या सुधी स-
 द्गुरु नथी मद्या ध्यने स्वज्ञावनी ध्योळखाण
 नथी थइ त्या सुधी परज्ञावने वळगीने रह्यो छे
 ध्यने तेने स्वज्ञाव माने छे. परतु ए परज्ञाव ते
 परज्ञावज ठे ध्यने स्वज्ञाव ते स्वज्ञावज ठे
 हवे ते जीव वे जातना ठे एक ज्ञानगुण
 पामेला स्वधनुज्जम सहित ठे, ध्यने एक
 जीव ज्ञानगुण नथी पाम्या ने स्वधनुज्जम
 रहित ठे पण ते बने जीव मोहराजाने वश ठे
 ते बनेनो विचार चीन्न चीन्न समजावु ते जाणो
 जे जीव ज्ञान नथी पाम्या ते जीव परवस्तुने व
 ळगेला ठे ते जीव तो खीरनीरवत् वळग्या ठे जे
 जीव ज्ञान सहित ठे ते परवस्तुने वळग्या ठे,
 तेनुं पण वाळजीवना जोवामा तो सरखुज ध्यावे,
 परतु ए वेमां फरक घणो ठे ते कहुं ते सांजळ
 जेम कचन छे तेमा अन्य धातु पमी ठे हवे ते
 कचनने सर्व जीव कचन कहे एटले कोण कहे?
 के जे ध्यजाण पुरुष छे, ते कहे पण जे चोकशी

लोको एना जाणपुरुष ठे ते तो ए जोशने कहे
 के एमां आट्ठुं सोनुं छे अने तेट्लाज दाम एना
 लपजे अने वाळे तोपण कुघातु वळी जाय अने
 कंचन होय ते रहे तेम अहियां जे जीव अजाण
 एवा अज्ञानी जीव जेवा जेम कुघातु साथे कं-
 चन वधुं मान्युं तेम ए अजाणपुरुष अज्ञानी
 तेवी रीते शुजाशुज जे कर्म चेतनने वळगेल्यां
 ते पोते पोता रूपज माने ठे अने तेना उदय-
 वने जे जे कर्म करे ठे ते पोते एम जाणे ठे के
 हुंज करुं वुं, मनेज सुख ठे मनेज दुःख ठे, एम
 ते वेदे छे. एकरुपे माटे ए जीव ज्ञानरहित ठे,
 हवे जे जीव ज्ञानसहित ठे ते पण करणी कर्म
 तो एना सरखांज करेठे पण ते धणीन आत्म
 स्वरूपनो अनुभव छे तेथी ए आत्माने ने कर्मने
 वन्नेने नीन्न नीन्न जाणे ठे अने वन्नेनुं वस्तुधर्म
 अन्योन्य अजावज जाणे ठे, तेथी ए पोते
 मांही लपटातो नथी एट्ठे पोते मांही न्यारो र-
 हीने उदय माफक काम करे पण तेमां कंइ हर्ष
 वा शोक ठे नहि जाणे ठे के पूर्वोक्त कर्म ते

उदय श्रान्ध्या कर्या वगर वृत्को नयी जेम कोड
 सारो माणम राजाए केद कर्या पठी ते माणस
 पासे जे कृत्य करावे करे पण तेमां कइ रावे
 माचे नहि जाणे ठे के ज्या सुधी केदमां ठीए
 त्या सुधी जे करावशे ते करवु पडशे तेम ज्ञानी
 पुरुष जाणे ठे के जे पूर्वोक्त कर्म उदय श्रान्ध्यां
 ते जोगववां पडशे माटे ते वातमां ते हर्ष ठीक
 राखता नथी श्रान्ध्या ते वातमा एतुं समण पण
 नथी तेथी पोतानुं वस्तुधर्म लडने पोते पोताना
 स्वप्नावमांज रहे ठे ए कइ हवे स्वधर्मने ठीकी
 परद्रव्यमां पेसतो नथी तेम ए जीवद्रव्य पण
 पोतानो धर्म ठीकी परधर्मने श्रगीकार करतो
 नथी. परंतु श्रज्ञानी जीव नथी समजता श्राधी
 मोहनी ठीकमां परधायका श्रात्मस्वप्नाव जाण-
 ता नथी ते एम के जीवद्रव्य परद्रव्यने वळगे छे
 पण जीवद्रव्य तो सदायकाळ पोताना धर्ममाज
 रहे ठे ए पोतानो स्वप्नाव कोइ काळे ठीक नहि
 श्रान्ध्या ए स्वप्नाविक वस्तु ते एक श्रसे व्यवहार-
 ि जळे ने काम करे पण पोते तो पोतानो

स्वप्नाव छंजेज नहि अने ज्ञाननय तो पोतानो
 आत्मस्वप्नाव प्रकाशज करे अने पोतानी मुक्ति
 पण ए स्वप्नाव थकीज थाय ते वस्तुनु धर्म न-
 मुच्यते कहेतां कोइ काळेगामे नहि सतमंतं क-
 हेतां जे पोते सत्य यथार्थ वस्तुनी सत्ता अ-
 स्तिरूपे ठे ते काळ पामीने प्रगट थगे एट्ठे प्र-
 णमवानो एनो स्वप्नाव ठे जेम आंवा वावीएने
 तुरत केरी मागीए तो तेम न थाय ए काळेज
 आंवा फळे ने केरी आपे स्त्री पण तुरत गर्ज
 धरे नहि काळेज गर्ज धरे अने गर्ज धर्यो तो
 पण कंइ तुरत छेकरुं थाय नहि ते पण काळे
 ज ठोकरानी प्राप्ति थाय पण ते प्रणमीअ स्व-
 ज्ञाव होय तेज प्रणमे जेनामां ए प्रणमवानो
 स्वप्नाव न होय ते न प्रणमे तेम आ जीवस्वरूपनो
 प्रणमीअ स्वप्नाव ठे ते पोताना स्वप्नावमाज प्र-
 णमे अन्य स्वभावमां न प्रणमे पण ज्यां सुधी
 ते प्रणमवानो काळ नथी आव्यो त्यां सुधी न
 प्रणमे एट्ठे त्यांसुधी अज्ञानपणे पराधिन छे.
 हवे जे जीवने प्रणमवुं ठे ते जीवने समकिता-

दिक् गुणने विषे प्रणमवु ते अंशथी ठे ते पण
 काळ प्रणमवानो संरयात वा असरयात तेठले
 काळे प्रणमे तस्मीनकाळे सएवजवतिपणनापरइ
 दद्रव्य उदाएनरुपेनपरणत एठले सर्वथा चेतन-
 ङ्ख्य बीजामा प्रणमे नहि नरुपंतरण कहेता ते
 रुप मुकीने बीजु रुप सर्वथा थाय नहि यथार्थ
 पोताने रुपेज पोते प्रणमे ए प्रमाणनयनु रुप सम
 जवु ए प्रमाणनय ते समुद्र सरखी ठे एठले ए ज्ञान
 ते स्वजातिके ठे ए पोताना स्वजायमा ज्ञानावणी
 कर्मना दयलपसम वयो होय ते धणीने ए गुण प्रग
 टे एठले स्वजावे ज्ञान ते दाख्यु ए पदनो अर्थ थयो
 एठले एवी रीतना वचन समतिग्रंथ तथा स्याद्वाद
 रत्नाकर तथा रत्नाकरावतारिका प्रमुख ग्रथोमां
 एवां वचन जोवामा आवे ठे ने प्रत्यक्षपणे ते छे
 अने आत्मस्वरुपना अनुजमां पण एज वचन
 ताद्रज्य जामन थाय छे, ते कारणथी करीने
 अमारु चित्त तो ए ज्ञानजावमाज स्मी रहुं ठे
 ने एमाज रगायु ठे, ने जे ज्ञव्य जीव आ ग्रथ
 वाचीने एवी रीते ज्ञानजावने समजीने ते अनु-

प्रवमा रमशे तेनुं कव्याण थगे अथवा जे जीवने
 दयलपसम तेवमो न होय तोपण ए वस्तु ल-
 पर जेना चित्तमा श्रद्धा स्थिर करगे तो तेनुं पण
 कव्याण थगे एटले ए पंढरमी गाथानो अर्थ कह्यो.

ज्ञान विना साधु नहि जाख्यो ।

तो क्रिया कोष्टे शु होवे रे ॥

पंचम अगे अतक पचीअमे ।

तेम वळी समतिमां के'वे रे ॥ १६ ॥

अर्थ जे परमात्माना जाखवामां तो एवुं
 ठे जे ज्ञानी पुरुष होय तेनेज साधु कह्या ठे अ
 थवा तेनी आज्ञा प्रमाणे चाळे तेने साधु कह्या
 ठे पण बाह्य थकी क्रिया आमंत्रर घणो करे छे
 तेने कंइ साधु कह्या नथी साधु तो एक ज्ञान
 जावने विगे रमे अने मन थीर राखे तेनुं नाम
 साधु ठे पण क्रियानुं नाम तो कंइ साधु छे नहि
 ए श्री भगवतीजीना पचीसमा सतकमां कह्युं ठे

॥ लुक्तं च ॥

गीयत्याय विहारो वीओगीयत्य निस्सिजणीनु ॥

इतो तश्य विहारो नाणुनाओ जिणवरेहि ॥ १ ॥

एनो अर्थ गीत्यर्थ केहेता गीतार्थ अने क शास्त्रना जाण ठए दर्शनना आम्हमां जेनुं मुख ठे एवा ऋशुन निस्पृही मपर उपयोगी एवा होय तेन गीतार्थ कहीए आमाटे जे ठए दर्श वाळने जयान देवानी शक्ति ठे अने ठए दर्शमां पोतानो धर्म थापयाने समर्थ ठे तेने गीतार्थ कहीए विहारो केहेता विहार नाम चारीत्रनुं ठे एठले वव्यहार मार्गने पिजे परिग्रह प्रमुख राखता नथी शामन शोभे एवुं काम करेठे ते माटे तेने गीतार्थ कहीए अने तेनुज नाम साधु पण कहीए वीओगी अर्थ केहेता जे बीजो साधु केनु नाम ठे ? एठले गीत्यर्थनीसराए केहेतां एठले गीतार्थनी आजा प्रमाणे विचरे ठे तेने साधु कहीए एठले ए बीजो माधु केवाणो अहिअ्यां कोइ अजाण पुरुष एवुं केहे ठे जे सर्व साधुनी क्रिया सरखी जोइए ते केहेवावाळा अणममजु ठे आमाटे जे जगवान चपानगरीए समोसर्था. तेमनी साथे साधुनो समुदाय सर्वे छे त्या ते साधुनु वर्णन ठे त्या कोइ क्रिया करना कोइ ज्ञान

अन्यास करता, कोइ तपस्या करता एमनो खानोखा बोल ठे, तेथी कंइ साधु सर्वेनी क्रिया एक होय नहि अहिष्टां वेहेवार थकी मुळ गुण एक सरखा जोवां उत्तर गुणने विपे कोइ साधु ज्ञानना अन्याशी छे कोइ साधु तपना अन्याशी ठे, कोइ साधु ध्यानना अन्याशी ठे कोइ क्रियाना अन्यासी साधु ठे इत्यादिक जेद त्यां छे माटे जे साधुने जेनी रुचि होय ते ते मार्गे चाले ए वातमां जे चरचावा निदा करे ते अज्ञान ठे शा माटे जे कविसूत्रादि क्रियानां जे सूत्र तेने विपे तो एवं कहूं ठे के आचार्य तथा उपाध्याय तथा धीवीर तथा गणी तथा कुलक आदेदेशने सर्वे जुदाजुदा ठे शा माटे के कोइ वैयाचनो करनार साधु होय, कोइ ज्ञानअन्यासी होय, कोइ तपस्वी होय इत्यादिकने क्रियानो अक्सर सचवाय नहि, केमके जे अक्सर क्रियानो आव्यो होय तेज अक्सरे कोइक चरचा अथवा प्रश्न प्रठवा आव्यो होय तेने जो उत्तर नहि आपे तो मर्खमां ठरशे ने आसन लाजशे माटे

तेने क्रियानो अक्सर सचराय नहि तथा वैया-
 वचीओ छे तेने क्रियानो अक्सर आवेथके कोइ
 साधुनु शरीर बगड्यु होय तो ते वखत त्यां जचु
 जोइए माटे एथी पण क्रियानो अक्सर न सच
 वाय तथा ध्यानी पुरुष होय ते तो ध्यानमांज
 होय ते क्रियानो अक्सर क्या साचवे? आ माटे
 के कोइ पमीमा चार पहोरनी कोइ पमीमा आ
 ठ पहोरनी कोइ पमीमा चार पहोरनी कोइ प
 मीमा सोळ पहोरनी इत्यादिक पढीमाओ ठे ते
 जेने जेट्खी वखतनी पमीमा होय ते ध्यानमांज
 रहे त्या सुधी एनु चित्त बीजामा पेसे नहि तो
 क्रियाने कोण मज्जावा जाय? माटे मरनी एक
 क्रिया होय नहि आ माटे जे गीतार्थनी आं-
 झाए चालवु त्या तो कखानु कार्य होय तोए
 करे ने न कखानु कार्य होय तोए करे कंइ
 आझा लोपाय नहि अने आझा लोपे तो ते
 साधु नथी आ माटे जे सन्नूतिविजयजी युगप्र
 धात तेमनी पासेथी चोमासु आवेथके चार सा
 धए आझा भागी ते एक तो सिंहगुफाए रह्यो,

अने सामाचार करोम सोनैया खाधा ठे एवी री
 तना तो सुख एनी साये जोगवेला ठे अने तेने
 वगर पूढे चारित्र वारोवार लीधु ठे अने ते सां-
 जळीने रातदिन ळुर्पा करे ठे तेवे आ साधुनुं
 जवुं त्या थयु ठे. हवे ते केवी केवी जातना अ-
 हार त्या करावती हशे ए छुपण ६ इत्यादिक
 घण छुपण अहिया लागु ठे तोपण आझास
 हित ठे माटे अहिया छुपण कहेवाय नहि तथा
 धनगिरि ए गुरुने पूछी गोचरीए गया ते अवसरे
 गुरुए कह्यु जे सचित अचित जे मळे ते लइ
 आवजो अहिया एणे ते न कर्यु पण ए वातनी
 शंका करी नथी माटे गीतार्थनी आझा प्रमाणे
 जे विचरे तेने दग समाचारीमां ते ते समाचारी
 पदार्थमाज जोइए तोज तेनाथी गीतार्थनी आ-
 झा पळे, नहि तो पळे नहि एटला माटे जे गी-
 तार्थनी आझाए विचरे तेने माधु कहा हवे
 त्रीजुं पद जे इतोतएव्यवहागे नाएनाआजिण-
 वरेहि एटले एवा जे गीतार्थ विना अथवा तेनी
 विनाना त्रीजा कंइ साधु कहेवाय नहि

एज गाथा ठे एटले वे ठेकाणे गाथा एकनी ए-
 कज ठे हवे क्रियाकष्टे शुं हवे कहेतां जे ए गी-
 तार्थ तथा गीतार्थनी ध्याज्ञामां विचरे ए-वे विना
 त्रीजा जे रह्या तेने साधु तो कह्या नथी अने ते
 क्रियाकष्ट करे छे तेमधे केटलाएक तो शास्त्रना
 वाकेफ नथी अने गीतार्थनी सेवा करी नथी तेथी
 विचारा अज्ञानपणे करीने तपय्या तथा क्रिया
 करे ठे तथा केटलाएक कपटसहितः ज्यां जेवुं
 दोत्र ज्यां जेवो साधुनो समुदाय तेवी तेवी री-
 तनी क्रिया करे ठे अथवा ज्यां जेवा श्रावकनी
 रीत प्रवर्तती होय तेवी रीतनी क्रिया करे ठे ए-
 टले ए चोथुं डुपण पासथामांहेबुं ठे ते साधु
 पण वादवा पूजवामां खप लागे नहि हवे जे
 प्रथम अजाण कह्या ते साधु जे क्रियाकष्ट करे
 ठे तेने पण फळ आकाश कुसुमवत् ठे माटेतेनुं
 पण कंठ कव्याण थयुं नहि कव्याण तो एक
 आत्मज्ञान स्वभावमां रमवुं तेनु नामज साधु ठे
 पण ज्ञान विना साधु कोइ काळे कहेवाय नहि
 ते श्रीभूताराध्ययनजीश्रकी जोइ लेजो एटले साधु

जाव उठामी दीधो ठे ते जेम पूर्वे सात निन्हव
 ठाणंगजीमां क्हाछेने आठमाने नव आवउय-
 कनी वरतीमा क्हा ठे अने आ काळे तो सर्व
 धर्मउथापक घणा निन्हव पेदा थया ठे आ माटे
 जे जगवाने तो क्हा ठे जे मारो धर्म एकवीस
 हजार वरस सुधी साधुसाधवी प्रमुख प्रवर्तेशे ए-
 टले त्यां सुधी मारो धर्म अखंम रहेशे अने आ
 निन्हवोए तो अत्यारथीज धर्म उठावी दीधो ए
 अधीकार श्रीजगवतीजीमांथी जोइ लेजो तथा
 केटलाएक ग्रहस्थी श्रावक नाम धरावीने साधु
 साधवीने पोतानी आझामा चलावे ठे, केटला-
 एक चलाववा चोहे ठे पण जे साधुसाधवी होय
 ते तो सर्वथा ग्रहस्थीनी आझामा नज चाले ए
 वचन नयथकी समजी लेजो जे ए चाले छे ते
 असाधु ने असाधवी ठे एम समजी लेजो ए-
 टले गीतार्थ तथा गीतार्थनी आझामा चाले ते
 वेने साधु क्हा ते विनाना जे र्हा तेने साधुं
 साधवी क्हीए नहि ए श्रीजगवतीजीनुं वचन
 ते तथा समत्ति मध्ये क्हेता संमतिग्रंथने विपे पण

ए थयो होय तोपण जो ज्ञानी पुरुष छे, तो ए
 वहेवारनयने मते तेनेज मानवो कह्यो ठे शा
 माटे जे उदग्रंथमध्ये वहेवारसूत्र ठे तेमध्ये साधुने
 आळवण लेवानो अधिकार बहुश्रुत ज्ञानी होय
 तेनी पासे छे ते बहुश्रुतज्ञानी साधुनी जोगवश्
 न होय तो पठाकमा पासे लेवी पठाकमो क-
 हेतां जेने पूर्वे साधुपणुं लीधेहुं ठे अने बहुश्रुत
 थएलो ठे ते धणी कोइ कर्मना उदयथी चा-
 स्त्रि गोमीने घरमां पेठो तेने पठाकमो कहीए
 तेनी पासे आळवण लेवानी कही ठे, श्राद्धवि-
 धिमां एवुं कहुं ठे के सातसें गाज सुधी गीता-
 र्थनी खोळ करीने गीतार्थ पासे आळवण लेवी
 पण ते विना जे साधु गीतार्थ न थयो तेनी पा
 से सर्वथा न लेवी तथा आ काळे केट्लाएक
 ग्रहस्थीओ आळवण आपे ठे तथा व्रतपचखाण
 उचरावे ठे ते तो परमात्माना मार्गथकी बाहेर
 ठे एने जैनधर्मी न कहीए अने एना वेसनारा
 कहे ते जेम गोसाळाने जिन कहेता त्यां तद्वत
 तेने पण जाणवां एट्ठे चरणसीत्तरी करणसीत्त-

ज खपनी ठे एथकीज आत्मानु कव्याण ठे ए-
टले ए गाथा सोळमीनो अर्थ कव्यो हवे सत्तरमी
तथा अद्वारमी गाथानो अर्थ एक ठे माटे वेगो
कहीशु

चरणसीतरी करणसीतरी । हीणा जे मुनि
ज्ञान अन्यासेरे ॥ पददशणना शास्त्र जे जाणे ।
स्वआत्मगुणे वासेरे ॥ ज्ञा० १९ ॥ हुंकार करणी
तेहनी दाखी । संमतिग्रये ढगखीरे ॥ उपदेशमा
व्यामाही ते जोजो । एम शास्त्र बहु निरखीरे ॥
ज्ञा० ॥ १० ॥

अर्थ-हवे ए वे गाथानो अर्थ कहु ते तमे
सांजळो चरणसीतरी करणसीतरी कहेतां जे व-
हेवारशास्त्रने विषे चरणसीतरीना सीतेर बोल
कव्या ठे पचमहाव्रत आदेदेशने तथा करणसी
तरीना सीतेर बोल कव्या ठे ते पनीलेहणप्रमुख
जाणजो ए वहेवारशास्त्रने मते एथकी अधिक
कोइ बीजु साधूपाणु दीमतु नथो परतु ए एक-
ने ने चाळीस बोलमाथी हरकोइ बोलयकी हि

ज्ञानमां वाकेफ ठे एट्टे चारे अणुयोगनुं ज्ञान
 कहेतां जे धर्मकथानुं योग कहेतां जे ज्ञातादि
 सूत्र तथा चरित्रादि कह्या ते कथानुयोगने विपे
 जेनी वाकेफी छे १ तथा बीजा अणुयोग जे ग-
 णितानुयोग एट्टे चंद्रपन्नति प्रमुख तथा द्वीप
 समुद्र तेना मापागणत्राने विपे जाणपणुं ठे ए-
 ट्टे घनमूळ वर्गमूळ करी जाणे ठे परबीखाम्वा
 चोरसां श्रुत्यादिकने विपे वाकेफ ठे ते बीजो अणु-
 योग कहीए २ तथा चरणकरणानुयोग कहेतां
 आचारांग प्रमुख सूत्रनु जाणपणुं ठे चरणसीत्त-
 री करणसीत्तरीने विपे कल्प, अकल्प, उत्सर्ग
 अपवाद श्रुत्यादिक जाणपणुं ठे तथा ते मध्ये
 जे छुपण लागे तेनी आळवण निसिथसूत्र तथा
 बृहत्कल्पसूत्र प्रमुखना जाण ठे आळवण आ-
 पवालायक ए गीतार्थ ठे ए त्रणे अणुयोग व्य-
 ह्वारथकी ठे तथा द्रव्यानुयोग ते मध्ये खट्ख-
 व्यपंचास्तीकायनी व्याख्या अने जो आत्मस्व-
 रूपनुं जाणपणुं न होय तो ए सर्वे व्यवहार
 ज्ञान ठे एने बाह्यज्ञान कहीए अने जो आत्म-

ते पुरुष मोक्षे जाय शा माटे चरणकरण स्स
 सार कहेतां ए जे चरणसीत्तरी तथा करणसी
 त्तरीना करनारा तथा पाळनारा तेने तो संसार
 वतापे ठे एट्ठे संसार कहेतां जे चार गति सं-
 सारमां रख्मणे ए जीवनु कव्याण थाय नेहि
 नथी ए सुधी कहेता एनो आत्मा शुद्ध नथी
 तेथीकरीने ए जीवनी मुक्त पण थाय नहि.
 ए जीवनुं कव्याण नथी तेथीकरीने समजवुं जे
 बाह्यदृष्टि ठे ते खोटी ठे अने अंतरदृष्टि छे ते घ
 णी श्रेष्ठ ठे माटे एक ज्ञानमाज चित्त राखवुं ए-
 थीज आपणु कार्य थशे ए शास्त्रसंमतिनो रेश
 देखाडयो तथा उपदेशमाळामाहि जे कह्यु ठे ते
 हुं कह्यु छु

॥ उक्तंच ॥

नाणाहिउत्तर । हीणोविहुपवयणंपजावंतो ॥
 नयउ कस्करितो । सुहुविअप्पागमोपुरिसो ॥ १॥
 अर्थ-हवे ए गाथाने विपे शुं अर्थ कह्यो
 ठे ते कह्युं तु नाणाही कहेता जे ज्ञानेकरीने
 सहित एट्ठे बाह्यज्ञान तथा अन्यतरज्ञान वने

अने ज्ञानी पुरुषनी सेवामां रेहेवु ए पण हुकर
 ठे तथा अन्यदर्शनील तथा स्वदर्शन दिगंब-
 रादि मतवाला इत्यादिकनी सजाल थाय ठे ते
 सजालने विषे सामानी बात जुठी ठराववी अने
 पोताना दर्शननुं स्थापन करवुं ते कंई ठोकरानी
 रमत नथी केमके ते पण सामा पंडित ठे माटे
 शासनतो ते थकी रहे पण कंई क्रिया प्रमुख-
 वाळा थकी रहे नहि माटे ज्ञान नय छे ते हु-
 करज ठे माटे तेने हुकर कहिने बोलाव्या पण
 जो सदाए आत्मा नीरमणता होय तो तो ए
 हुकर करणनो कर्ता ठे पण क्रिया कष्टनां क-
 रनाग्ने हुकर करणीनां करनारा केहेवाय नहि
 एटले ए वे गाथानो जेगो अर्थ कह्यो

॥ गाथा ॥

इत्यादीक बहु शास्त्र जोड, आलपंपालने
 यलोरे ॥ प्रमादभावने दूर करीने, ज्ञानवासीमां
 मा'लोरे ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥

हवे ए गाथानो अर्थ कहीए ठीए इत्या
 दिक कहेता पूर्वे कहां ते शास्त्रनी सारयो ते

स्वरूपनुं जाणपणुं होय तो ते अत्यतरज्ञान ठे
 एम ज्ञानसहित जे मुनिराज ठे पण व्रतथकी
 हीन ठे एतले व्रतादिक कंठ पाठना नथी तोपण
 बहु केहेता घणोज उत्तम छे आ माटे प्रवचननो
 प्रजापोक ठे एतले जेनशामन स्थापवामा ते अ-
 श्वेसरी ठे माटे एने उत्तम कहिए. आ माटे जे
 नय डुकर केहेता जे डु कररणीनो कर्ता एनेज
 कहिए एतले जे कष्ट क्रिया आतापना प्रमुख
 करे छे तथा पंचमाहात्म्य चोखा पाळे ठे वेना
 लीस दोषरहित आहार ले छे इत्यादिक जे कष्ट
 करे ठे तेने कंठ दुषर करणी कहीए नहि एतो
 राधना साध ठे ए वाळजीवनी करणी ठे ए
 क्रियानय ठे, ते दर्शननी लंछलाण आसरी तथा
 वाळजीव ठे तेने वाढामां राखवा वास्ते ठे माटे
 ए क्रियानय ठे ते सामान्य ठे ते ए क्रियावाळा
 ने कंठ डुकर केहेगाय नहि अने ज्ञाननय ठे
 ते तो डुकर ठेज शा माटे जे क्रियाना करनार
 सो नीकळे पारे ज्ञाननो प्रणनार एक नीकळे तो
 प्रलोज माटे ज्ञाननु प्रणवु एज माहा डुकर ठे

रटा ए कोटने विपे कोइ पेसी शके नहि. तथा
 जपयोगहार ठे तेनी अंदर जे गुणरूपीयां वृद्ध
 ते अनंता छे ते वे जातना ठे. एक खसबोइ ले-
 वारूप कुसुमनुं झाड ठे एक आस्वादन लेवा-
 जोग फळवृद्ध ठे हवे तेनो विवरो कहु ते सां-
 न्यो. जे ज्ञानादिक अनंता गुण आत्माना ठे
 ते रुप तो वृद्ध ठे अने जे आत्माना अनंता प्र-
 जायरूप एना पातरां प्रमुख ठे शुद्ध व्यवहार
 रुप एनां पुष्प ठे, अने शुद्धनिश्चयरूप एना फळ
 ठे ते वामीनीमांहिली कोरे अनुभवरूपी एक म-
 हेल ठे तेने विपे अनेक जातनां क्रिमा करवानां
 स्थानक छे त्यां आत्माराम वेसीने क्रिमा करे
 ठे एखे ज्यांसुधी खसबोइनी इहा ठे त्यांसुधी
 जेदज्ञानमां रमे जेने फळना अस्वादननी इहा
 ठे ते अजेदज्ञाने स्थिर थाय अहियां कोइ
 कहेशे जे फळ मुकीने पुष्पसुगधनी इहा कोण
 राखे? तेनो उत्तर जे जेनी पासे थोडी पुंजी होय
 तेनाथी ए फळ लेवाय नहि, केमके ते बहु मोघा
 मुलनां छे अने थोमी पुजीवाळा छे ते पुष्पादि-

शास्त्र तथा बीजा पण अनेक शास्त्रने विषे ए
 ज्ञान तेज मुख्य कह्यु ठे ते वस्तुने हृदयने विषे
 धरीने तेनीज श्रद्धा करीने आळपंपाळ कहेता
 जे नैगमादिक नयना पदा धर्मव्यवहार विनाना
 तथा कुनयना पदा जे पासत्यादिकना बाधेला
 ग्रंथो ते मार्ग ते सर्वे आळपंपाळ कहीए तेने टा-
 छवा नाम दूरे करो एट्खे प्रमादजाव कहेतां
 जेने विषे वस्तुधर्मनो विचार नहि तेने प्रमादजाव
 कहीए ज्या आत्मउपयोग छे त्या अप्रमादजाव
 कहीए ए आत्मउपयोग विनाना जे कारण क-
 रवा ते सर्वे प्रमादजाव जाणवो तेने अळगो क-
 रीने ज्ञानगामीमा महाबु कहेतां जे ज्ञानरुप वामी
 ठे तेने विषे किमाविनोद करु हवे ते ज्ञानवा-
 मीनु किचित् स्वरुप देखाउ तु अहिया स्वजाव-
 पुर नामे पाटण तेने विषे ए ज्ञानवामी छे, ते
 केवी ठे ते वामीनु नाम ज्ञान तेने फरतो कोट
 सवरुपी ठे एट्खे ज्या मन, वचन कायानो जोग
 तथा अशुद्ध उपयोग, ए अहिया रीकाणो ए-
 ट्खे त्या राग, द्वेष, मोह, विषयरुपायादिक चो-

वत दशमा गुणगणा सुधी ज्ञेदज्ञान छे ते ज्ञेद
 ज्ञानरूप पुष्पनी सुगंध घणीज वृद्धि पामे पण
 अहियां सुधी फळनी प्राप्ति नयी माटे एने पु-
 ष्पवृद्ध कहीए तेज आत्मा अज्ञेदज्ञाने पहेचे,
 तेने फळवृद्धनी प्राप्ति थाय अने त्यांज आस्वा-
 दन ले एटले त्यां मुक्तिरूप फळनी प्राप्ति थइ!
 अहियां कोइ कहेशे मुक्ति तो चौदमा गुणग-
 णाने अंते वे अने तमे वारमे गुणगणे केम
 वतावी? तेनां उत्तर जे फळ थाय ते एरुसाथे फळ
 परिष्क थतुं नथी जेम केरो फळरूप वे ते आंवाने
 प्रथम मंगीओ थाय, पळी मरवा थाय, त्यार पळी
 केरो थाय ते पळी साखतो थाय. पण ज्यांथी मंगी-
 ओ वेगो त्यांथी फळ कहेवां तेम अहियां वारमे
 गुणगणे वीतरागज्ञारूप मंगीओ प्रगट थयां.
 मुक्ति कहेतां रागद्वेषनी मुक्ति थइ एटले रागद्वेष
 टळी गयो, माटे अहियां फळनुं आस्वादन थयुं
 एवां जे वे प्रकारनां वृद्ध ते वाप्तीमां वे तेमां अ-
 नुभवरूपी आ महेलने विषे वेसीने ए पुष्पनी
 सुगंध ललं लं अने त्यां अनेक जातनां किडा-

कनी सुगंध लडने गुठी थाय ठे अहिया कोइ
 कहेजे जे ज्ञानजापने विषे रे जाति केम बतावो
 छे ? जे पुष्पवृक्ष फल न थापे एवु ज्ञान कोण
 ठे ज्ञानवृक्ष तो मर्वे फल थापेज तेनो उत्तर
 जे ज्ञान ठे ते रे प्रकारनु ठे जेदज्ञान ? अजेद
 ज्ञान १ ते मध्ये ज्ञान छे ते पुष्पवृक्षरूप ठे एटले
 तेनी सुगंध घणी उत्तम ठे पण फळनी प्राप्ति
 अहिया थाय नहि तेनो विररो सांजळ जे प्र-
 थम चतुर्थ गुणठाणे जेदज्ञान प्रगटे त्या जीवनो
 ने जन्तो जेद नोखा पामे तेवारे जीवरूप वृदाने
 प्रागजावरूप पुष्पनी फूट थाय पठी तेज गुण-
 ठाणामा वृद्धि पाण थाय कोइने तेद्वुं पण रहे
 त्यार पठी अष्टमगुणठाणे जाय त्यां श्रेणीरूढ क-
 हीए त्या ते पुष्पनी वृद्धि घणी थाय शा माटे
 पूर्वे तो जडचेतननो विज्ञाग कर्यो हतो अने अ-
 हियां तो जे चेतनजाव आत्मा छे तेना गुणप्र-
 जाय लक्षण स्वजाव ए सर्वे जिन्न जिन्न करे
 अने ते विचारने विषे स्थिर जाय होय तथा ते
 प्रजाय प्रमुख गुणने विज्ञे पण सप्रमावे ए या-

ना मुळगा श्लोक वत्रीश ठे ते उपर टीका त्रण
 हजार ठे तथा संमत्तिप्रंथनी मुळ गाथा श्योग-
 णचाळीस ठे. बाकी प्रेक्षक गाथाओ ठे तोपण
 पांचसेने आशरे ठे ते उपर टीका एकतो वत्री-
 शहजारी ठे तथा एक पचीसहजारी ठे तथा एक
 पांचहजारी ठे माटे अहियां न्यायग्रंथने विपे
 मुळ सर्वेनुं थोडुंज होय ने अर्थ तो घणोज
 होय तथा व्यवहारशास्त्रमां पण एमज ठे. शा
 माटे के आशयकनु वसें श्लोकनुं पण पुर जणातुं
 नथी ने ते उपर टीका बावीसहजारी ठे. तथा
 बृहत्कल्पनुं मूळ पांचसें श्लोकने आशरे ठे ते उ-
 पर टीका पंचावन हजारो ठे तथा वेंनाळोग ह-
 जारी ठे माटे शास्त्रना मुळ उपर टीकानो नियम
 नहि एम समजवुं हवे ए सर्वे ज्ञाननो महिमा
 दखाड्यो एट्ये ए स्तवन श्योगणीसेने चोवीशनी
 सालभां माहा वद दशमने दिवमे करेडुं ठे ए-
 ट्ये ए वीशनी गाथानो अर्थ कड्यो ॥

ते कारण बहुश्रुतने जोइ । सेवा तेहनी की-
 जेरे ॥ मुनि हुकम कहे ज्ञानने पामी ॥ सेजे

विनोद ते प्रत्ये करुं तुं एटले ए ज्ञानवानी श्यो-
 छवावी एटले श्योगणीसमी गाथानो अर्थ मंपूर्ण
 थयो ॥ गाथा २० ॥

प्रव्य जीवना हितने अर्थे । एह संबंध ते
 दारयोरे ॥ श्योगणीसें चोवीसनी साले । माहा
 वद दशमीए जाख्योरे ज्ञा० ॥ २० ॥

ए गाथानो अर्थ एटले श्या जे स्तवन कर्युं
 ते एक प्रव्यजीवने उपकारनिमित्ते कर्युंछे, तथा
 ज्ञाननो महिमा देखाम्वा वास्ते कर्युं हतुं. पण
 श्रोताप्रमुख ज्ञानअर्थी जीव ते वळग्या जे अ-
 मने ए स्तवनथी बराबर खुलासो न थाय माटे
 कृपा करीने स्तवन उपर ग्रंथ बांधी श्यापो, ते
 श्राताना श्याग्रह्यकी ग्रंथ बांध्यो ते अहियां
 कोइ कहेसे जे स्तवननी गाथा तो एकवीसज
 ते अने ग्रंथ तो तमे बहु जारे करी नांख्यो तेनो
 उत्तर जे न्यायग्रंथ ते ते तो एकेकपद उपरथी
 विशेष थइ जाय तोपण अमे तो ग्रंथ जारे थ-
 वाना प्रथकी विचारो विचारीने संक्षेप वार्ता
 नाखी छे यद्यपी जो जोशो तो स्याहादमंजरी

ज्ञाननुं बहुमान तो घणुं कर्तुं अने क्रियानुं तो
 अपमान कर्तुं, तेनो उत्तर-जे आ संसारमां ए
 रीती ठे के जे पदमां वेसे तेनुं बहुमान करे अने
 सामा पदनुं अपमानज थाय एक तो एज का
 रण ठे. हवे बीजुं कारण समजो जे आ ग्रंथनुं
 नाम ज्ञानरूपण ठे एट्ये ए ज्ञाननुंज आंजरण
 छे जेम आंजरणवने मनुष्य शोजे ठे, तेम आ
 ग्रंथवने करीने ज्ञान घणुं दीपी उठे ठे माटे ज्ञा-
 ननयने विशेष करता कोइ रतनुं दुषण नथी
 ए तो धर्मनी वृद्धिकरता ठे ने महानिर्जरानुं का-
 रण ठे अहियां कोइ तर्क करे के जगवाने
 सान नय कह्या ठे ते कंइ खोटा ? तेनो उ
 त्तर जे-जाइ तें तर्क करी पण तुं कंइ सात न-
 यमां समजतो नथी अने जगवाने जे सान नय
 कह्या ठे ते तो सत्यज छे पण अज्ञानी जे नयने
 नथी समजता अने मुखथकी सात नय सान नय
 पोकार्या करे ठे ते धणी नयनी वातमां शुं स-
 मजे ? ने धर्मनी वातमां पण शुं समजे ? हवे जे
 परमात्माए सान नय कह्या ठे ते तो सत्यज ठे

शिवसुख लीजे रे ज्ञा० ॥ २१ ॥

एनो अर्थ - अहो ज्ञयजो ! अपारो हेतु
 उपदेश तमने सर्वने छे माटे बहुश्रुतगुरु जोशने
 तेनी सेवा करो तेथी तमने धर्मनी प्राप्ति अंगे,
 अने तेज तमने ज्ञानमार्ग देखादंगे पण जेनी
 पासे आत्मउपयोग नथी ते तमने ज्ञानमार्ग
 क्यांथी देखादंगे? ते कारण माटे एवा बहुश्रुत
 स्वस्वरूपना उपयोगवन तेनी पासेथी तमो आ-
 त्मस्वरूपने ओलखो अने तेने विषे रमणता क-
 रवी तेने ज्ञानअन्यास कहीए ते तमे करो हवे
 मुनि कहेतां जे अरिहतपरमात्मा तेनो हुकम
 कहेतां जे आज्ञाने एवीज रीते फरमावी ठे ते
 कारण माटे एवी आत्मस्वरूपज्ञाननी रमणता
 करताथका तदरूप थशो तो एसेज कहेता स्व
 प्रावेज मुक्ति थशे ने शिवभमणीनां सुख जोग-
 वशो अनतासुख अनागतकाष्ठ अनंतो ठे त्या
 सुधी तमे सदायकाल सुखमा रहेशो ए एकवी-
 समी गाथानो अर्थ सपूर्ण तथा स्तवननो अर्थ
 पण समाप्त थयो अहिया कोई कदेशे जे तमे

माटे ए नय देखीता पदार्थने विषे ए नय सत्य
 ठे तथा रज्जुसूत्रनय ठे ते तो मनना परिणामने
 ग्रहे ठे ते तो सिद्धसंसारि तेने करीने माने ठे,
 एट्ठे जे समये जेवा पणाम तेने तेवा कहे ठे
 ए वात ग्रहणने विषे ए नय सत्य ठे परंतु परि-
 णाम ठे ते तो जन्म ठे ने क्षणगुर छे एट्ठे
 क्षणक्षण परिणामनुं परावर्तन धर्म ठेज एम स
 मजबुं माटे ए चार नय सुधी तो कंइ धर्म तो
 छेज नहि ध्यने धर्म तो परमात्माए उपली त्रण
 नयमांज परुषुं ठे माटे ए सातेनय सत्य ठे पण
 ते सर्वेने स्थानके ठे माटे धर्मश्चर्ची जीवोने उ-
 पली त्रण नयनोज स्वप विशेष करवो ध्यहियां
 कोइ कदेशे के एतो एकांतवाद ध्याय तेनो उ-
 त्तर जे शुगडांगजीने विषे कह्युं ठे जे “ एकांते
 होयमिथ्याउ” ते एकांतपद बोले तेने मिथ्या-
 त्वी कह्यो ठे ते क्रियापदाने कह्युं छे जेम कोइ
 जान लइ जाय ने मही वर नथी ने मोटो ध्या
 ध्यांवर करे ध्यने कहे जे वरनुं शुं काम ठे ते
 जान कोइ ठेकाणे ध्यादरमान पामवानी नथी

पण ते सर्वे सर्वेने स्यात्तु हे छे ए कंश् एक नय
 वने ज्ञानानि फेरवीए तो ते कंश् सत्य ठरे नहि
 केमके कोशनी पामे पात्र रुपिया होय ते पण
 कहे जे मारी पासे रुपिया ठे कोशनी पामे क-
 रोम रुपिया होय ते पण कहे जे मारी पासे रु-
 पिया ठे पण कश् ए वे बरोबर थाय नहि थने
 करोडपनिना लेखामा पांच रुपियावाळो कश् ठे
 नहि तेम अहियां निगमादिक नयो ते कंश् श-
 व्दादि नयना आगळ ए नय कश् गणत्रीमा पण
 ठे नहि ते हवे कहु ते तु समजजे नैगमनय ठे
 ते आरोप प्रमुखने विशेष खप लागे ठे, ए ठे
 काणे ए नय सत्य ठे परंतु अवस्तुने वस्तु माने
 ठे तथा सग्रहनय छे ते गोळा पहेलो वाळे छे.
 परंतु गुणीअगुणी तथा वस्तुअवस्तुनो एने घे
 जेद ठे नहि ए सर्वेने एकज रुप मानी ले छे
 ते काममां ए नय सत्य ठे तथा व्यवहारनय ठे
 ते देखोता पदार्थने माने ठे तो ए नयथकी गु-
 णीअवगुणीनी खबर न पमे तथा सिद्ध निगो-
 दादिक जे दीठामां न आये ते असत्य थई गयु

अने क्रिया करे तो शुं फायदो आपे ते वतावो
 अहियां तो जे गुण प्रगट्या छे ते गुण मुक्तिमा
 खप लागवाना छे अने अहिया जे क्रिया ठे
 ते पूर्वकृत्यकर्म चार बाकी रह्या ठे ते कर्मना ल-
 दयने विषे प्रवर्त्तवुं ते क्रिया ठे पण प्रतिक्रमण
 पनीलेहण प्रमुख तमारी क्रिया ते तो कंइ ठे
 नहि. अहियां कोइ कहेगे जे जगवाननो मार्ग
 तो स्याद्वाद छे अने आ वचनअफी स्याद्वाद र-
 हेतो नथी तेनो उत्तर जे जेने अनुभवज्ञान प्र-
 गट्युं ठे ते तो जाणे जे स्याद्वाद सहितज वचन
 ठे अथवा जेणे न्याय प्रमुखना शास्त्र जोयां होय
 तेना पण समजवामां आवे के वचन स्याद्वाद ठे
 पण जेने ए वस्तुनो खबर नथी ते विचारा स्याद्वा-
 दमा शु जाणे हवे जे स्याद्वाद शब्द ठे ते कहु
 ते समजजो. साते नयनुं स्वरूप ठे तेज स्याद्वाद
 ठे तथा अर्थार्थिक पर्यायार्थिक पदप्रमाण प्रमु-
 ख स्याद्वादज ठे तेनुं स्वरूप जाणे तेने स्याद्वाद
 कहीए अने तेनुं वचन ते स्याद्वाद विना होय
 नहि हवे स्याद्वाद कहेतां कोइ सप्तजंगीना स्व-

ध्येने जो वर जेगो हशे गांमोघेलो तोयपण ए
 जान मान पामशे ध्येने वर तो एकलो जशे
 तोए मान पामशे तेमे अहियां क्रियापदी ध्या
 त्मज्ञान विनाना ते जीवनु कव्याणें पण नथी ने
 सारी गति पण नथी ध्येने जो गांमोघेलो वरया
 ग्य आत्मज्ञान थोडुं पण हशे तो ते जीवने शु
 भगति थशे ध्येने जे ज्ञानधनुजव जेने प्रगट्या
 ते तो सर्वथा प्रकारे क्रियानो संग नहिज करे
 ए जीव तो एकातपद पोटानो आत्मस्वभावनी
 ज तेमो रमणता करे ध्येने ते जीव मुक्ति पामशे
 शा माटे जे अप्रमादिगुणगणेषी क्रिया विलकूज
 ठे नहि ध्येने मुक्ति तो ते गुणगणामाज छे ध्येने
 गुणनी वृद्धि पण ते गुणगणामा ठे माटे ज्ञा
 नपदवाळाने एकातवादीशास्त्राळ्य कहेता नथी
 ते तो महाधर्मिष्ठे छे ध्येने महा उत्तम पुरुष ठे
 अहियां कांइ कदेशे जे व्यवहार तो तेरमा गु
 णगणामा व्ह्यो ठे तेनो उत्तर जे तेरमे गुण
 गणे कांइ नवो गुण तो प्रगट ध्यानो नथी
 ध्येने अहिया क्रियाव्यवहार पण कइ ठे नहि

रहो ठे अने क्रिया छे ते आश्रवजावज ठे ते संवर
 थवानो नथी हवे जे आस्तिनास्ति सप्तजंगी ठे
 तेने विषे तो परजावनुं गवेखुं थाय ते तो ना-
 स्तिजावे थाय माटे स्वस्वजावने परस्वजाव ए वे
 मळाने सप्तजंगी थाय एटले ए स्वपग्राही सप्त-
 जंगी ठे जे सप्तजंगी स्वग्राही ठे ते कहुं ते सां-
 जळ सामान्य तथा विशेष तेनी सप्तजंगी थाय
 तथा ते नित्यअनित्यनी सप्तजंगी थाय तथा एक
 अनेकनी सप्तजंगी थाय तथा सत्यअसत्यनी स-
 प्तजंगी थाय. श्रुत्यादिक घणी सप्तजंगी थाय छे
 ते सत्य ठे ने स्वग्राही ठे माटे ते स्वग्राहीसप्तजंगी
 तेने स्याद्वाद कहिए एटले ए स्याद्वाद मत्य ठे,
 ते सप्तजंगीनुं स्वरूप सक्षेपे करी देखाहुं हुं. स्या-
 दसामान्य १ स्यादविशेष २ स्यादसामान्यविशेष
 ३ स्यादअव्यक्तव ४ स्यादसामान्यअव्यक्तव ५
 स्यादविशेषअव्यक्तव ६ स्यादसामान्यविशेषजु
 गपतअव्यक्तव ७ एटले ए सात जंगी तथा ए-
 नुंज नाम सप्तजंगी कहिए हवे एनो अर्थ कहुं
 ते समजो सामान्य वहेतां जे सरखो जाव सर्वमा

रूपने माने ते पण सर्व आ ग्रंथने विपे आवेलो
 ठे तथापी स्याहाद रुड क्रियापदां लागु पन्-
 तो नथी एतो निष्केवळ एक नास्तिकजावमां पा
 मीए एटले ज्ञान अने क्रिया ए वेनी सप्तजंगी
 करीए त्या पण नास्तिकजावेज लावे तथा संवर
 तथा आश्रवनी सप्तजंगी करीए त्यां पण क्रिया
 नास्तिकजावज द्योयशा माटे जे स्वस्वजावे आ
 स्ति ने परस्वजावे नास्ति एटले ज्ञानना स्वजा-
 वमां क्रियानु नास्तिकपणुं रहु ठे अने ज्ञान ठे
 ते तो आत्मस्वजावज छे अने क्रिया ठे ते पुद्गल
 स्वजाव ठे माटे स्वस्वजावे आस्ति अने परस्व-
 जावे नास्ति त्यां क्रिया नास्ति जावमां रही तथा
 ज्या संवरजाव ठे ते तो स्वस्वजाविक ठे अने
 आश्रवजाव ठे ते परस्वजावि ठे माटे संवर छे ते
 आत्मा छे अने आश्रव छे ते जन्मजाव ठे अ
 हिया कोश कहेशे जे आश्रवजाव तो मिश्रस्व-
 जाव ठे ते वात खरी छे पण ते तो व्यवहारन-
 यने मते ठे पण ज्ञानने मते तो ते अजीव ठे
 माटे ज्या संवरजाव ठे त्या आश्रव नास्तिजावे

ह्योठे अने क्रिया छेते आश्रवजावज तेते संवर
 थवानो नथी हवे जे आस्तिनास्ति सप्तजंगीठे
 तेने विषे तो परजावनुं गवेखवु थाय ते तो ना-
 स्तिजावे थाय माटे स्वस्वजावने परस्वजाव ए वे
 मळाने सप्तजंगी थाय एठले ए स्वपस्राही सप्त-
 जंगी ठे जे सप्तजंगी स्वग्राही ठे ते कहु ते सां-
 जळ. सामान्य तथा विशेष तेनी सप्तजंगी थाय
 तथा ते नित्यअनित्यनी सप्तजंगी थाय तथा एक
 अनेकनी सप्तजंगी थाय तथा सत्यअसत्यनी स-
 प्तजंगी थाय. इत्यादिक घणी सप्तजंगी थाय छे
 ते सत्य ठेने स्वग्राही ठे माटे ते स्वग्राहीसप्तजंगी
 तेने स्याद्वाद कहिए एठले ए स्याद्वाद सत्य ठे,
 ते सप्तजंगीनुं स्वरूप सक्षेपे करी देखावुं वुं स्या-
 दसामान्य १ स्यादविशेष २ स्यादसामान्यविशेष
 ३ स्यादअव्यक्तव ४ स्यादमामान्यअव्यक्तव ५
 स्यादविशेषअव्यक्तव ६ स्यादसामान्यविशेषजु
 गपतअव्यक्तव ७ एठले ए सात जंगी थया ए-
 नुंज नाम सप्तजंगी कहिए हवे एनो अर्थ कहुं
 ते समजो सामान्य वहेतां जे सरखो जाव सर्वमा

लाधे एतले जेम चेतनालक्षण निगोदथकी ते
 सिद्ध सुधीमा सरखे जाव ठे ए सामान्य कहीए
 ते सामान्य ठ प्रकारे कह्या ठे तेनां नाम कहीए
 ठीए आस्तीत्व : वस्तुत्व १ अव्यत्व २ प्रमेयत्व
 ४ सत्यत्व ५ अगुरुलघुत्व ६ ए ६ सामान्यगुण
 ठे पण ते तो सद अव्यने आश्रीने ठे ने अ-
 हिया तो चेतनद्रव्यनुज कहेवु ठे माटे अहियां
 वे गुण बीजा पण लेवा चेतनत्व १ अमूर्तत्व २
 ए आठ लक्षण सामान्य जीवद्रव्यने विषे ठे ते
 अमे पूर्वे सामान्यगुणमां कह्यां ठे. ए सर्वे ल-
 क्षणे होय तेने सामान्य कहीए ए सामान्य वे
 प्रकारे करीने आळखावु तु वाज्यथकी १ अन्य
 तरथकी २ जे जीव चेतनालक्षणमात्र ठे ते के-
 वळी वचने प्रमाण ठे एवा जे अव्यक्त निगोद
 पृथ्वि आदिक अव्यक्तजावे ए जीव सामान्य
 कहेता सरखे जावे ठे तथापि जे त्रसजीव ठे ते
 त्रास पामे छे तथा दहान, ताप, कुधा, तृपा प्र-
 मुख वेदे ठे ते ए जावे ए सरखा सामान्यस्वजावे
 गतिमा ठे ए ग्राह्यथकी ममजवा तथा अ

अन्यतरथकी जीवमात्र अरूपी गुण सरखो ठे अ-
 मुर्ति तथा अविनागी तथा अरागी अक्षेपी तथा
 ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य इत्यादिक सामान्य
 स्वभाव सर्वे जीव निगोदथी ते सिद्ध सुधी सर
 खा गुण लाधे छे ते सामान्यस्वभाव कहीए पण
 शक्तिभावे ठे हवे जे विशेष गुण ठे तेना वे प्र-
 कार ठे एक वाज्यथकी १ तथा एक अन्यतर
 थकी २ हवे बाह्यथकी जे निगोदीया करतां
 पृथ्वी आदि जीव तेनी काया प्रत्यक्ष जोवामां
 आवे ठे तो निगोदीया करतां ए विशेषज्ञ ठे
 अने ते मध्ये पण वनस्पतीने विषे चारे संजा
 आदि जोवामां आवे ठे तो ए प्रत्यक्ष विशेषपणुं
 जोवामां आवेछे ते करतां असजीव ठेनमा विशेष-
 पणुं जोवामा आवेठे तेथी तिर्यचपंचेन्द्रितेथी मनु-
 ष्य एक एकथकी एक एकमा विशेषपणुं जोवा-
 मा आवे ठे ए सर्वे बाह्यथकी ममर्जी खेवुं तथा
 अन्यतर विशेष जे ठे ते मनुष्य द्वैगतिथी नी-
 चली गतिवाळा जीवोने ज्ञान अंशुं नामन था
 ठे अने तेनी गति करना मनुष्यनी गतिने

केवलज्ञान तथा केवलदर्शन ए घणो विशेष
गुण ठे एटले ए वने सामान्य विशेष श्रोत्रावा
वास्ते कह्यं तथा बीजे प्रकारे सामान्य विशेष
श्रोत्रावां तु ते समजो हवे जीवद्रव्यने विपे सा
मान्य विशेष लक्षण कह्यं तु. त्या प्रथमथकी
सामान्यविशेषतु लक्षण कह्यं तु जे जीवद्रव्य प्र
थमथकीज पोताना द्रव्य ते विशेष व्याप्तो होय
तथा गुणप्रजायमा पण सदाय पोतेपणामा ए
टले व्यापक पण सदाय एने विपे ठेज तेने सा
सामान्यस्वभाव कह्ये ठीए ते सामान्यस्वभाव तो
एकज होय एतो बीजा जाग थाय नहि ते स
दाय काळ नित्य होय, अविनाशी होय तथा
अवयव अविजाग रहित स्वगत कह्येता सर्व
जीवद्रव्य आप आपणामां व्यापकपणेज रहे
ठे तेने सामान्यस्वभाव कह्ये एटले सामान्य
स्वभाव कहेवानो सार शु ठे के जीवद्रव्य एक
पिडपणेज ठे एम सर्वगुणप्रजाय ए सर्व मळीने
एकज द्रव्य ठे ए सदाय नित्यज ठे एने सा
मान्यधर्म कह्ये ए जीवद्रव्य एक एवा अ
नंता निगोदथी ते सिद्धपर्यंत एकसरखाज जा

एवा. अहियां कोइ कहेशेजे गुणप्रजाय प्रदेश
 अनेक ठे तेने एकरुपे केम कहो गो ? तेनो उ-
 त्तर जे ए गुणप्रजाय प्रदेश छे ते सर्व एक पिड
 रूपेज ठे ए कंइ जिनरुपे थाय नहि अने पो-
 तानो सामान्यस्वभाव छोमे नहि माटे एने सा-
 मान्यज कहिए, ए सामान्यस्वभावतुं प्रणमन
 कह्युं ते सामान्यस्वभावना बे जेद ठे ते शास्त्र-
 प्रवर्तन तथा लोकव्यवहारे ग्रहण थाय ठे ते
 कहुं तुं महासामान्य ? तथा अर्वांतरसामान्य २
 ए बे जेद ठे तेमध्ये जे अस्तित्वादिक सर्वे प-
 दार्थने विषे ए ठेज तेने महासामान्य कहिए
 एनी श्रुतज्ञानवडे करीने प्रतित थाय पण जा-
 एवा देखवामा अर्वावे नहि एने महासामान्य क-
 हीए तथा केवळदर्शनवाळो होय तेज जाणे हवे
 जे परोक्ष न ग्रहवाय ते माटे एने महासामान्य
 कहिए तथा अर्वांतरसामान्य ते चक्षुदर्शन तथा
 अचक्षुदर्शन तथा अर्वाधीदर्शन करी ग्रहण थाय
 एटले जेम वृद्धप्रमुख तथा जनावर प्रमुख तथा म-
 नुष्यप्रमुख तथा देवप्रमुख अनेक जातिथ्यो छे.
 तेमध्ये वृद्धपाणुं तथा जानवरपाणुं तथा मनुष्यपाणुं

तथा देवपणु ए एकएक शब्दने सामान्यपणु ठे
 शा माटे जे वृक्ष ए शब्दमा झारु सर्वे ध्यावी
 गया तथा जनावर शब्दे सर्वे जातनां जनावर
 ध्यावी गया मनुष्य शब्दे मनुष्य सर्वे जातनां
 माही ध्यावी गया देव शब्दे देव सर्वे जातना
 ध्यावी गया माटे ए चारे मुख्य शब्द सौ सौनी
 जातिमां ए सामान्य शब्द ठे इत्यादिक सा-
 मान्य शब्द ते चहु, अचरु तथा अर्थी ए त्रणे
 दर्शनयकी ग्रहण थाय ठे तेने अवातरसामान्य
 कहीए अहियां कोइ कहेशे जे अवधीदर्शनने
 तमे जे माहासामान्य ग्रहवानुं रुह्यं नहितो शु
 अवधीदर्शनवाळो ग्रहे के न ग्रहे? तेनो उत्तर
 के पुद्गलद्रव्यनी जो प्ररुपणा होत तो अर्थ-
 धीदर्शन कोइ जगाए स्वप लागे पण अहिया
 तो एक जीवस्वरुपनीज व्याख्या ठे, अने जे
 अस्तित्वादिक गुण तथा जीवद्रव्य ए सर्व अर्थ
 रुपी ठे माटे अवधीदर्शनथी ग्रहण थाय नहि
 कारण एवु ठे के अवधीदर्शन जे रुपीनो विषय
 ठे ते कारण माटे ए अर्थी आत्मद्रव्यना जे
 स्वभाव ते कंइ अवधीदर्शनना जाणवामा ध्यावे

नहि माटे माहामामान्य केवळी विना बीजो न
 जाणे अने श्रुतकेवळी तथा देव जे उपरना
 मोटी रिद्धिवाळा छे ते जाणे पण केवळीना व-
 चनथकी जाणे पण पोताना प्रत्यक्षज्ञानथी त-
 था पोताना प्रत्यक्ष दर्शनथी देखवुं जाणवुं न
 थाय एटले ए संक्षेपथकी सामान्यस्वभाव थो-
 लखाव्यो एटले पहलो जांगो स्यात् सामान्य ते
 जांगानो अर्थ कह्यो हवे जे विशेष धर्म ठे ते
 पण ज्ञानगुणेकरिने ग्रहण थाय ठे ते विशेषतुं
 लक्षण कह्यो ए के एक एक जीवद्रव्यने विषे
 केटलाएक धर्म नित्य ठे केटलाएक धर्म अनि-
 त्य ठे केटलाएक ठकाणे अवयव सहित ठे कोश
 क रीते अवयवरहित पण ठे एटले जे स्वपर्याए
 सामर्थ्यपर्याए करी निरवयव ठे अने अविजाग
 पर्याएकरी सअवयव छे कोश जगाने विषे सक्रिय
 ठे एटले सक्रिय कहेतां क्रियारूप हेतु, मळवाथ
 की देशगत कहेतां कोश कहेशे ए गुणमां व्यापे
 छे पण गुणांतर कहेता पोताना गुणनी अंतर्भूत
 व्यापी शकता नथी ते माटे एने देशगतज क-
 शगत ते आखा द्रव्यमां व्यापकज २

एतले जीवद्वयना अस्संख्यात प्रदेश ते व्यापे
 तेथी एने सर्वगत पण कहीए एम विशेष धर्मने
 विषे ज्यां जेवुं कारण होय त्या तेवुं जोनी लेवुं
 जे कार्य जे कारणथकी विशेष थाय ते गुणने
 पण विशेष धर्मज जाणवु ए सर्वने विशेष स्व
 नावज कहीए तथा पूर्व विशेष धर्मनी थोळ
 खाण कही ठे ते सर्वे थ्या जागामा लेवी एतले
 ए स्यात् विशेष ए बीजो प्रांगो कह्यो हवे
 बीजो प्रांगो स्यात् सामान्य विशेष नामे ठे ते
 सामान्य जे जगाए ठे तेज जगाए विशेष
 पण ठे जे जगाए विशेष ठे, ते जगाए सामान्य
 पण ठे एतले सामान्य विना विशेष कोश
 काळे होय नहि अने विशेष धर्म सामान्य
 सत्तामां रह्याज ठे जो उतिपर्याए ठे तो सामर्थ
 पर्याय थाय ठे माटे ए बीजो प्रांगो थयो स्यात्
 सामान्यविशेष कह्यो. हवे स्यात् अवक्तव्य कहेतां
 मुखथकी जे उच्चारण न थाय तेने अवक्तव्य क-
 हीए, एतले आत्मधर्मना अस्संख्याता प्रदेश अ-
 नता गुण अनंता पर्याय ए सर्व-मुखथकी उ-

चारण थाय नहि जेटला मुखयकी उचारणमा
 थावे तेने वक्तव्य कहीए जे उचारणमां न थावे
 तेने अक्त्वक्तव्य कहीए ॥ शिष्यवाक्या ॥ स्वामी ए
 ते सामान्यने अक्त्वक्तव्य कहोठो के विशेषने अ
 वक्तव्य कहोठो? तेनो उत्तर जे सामान्य ठे तेमां
 पण अनंतापर्याय अक्त्वक्तव्य ठे माटे तेने सामा-
 न्यअक्त्वक्तव्य पांचमो जांगो कहीए तथा विशेष-
 मां पण अनंतापर्याय अक्त्वक्तव्य ठे माटे ए ठडो
 जांगो विशेषअक्त्वक्तव्य नामे कहीए तथा सामा-
 न्यविशेषयुगपत् कहेतां जे जेगुं बोलवुं ते पण
 अक्त्वक्तव्य ठे एटले ए सामान्यविशेषयुगपत् नामे
 सातमो जांगो कह्यो एटले सामान्यविशेषनी स-
 सप्तजंगी कही तेमध्ये ठेह्या चार जांगानो विस्तार
 कर्यो नथी ते पंढितो पोतानी बुद्धिथी करजो,
 अथवा शास्त्रथी करजो एटले ए प्रथम सप्तजंगी
 कही. हवे बीजी सप्तजंगी नित्यअनित्य ते नामे
 कहुं बुं ॥ स्यात्नित्य १ स्यात्अनित्य २ स्यात्नि-
 त्यानित्य ३ स्यात्अक्त्वक्तव्य ४ स्यात्नित्यअक्त्व-
 क्तव्य ५ ॥ अनित्यअक्त्वक्तव्य ६ स्यात्नित्यअ-

नित्ययुगपत्प्रवक्तव्य. ७ ह्ये तेनो अर्थ नित्य
 कहेतां जे सदाय काळ ठे ने ठे कोइ काळे एनुं
 अनित्यपणु नहि थाय एटले सदाय काळ जीव
 द्रव्य नित्य ठे तथा चेतनालदाण जीव ते पण
 नित्य छे तथा गुण कहेतां ज्ञान १ दर्शन २ चा-
 रित्र ३ वीर्य ४ ए गुण सदाय नित्य ठे अहियां
 कोइ कहेते जे केटलाएक जीवद्रव्यमां ए गुण
 जोवामां थावता नथी. केटलाएक जीवद्रव्यमां
 सामान्यविशेष जोवामां थावे ठे तेनो उत्तर जे
 जोवामां नथी थावता ते अव्यक्तव्यजावे रह्या छे
 एटले केटलाएक अव्य वतीपर्याय ठे ने साम-
 र्थ्यपर्याय नथी थया ते जोवामां न थावे अने साम-
 र्थ्यपर्याय जे पामेला तेमध्ये सामान्यविशेष नजरे
 थावे ते क्षयउपसमजावनुं लक्षण ठे तथा जे
 क्षयकजावे सामर्थ्यपर्याय थया होय ते सर्वना
 सरखा जोवामां थावे एम समजवुं पण कोइ जी-
 वद्रव्य पोताना ज्ञानादिक गुणथकी रहित नथी
 सदाय ए गुण तो मही रह्याज ठे माटे ए गुण पण
 नित्यज कहेवाय एवुं श्रीभगवतीसूत्रे कह्युं ठे

॥ उक्तं च ॥

हे गौतम अथ्यीत्वं अथ्यीतेपरिणमश्नन्तीति
नन्तीतेपरिणमश् ॥

एनो अर्थ के हे गौतम एवं श्रीवीरपरमात्मा
कहे छे अथ्यीत्वं कहेतां अस्तिपणे प्रणमेलो छे
अने नन्तीत्वं कहेतां नास्तिपणे प्रणमेलो छे
एटले जे प्रणामिकपणुं एटले स्वधर्मने विपे जे
प्रणमवुं ते अस्तिधर्म छे तेने नित्यधर्म कहीए
एटले स्वद्रव्य १ स्वदेत्र २ स्वकाळ ३ स्वजाव ४
प्रणामिकपणे जे प्रणमे तेने प्रणामिकपणुं कहीए,
ते प्रणामिकपणुं ए वस्तुनो मुळ स्वजाव ते नित्यधर्म
ठे तेने स्यात्नित्य कहीए तथा तेज श्री ठाणं-
गजीने विपे चोजंगी कही ठे.

॥ उक्तं च ॥

सियअन्धि १ सियनन्धि २ सियअन्धिनन्धि ३ सि
यअवत्तवं ४ एटले ए चांगामांहेलो पहेलो चांगो
सियअन्धि कहेतां अवितथ एटले निश्चे एटलेते
सदाय नित्यस्वजावे ठे एटले ए पहेलो चांगो
कह्यो. हे स्यात्अनित्य कहेतां जेपर्यायने विपे

अनित्यपणुं ठे शा माटे जे उत्पाद व्यय ने ध्रुव ए
 त्रिजंगी जे ठे तेमध्ये ध्रुवपणुं ते नित्यस्वभावे ग्र-
 हण थाय अने उत्पादने व्यये ते अनित्यपणे
 ग्रहण थाय माटे उपजवुं तथा विणसवुं ए पर्या
 यनो धर्म ठे ते पर्याय वे प्रकारना ठे क्रमजावि
 ? स्वजाविक २ मजावि जे नरनरकादिक गतिनुं
 उपजवु तथा विणसवुं तथा मतना जे पर्यायनुं
 परावर्तनधर्म ते द्वाणद्वाण उपजवुं ने द्वाणद्वाण
 विणसवु ए वनेथकी एटले उत्पात ने व्ययथकी
 ए पर्याय ग्रहण थाय ठे तेने क्रमजाविपर्याय क-
 हीए तथा स्वजाविकपर्याय कहेतां जे ज्ञानादिक
 गुणना पर्याय ते समये समये उत्पात ने व्यय
 थाय ठे एटले खटगुण हाणि वृद्धि ते अगुरुख-
 धुपर्याय कहेवाय ते उत्पात ने व्ययथकी ग्रहण
 थाय ठे अने अगुरुखधु ते ध्रुवथकी ग्रहण थाय
 ठे ते सदाय नित्यज ठे जे ज्ञानादिकना पर्याय
 कहेता ते मातज्ञानादिक चारे ज्ञान सुधी ए क-
 यउपसम उपयोगी ठे ए कोइ समे अनंतगुणी
 वृद्धिनो पण उपयोग होय कोई समे अनंतगुण

हाणीनो पण उपयोग होय एम अहियां, खट-
 गुणी हाणिवृद्धिनो पण उपयोग होय तथा जे
 केवळज्ञान ठे ते द्वायकजावि उपयोग ठे, ते स-
 दाय काळ लाधे ते जे जे द्रव्य क्षेत्र काळ ने
 जावने विषे सर्वे अव्यने विषे ए चारे प्रकारे
 खटगुणी हानिवृद्धि थइ रही ठे ए केवळने पण
 खटगुणी हानिवृद्धि ठे एटले ज्ञेयविनाशे ज्ञान-
 नो पण विनाश थाय तथा ज्ञेयने उत्पाते ज्ञा-
 ननो उत्पात थाय अहियां कोइ कदेशे जे परनी
 अपेक्षाए हानिवृद्धि थाय छे पण सत्यपेक्षाए तो
 थइ नहि तेनो उत्तर जे स्वस्वजावमां अगुरुलघु
 पर्याय सदाय ठेज ते पर्यायवडे ज्ञानादिक जे
 उपयोग ते स्वपरनुं जे जाणवुं ते ए पर्यायवमे
 छे अने जो ए पर्याय न होत तो ए ज्ञानादि-
 कनुं जाणवुं ते कुटस्थ थात शा माटे जे संसारनी
 मांहेली कोर जीवपुजळ घणा ते अव्योनुं समये
 समये परावर्तनधर्म छे ते जो तेनी साथे ज्ञाना-
 नादिकनो उपयोग नहि करे तो ए उपयोगने
 शुं वहीए केमके जे जगाए खामो दीगो ते ठे-

काणे टेकरो थयो ठे. ह्वे ते ठेकाणे ए ज्ञान
 खामो देखशे अने ज्यारे खामोने खामो देखशे
 त्यारे ए ज्ञान जुहु ठर्यु ते कारण माटे जेम
 ज्ञाने पदार्थनुं फरवुं थाय तेमज ज्ञानादिक पर्याय
 फरे एटले ए अगुरुलघुपर्यायनो स्वभावज ठे
 ए रीते पर्यायनो परावर्त्तनधर्म एटले पहेले समये
 हतो तेनो नाश थयो ने बीजे समये नवा पर्याय
 उत्पन्न थाय ए रीते पर्यायनुं परावर्त्तनधर्म ते स
 दाय अनित्यज ठे ते श्री ठाणगजीनी चौजंगी
 प्रथम लखावी ठे तेमाहेलो बीजो ज्ञांगो अरियां
 लागे ठे ए प्रमाणे स्यात्अनित्य बीजो ज्ञांगो थयो
 ह्वे त्रीजो ज्ञांगो स्यात्नित्यानित्य कहीए ठीए
 जे पूर्वे स्यात्नित्यने विषे जीवद्रव्यादि सर्वे नि
 त्य कहां ठे जे समये नित्य ठे तेज समये पर्या
 यादिक सर्वे अनित्य ठे एटले एक समयेवे जाव
 जेगा लाधे ठे, एटले स्यात्नित्यानित्य त्रीजो
 ज्ञांगो कह्यो तथा ठाणगजीनी चौजंगीमां ए त्रीजे
 ज्ञांगे ठे ह्वे स्यात्अवक्तव्य चोथो ज्ञांगो ते ठा
 णगजीनी चौजंगीमां चोथो ज्ञांगोज ठे. ह्वे अ

वक्तव्य कहेतां वचनथकी उच्चारण न थयुं माटे एने अवक्तव्य कहीए ते नित्य अव्यादिक अनंता पदार्थ ठे थने अनंतागुणादिक पण ठे. ते नित्य छे पण ते मुखथकी वधा उच्चारण थाय नहि, तेथी ते स्यात् नित्यअवक्तव्य पांचमो प्रांगो जाणवो तथा जे पर्याय पण अनंता तथा केटलाएक गुण लक्षण स्वभाव ते पण अनित्य छे ते अनंता छे ते पण कंइ मुखथकी कहा जाय नहि तेथी एने अवक्तव्य कहीए एटले स्यात् अनित्यअवक्तव्य छट्टो प्रांगो थयो तथा नित्यपदार्थने अनित्यपदार्थ युगपत् कहेतां एवे जेगा जे एक समये उच्चारण थता नथी माटे एने युगपत्अवक्तव्य सातमो प्रांगो कहीए अहियां कोइ कदेशे जे त्रीजा प्रांगा ने सातमा प्रांगामां कंइ फेर पस्तो नथी, तेनो उत्तर जे त्रीजे प्रांगे कंइ वक्तव्य अवक्तव्य कहेवानुं कारण नथी पण नित्य कहीए त्यारे अनित्य बोलाय नहि नित्य कहेतां अनित्यनुं मृपावाद लागे अनित्य कहेतां नित्यनुं मृपावाद लागे शा माटे के वने

साथे तो बोलायज नहि तेतो अनुक्रमे बोलाय
 ए माटे स्यात्पद लक्ष्णे बोलीए के कंइ दूषण
 लागे नहि एटले ए श्रीजा प्रांगानो विचार कह्यो
 हवे जे सातमो प्रांगो छे ते अवक्तव्य आशरी
 छे एटले जे वचनथकी उच्चारण नथी थया एवा
 जे पदार्थ गुणपर्याय प्रमुख जे नित्य पण अ-
 वक्तव्य ठे ने अनित्य पण अवक्तव्य ठे एकेको
 बोखवाने पण अवक्तव्य छे तौ जेगां बने बोख
 वा ते तो शेना होयज माटे ए युगपत्अवक्तव्य-
 ज ठे एटले ए नित्यअनित्यनी सप्तजंगी देखानी
 ए सप्तजंगी जे जाणे तेने समकित्ती कहिए जेणे
 ए सप्तजंगीनु स्वरूप जाण्युं नथी तेने मिथ्यात्वी
 कहिए ए श्री विशेषावश्यक ग्रथमध्ये कह्युं ठे

॥ उक्तंच ॥

सदसदविशेषणात् । प्रवहेत्तजहठीत्तवत्तं
 त्नाणफलात्तावात्त मिथ्यादिठीसअत्राणं ॥ १॥

ए गाथानी टीकामध्ये स्याद्वादोपलविदिता
 वस्तु स्याद्वादसच्च सप्तजंगी परिणाम इत्यादिक
 अर्थे ठे तो मुख ए गाथामा सदसद् एवुं जे पद

ठे तेथकी सत्य असत्यनुं जाणवुं तेने समकित्ती कऱ्या ठे एटले सदसद् कहेतां जे सप्तजंगी अनेक जातनी वस्तु ग्रहण थाय अने असत्य वस्तु दूर थाय तेने समकित्ती कऱ्या ए विनाना जे रखा तेने मिथ्यादृष्टि कहीए तेमज रत्नाकरावतारीकाने विशे कह्युं ठे.

॥ उक्तंच ॥

एके कस्मिन् द्रव्ये गुणे पर्याये च सप्त सप्त जंगान्नवंत्येवःश्चतःश्चनंत पर्यव परिणते वस्तुनि अन्ताः सप्तजंग्योन्नवंति

एनो अर्थ एने विषे एवुं कह्युं जे एक एक द्रव्यगुण प्रजायने विषे सप्तजंगीश्रो थाय अन्ता प्रजायनुं परिणमवुं वस्तुमां अन्तु छे तेथी सप्तजंगीश्रो पण अन्ती थाय माटे जैनधर्मने विषे जे स्याद्वाद धर्म स्वग्राही पणाने विषे छे ते सत्य ठे ते उपली ए टीकाना अर्थ थकी समजी छेजो माटे ए स्याद्वाद बीना जे मार्ग चखवे ठे ते अज्ञानी ठे एटले ए स्याद नित्यानित्यनी सप्तजंगी पुर्ण थऱ् एटले ए बीजीसप्तजंगी

पुर्ण थइ हवे त्रीजी सप्तजंगी एक अनेकनी क-
 हुबुं हवे एक कहेतां जे आत्मद्रव्य ते एक-
 ज छे ते श्री जगवतीजीमां कह्युं ठे के दबड्डी आ
 एसासीआ एटले आत्मद्रव्य सदाए साश्वतो ठे
 तेनो विचार कीचीत् मात्र कहू बुं तथा सच जीव
 द्रव्य सकरमी तथा अकरमी ते मध्ये ससारी स-
 करमीने द्रव्य कर्हाए क्षेत्र थकी क्षेत्रांतरगमन का
 ळ थकी काळांतरगमन जाव थकी जावांतरगमन
 ए चारे प्रकारे संसारी जीव एकत्वपणे जोगवे ठे
 तेज जीव जेवारे सम्यकदर्शन पामे तेवारे सम्य-
 कज्ञान पण प्रगट थाय सम्यक चारीत्र पण प्रगट
 थाय तेवारे ते जीव पुर्वे द्रव्यादीक चारे जाव
 हता ते परजाव ग्राही हता ते द्रव्यादीक चारेनो
 आहियां नाश करे अने परशुक्तापण छुर करे त्या-
 रे पोतानुं आत्मस्वरूप नीधारपणे स्वरूप जासन
 थाय त्वारे पोताना स्वरूपमां पोते रमणता करे
 त्वारे स्वरूप एकत्वपणेज स्वधर्मनो कर्ता पोते
 थयो अने स्वधर्मनो जोक्ता पण ते थाय त्वारे
 सपुर्ण परजावने तजे त्वारे नीरावर्ण नीसंग नी

रामय नीर्धव नीर्मळ सर्व कलंक र्हीत एवं पो-
 तानुं स्वरुप प्रगट थाय त्यारे अनंत चतुष्टयनी
 प्राप्ती थाय माटे ए सर्वे पद कहां ते सर्व मळी-
 ने एक आत्मद्रव्य ठे माटे स्यात् एक ए पहेलो
 प्रांगो थयो हवे बीजो प्रांगोस्यात् अनेक ते क-
 हीए उश्ए ज्ञान आत्मा दर्शण आत्मा चारीत्र
 आत्मा वीर्य आत्मा श्रत्यादीक अनेक जेद ठे तो
 पण अहिश्चां गुण अनंता ठे ते मध्येथी एक
 ज्ञानगुणना अनेक जेद देखाळुं वुं ते संक्षेप थ-
 की जाणजो हवे ज्ञान एवो एकगुण तेना पांच
 जेद ठे मतीज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अविधीज्ञान ३
 मनपर्षवज्ञान ४ केवळज्ञान ५ ते मध्ये मतीजा-
 नना वे जेद ठे इंद्रोग्राही १ मनग्राही २ तथा बी-
 जे प्रकारे व्यंजनावग्रह १ अर्थावग्रह २ ते व्यं-
 जनावग्रहनां चार जेद ठे ते कहीए उश्ए श्रोत-
 इंद्रो १ घ्राणइंद्रो २ रसइंद्रो ३ फरसइंद्रो ४ ए
 चार इंद्रोए करीने जे ग्रहण थाय तेने व्यंजनाव-
 ग्रह कहीए ते अवक्तव्य भावमां जाय हवे अ-
 र्थावग्रह कहुं १ चक्षुइंद्रो २ घ्राण-

इंझी ३ रसइंझी ४ फरसइंझी ५ ठहुं मन ए
 छ वने ग्रहण थाय तेने अर्थावग्रह कहीए
 हवे ग्रहणना चार जेद ठे ४ अर्था १ इहा २
 अपाय ३ धारणा ४ ए चारे प्रकारे ग्रहण थाय
 ते मध्ये अर्था कहेतां पुर्वे जे ठ बोल कहा ए
 ठ बोल थकी जे वस्तुनी प्राप्ती थइ तेने अर्थ
 कहीए हवे ते अर्थ थकी प्राप्ती थइ पण वस्तु
 थोखली नहि त्यारे तेनो वीचार करे तेने इहा
 कहीए के ए शब्द केनो ठे १ ए रुप कोण ठे
 २ ए खुशबोइ शेनी आवी ३ आ रस केवो ठे ४
 आ फरस शुं थयो ५ आ मन सामे गयु ६ ए
 छ एनी हीआ कहेतां वीचार करे त्यार पठी अ-
 पाय कहेता नीश्चे करे जे अमुक वस्तु अथवा
 अमुक शब्द इत्यादीक नीश्चे करे तेने अपाय
 कहीए त्यार पठी धारणा कहेता जेने जेवो दायो
 पसम होय तेइला काळ सुधी धारणा रहे एटले
 ए अर्थादीक चार बोल साथे ठे ए बोल पुर्वना
 जोमतां चौबीस जेद थाय अने चार बोल पुर्वे
 व्यजना वग्रहना कहा ए जोमतां अठ्ठावीस

ज्ञेद मती ज्ञानना थया तथा मती ज्ञाननां त्रण-
सेने ढतरीस जेद पण थाय ते त्रणसेने ढतरीश
जेद विवरीने कहिए ठिए ते तत्त्वार्थ ग्रंथ थकी

॥ उक्तंच ॥

बहू १ बहुविध २ क्षीप्रा ३ अनिसृता ४ अ-
नुक्त ५ ध्रुवाणं ६ सेयराणं ॥१६॥ एना अर्थ बहु
कहेतां एक शब्दने विशे घणा पदार्थ आवे जेम
पुरुष ठे एट्ठुं कहेतां घणा पुरुषनो समावेश म-
ही थइ जाय अथवा जेम घलनो ढगलो कहेतां
घणा घल मही आवे १ अथवा बहु वीध कहेता
तेज घलनो ढगलो बहु वीध कहेतां ए घल चो-
खा दाळ मग जुवार आदे ए सर्वे एक पदमां स-
माय अथवा बहु वीध माणश वेठां ठे तो ते मध्ये
स्त्री पुरुष नपुसक ठोकरा अथवा मनुष्यनी अ-
नेक जाती मही समाइ २ क्षीप्रा कहेतां उताव-
ळो अर्थने जाणे तेने क्षीप्रा कहीए ३ अनिसृता
कहेतां निश्चे वीना जे जे वस्तुनु ग्रहण करवुं त-
था अर्थनु ग्रहण करवुं तेने अनीस्मृता कहीए
४ अनुक्रम कहेतां कांश्क कहवुं अथवा सर्वेने

कहूँ ते अनुक्रमे वे बोल ५ एकवार वस्तुमही
 ते काळतरे लुखे नहि ६ ए ठए बोल थकी ल-
 पराठा एखे विपरीत ए छए बोल कहेवा एक
 केवो १ एक वीधकेवु २ घणाकाळे केवुं ३ नीश्री-
 तकेवुं ४ लकतकेवु ५ अधुवकेवुं ६ ए वारे बोल
 नुं थोळखाण करावुतु एखे कोऽ पुरुषे कोऽ
 वातने जाणी एखे थोडु कहेवा थकी घणा प-
 दार्थने समजे तेने बहु कहीए १ तथा कोऽ पुरुष
 एक वात जाणीने मही घणा पदार्थनुं जाणपाणुं
 थाय तेने बहुवीध कहीए २ दीप्र कहेतां जे कोऽ
 पदार्थ देखवो तथा शब्दादीकनु साजळवुं ते तरत
 अर्थने ग्रहण करे ३ अन्स्मरीता कहेतां जे वस्तु
 पदार्थनो कांऽपण नीश्रे करयो नथी तेने अती-
 स्मृती कहीए ४ जे एक वचन कोऽने कहेवुं अ-
 थवा साजळवु इत्यादीक अनुक्रमे करीने समजवुं
 तेने अनुक्रमीका कहीए ५ हवे जे कोऽ वस्तु सां-
 जळी ठे वा दीठी ठे इत्यादीक तेनी धारणा घ-
 णा काळ सुधी पण लुखे नहि तेने ध्रुव कहीए
 ६ हवे जे प्रथम बहु कीधो तो ते एक वचनमा

घण्टं समजता तोपण आतो ए थकी उपरांठा
 वए बोले ठे ते मध्ये एक वचने एकज समजे
 १ हवे एकविध कहेतां एकज पदानी वात जाणे
 बीजा पदानी वात जाणे नहि २ एक वात सम-
 जतां घणीवार लागे तेने चीरकाळ कहीए ३
 निस्यात कहेता वस्तु तथा अर्थ यथार्थ समजे
 नहि ४ अनुक्रम विना आगळ पाठळ समजे ५
 अने अध्रुव कहेतां ए वातनी यादी रहे नहि ६
 ए वार बोळ थया ते पुर्वना अट्टावीस बोळने
 वारगुणा करीए एठ्ठे त्रणसेनेठत्रीस बोळ थाय
 तथा तेज त्रणसेनेठत्रीस बोळने उतपातादीक
 चार बुद्धिहारे गणीए त्यारे तेरसेनेचुमाळीश जेद
 थाय ए रीते मतीज्ञानना जेद समजवा. ए बोळ
 सर्व समकीतीमां लाघे कोशमां लंठा, कोशमां
 वत्ता, कोशमा सामान्य, कोशमा विशेष ते सम-
 कीतनो जेद कीचीत् देखामीए ठशए के,-

॥ लुक्तं च ॥

तत्त्वार्थे निर्देश १ स्वामित्व २ साधना ३
 अधीकरण ४ स्थिती ५ विज्ञान ६ सत्संख्या ७

दोत्र ३ स्पर्श ४ काल ५ दूर ६ ज्ञावा ७ अल्प
बहुलैश्च ॥

एनो अर्थ लखीए उझए प्रथम जे नि-
देष एवो जे शठ ठे एट्ले ते जीवाटिक स्वरूपनुं
कहेता तत्त्वार्थनु सदहवु एट्ले कोइ अहिश्वा
पुठे जे सम्यक् दर्शन लपजे ते शुं एट्ले तत्व
कहेतां जे नव पदार्थ ते मध्ये जीवादी तत्वनी
श्रद्धा एट्ले ने तत्वनी श्रद्धा सर्व सर्वने स्था-
नके जीवतत्व एट्ले आत्मा अरूपी ज्ञानादीक
गुणे करी सहीत तेने सत्य करीने जाणवो याकी
सर्व असत्य. अहिया कोइ कहेशे जे संवरादि-
कने असत्य केन कहो गो ? तेनो उत्तर जे स
वर, निर्जरा अने मोक्ष ए तो पोतेज ठे ए काइ
जिन नथी, अने जे निर्जग पद ठे ते अघुरो ठे
त्या सुधी ठे अहिश्वां कोइ कहेशे जे मोक्षयी
मुकाय त्यां सुधी होय, मुकाया पछी तो कइ मुक्ति
थ वानी नथी ए पण अघुराने दीसेछे तेनो उ
त्तर जे निर्जरा तो तेरमा चउदमा गुणवाणा
सुधी ठे अने मुक्ती तो चउदमाने अने ठे, जे

जीव अहियांथकी मुकाश्ने सीद्धिपद वर्यो तेने
 फरी मुकावुं नथी ते सदाए मुक्तज ठे अने नि-
 र्जरा ठे त्यां सुधी बंध पणछे एटले पेहेले गुण-
 गाणैथीज निर्जरातो लागु ठेज, माटे अधुराने
 निर्जरा ठे ने मुक्ति संपुरणने ठे माटे ए आत्म-
 थकी त्रिन्नपद नथी माटे एवी आत्मस्वरूपनी जे
 ने श्रद्धा वेठी तेने समकीत उपज्युं कहिये ए
 पहलो ज्ञेद १ हवे बीजो ज्ञेद जे स्वामीत्व के-
 हेता ए समकीतनो स्वामी कोणठे ते ममकीनो
 स्वामी जीव आत्मा पोतेज ठे तेने गति आसरी
 स्वामीत्वपणुं देखामीए ठइए, हवे ते जीव साने
 नरकने विषे समकीत पामे ठे, आ कारणथकी
 ते कहिए ठइए, जे नरकनी वेदना घणी आ-
 री अने अगोरगी ते उन्न कृपा तृपा प्रमुख
 वेदतां थकां डु खथी गजराणो थको डु खथी बुढ-
 वानो उपाय पोते न दीगो तेवारे जावी उपर चीत
 देइने संतोष करे अने समजावे वेदना वेदे ते मध्ये
 कोइ जीव जातिस्मरणज्ञान पामे कोइ न पामे ते-
 वारे पोताना पुर्व कृत्य कर्म जाणीने डु ख जोगवतो

समजावे थाय ने वैराग्यनी वृद्धि थाय ससारने
 अनित्य जाणे, एम करता कोशक जीव मोहनी
 कर्मने उपसमावतो उपसम समकीत पामे १ क्ष
 योपसम समकीत २ क्षाएक समकीत ३ ए त्रणे सप-
 कीत नरऋगतीने आश्री लाधे तथा तिर्यवगतिमां
 तथा मनुष्यगतिमा तथा देवगतिमा एटले चारे ग-
 तीमा लाधे अहिध्या कोश प्रथ करे ठे जे द्वाएक
 समकीत एक मनुष्यगतिमातो लाधे ठे पण बी
 जी त्रण गतिमातो द्वाएक समकीत लाधे नहि
 तेना उत्तर गत आधुबंध द्वाएक समकीतवाळो
 चारे गतिमा लाधे एटले ए स्वामीत्वपणुं देखाम्युं
 ३ साधन वेहेता समकीतनु साधन एटले कारण
 ॥ ते कारण वे प्रकार ठे एक अतरयकी वोजुं
 बाह्ययकी ते मध्ये अतर कारण ठे तेना समकीत
 मोहनीना तथा मोहनीकर्मनी प्रकृतिओनो उ
 पसम ते थकी उपसम समकीत थाय १ तथा
 मिथ्यात्वादीकने कश्क दाय करे, कश्क उपस-
 मावे तेने क्षयोपसम समकीत थाय २ तथा साते
 प्रकृतिना दाय करे तेने द्वाएक समकीत थाय

ते अंतरंग कारण ठे तेतो आत्म स्वभावानो खप करतां मोहीनी खपे ते विना मोहिनी सर्वथा खपे नहि एख्ले ए अंतर कारण कहुं हवे बाह्य कारण कहीए ठीए जे चारे गतिने विषे वेदना प्रमुख अनुभवतां थका वैराग्य प्राप्त थाय अथवा जातिस्मरणादिक लपजवायकी कोड जीवने वैराग्य लपन्न थाय एवांज कारण मळवायकी वैराग्य तथा आत्म स्वभावानी गवेषणा ते थकी मोहीनीने लपसम १ अथवा द्वयोपसम २ अथवा द्वाएक ३ ए समकीतनी प्राप्ती थाय एख्ले ए बीजो हेतु कहुो हवे चोथो अधिकरण एख्ले समकीतनो आधार ते शुं ? समकीतनो आधार एक आत्मा ठे ते विना बीजोकोड आधार नथी एख्ले समकीत ते गुण ठे, अने आत्मा ते अव्य ठे ते गुण अव्य विना रहेतो नथी, जेम घट ते अव्य, अने जळधारण ते गुण, ते जळधारण घट विना होय नहि एख्ले घटने आधारे जळ रहे ठे तेमज आत्माने आधारे समकीत रहे छे. अहिआं कोड कहे ठे, जे, अव्य

तथा गुण चित्र पत्नी गया, ए जोता अज्ञेद
 स्वभाव असत्य ठरे तनो उत्तर जे घट अने
 जळनो उघात दीधो, ते उघात तो देशेज होय
 पण साकरनी मीठाज ते चित्र होय नहि, ते
 एक रूपेज ठे तेम आत्मा अने समकित एकत्व
 जावेज होय पण चित्रजाय न होय अहिआ
 जे चित्रजाव वचन उच्चारण कर्यु तेनु कारण
 एम ठे जे हेतु ए ठए उतागाना ठे तेथी ए
 व्यवहारनयनी परुपणा ठे ने व्यवहारनय
 थकी सदाए चित्रजाव होय निश्चे थकी अ
 चित्र वस्तुज छे एट्ठे ए अधिकरण चोथो
 हेतु कह्यो ४ पांचमो स्थिती हेतु केहेतां मम-
 कोतना काळनु प्रमाण जघन्यथकी अतर्मुहूर्तनी
 स्थिती कही छे अने वंप आलुत्वानी स्थिती आ
 सरीने त्रण तथा चारत्रय सुवी समकित रेहे ए
 दाएक समकितने आसरीने कह्यु ठे एट्ठे एनी
 स्थिती उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपम जाजेरी जाण
 वी तथा द्योपसय समकितवाच्यानी स्थिती ग
 ने सागरोपम जाजेरी जाणवी जघन्य अतर्मु

हृत जाणवु २ तथा उपसम समकितनी स्थिती
 जधन्य तथा उक्तृष्टी अंतरमुहूर्तनी जाणवी ए-
 ट्खे ए स्थिती हेतु पांचमो जेद क्खो ५ हवे
 उद्धो जेद विधान एवे नामे त्या निसर्ग केहेतां
 कोशक गुरु उपदेश विना समकित पामे ठे
 कोशक गुरु उपदेश थकी पामे ठे तथा उपस-
 मादिक समकीतना अनेक जेदे जीव ठे ते वि-
 धान कहिए एट्खे हेतुविधान क्खो ६ एट्खे ए
 ठए हेतु मद्देपयी क्खी देखाड्या तथा बीजे प्र-
 कारे पण समकीतनो जीवने निर्णय थाय एवा
 आठ जेद ठे ते प्राप्ती समकीत थवानीते कहिए
 छीए ॥ सत्य १ ते द्रव्यादि जीवमत्ता १ सख्याते
 गणवु २ क्षेत्र ते वसवानुं स्थानक ३ स्पर्श ते
 चौदराजलोकने फरसवानुं ४ काळमुख तथा वे-
 हेवार ५ अने व्यवहार काळ अंतर ६ जाव ते
 उपसमादिक. ७ अने अल्प बहुत्व ते आठमो
 ८ ए आठे प्रकारे करी जीवनों निश्चे थाय, ते
 हवे वेवरीने देखामीए ठैए. त्यां सामान्यपणे एवो
 शब्द सत जीव मिथ्यादृष्टी प्रथमना ठ

गुणगणा सुधी छे एटले वेहेवारथकी व्रत नेम
 चारित्रीय श्रावक समकीती ते मर्वे मिथ्यादृष्टी ठे
 वेहेवार नयना पक्षथकी उत्तम रुहीने बोलावीए
 ठीए तथा सास्वादन गुणगणाथकी उत्तम उ-
 पला गुणगणा ठे ते पुग्माकार जेनो प्रगट थयो
 होय तेवा जीवोने जोइ ते केवु नरक तथा देवताउं
 ए चोथा गुणगणा सुधी होय तिर्यच पाचमा
 गुणगणा सुधी तथा मनुष्य चौदमा गुणगणा
 सुधी जाणवा ए सतजीव जाणवा ए प्रथम
 जेद थयो ॥१॥ ह्वे सख्या कहता बीजो जेद
 कहिए ठिए ते मख्याना वे जेद ठे सामान्यपणे
 मिथ्यादृष्टि जीव धनताने धनंती सख्या विशेष
 पणे चौद गुणगणाना जीव सख्याता जाणवा
 एवं आ टीकामातो ठे, परतु चौद गुणगणा ते
 चौदमा गुणगणाना जीव सख्याता ठेरे पण
 चौदे गुणगणाना जेगा करता तो जीव धनता
 ठेरे माटे चौदमा गुणगणाना सख्याता ते सत्य
 ठेरे तथा पाचमा गुणगणाथी मामीने चौदमा
 गुणगणा सुधीना जीव सख्याता ठेरे पण चो

धा-गुणगणाना जेगा लक्ष्ण तो अखंख्याता
 जीव जाणवा शा माटे के उत्तम गुणगणुं चो-
 थाथो केहेवाय ठे माटे उत्तम गुणगणाना जीव
 असंख्याता ठे, ए वात सत्य ठे ए बीजो जेद २
 तथा क्षेत्रथकी संख्या वे प्रकारनी ठे सामान्य-
 पणे मिथ्यादृष्टी आदे देहने चौदे राजलोक प्र-
 माणे क्षेत्र छे अने सास्वादनादिक गुणगणाना
 जीवोनुं क्षेत्र लोकने अखंख्यातमा जागे ठे.
 एटले ए जे मिथ्यादृष्टी जीव छे ते लो-
 कव्यापी ठे एटले थावरादिक जीव चौद रा-
 जलोकमा व्यापीने रह्या ठे अने सास्वादन गुण-
 गणाना जीव ते विकलेंद्रीथी निचि गतिमां नथी
 अने त्यांपण उत्पन वखत छे तेपण पृथ्वीने आ-
 धारे ठे अने समकीन गुणगणाना जीव चार
 गतिमा लाधे तेपण पृथ्वीने आधारे रह्या ठे अने
 पाचमा गुणगणायी जे जीव रह्या छे ते तो मनुष्य
 क्षेत्रमाज लाधे ठे माटे ते लोकने अखंख्यातमा
 भागेज होय एटले ए त्रीजो जेद कह्यो हवे स्प-
 र्शनो जो जेद तेना वे प्रकार ठे ते मध्ये मि-

ध्याती जीव सघटोए लोक फरस्यो छे अने उत्तम
 गुणगणाना जीवो पोतपोतानु स्थानक फरशीने
 रह्या ठे ते मध्ये केवळी परमात्मा समुद्धात करे
 ते वखत आखो लोक पण फरसे एम ए विशेष
 प्रकारे जाणवो एटले ए फरमनो विचार कह्यो
 हवे पांचमो जेद काळ स्वरूपनो तेना वे जेद ठे
 एक सामान्यकाळ बीजो विशेषकाळ ते मध्ये सा
 मान्यकाळ पणे जे मिथ्या द्रष्टी जीव तेने सर्व
 काळ लेवो एटले अजविने तो अनादि अनंत-
 काळ छे अने जवी जे मिथ्यानी रह्या ते कंइ सर्व
 जीव तो मोक्षे जवाना ठेज नहि माटे तेने पण
 अनादि अनंत जागा जेवुं ठे माटे एने पण सर्व
 काळ लेवो एटले ए मिथ्याती जीवनी अपेक्षा
 ध्याश्री कह्यो ते मिथ्याती जीवना काळना त्रण
 जेद ठे ते कहुवु कोइक जीव तो अनादि अनंत-
 काळना ठे १ कोइ अनादि सतकाळना ठे २ के-
 टलाएक सादो संतकाळना ठे ३ मिथ्याती ध्या-
 श्रीने त्रण जागा जाणना तथा जे समकीती जीव
 ठे ते मध्ये सास्वादन समकीतनो उध्यावलीनो

काळ ठे अथवा उपसमक्षयोपसमक्षाएक ए
सखेने गुणगणाने आश्रीने सादी संतकाळ छे
अने नव्य जीवने अनादि संतकाळ होय एतळे
ए काळनो पाचमो जेद कह्यो हवे आतुर नामे
छट्टो जेद कहिए छीए आतुर केहेतां विवदित
गुणगणाथी अपर गुणगणानी प्राप्ती तेनी आ
तुर ठे ते केहेतां जे पाम्या चोथुं गुणगणुं त्यां
थकी आगळ जावानी ईच्छा होय त्यांसुधी जे
उपरला गुणगणानी प्राप्ती न थाय त्यांसुधी तेने
आतुरजाव कहिए तथा तेमज समकीत पाम्यानंतर
कोशक जीव वमी जाय कोशक न वमे जे वमी
जाय तेने अर्धपुद्गल परावर्तननुं आतरु कहिए
अथवा जे नथी वम्या ते जीव उपरहु गुणगणुं
न पामे त्यांसुधी तेने आतुर कहिए ए आतुरनो
छट्टो जेद कह्यो हवे सातमो जेदजाव एवे नामे
ठे तेना पांच जेद ठे उपसम १ क्षयोपसम २ द्वा-
एक ३ श्रोदयिक ४ परिणामीक ५ ते मध्ये मी-
थ्यादृष्टी जीवने श्रोदयिकजाव संपुर्ण जेद तेनामे
लाधे उदीक केहेतां कर्मना फळनी प्राप्ती उदे

श्रावे ते वखत तेने लुदीक जाव कहीए ते मिथ्या-
 ती जीवोने वीशे एकवीशे प्रकार लाधे समकीती
 जीवमा कोइ लाधे कोइ न लाधे ए प्रथम जाव-
 नुं लक्षण तथा लुपसम जाव प्रथम समकीत
 पामती वखत जीवने होय तथा लुपमम श्रे-
 णीए होय तथा द्वाएक जाव चोथा गुणग-
 णाथी मामीने सीद्ध पर्यतने होय ते नवे जेद
 लाधे तथा श्राठ लाधे तथा केटलाएक श्राचा-
 र्यने मते श्राठमे गुणगणेशीज पामीए एट्ले
 द्वायकजाव कह्यो तथा द्वायोपसम जाव ते चोथा
 गुणगणायी ते समकीत श्रासरिने तो श्राठमा
 सुधीज पामीए, चारीत्रादीक श्रासरिने दशमा
 सुधी पामीए, ज्ञानादिक श्रासरिने वारमा गुण-
 गणा सुधी पामिये ते लुपरात द्वायकजाव पा-
 मिये तथा सासवादन गुणगणे पण लुपसम
 द्वायोपसम जाव कीचित् लाधे एट्ले द्वायोपसम
 जाव कह्यो तथा परणामीक जावतो श्रा ग्रंथ
 श्रासरिने समकीतीने कह्यो ठे तथा बीजां शास्त्र
 श्रासरिने सर्वे जीवने परणामीक जाव होय ए-

ज्ञाव सातमो कह्यो पण ए ज्ञाव स्वरूपने विपे
 जे गुणगणानो-विवार ठे ते मध्ये एक एकगु-
 णगणे उपर चमतां अध्यवसायनां थानक अ-
 संख्यातां तथा अन्नता अत्यंत सुक्ष्म वार्ता ठे ते
 वात समजणमां थावे तो तेने तो कव्याणकारी
 ठेज अथवा समजमां न थावे तो ते वचन उ-
 परीए रुची राखवी अने ते वातनी श्रद्धा करीने
 सदाय तेने पण कव्याणकारी ठे अहियां कोइ
 कदेशे जे संजमश्रेणीमां अध्यवसायनां थानक
 सर्वेमाहे थावी गयां ठे तेने कहीए के ए वात
 ठीक पण संजमश्रेणी जे ठे ते देश थकी ठे
 पण संपुर्ण अध्यवसायने ग्रहण करता नथी
 तथा संजमश्रेणीनां जे शास्त्र तेने विज्ञे आत्मा-
 ना अध्यवसायज ग्रहण कर्या नथी एतो कर्मनां
 अंध प्रकृतिना पलीवेद प्रमुख ग्रहण करेला ठे
 माटे अहियां आत्म अध्यवसाय कहेगता नथी
 अने आज थानकने विज्ञे आत्म अध्यवसायने
 ग्रहण करवा ठे शा माटे के अहियां तो ज्ञावनी
 ग्रहणता ठे अव्यनी ग्रहणता नथी एखे ए

सातमो जेद ज्ञाव नामे कह्यो. हवे आठमो अ-
 द्य बहुत्व नामे जेद कह्यो ए ठिए त्या सर्वथकी
 थोनामा थोना जीव मासवादन समकीतवाळा ठे
 ते थकी विशेष जीव उपसम ज्ञावना छे ते थकी
 असख्यात गुण द्योपसमवाळा ठे ते थकी अ-
 नंत गुण द्येकवाळा ठे ते थकी अनंतगुण
 मीथ्याती ठे एट्ठे ए आठमो बोल अद्य बहु-
 त्व कह्यो ए आठे बोलवने करीने जीवनी उळ
 खाण समकीती तथा मीथ्यातीनी समज पने
 तथा पुणे ठ बोल कह्या ते समकीतना हेतु ठे
 ए सर्वेने जाणवाथकी समकीत गुण थाय अने
 तेने समकीती कह्यो अने ते जीव समकीतीने
 विशे मतीज्ञानना जेद कह्या ते पामीये ते वि-
 नाना जीव रह्या तेने विशे उलटमुलट समजवा
 अथवा अधीक न्युन होय एम समजबु होय
 तथा तेरसोने चुवालीश जेद पण थाय इत्या-
 दीक अनेक जेद मतीज्ञानना पण ठे तथा श्रुत-
 ज्ञानना पण अनेक जेद ठे त्या चउद तथा
 वीश जेद कह्या ठे ते तो उत्पती आदीक कह्या

वे, ते तो अव्ययकी वे तथा जावयकी श्रुतज्ञानी
जीवो असंख्याता वे अने असंख्याता ए श्रुत-
ज्ञानना उपयोगने वीपे सामान्य विशेषपणुं
जासन थाय वे तेथी ए श्रुतज्ञानना पण अ
संख्याता जेद जासे वे तथा अवधीज्ञानना पण
असंख्याता जेद वे. अहियां कोइ कहेशे जे ठ
जेद कह्या वे ते तमे केम बोव्या नहि तनो उ-
त्तर जे एतो परावर्तन काळ आसरी वे अने अ-
वधीना जेद तो जेट्या आत्माना प्रदेश एट्या
ए जेद अवधीना जाणवा ते अधीकार नंदीसुत्र
अकी तथा ज्ञान अधीकार थकी जोइ लेजो.
तथा मनपर्यवज्ञानना वे जेद वे तथा केवळज्ञान
तो एकज वे एट्ये एक ज्ञान गुण तेना पर्याय
असंख्याता कह्या तथा संख्याता पण वे तथा
अनंता पण छे एट्ये केवळज्ञानना अनंता प-
र्याय कह्या छे तथा चउद गुणस्थानक ए पण
चउद आत्मा कहीए ए सामान्यअकी छे अने
तेज गुणस्थानकना जावने वीचारीने करीए तो
अनंता आत्मा थाय तथा वासेठ मार्गणाने वा-

सेठे जेद आत्मा थाय इत्यादीक अनेक जेद
 आत्म स्वजावना थाय माटे स्यात् अनेक जांगो
 थयो एटले जे समे एक छे तेज समे अनेक ठे,
 अने जे समे अनेक ठे ते समे एक ठे एटले ए
 स्यात् एक अनेक ए त्रीजो जांगो थयो तथा
 स्यात् अवक्तव्य ए चोथो जांगो एटले एक इ-
 व्यनु पण सर्व वक्तव्यतामा न आवे तथा अ
 नेक जे गुण पर्याय जेदे अनेक आत्मा मानीए
 ते पण वक्तव्यतामा जे न आवे तेने अवक्त
 व्य कहिए ॥

॥ उक्तच ॥

अज्ञीलप्पा जे जावा अणंतजागोय अणजि-
 लप्पाण अजिलप्पाणतो जागसुयनिबद्धोय ॥१॥

अर्थ-एटले अज्ञीलाप एटले मुखथकी जे
 उच्चारण करवु ते अक्षरनो सन्नीपात कहेतां स
 जोगीजाव ग्रहण करीए, ते असंख्याता अक्षर
 सन्नीपातने गेहेवाय एवा जे पदार्थादीकना जाव
 ते अनंतगुण छे तेतो वक्तव्य स्वजाव कहेवाय,
 ते थकी अमक्तव्य स्वजाव अनंतगुणो ठे शा

माटे जे मतीज्ञान तथा श्रुतज्ञाननुं अत्रिलाप
 कहेतां जे ज्ञासन करवु ते तो परोक्ष प्रमाण ग्रा-
 हक ठे तथा अवधिज्ञान पुद्गळने वीशे प्रत्यक्ष
 प्रमाण ठे एटले पुद्गळ परमाणु प्रत्यक्षपणे ए
 जाणे तेपण परमाणुना सर्व पर्यायने जाणे नहि
 ने केटलाएक पर्याय जाणे ते पण असंख्याने
 काळे जाणवामां आवे अने केवळज्ञान तो ठए
 अव्यना सर्व पर्यायने एकेसमे जाणे ए प्रत्यक्ष
 ज्ञान माटे ए अव्यमां वक्तव्यपणुं पण ठे तो
 श्रुतज्ञानथकी ग्रहण थाय छे अने ए थकीज
 ग्रंथ तथा उपदेश सर्व थाय ठे ए सर्व कामसी-
 द्दी ठे ते कारण माटे वक्तव्यज्ञाव पण सीद्ध
 छे तथा अवक्तव्यज्ञाव पण मीछ छे. अहियां
 कोइ कहेशे जे अवक्तव्यज्ञाव जोवामां नथी
 आवतो ते केम मनाय ? तेनो उत्तर जे अवक्त
 व्यज्ञावने नहि माने तो अतीत पर्याय तथा अ-
 नागत पर्याय जुठा पमे शा माटे जे वस्तुमां
 कारणता परंपराए रही ठे वस्तुमां ठती पर्याय
 ठे पण सामर्थ पर्याय ठे नहि तेथी जोवामां

आवे नहि माटे जेवारे अतीत पर्यायने अना
 गत पर्याय मानीए तो वर्तमान वस्तु नीरावार
 थइ जाय तेवारे कुटस्तपणु आये अने वस्तुधर्म
 ने विशे अनंता कारण रह्यां ठे तथा अनंता
 धर्म पण रह्यां ठे माटे अतीत अनागत पर्याय
 अवश्ये मानवा जोइए ए सर्व जोग त्या रह्या
 छे अहियां एक दृशन कहीए ठिये जेम कोइ
 जीव जन्म पाम्यो तेने वर्तमानकाळे वाठ अव-
 स्था ठे, तेथी एनो पुरुषाकार अपक्व्यजाव ठे,
 ते अनागतकाळे एनो पुरुषाकार प्रगट थशे ते
 वात हाल वर्तमानमा कड दीसती नथी माटे एने
 न मानवी तो ए हाल वर्तमानमा अपक्व्यजाव
 दीगामां आवे ठे तथा अतितकाळे एनो पुरुषा-
 कार हतो ते पण अहिया दीगामां आगतो नथी
 अने एने पुरवे शुजाशुज कर्म कर्या ते पुरुषा-
 कारपणामा कर्या ठे अने ते कर्म अहियां शु-
 जाशुज वेदे ठे ते तो प्रत्यक्ष वक्व्यजावे छे अने
 अतीत पुरुषाकार ते अपक्व्य छे माटे ते वस्तु
 नहि मानीएतो ए शुजाशुज गा वदे वेदे ठे

तेनो स्वामी खोळी लावो, माटे अवक्तव्य जाव ठे
 ते सत्य ठे हवे एनो उपनय जोमीए ठैए जेम
 ए वाळक तेम अहियां डव्य अने तेना जे प-
 र्याय. जेम ते वाळक मोठे थाय तेम वाळजावनो
 नाश तरुणजावनी उत्पत्ति तेम अहियां द्रव्यने
 विशे पूर्व पर्यायनो नाश ने नवी पर्यायनी उत्-
 पत्ति एटले अतीत अनागतना पर्याय तेज केट-
 लाएक वक्तव्य कटलाएक अवक्तव्य जावे ठेज,
 एम मानवुं जोशए अने जो वक्तव्य अवक्तव्य
 जाव नहि मानो तो शुं देखीता जावने मानशो
 तो नास्तीकपणु आवशे, माटे अवक्तव्य जागो
 चोथो ते सत्य ठे. तथा एक अवक्तव्य ए पांच-
 मो जांगो तथा अनेक अवक्तव्य ए ठडो जांगो
 तथा एकअनेक जुगपत अवक्तव्य ए सातमो
 जांगो एनो अर्थ पुर्वना सवंधमाथी समजी खे-
 जो एटले एक अनेकनी सप्तजंगी कही ॥ हवे
 चोथी सप्तजंगी सत्य असत्यनी कहू तुं ॥ स्यात्
 सत्य १, स्यात् असत्य २, स्यात् सत्यअसत्य ३,
 स्यात् ४, स्यात् सत्य अवक्तव्य ५,

स्यात् असत्य अत्रक्तव्य ६, स्यात् सत्य असत्य
 जुगपत अत्रक्तव्य ७ ॥ ते मध्ये स्यात् सत्य के-
 हेतां जे जीव डव्य चेतना लक्षणरूप अनंत च
 तुष्टीए करी सहित सर्वे जीव सत्य ठे कोण
 संसारी तथा सिद्ध सर्वे जीव सत्य ठे ते ह्वे
 डव्यक्षेत्र काळ जावे करीने लळखावु ठुं ॥ ह्वे
 जीव डव्य केहेतां एक डव्य ठे ते केवो ठे,
 निरमळ ठे जेवु फटक रतन निर्मळ तेवो ए जीव
 द्रव्य निर्मळ छे एने विशे कोष्पण बीजा द्रव्यनो
 प्रवेश नथी ए द्रव्य एकज ठे, एनो नेद बीजो
 थाय नहि ? क्षेत्र थकी जीव द्रव्यना असंख्या
 ता प्रदेश छे ते क्षेत्र रूप अवगाही छे जीव द्रव्य
 रह्यो ठे ते एकत्व जावे ठे १ तथा काळ थकी
 जीव अनादि अनंत ठे एदले जीव डव्यनी आ
 द्यपण नथी अने अत पण नथी ए सदाय काळ
 ठे ठेने ठे ३ जाव थकी अस्तित्वादिक अनेक
 स्वजावे करीने सहित ठे तथा ज्ञानादिक अनंत
 गुण करी सहित छे ४ ए चारे लक्षणे करीने
 सदाए काळ शोभित ग्हेने ने जीव डव्य सत्य ठे

एतले स्यात् सत्य पेहेलो जांगो कह्यो ह्वे स्यात्
 असत्य बीजो जांगो देखामीए ठीए ह्वे ते प्र-
 जाय वे प्रकारना ठे एक स्वजाविक बीजा क्रम-
 जावि क्रमजावि ते नस्कादिक चारे गतिने विपे
 शरीरादिक जोग मेळववां ते सर्वे क्रमजावि प्र-
 जाय ठे ते जीवे अहिष्ट्यां ग्रहण कर्या ठे शामाटे
 जे पुर्व बंधना उदय माफक तथा विषयकसाय
 प्रमुख ए सर्वे पुर्व माफक अहिष्ट्यां कोऽ केहे-
 शे जे तमे स्वग्राहीनी वात करी हती आ पुद्-
 गल ग्रहण केम करो गो तेनो उत्तर जे अहि-
 ष्ट्यां पुद्गल द्रव्यनुं ग्रहण पाणु नथी अहिष्ट्यां
 तो जीवनुं ग्रहण ठे ते कहुं ते सांज्यो जे जीवे
 अशुद्ध प्रणतीने वश थया थकां कर्म दळ मेळ-
 व्या ते कर्मदळ चार प्रकारे बंधाणां अने आठ
 विजागे वेंचाणां ते दळ उदे आवे तेवा जोग
 तेवा कपाय प्रमुखने विशे प्रवर्त माटे एनो कर्ता
 जीवज ठे माटे एने स्वग्राही कहीए पण ए सर्वे
 असत्य ठे शामाटे जे ए पुद्गल दळ पोतानां
 अज्ञानपणेथी पोतानुं मानीने वेठा ठे परंतु ए

वस्तु तो पर ठे माटे ए क्रमजावी प्रजाय अस्त्य
 जाणवां तथाजे राग ठेय ते अशुद्ध प्रणती क-
 हीए तेना प्रजाय अस्त्य ठे ते समे समे उत्प्रा-
 तने व्यय थइ रह्यो ठे माटे अस्त्यज ठे अहिध्यां
 कोड केदेशे के प्रणति प्रोतानी छे ते वात खरी
 ठे पण ए प्रणती तो प्रोतानी पण ते प्रणतीना
 वे जेद ठे एक शुद्ध ने बीजी अशुद्ध ते अशुद्ध
 प्रणतीने क्रामथा विना शुद्ध प्रणती थाय नहि
 जेम शुकता साठो प्रथम खारो रस होय अने
 खारो रस फीटीने ज्यारे मधुर रस थाय त्यारे ए
 शुक मान पामे तेम ए आत्माने रागद्वेष वळ-
 ग्या तेथी ए प्रणती अशुद्ध थइ ते अशुद्धता
 ज्यारे जाय त्यारे आत्मा शुद्ध थाय, अने पर-
 मात्माना सजामां वेसना पामे. माटे ए अशुद्ध
 पण तेपण कंइ आत्माना वस्तु नथी तेथी अने
 पण ए गोमजानुज ठे माटे एने गोडेज आत्मा
 सुखी थाय, ते कारण माटे ए अशुद्ध प्रणती ते
 पण ए अस्त्यज ठे माटे पण अमारो केहेवानो
 आशय अहिध्यां एमो ठे जे ए अशुद्ध प्रणती

थकी ए चेतनना पर्यायनुं उगाण. अतंतु
ज छे ते उगाणरूप जे ए पर्याय ते तेने विशे
व्यवहार समे समे थाय छे तेथी ए सत्यज ठे के
मके सत्य पदार्थनो कोइ काळे नाश थाय नहि
जे नाश थाय ए असत्य पदार्थनो थाय, माटे ए
अशुद्ध प्रणतीना पर्याय ते पण असत्यज ठे ए-
टले ए परवस्तुना ग्रहणपणाना पर्यायनुं असत्य-
पणुं देखाम्युं. हवे स्वभाविक पर्याय कहेनां जे
स्ववस्तुना पर्याय तेना ग्रहणनुं स्वरूप देखारुं बुं
हवे जे आत्माद्रव्य तेना अतंत गुण ठे, अने
अकेक गुणना अतंत पर्याय छे ते पर्याय ते अ-
गुरु लघु कहीए कोइ कदेशे जे सर्वे गुण अने
सर्वे पर्याय अशने एक अगुरु लघु पर्याय कहे-
गे तेनो उत्तर जे ज्ञानादिकना पर्याय ग्रहण
आश्री पुर्वनी सप्तनंगीमां कहोगे तेथी अहिद्यां
अगुरु लघु पर्याय एक कहीए ठे पण ते अगुरु
लघु प्रजाय ते सर्वे गुणमां तथा सर्वे प्रजायमा
ए रह्यो ठे, अने आत्मानो स्वभावि प्रजाय ते
अगुरुलघुज ठे

अर्थः क-

रीए तेमा सर्वे प्रजाय सभाय माटे ए अग्रगुरुलघु
 प्रजाय ते मत्य जेगो गणवो आ माटे के ए
 आत्माना जेगोने जेगो रहे समयमात्र आत्मा-
 थकी जिन न पके ए आत्मानो मूळस्वभाव ठे.
 माटे एने असत्य न जाणवो हवे जे असत्य ठे
 ते अग्रगुरुलघुथकी ग्रहण थया, एवा जे प्रजाय
 ते ज्ञानादिकना ए कंइ निरंतर रहेता नथी
 माटे एने असत्य कहीए एटले ए अग्रगुरु लघु
 थकी वार जेद प्रजायग्रहणना ठे, ते पण स्व-
 आत्मानाज अध्यवसाय ठे ते अनंता ठे ते प्र-
 र्यायरूप जाणवा ते साधक अस्थाने विपे समये
 समये हानिशुद्धि थइ रही ठे ते सर्वे स्वअपेक्षा-
 थीज ठे, अने सिद्ध जीवने ज्ञानना जाणवा
 आदे देखने जे पर्यायनुं परावर्तन ठे ते पण स-
 मये समये थाय छे ते परअपेक्षाए ठे अने ते
 मन्हे ज्ञानादिकनु जे फरवु ते स्वअपेक्षा ठे एम
 समजवु हवे वार जेदना विचार कहु वु जे प्र-
 थम समयने विपे अनंतमे जागे हाणी हती मूळ
 पर्यायाथी अनंतमा नागे हिण हतो तेज १ वीजा

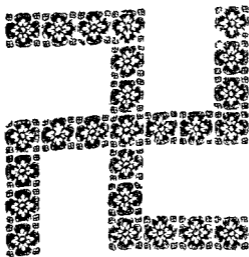
समयने विषे असंख्यातमे जागे हिण थइ गयो
 १ त्यारे पूर्वपर्यायनो नाग थयो ने नवा पर्या-
 यनी उत्पत्ति थइ ए प्रमाणे सर्वे जागामा स-
 मजी लेजो. हवे जे बीजे समये असख्यामे नागे
 हिण हतो तेज त्रीजे समये संख्यातमें जागे
 हिण थइ गयो ३ तेज चोथे समये मख्यात गु-
 णहिण थयो ४ ते पाचमे समये असख्यातगुणो
 हिण थयो ५ अने ठठे समये अनंतगुणो हिण
 थयो ६ ए ठए बोल हाणी आश्रीने कह्या. हवे
 वृद्धिना ठए बोल कहुं वुं ते मध्ये जे मूळ प
 र्याय हता तेथी पहेले समये अनंतमे जागे वृ
 द्धिने पाण्या १ अने बीजे समये असख्यात ना-
 ग वृद्धि थइ २ त्रीजे समये संख्यात जाग थइ
 ३ चोथे समये संख्यातगुणो वृद्धि थइ ४ पांच
 मे समये असंख्यातगुणो वृद्धि थइ ६ अने ठठे
 समये अनंतगुणो वृद्धि थइ ६ एठले ए छए
 बोल वृद्धिना कह्या ए हाणी वृद्धि मठीने वार
 बोल अगुरुद्वयु पर्याय कहीए हंन नाग बोल जे
 लस्या ठे ते ३ गीत मात्राण पदं लस्या

ठे पण ए अन्तुम प्रमाणे अहिया समजवुं नहि
 शा माटे जे कोडक समये हाणीनी वृद्धि पण
 अइ जाय कोडक समये वृद्धिनी हाणी पण
 अइ जाय एम अनता असत्याता प्रमुखनो नि-
 यम न राखवो जे समये जे थाय ते ग्रहण क
 रवुं एटले ए खटगुणी हाणि वृद्धिरूप स्वभाविक
 पर्यायमा समकीती जीवने होय अने कमजावी
 पर्याय अथवा अशुद्ध पर्याय ते समकीती तथा
 मिश्यात्वी सर्वे जीवने होय ते सर्वे ज्व्यने विपे
 प्रणमी रहेलो ठेज तेज पर्यायनु परावर्त्तन धर्म
 एटले प्रथम समये जे पर्याय होता ते बीजे स-
 मये नाज अइ गया अने नया पर्याय उत्पन्न
 यया माटे ए नाज थाय ते अमत्य कहेवाय,
 एटले ए स्यात् अस्त्य ए बीजो जागो कद्यो २
 ह्वे बीजो जागो स्यात् सत्य अमत्य ते सत्य क-
 हेता जे जीवद्रव्य अगुरुद्रव्य पर्याय चेतनालक्षण
 ज्ञानादिक गुण माथे सत्य ठे अने जे पर्यायनी
 उत्पत्ति अने विनाज ते अस्त्य ठे पण ए प-
 र्याय सदाय आत्मानि पासे रहे छे कोड समये

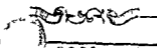
वत्ता कोइ समये श्योठां एम हाणिवृद्धिनां का-
 रणथकी असत्य कहीए छीए पण जे समये ए
 सत्य ठे ते समये असत्य पण ठे अने जे समये
 असत्य ठे ते समये सत्य ठे माटे ए त्रीजो जां-
 गो स्यात् सत्य असत्य ३ हवे चोथो जांगो
 स्यात् अवक्तव्य ते सत्य असत्य पदार्थना अनं
 ता गुण अनंता पर्याय ते सर्वे कंइ उच्चारणमां
 आवे नहि माटे जे उच्चारणमा आवे ते वक्तव्य
 जावमां ठे जे उच्चारणमां न आवे ते अवक्तव्य
 जाव ठे एट्ठे स्यात् अवक्तव्य जागो चोथो क-
 ह्यो ४ हवे पांचमो जांगो स्यात् सत्य अवक्त-
 व्य एट्ठे सत्य जे ख्व्यादिक तेना अनता स-
 न्निपात प्रमुख अक्षर ठे ते कंइ उच्चारणमां आवे
 नहि माटे स्यात् सत्य अवक्तव्य पांचमो जांगो
 थयो ५ तथा स्यात् असत्य अवक्तव्य ठष्टो
 जांगो कहीए ठीए एट्ठे असत्य जे पर्यायादिक
 अनता ठे तेना विभाग पण अनंता ठे तेना
 अक्षर सन्निपात ते पण अनता थाय ते कंइ उ-
 च्चारणमां आवता नथी तेथी स्यात् असत्य अ-

वक्तव्य ठडो जांगो कह्यो ६ तथा स्यात् सत्य
 अथसत्य जुगपत अथवक्तव्य सातमो जांगो पूर्व
 प्रमाणे जाणवो ७ एटले ए सत्य तथा अथसत्य-
 नी सप्तजंगी कही एटले ए चोथी सप्तजंगी क-
 हेवाणी एज प्रमाणे स्वग्राही पदाथकी सेंकडोगमें
 सप्तजंगी थाय ठे माटे जेने दायोपसमनुं बळ
 होय ते जाणे, ने जेनी समज पहेंचे ते घणीए
 ते ठेकाणे सप्तजंगी करी लेवी अहियां कोइ
 कदेशे के एतो कल्पना ठरे ठे ते कल्पना नथी
 सिद्धात तथा तर्कशास्त्रवाद्यानु एमज कहेवु ठे
 तथा घणा गाम्नामा तरेद्वतरेद्ववारनी सप्तजंगीथ्यो
 ठे माटे कल्पना ठरे नहि गा माटे के नयो
 ठे ते सिद्धमा लागे नहि ने सप्तजंगी सिद्धमां
 लागे एम समजवु ते कारण माटे श्रीवितरागेद-
 वनो धर्म स्याहाद मार्गमांज ठे ए सिद्धांतमां
 वचन ठे ते प्रमाण फरवु ए परोदाप्रमाणमाहेलो
 जेद ठे तथा प्रत्यक्षप्रमाणमाहेलो जेद ते तो
 अनुभवज्ञानीने घेर ठे ते घणीने स्याहाद मार्ग
 स्वस्वरूपने विषे प्रत्यक्षपणे जासन थाय ठे ए

वात सत्य ठे पण कंश् कोश्ने देखाडवानी नथी
 एनो साद्दी तो अनुजवीए अनुजवी ठे. माटे
 एवी रीते समजीने स्याद्दद धर्मनो खप करजो
 एथी तंमारा आत्मानुं कव्याण ठे ए मारो हि-
 त उपदेश ठे एखे ए ग्रंथ संपूर्ण थयो ॥



॥ इति श्री ज्ञानरूपण ग्रंथ संपूर्णम् ॥



॥ छहा ॥

श्रीजिन ज्ञांखीत वचन ए, स्यादुवाद सुखकार,
 ते ध्या प्रथमा वर्णव्यो, समजो शुद्धाचार ॥१॥
 ए प्रथमा जे कह्यु, ते सुणजो अधिकार,
 सक्षेपे अधिध्या दाखशुं, किचित् नाम विचार ॥२॥
 प्रथम ज्ञान महातम कह्युं, तेम कह्यो नय पद,
 जेद वावने वर्णव्या, समजी लेजो दद ॥३॥
 ज्ञव्यादिकनु ज्ञान जे, जाणग केवली तुव्य,
 कर्म न लागे ज्ञानीने, तेपण जाख्युं मुख ॥४॥
 गुणपर्याय ते ज्ञाखीया, ज्ञाख्या लक्षण स्वभाव,
 तेम ज्ञव्य जेळखावियो, ज्ञानी आवे दाव ॥५॥
 वेहेवास्मार्गनी नुन्यता, तेम त्रण अनुयोग धार,
 श्रुतज्ञान रहमानथी, ज्ञान गुण लदार ॥६॥
 सप्तजंगी श्हा ज्ञाखीयु, तेम निक्षेप विचार,
 प्रमाणपद देखामोया, बहुश्रुत मुखथी धार ॥७॥
 एह प्रथ पुरण थयो, पुरण ज्ञानज पद,
 अध्यात्म मारग कह्यो, ध्यात्मस्वरूप ए दद ॥८॥
 जाणवाजणी, करजो जवी तुमे खप,

बहुश्रुतने चरणे रही, अहोनिश करजो जप ॥९॥
 गुण घणा ए ग्रंथना, कह्या मुखशं न जाय;
 कोइरुवीरला जाणजे, जेणेसेव्या ज्ञानीपाय ॥१०॥
 केवली पण एक जीजथी, मोनपुरमनुं थाय;
 केहेतां पार थावे नहि, जाय ग्रंथ उपाय ॥११॥
 उग्रस्थतो केम करी, कही न शके निरधार,
 गुण अथनंता ग्रंथना, केहेतां न थावे पार ॥१२॥
 केहेवुं तो अळगुं रह्यं, पण समजवुं उद्धन,
 दायोपसम खरो लागतां, विरला अर्थ ते लून्य ॥१३॥
 ते कारण प्रव प्राणीजं, मानजो ए उपदेश,
 स्वर्गउपवर्गनोखपहोये समजजोग्रंथनोरेश ॥१४॥
 आज्ञादिने नवि रुचे, तेम अज्ञानी जाण;
 अज्ञविनेपणनवरुचे, तेम मिथ्यात्वीचित्तथाणा ॥१५॥
 आजीविकाअर्थीजीवना, चलवे मारुममाल,
 तेने पण रुचे नही, तेम मान पुजाविचार ॥१६॥
 सम्पकद्रष्टी जीवना, तेने रुचशे एह;
 ग्रंथ हाथथी गडे नही, जाणी गुणनो गेह ॥१७॥
 तेम सुद्धज बोधी जीव, अथवा सुसंगती;
 तेम ज्ञान खपी वली, ते पामे वांची रती ॥१८॥

एम ए ग्रंथने जाणीने, करजो ग्रंथ अन्त्यास;
 आपमते नवि चालजो, धारजो बहुश्रुत पास ॥१९॥
 ज्ञाननं आत्म स्वरूप जे, तेने दीपावनहार;
 ज्ञानरूपणते जाणीए, नाम प्रबुं मनोहार ॥२०॥
 मुनी हुकम रचना करी, जव्यजीवने काज,
 जे ममजीने आदरे, ते पामे शीवराज ॥२१॥
 सवत लंगणीसेचालीसमा, उत्तम श्रावणमास;
 शुक्रपक्ष तृतीय तिथी, वार ब्रह्म ए खास ॥२२॥
 हुकम मुनीनो मानजो, माथे चनावजो आण,
 जवज्रमण मटी जणे, एवो ग्रंथ विनाण ॥२३॥
 सुरतशेहेर सोह्यामण, सुदर श्रावक वाम,
 श्रोता अध्यात्मतणा, माहारी पासे खास ॥२४॥
 तेहतणे आग्रहे करी, रक्षा अहिच्यां चोमास,
 ग्रंथ अहिच्या पुरण कर्यो, प्रगट ज्ञाननी रास ॥२५॥
 ए ग्रंथ जे जणजे सही, साजळजे घरी देत,
 शुभजाव ते पामशे, शुद्धपण पण चेत ॥२६॥
 शुद्धजाव निज स्वरूपमा, ते ए ग्रंथ मोजार,
 मुनी हुकम ते पामशे, ग्रंथथकी नीरवार ॥२७॥
 माटे ग्रंथ अन्त्यास करो, ठोमशो नहि दाणएक,

प्रमादभावने छर करी, ग्रंथ रम ॥१७॥

एह ग्रंथ अग्र्यासथी, पामे स्वर्ग ॥ पुत्र;

सद्वहणा जो एवा रहे, तो जाए नरदुख ॥१८॥

एहनं फुल ते स्वर्ग ठे, अने शुचप ॥ देहेवाय;

तेविना जे चालवु, ते अनोपमो अथमाय ॥१९॥

शुक्लध्यान पण एह छे, ज्ञान पण उत्तम एह,

उत्तम चारीत्र एहछे, एम समजो गुणगेह ॥२०॥

फळ एहनं जाणीए, पामे शीव स्वरुप,

अनंत सुख ते जोगवे, जेनुं रुप अनुप ॥२१॥

पुनर्पी जन्म लेवे नही, गयो रोगने दोष,

अधीच्याधी होवे नही, हुवो गुणनो पोष ॥२२॥

सुख अनंत आतमतणुं, अव्यावाध स्वरुप,

सादी अनंत जांगे करी, जोगवतां तद्रुप ॥२३॥

एम जाणी तमे सेवजो, ग्रंथ ए सुखकार,

मुनी हुकम पद पामजो, शीवसुंदरी नरथार ॥२४॥

॥ इति श्री ज्ञानभूषण ग्रंथ समाप्त ॥

एम ए ग्रथने जाणीने, करजो ग्रंथ थ्यन्यास;
 आपमते नवि चालजो, धारजो बहुश्रुत पास ॥१९॥
 ज्ञानने श्यात्म स्वरूप जे, तेने दीपावनहार,
 ज्ञानदृपणते जाणीए, नाम जहुं मनोहार ॥२०॥
 मुनी हुकम रचना करी, जव्यजीवने काज,
 जे ममजीने श्यादरे, ते पामे जीवराज ॥२१॥
 सवत जंगणीसे चालीसमां, उत्तम श्रावणमास,
 शुक्रपक्ष तृतीय तिथी, वार ब्रगु ए खास ॥२२॥
 हुकम मुनीनो मानजो, माथे चक्रावजो श्याण,
 जवज्रमण मटी जशे, एवो ग्रथ विनाण ॥२३॥
 सुरतगोहेर मोह्यामणु, सुंदर श्रावण वास,
 श्रोता थ्यप्यात्मतणा, माहारी पासे खास ॥२४॥
 तेदतणे श्याग्रहे करी, रह्या श्यहिथ्यां चोमास,
 ग्रथ श्यहिथ्या पुरण कर्यो, प्रगट ज्ञाननी रास ॥२५॥
 ए ग्रथ जे जणजे सही, साजळशे धरी हेत,
 शुभजाव ते पामशे, शुद्धपाणु पण चेत ॥२६॥
 शुद्धजाव निज स्वरूपमा, ते ए ग्रंथ मोजार;
 मुनी हुकम ते पामशे, ग्रथवकी नीरधार ॥२७॥
 मोट ग्रथ थ्यन्यास करो, गोमशो नहि दाणएक,

